अद्वितीय सिख विरासत

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥

डॉ. रणजीत सिंह अरोरा अर्श

ADVITIYA SIKH VIRASAT

Compiled, Edited and written by
Dr. Ranjeet Singh Arora 'Arsh'

Price : ₹ 600
E_BOOK FREE OF COST

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की *350* वें शहादत वर्ष को समर्पित

एवं

श्री गुरु हर राय साहिब जी के *400* वें प्रकाश पर्व को समर्पित

अद्वितीय सिख विरासत का इतिहास सन् 1469 से सन 2025 तक (संक्षिप्त में)

इतिहासकार डॉ. भगवान सिंह 'खोजी'

अद्वितीय सिख विरासत

संकलन, संपादन एवं लेखन

डॉ. रणजीत सिंह अरोरा ‘अर्श’

प्रकाशक—

अर्श प्रकाशन, पुणे, भारत

संकलन, संपादन एवं लेखन: डॉ. रणजीत सिंह अरोरा अर्श
© लेखकाधीन
संस्करण: प्रथम, 2024
मूल्य: ₹ 600
प्रकाशक: अर्श प्रकाशन, 58/59, सोमवार पेठ नागेश्वर
मंदिर रोड, पुणे-411011 (महाराष्ट्र)
9371010244, 9096222223
E-mail:arshpune18@gmail.com
मुद्रक:
E-mail: print@vickycopiers.in © लेखकाधीन
संस्करण: प्रथम, 2024
मूल्य: ₹ 600

ਸੰਤ ਬਲਬੀਰ ਸਿੰਘ
ਮੈਂਬਰ ਪਾਰਲੀਮੈਂਟ
ਰਾਜ ਸਭਾ
ਮੈਂਬਰ ਜਲ ਸਰੋਤਾਂ ਬਾਰੇ
ਸਥਾਈ ਕਮੇਟੀ

सत्यमेव जयते

Sant Balbir Singh
Member of Parliament Rajya Sabha
Member Standing Committee
on Water Resources
Mobile: +91 9417319463
Email: santbalbir.singh@sansad.nic.in

Ref No: SBS/RS/MFO/461-24
Date: 15/11/2024

लासानी सिख विरासत : सिख संगत के लिए एक अमूल्य उपहार

श्री गुरु नानक देव जी की 555वें प्रकाश पूर्व के अवसर पर जब पूरा विश्व नानकमई हो रहा है, इस पावन अवसर पर दस गुरुओं के जीवन, लसानी बलिदानों की विरासत को साझा करने वाली पुस्तक सांगतो के लिए एक अमूल्य उपहार है। यह पुस्तक श्री गुरु हरराय साहिब की 400वें प्रकाश पर्व को समर्पित है। इस पुस्तक का संकलन एवं संपादन करने वाले लेखक डॉ. रणजीत सिंह 'अर्ष' ने इसे कड़ी मेहनत और अपार निष्ठा से पूरा किया है। डॉ. रणजीत सिंह एक बधाई के पात्र जिन्होंने इन पुस्तकों को सिख जगत की झोली में डाल दिया। इतिहासकार डॉ. द्वारा पंजाबी और हिंदी भाषा में पूर्ण पुस्तकें भगवान सिंह 'खोजी' का भी बहुमूल्य योगदान रहा है।

डॉ. इस पुस्तक में रणजीत सिंह अर्श जी ने बहुत मेहनत की है। दस गुरुओं के जीवन का वर्णन करने के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना और स्वरूप का भी अत्यंत मार्मिक शब्दों में वर्णन किया गया है।

दूसरे अध्याय में बहुत ज्ञानवर्धक जानकारी दी गयी है। 'गुरु पंथ खालसा की ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण जानकारी – एक चारित्रिक अध्ययन' इस अध्याय को पढ़कर ऐसा ही महसूस होता है। मानो आप ज्ञान के गहरे सागर में उतर गये हों। सिख समुदाय के शीर्ष संगठनों की जानकारी दी गई है। यह अध्याय पंज तख्त साहिबान से शुरू होता है और इसमें गुरसिखियों के जीवन के बारे में बहुत ही रोचक जानकारी पढ़ने को मिलती है।

पुस्तक के तीसरे अध्याय में गुरु पंथ खालसा का इतिहास दर्ज है। इसमें श्री दरबार अमृतसर के निर्माण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्पष्ट उल्लेख है। इसके अलावा और भी कई एक्सक्लूसिव जानकारियां दी गई हैं।

ऐसी सिख इतिहास पुस्तकों की सदैव आवश्यकता रहेगी। ऐसा भी देखा गया है कि कुछ ग्रंथों में सिख इतिहास को बहुत ही तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है। गलत जानकारी दी जा रही है। जहां इस तरह के पटरी से उतरते इतिहास से सावधान रहने की जरूरत है, वहीं डॉ. रणजीत सिंह 'अर्ष' जैसे सही तथ्य खोजकर प्रस्तुत कने वाले लेखकों को प्रोत्साहित करने की भी सख्त जरूरत है। हम चाहते हैं कि अकाल पुरख डॉ. रणजीत सिंह जी को उत्कृष्टता की कला प्रदान करें और उनकी कलम भविष्य में भी गुरु जस लिखती रहे और संगत का ज्ञान बढ़ाए।

संत बलबीर सिंह सीचेवाल

सदस्य संसद (राज्य सभा)

ਪਤਾ / Address
ਨਿਰਮਲ ਕੁਟੀਆ ਪਿੰਡ ਸੀਚੇਵਾਲ, ਡਾਕ. ਰੁਪੇਵਾਲੀ, ਤਹਿ. ਸ਼ਾਹਕੋਟ, ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਜਲੰਧਰ, ਪੰਜਾਬ 144701 Nirmal Kuteya Vill. Seechewal, P.O Rupewali, Teh. Shahkot, Distt. Jalandhar, Punjab 144701
16-C Ferozshah Road, New Delhi - 110001 Tel.-:01828-299363

KHOJ VICHAR PRESENTS
KHOJ VICHAR
KV
टीम
खोज-विचार
डॉ. भगवान सिंह जी खोजी 'इतिहासकार'
डॉ. रणजीत सिंह अर्श 'लेखक'
बीबी गुरमीत कौर खालसा 'सलाहकार'
स. गुरदास सिंह 'मल्टीमीडिया प्रमुख'
स. गुरदयाल सिंह 'टीम प्रमुख'
स. शहादत सिंह खोजी

पुस्तक: अद्वितीय सिख विरासत

गउड़ी महला 5।।
थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे।।
सतिगुरि तुमरे काज सवारे।।1।। रहाउ।।
दुसट दूत परमेसरि मारे।।
जन की पैज रखी करतारे।।1।।
बादिसाह साह सभ वसि करि दीने।।
अंम्रित नाम महा रस पीने।।2।।
निरभउ होइ भजहु भगवान।।
साधसंगति मिलि कीनो दानु।।3।।
सरणि परे प्रभ अंतरजामी।।
नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी।।4।।
(अंग क्रमांक 201)

अर्थात हे प्रभु के प्रिय भक्तजनों! अपने ह्रदय घर में एकाग्रचित होकर बैठो। सतगुरु जी ने तुम्हारे समस्त कार्यो को संवार दिये है। ।।रहाउ।। परमेश्वर ने दुष्ट एवं नीचों का नाश कर दिया है, अपने सेवक की प्रतिष्ठा सिरजनहार प्रभु ने रखी है। संसार के राजा-महाराजाओं को प्रभु ने अपने सेवकों के अधीन कर दिया है कारण उन्होंने प्रभु के नाम का परम रसपान किया है। निडर होकर भगवान का भजन करो। साध-संगत से मिलकर प्रभु स्मरण का यह दान (फल) दुसरे को भी प्रदान करो। नानक का कथन है कि हे कि हे अंतर्यामी प्रभु! मैं तेरी शरण में हूं और उसने जगत के स्वामी प्रभु का सहारा ले लिया है।

विशेष उपक्रम– ज्ञान बुंगा

गुरु पंथ खालसा के महान इतिहासकार ज्ञानी ज्ञान सिंह जी की 200 वीं जयंती पर 'टीम: खोज-विचार' की ओर से गुरु पंथ खालसा के उभरते हुए इतिहासकारों के लिए पुरातन बुंगा भवन के रूप में ज्ञान बुंगा (अनुसंधान केंद्र) का निर्माण किया जा रहा है। इस अनुसंधान केंद्र में नवोदित सिख इतिहासकार और शोधार्थियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार समस्त सुविधाएं उपलब्ध करवायी जायेगी ताकि वो अपने इतिहास और विरासत की संभाल आधुनिक तकनीक अनुसार डिजिटल स्वरूप में कर सकें। यह ज्ञान बुंगा गुरु पंथ खालसा के उभरते युवा शोधकर्ता और इतिहासकारों के लिए एक अनुसंधान केंद्र है जहां 'टीम खोज विचार' की और शोध कार्य करने हेतु सभी पुरातात्विक संसाधन और अन्य आवश्यक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

आमुख–

अद्वितीय सिख विरासत 'गुरु पंथ खालसा' के द्वारा प्रमुख रूप से धर्म, समाज और राजनीति के क्षेत्र में चलाए जा रहे हैं आंदोलन की प्रगति का मध्यकालीन समय से लेकर वर्तमान समय तक का पैमाना है। निश्चित ही इन क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने हेतु इंसानियत के रखवालों को अपने जीवन की आहुति समर्पित करनी पड़ती है। इस विरासत का एक रोशन सबक है कि शहिदीयों के बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता है। संसार में नई उम्मीदों को प्राप्त करने के लिए, पुरातन कीमतों को त्यागने के लिए, जालिमों के जुल्म रोकने के लिए, इंसानियत की जमीर की रक्षा करने के लिए, क्रांतिकारियों और समाज सुधारकों को अपने जीवन की आहुति समर्पित करनी पड़ती है। स्वयं को दीवारों में ज़िन्दा चिनवाना पड़ता है, शरीर के बंध-बंध कटवाने पड़ते हैं, चरखड़ियों पर चढ़ना पड़ता है, गर्म लोहे के तवे पर बैठना पड़ता है, जल्लाद की तेज धार तलवार की चाशनी को चखना पड़ता है एवं 'जाम-ए-शहादत' के दो घूँट हँसते-हँसते पीने पड़ते है, मौत के डर से हटकर, भूख और प्यास, ठंड और तपिश अत्यंत घोर शारीरिक यातनाएँ और अनगिनत कष्टों को उठाना पड़ता है, जीवन के सभी सुख और ऐशो-आराम को त्यागना पड़ता है, पिंजरों में, काल कोठरियों में जीवन भर सड़ना पड़ता है, ऐसे त्याग और शहिदीयों से देश और कौम की राह में उम्मीद की किरण प्रकाशित होती है। ऐसे शहीदों के कारनामों को शब्दांकित कर, इस महान और अद्वितीय विरासत को संभाला जा सकता है। ऐसे पैगंबर, शहीद और सच्चाई के लिए मर मिटने वाले महान योद्धा ही दुनिया को प्रगति के पथ पर ले जाते हैं। एक इतिहासकार की कलम ही ऐसे महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र को हमारे समक्ष चलचित्र की तरह प्रस्तुत करती है। सच्चे इतिहासकार ही शहीदों के जीवन वृतांत को लिखकर, आने वाली पीढ़ी को उत्तम प्रेरणा और वीर रस से ओत-प्रोत कारनामों को अंजाम देने के लिये इस अद्वितीय विरासत का निर्माण अपनी कलम के हस्ताक्षर से करते है। 'गुरु पंथ खालसा' के अनेक शहीदों ने देश, धर्म और इंसानियत की जमीर की रक्षा के लिये मध्यकालीन समय से लेकर वर्तमान समय तक, एक अद्वितीय विरासत के रूप में उत्तम उदाहरण सामने रखा है और अनेक लोग उनके जीवन को आदर्श मानकर अपना जीवन सादगी और लोक कल्याण एवं सेवा में लगातार व्यतीत कर गए और कर रहे है एवं जरूरत पड़ने पर अपने प्राणों की आहुति भी समर्पित करने से पीछे नहीं हटते है।

इस अद्वितीय सिख विरासत का प्रारंभ सूबा पंजाब की पवित्र धरती पर, वर्तमान समय से लगभग 550 वर्ष पूर्व श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश से हुआ था। उस समय में उन्होंने अपने देश की धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक दशा को देखकर उस व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का बिगुल फूंका था। उनके ज्योति-ज्योति समाने के पश्चात उनके नौ उत्तराधिकारीयों ने इस 'अद्वितीय सिख विरासत' को बड़े उत्तम आयाम प्रदान किए और इंसानियत के हित में चलाए जा रहे आंदोलन को धर्म, जमीर, शूरवीरता के

राजसी सिद्धांतों को नई ऊंचाइयों के शिखर पर स्थापित किया। समाज में प्रचलित कुरीतियों को रोकना, अंधी सरकारों की कार्यवाही को रोकना या फिर उस सरकार को ही बदल देना और आम लोगों को जागृत कर उनकी मनोवृत्तियों में इंकलाब पैदा करना आसान काम नहीं है, ऐसी समाज सुधारक योजनाओं को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए महान व्यक्तियों को महान शहिदीयाँ देना पड़ती हैं और कौम को अनेक कष्टों को झेलना पड़ता है। ऐसे क्रांतिकारी आंदोलन और संघर्षों की जानकारी विशेष रुप से दो लोगों के हाथों द्वारा लिखी हुई प्राप्त होती है, एक वह है जो कुछ कारणों से इन आंदोलनों के विरोधी होते हैं और ऐसे आंदोलनों के प्रमुखों को घृणा की नजरों से देखते हैं और उनके अनुयायियों को काफिर या गुनाहगार समझते हैं, दूसरे वह है जो इन आंदोलनों के समर्थक है एवं इन आंदोलनों के प्रमुखों को अपनी अगाध श्रद्धा देते हैं। ऐसे श्रद्धावान, आधी खुली और आधी बंद आंखों से घटनाक्रम को देखते हैं, इन दोनों तरह के लेखक घटनाक्रम की सही तस्वीर प्रस्तुत करने में गलती कर जाते हैं। वर्तमान समय में सही और सटीक इतिहास को लिखकर उसे अपनी अद्वितीय विरासत के रुप में संभालना ही बड़ी चुनौती है।

'गुरु पंथ खालसा' के महान ऐतिहासिक व्यक्ति या इतिहास के नायक जिन्होंने अपने उत्तम और विशेष कारनामों से, लोकहित में बहादुरी और निडरता को अंजाम देते हुए, इस संसार में अपनी विशिष्ट छाप को अंकित किया है, इन परोपकारों के कारण से ही उन्हें युगों-युगों तक 'अद्वितीय सिख विरासत' के रूप में याद किया जाएगा। विरासत के रूप में प्राप्त इतिहास अपने नायक से, जिनके की एक आम इंसान की तरह दो आंखें, दो हाथ, दो लाते हैं, जो आम जन समुदाय में से उठकर महान कारनामों को अंजाम देता है, क्या इस नायक से हम ऐसा देखना पसंद करेंगे? कि यदि वह नायक अपनी बाहों को पंख बनाकर, आकाश में उड़ जाए या पवन रुप होकर कई आकाश और पाताल की सैर कर आए! ऐसे व्यक्ति कभी भी ऐतिहासिक विरासत नहीं होते है। ऐसे व्यक्ति मिथहास बन जाते हैं। इस तरह के मिथहासकारों से इतिहासकारों की जरूरत कुछ अलग है, विरासत में प्राप्त इतिहास में केवल वह कारनामे ही समाविष्ट हो सकते हैं जिनके लिए कोई ऐतिहासिक व्याख्या उपलब्ध हो। इस पुस्तक 'अद्वितीय सिख विरासत' में सारांश में मध्यकालीन युग से लेकर वर्तमान समय तक, 'गुरु पंथ खालसा' की संपूर्ण 'अद्वितीय सिख विरासत' की जानकारी को शब्दांकित कर 'गागर में सागर' भरने का प्रयास 'टीम खोज विचार' ने किया है। निश्चित रूप से यह पुस्तक 'गुरु पंथ खालसा' की 'अद्वितीय सिख विरासत' का सारांश में, सारगर्भित चर्चाओं का अभिनव प्रयास है। इस 'अद्वितीय सिख विरासत' की अद्भुत जानकारी को विभिन्न ग्रंथों, पुस्तकों एवं अन्य स्रोतों से एकत्रित करके, लिखने हेतु पुरी टीम ने 'गुरु पंथ खालसा' के प्रति पूरी ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण के भाव से अपनी निष्काम सेवाओं के श्रद्धा के सुमन अर्पित किये है।

अनुक्रमणिका

अध्याय एक

1. श्री गुरु नानक देव साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय ------------- पृष्ठ क्र. 13 .

2. श्री गुरु अंगद देव साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय-------------- पृष्ठ क्र.16

3 . श्री गुरु अमरदास साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय ------------- पृष्ठ क्र. 19

4. श्री गुरु राम दास साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय-------------- पृष्ठ क्र. 23

5. श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय ------------ पृष्ठ क्र. 27

6. श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय ---------------पृष्ठ क्र.31

7.श्री गुरु हरि राय साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय--------------- पृष्ठ क्र. 36

8. श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय------------- पृष्ठ क्र. 40

9. श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय------------- पृष्ठ क्र. 45

10. श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय------------- पृष्ठ क्र. 49

11. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी: निर्मिती एवं स्वरुप------------------- पृष्ठ क्र. 54.

अध्याय दो

गुरु पंथ खालसा की ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण जानकारियाँ-
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पृष्ठ क्रमांक 59 से 90 तक

अध्याय तीन

गुरु पंथ खालसा: अनकहे इतिहास के पन्ने

पृष्ठ क्रमांक 91 से 141 तक

1. श्री दरबार साहिब जी अमृतसर का निर्माण: एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण--------पृष्ठ क्र. 91

2. जीवन के रंग-गुरबाणी के संग, (गुरबाणी बोले राम)-------------- पृष्ठ क्र.99

3. भाई धन्ना सिंह चहल (पटियालवी): सायकल यात्री और लेखक-------- पृष्ठ क्र 107

4. भक्ति और शक्ति का पर्व: होला महल्ला-------------------- पृष्ठ क्र.111

5. स्तुति (उसत्तत): श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी-----------------पृष्ठ क्र 115

6. लाहौर: इतिहास के झरोखों से. . . .------------------ पृष्ठ क्र 122

7. दिल्ली फतेह दिवस (कौमी दिवस) --------------------- पृष्ठ क्र 125

8. कामागाटा मारू: सिखों के संघर्ष की अद्भुत-अनोखी दास्तान-----------पृष्ठ क्र 131

9. तपते-तवे की दास्तान-------------------------------पृष्ठ क्र 137

10. सिखों का चरित्र--------------------------------पृष्ठ क्र 138

11. देश की आजादी में सिखों का योगदान---------------------- पृष्ठ क्र140

श्री गुरु नानक देव साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

कलि तारण गुरु नानक आइआ ।।

सिख धर्म के संस्थापक एवं प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश 15 अप्रैल सन् 1469 ईस्वी. को कार्तिक पूर्णिमा के दिवस पर राये-भोये की तलवंडी (पाकिस्तान) में हुआ था। वर्तमान समय में इस स्थान को 'श्री ननकाना साहिब जी' के नाम से संबोधित किया जाता है। आप की माता जी का नाम माता तृप्ता जी था और पिता जी का नाम कल्याण दास जी था। उस समय में कल्याण दास जी चौधरी राय बुलार जी के पास पटवारी के पद पर नियुक्त होकर नौकरी कर रहे थे, श्री गुरु नानक देव जी के गुरु के महल (जीवन संगिनी) का नाम माता सुलखनी जी था एवं आप की बहन का नाम बेबे नानकी जी था और बहनोई का नाम जय राम जी था। श्री गुरु नानक देव जी के दो साहिबजादे बाबा श्री चंद जी एवं बाबा लखमी चंद जी थे, बाबा श्री चंद जी उदासीन संप्रदाय के प्रवर्तक है। श्री गुरु नानक देव जी के दो साथी भाई मरदाना जी एवं भाई बाला जी थे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन गुरु जी के साथ व्यतीत कर अपनी सेवाएं समर्पित की थी।

श्री गुरु नानक देव जी ने लोक-कल्याण और परोपकार के लिए पूरे भारतवर्ष ही नहीं अपितु देश-विदेश में अपनी चार उदासी यात्राएँ की थी, लगभग 24 वर्षों तक 36000 माईल्स तक उनके द्वारा की गई देश-विदेश की यात्राएँ उस समय में दिग्विजय यात्राएँ साबित हुई थी। इन यात्राओं में आप ने आम जन समुदाय में सामाजिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक चेतना जागृत की थी। इन उदासीन यात्राओं में आप ने निरवैर होकर हिंदू और मुस्लिमों के धार्मिक स्थलों की यात्रा करते हुए उस समय के पीर, पैगंबर, संत, महंत और विद्वानों से धर्म के सत्य की महत्वपूर्ण चर्चा की थी। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने प्रथम संदेश में ही उपदेशित किया था कि ना कोई हिंदू, ना कोई मुसलमान! अर्थात हम सभी एक ही प्रभु-परमेश्वर की संतान हैं। उस समय में आप ने उपदेश दिया था कि--

अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ।।

(अंग क्रमांक 599)

अर्थात है नानक! अपरंपार पारब्रह्म परमेश्वर मुझे गुरु के रूप में प्राप्त हो गया है।
श्री गुरु नानक देव जी ने अपने सिखों के लिए 3 महत्वपूर्ण शिक्षाओं को निर्धारित किया था-

1. नाम जपो अर्थात उस प्रभु-परमेश्वर (अकाल पुरख) का ध्यान, स्मरण कर प्रभु-भक्ति में हमेशा लीन रहना।
2. कीरत करो अर्थात ईमानदारी से परिश्रम कर, सम्मान पूर्वक अपनी जीविका का उपार्जन करना।
3. वंड छको अर्थात प्राप्त धन को जरूरतमंदों में सेवा, सहायता और दान के स्वरूप में वितरण करना। निश्चित ही इन महत्वपूर्ण शिक्षाओं में आध्यात्मिक चिंतन है, भौतिक समृद्धि का सूत्र भी है और साथ ही सामाजिक समरसता की प्रेरणा भी हमें इन शिक्षाओं से प्राप्त होती है।

श्री गुरु नानक देव जी के समय में स्त्रियों को पुरुषों के समान दर्जा नही देकर हीन दृष्टि से देखा जाता था। गुरु जी स्त्रियों के हक में आवाज बुलंद कर उन्हें समान दर्जा देते हुए उपदेशित किया कि-

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥ *(अंग क्रमांक 473)*

अर्थात जो स्त्री राजाओं और अवतारों को जन्म देती है उसका दर्जा कम कैसे हो सकता है? इसी प्रकार गुरु जी ने कष्टकर, ईमानदारी से जीवन जीने के लिये उपदेश करते हुए वचन किये कि--

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ॥ (अंग क्रमांक 141)

अर्थात दुसरों का हक मारना उसी तरह का पाप है, जैसे सूअर का माँस खाना मुसलमानों के लिये और गौ माँस खाना हिन्दुओं के लिये पाप है।

निश्चित ही इन शिक्षाओं से श्री गुरु नानक देव जी ने अनेक सदियों से सभी क्षेत्रों में व्याप्त अंधकार को मिटाने के लिये ज्ञान की ज्योति को प्रज्वलित किया है। उस समय में समाज, धर्म एवं राजनीति की विसंगतियों को हटाने का आप ने सार्थक प्रयास किया है जो वर्तमान समय में भी प्रेरणादायी है।

श्री गुरु नानक देव जी के 'महला 1' के नाम से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में प्रेरणा पुंज के स्वरूप में 974 पद्यों को 19 रागों में संग्रहित किया गया है, श्री गुरु नानक देव जी के जीवन का सारांश बहुपक्षीय, संपूर्ण, महान और मुकम्मल है। सामाजिक, धार्मिक और नैतिक तौर पर मुकम्मल पुरुष को ही पूर्ण पुरुष माना जा सकता है। नानक नाम इस देश की भाषा की उपज ही नहीं है अपितु यह नाम अनहद से आया है, परमात्मा से प्राप्त हुआ है, संस्कृत के विद्वानों के अनुसार नानक शब्द का अर्थ है ना-अनिक! इस शब्द में अनेकता नहीं है, दूसरी कोई बात नहीं है, इस नाम में कोई दुविधा नहीं है, यह नाम एक की बात करता है और एक को ही सुनता है, एक को ही देखता है और एक को ही सोचता है एवं एक ही की चर्चा करता है। एक ही स्वप्न में आता है, एक ही की झलक जागृत अवस्था में देखता है, इसका उद्देश्य और संदेश एक का है, जिसे नानक कहते है, नानक शब्द में अनेकता है ही नहीं! श्री गुरु नानक देव जी का कलाम भी एक से ही प्रारंभ होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रथम अक्षर एक है। श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा एक के आस-पास ही परिक्रमीत होती है, एक का ही अनुसरण कर, सजदा करती है और एक को ही प्रणाम करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विचारधारा दरअसल एक की विचारधारा ही है और धर्म की बुनियाद भी यही है कि समूचे ब्रह्मांड की अनेकता में से एक की खोज की जाए, एक को समझा और देखा जाए एवं एक ही की प्राप्ति की जाए। यदि एक प्राप्त हो गया तो दुविधा समाप्त हो जायेगी, यदि सभी कुछ एक है और उस एक में मैं भी हूं तो फिर दूसरा और तीसरा कौन? फिर कौन वैरी और कौन बेगाना? फिर कौन छोटा और कौन बड़ा? मानव जीवन की समस्त समस्याओं का हल केवल एक से जुड़ना है और एक को ही समझना है कारण एक की ऊर्जा अक्षय बनी रहती है।। नानक शब्द में अनेकता नहीं है अर्थात नानक जी कहते हैं-

हरि एक सिमर, हरि एक सिमर, हरि एक सिमर भाई! एक का ही चिंतन करके अपनी चेतना को जागृत कर, एक को ही अपने विचार मंडल में अनुग्रहित करना है और इसलिए श्री गुरु नानक देव जी ने एकेश्वरवाद पर आधारित 'ੴ' (एक ओंकार) का पवित्र उद्घोष कर बाणी और बाणे (व्यक्तिमत्व) के द्वारा समूची मानवता को प्रेम, भक्ति, सत्य, सद्भावना और आत्म सम्मान का संदेश प्रदत किया। श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा जपु जी साहिब, आसा की वार, पहर, अलाहणीयां, कुच जी, पट्टी, सुच जी, थिती, आरती, दखणी, ओंकार, बारह माह, सिद्ध गोष्टी इत्यादि वाणियों को रचित किया गया, साथ ही आप ने 3 माहा (वारा) की भी रचना आसा और मलाह राग में की है। श्री गुरु नानक देव जी ने वाणी की सेवा-संभाल के लिए भाई सुखिया जी, भाई सैदो जी, भाई घेहो जी, भाई झाड़ू कलाल जी को नियुक्त किया था। श्री गुरु नानक देव जी ने करतारपुर (पाकिस्तान) नामक शहर को भी बसाया था। आप के समकालीन शासक बहलोल लोदी (सन् 1488 ई. से सन् 1517 ई.), इब्राहिम लोधी (सन् 1517 ई. से सन् 1526 ई.), बाबर (सन् 1526 ई.से सन् 1530 ई.) एवं हुमायूं (सन 1530 ई. से सन् 1540 ई.) थे और उस समय में बहलौली दिनार नामक मुद्रा प्रचलित थी। श्री गुरु नानक देव ने अपने पश्चात गुरु गद्दी पर अपने अत्यंत प्रिय शिष्य भाई लेहणा जी (श्री गुरु अंगद देव जी) को सुशोभित किया और यह संदेश प्रदत्त किया कि धर्म और विरासत के चहुँमुखी विकास के लिए वंश नहीं अपितु गुण व योग्यता महत्वपूर्ण है इसलिये ही भाई गुरदास जी ने स्वयं रचित वारा (वाणी) में अंकित किया है-

कलि तारण गुरु नानक आइआ ।।

अर्थात कलयुग का उद्धार करने हेतु ही श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश हुआ है। श्री गुरु नानक देव जी 5 सितंबर सन् 1539 ईस्वी. को करतारपुर साहिब (पाकिस्तान) में रावी नदी के तट पर ज्योति-ज्योति समा गये थे।

श्री गुरु अंगद देव साहिब जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय–

सिख धर्म के दूसरे गुरु, श्री गुरुनानक देव जी के उत्तराधिकारी श्री गुरु अंगद देव जी का प्रकाश 31 मार्च सन् 1504 ई. को मते की सराय (जिला फिरोजपुर सुबा पंजाब) नामक स्थान पर हुआ था। आप ने अपनी सेवा, सिमरन और समर्पण के भाव से दर्शाया था कि एक आम इंसान भी गुरु साहिब के बताए हुए मार्ग पर चलकर महान हो सकता है। आप के पिता जी का नाम भाई फेरूमल जी एवं माता जी का नाम माता रामो जी (सभराई जी) था। सन 1519 ई. में आप का परिणय बंधन (आनंद कारज), भाई देवी चंद जी की पुत्री बीबी खीवी जी (गुरु का महल) से संपन्न हुआ था। आप एक उत्तम व्यापारी थे एवं कई स्थानों पर आप ने व्यापार कर दुकानदारी भी की थी। व्यावसायिक गुण आप को विरासत में ही अपने पिता जी से प्राप्त हुए थे। श्री गुरु अंगद देव जी के दो साहिबजादे, बाबा दातु जी और बाबा दासु जी थे एवं आप की दो साहिब जादी बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी भी थी। आप सन् 1539 से लेकर सन् 1552 ई. तक, लगभग 13 वर्षों तक गुरुगद्दी पर विराजमान रहे थे।

श्री गुरु अंगद देव जी को भाई लेहणा जी के नाम से भी संबोधित किया जाता था। आप देवी के उपासक थे और प्रत्येक वर्ष देवी के मंदिरों की यात्राएं करते रहते थे, जब आप ने भाई जोध जी से श्री गुरु नानक देव जी के मुखारविंद से उच्चारित निम्नलिखित वाणी का श्रवण किया-

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ।।
मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ।।
(अंग क्रमांक 474)

अर्थात जब अपने किये कर्मों का फल आप ही भोगना है तो फिर हम बुरे कर्म क्यों करें? बुरे कर्म कदापि नही करना चाहिये, दूर दृष्टि से बुरे कर्मों के नतीजों को ध्यान में रखना चाहिये। तो आप का मन इस गुरबाणी से अत्यंत प्रभावित होकर निहाल हो गया था और आप श्री गुरु नानक देव की शरण में आ गये, शरण में आते ही आप को ऐसे आभास हुआ की जैसे हिमालय पर्वत के समीप जाने से स्वयं ठंडक प्राप्त होती है, जैसे दिये के समीप जाने से स्वयं प्रकाश की प्राप्ति होती है, जैसे खिले हुए फूलों के समीप जाने से खुशबू की प्राप्ति होती है, एक जुड़ी हुई आत्मा, एक रसिक आत्मा, एक शीतल आत्मा के समीप जाकर और उनका सानिध्य प्राप्त किया जाये तो स्वयं से शीतल होकर ह्रदय को असीम शांति प्राप्त होती है और गुरु साहिब जी के सुंदर उपदेश एवं वाणियों को श्रवण करने पर आप को असीम शांति प्राप्त हुई थी एवं आप ने अपने शेष जीवन को श्री गुरु नानक देव जी की सेवा में समर्पित कर दिया था। आप भी अपनी समर्पित सेवाओं के कारण श्री गुरु नानक देव जी के अत्यंत निकटवर्ती सिख बन गए थे। श्री गुरु नानक देव ने भाई लेहणा जी के आभामंडल पर उस छुपी हुई चिंगारी को चिन्हित कर लिया था, जो भविष्य में आध्यात्मिक मंडल का शोला बन सकती थी। श्री गुरु नानक देव जी ने आप को कई कसौटियों परखा था, प्रत्येक व्यक्ति को कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है, प्रत्येक वस्तु को, प्रत्येक वस्तु को परखने के लिये निश्चित ही कसौटी का पैमाना होता है, भक्त कबीर जी का फ़रमान है-

कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ।।
राम कसउटी सौ सहै जो मरजीवा होइ।।
(अंग क्रमांक 948)

अर्थात है कबीर! राम की कसौटी ऐसी है कि कोई भी झूठा आदमी उस पर टिक नहीं सकता है। जो मरजीवा (जीवन मुक्त) होता है, वह ही राम की कसौटी पर खरा उतरता है अर्थात कसौटी पर उतरने वाला ही कुंदन है, कंचन है, पावन है और वह ही पवित्र है। निष्काम सेवा में समर्पित भाई लेहणा जी ने प्रत्येक कसौटी की परीक्षा को प्रवीणता से पास किया था। श्री गुरु नानक देव साहिब जी अत्यंत प्रसन्न हुए थे और आप जी को श्री गुरु अंगद देव साहिब जी के रूप में सुशोभित कर 18 सितंबर सन् 1539 ईस्वी. को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर, गुरता गद्दी बक्शीश की थी| श्री गुरु नानक देव साहिब जी 22 सितंबर सन् 1539 ईस्वी. को ज्योति-ज्योत समा गए थे| श्री गुरु नानक देव साहिब जी' शारीरिक रुप से ब्रह्मलीन हो गये थे परन्तु ज्योत के रूप में आप जी भाई लेहना जी में लीन हो गये थे, श्री गुरु नानक देव साहिब जी की ज्योत जब भाई लेहना जी में समा गई तो भाई लेहना जी श्री गुरु अंगद देव साहिब जी में रूपांतरित हो गये थे अर्थात ज्योत तो वह ही है, महल बदल गया है, ठिकाना बदल गया है, घर बदल गया है, जीवन जीने की युक्ति वह ही है, प्रकाश भी वह ही है, केवल चोला बदल गया था।

श्री गुरु नानक देव साहिब जी के ज्योति-ज्योत समाने के पश्चात आप जी ने उन्हीं के मार्ग का अनुसरण कर सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये खडूर साहिब नामक स्थान को अपना मुख्य केंद्र बनाया था| जात-पात को दूर कर, मानवता के कल्याण के लिए आप जी के द्वारा अनेक परोपकारी सेवाओं को अंजाम दिया गया था| आप जी ने लंगर (भोजन प्रसादी) की प्रथा को कायम रखकर, इस प्रथा का उत्तम प्रचार-प्रसार किया| स्वयं गुरु के महल माता खीवी जी अपने कर-कमलों से इस महान सेवा को समर्पण के भाव से कर रही थी| इस लंगर सेवा में जात-पात के भेद को मिटा कर एवं सामाजिक सद्भावनाओं के लिए सभी श्रद्धालुओं को एक ही पंगत में एक साथ बैठाकर लंगर छकाया जाता था| माता खीवी जी द्वारा लंगर की सेवा के संबंध में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अंकित है-

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली।।
लंगरि दउलत वंडीऐ इसु अंम्रित खीरि घिआली।।
(अंग क्रमांक 967)

अर्थात भक्त बलवंत जी फरमाते है कि श्री गुरु अंगद देव जी की पत्नी (गुरु के महल) माता खीवी जी बहुत ही भली स्त्री है, जिसकी छाँव पत्राली (पत्तों की छांव) की तरह घनी है अर्थात उनके समीप बैठने से सभी सुख और शांति प्राप्त होती है। माता जी की देखरेख में गुरु के लंगर में घृत युक्त (घी वाला) खीर वितरित की जाती है, जिसका स्वाद अमृत के समान मीठा होता है। अपने सिख श्रद्धालुओं की शारीरिक तंदुरुस्ती उत्तम बनी रहे इसलिए आप ने कई मल्ल अखाड़ों का भी निर्माण किया था। सिखों के स्वर्णिम इतिहास से स्पष्ट है कि हिंदुस्तान का बादशाह हुमायूँ जब शेर शाह सूरी से पराजित होकर लाहौर की और भाग रहा था तो गुरु पातशाह जी की ख्याति सुनकर वो श्री गुरु अंगद देव जी से मिलने खडूर साहिब चला गया था, उस समय में गुरु साहिब मल्ल अखाड़े में अपने सिखों के कुश्ती के कारनामों को देख रहे थे और गुरु साहिब जी ने हुमायूँ की उपस्थिति को नजरअंदाज किया था जिससे हुमायूँ ने क्रोधित होकर अपनी तलवार बाहर निकाल ली थी तो गुरु साहिब जी ने मुस्कुराकर वचन किये कि यह तलवार जब शेर शाह सूरी से युद्ध हो रहा था, तब कहाँ थी? अब संतो को तलवार दिखाने का क्या लाभ है? गुरु साहिब के इन वचनों से हुमायूँ अत्यंत शर्मिंदा हुआ और उसने नतमस्तक होकर गुरु पातशाह जी के उपदेशों को ग्रहण कर, स्वयं के जीवन को कृतार्थ कर, उसने अपने हृदय को शांत किया था।

श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा रचित 62 श्लोकों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 'महला 2' के नाम से संग्रहित किया गया। श्री गुरु अंगद देव जी के द्वारा रचित वारां में सत्य-असत्य के संघर्ष को चित्रित किया गया। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने कार्यकाल में गुरूमुखी लिपि का विकास कर उसे प्रामाणिक रूप से प्रस्तावित किया था और समस्त गुरबाणी की रचना गुरूमुखी लिपि में की थी।

सही मायनों में लिपि धर्म का एक प्रमुख मापदंड होती है। आप ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वाणियों और स्वयं के द्वारा रचित वाणियों को एक पोथी के स्वरूप में संग्रहित कर, अपने भविष्य के उत्तराधिकारी 63 वर्षीय श्री गुरु अमरदास साहिब जी को सौंप दी थी। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने सिखों को सेवा और हुकुम के आगे पूर्ण समर्पण की शिक्षा प्रदान की थी।

श्री गुरु अंगद देव जी के समकालीन शासक हुमायूँ (सन् 1530 से 1540 ई.) तक,शेरशाह सूरी (सन् 1542 से 1545 ई.) एवं इस्लाम शाह (सन् 1545 से 1553 ई.) तक थे। आप ने सिख धर्म के तीसरे गुरु के रूप में श्री गुरु अमरदास साहिब जी को सुशोभित किया था और उन्हें गोइंदवाल साहिब जी नामक स्थान पर जाकर धर्म के प्रचार-प्रसार करने का आदेश दिया था। श्री गुरुअंगद देव जी 29 मार्च सन् 1952 ई. में श्री खडूर साहिब सुबा पंजाब नामक स्थान पर ज्योति-ज्योति समा गये थे।

श्री गुरु अमरदास साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री गुरु नानक देव साहिब जी की ही ज्योति सिख धर्म के तीसरे गुरु श्री गुरु अमर दास जी का आविर्भाव (प्रकाश) 5 मई सन् 1479 ई. में ग्राम बासरके जिला अमृतसर सूबा पंजाब नामक स्थान पर हुआ था। सेवा और समर्पण के प्रतीक श्री गुरु अमरदास जी के पिता जी का नाम भाई तेजभान जी था और माता जी का नाम माता लक्खो जी (सुलखनी जी) था। आप का परिणय बंधन (आनंद कारज) भाई देवी चँद जी की पुत्री बीबी मनसा देवी जी से संपन्न हुआ था। आप के 2 साहिबजादे बाबा मोहन जी एवं बाबा मोहर जी थे, साथ ही आप की 2 साहिबजादी (पुत्री) बीबी दानी जी एवं बीबी भानी जी भी थी।

श्री गुरु अंगद देव जी की साहिबजादी बीबी अमरो जी का परिणय बंधन (आनंद कारज) भावी श्री गुरु अमरदास साहिब जी के भ्राता माणिक चंद जी के पुत्र अर्थात भतीजे भाई जस्सू जी से संपन्न हुआ था। बीबी अमरो जी ब्रह्म मुहूर्त (अमृत वेले) की धारणी और अत्यंत मधुर, सुरीली एवं ऊंची आवाज में गुरबाणी का पाठ नित्य करती थी, एक दिन बीबी अमरो ने निम्नलिखित गुरबाणी के पद्य को अपने मुखारविंद से उच्चारण करते हुये वचन किये कि-

मारू महला 1 घरु 1 ॥

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए॥

जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे॥

चित चेतसि की नही बावरिआ॥

हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ॥ रहाउ॥

जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती॥

रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी॥

काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही॥

कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संनी् चिंत भई॥

भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा॥

एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा॥ (अंग क्रमांक 990)

अर्थात आचरण कागज एवं मन स्याही की दवात है और बुरा-भला दो प्रकार के कर्म तकदीर में लिखे हैं। हे परमेश्वर! तेरे गुणों का तो कोई अंत नहीं है, जैसे-जैसे कर्म करवाता है, वैसे ही चलना पड़ता है। हे बावले जीव! मन में परमात्मा को याद क्यों नहीं करता? भगवान को विस्मृत करने से तेरे गुण क्षीण हो जाते हैं। तुझे फँसाने के लिए रात्रि जाली और दिन जाल बना हुआ है, जितनी घड़ियाँ है, उतनी ही मुसीबतें है। तू नित्य स्वाद लेकर विषय-विकार रुपी दाना चुगता रहता है और फँसता जा रहा है। अरे मुर्ख! किस गुण से भला तेरा छुटकारा हो सकता है? शरीर एक भट्टी बना हुआ है, जिसमें मन लोहे के समान है और काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार रूपी पंचाग्नि इसे जला रही है।

पाप रूपी कोयले इसके ऊपर पड़े हुए हैं, यह मन जल रहा है और तेरी चिंता छोटी चिमटी बनी हुई है। यदि गुरु की शरण में आ जाए तो लोहा रूपी मन स्वर्ण हो सकता है। हे नानक! यदि वह तुझे नामामृत प्रदान कर दे तो तेरे शरीर में रहने वाला मन स्थिर हो सकता है।

बीबी अमरो जी के मुख से श्री गुरु नानक देव जी की दिव्य वाणी को सुनकर और प्रभावित होकर वैदिक धर्मावलंबी भावी गुरु श्री गुरु अमरदास साहिब जी अपने मन की तलब, प्राणों की खींच और आत्मा की लगन की पूर्ति हेतु श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में आये और उनके अंतर्मन ने सच की तलाश में एक महान उमंग को प्रकट किया था और अपना मस्तक अपने तथाकथित समधी और दो जहान के मालिक श्री गुरु अंगद देव जी के कदमों में रखकर, उन्हीं के हो गये। उस समय में भावी गुरु श्री गुरु अमर दास जी की आयु 62 वर्ष की थी एवं श्री गुरु अंगद देव जी की आयु केवल 36 वर्ष की थी। सेवा में समर्पित, समर्पण और सेवा के प्रति भावी गुरु श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने एक आदर्श शिष्य बनकर, लगभग 15 वर्षों तक प्रतिदिन व्यास नदी से अपने गुरु श्री गुरु अंगद देव जी के स्नान हेतु जल की गागर भर के लाते थे, एक रात को रात के दूसरे पहर में जब आप ब्यास नदी से जल की गागर भर कर लौट रहे थे तो रास्ते में झोपड़ी में रहने वाले जुलाहे ने शोर सुनकर जोर से कहा इतनी रात को कौन है? तो उसकी जुलाहन ने उत्तर दिया होगा वो ही अमरो निथावां! ऐसे महान सेवा की मूर्ति और सिमरन के पुंज अमरु निथावां के हृदय में श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति ने जब प्रवेश किया तो आप श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में परिवर्तित हो गये थे! **आप निथावां की थां, निमाणिआं के माण, निताणिआं के ताण, निओटिआं की ओट, निआसरिआं के आसरे, निगतिआं की गत, निपत्तिआं की पत्त, सर्व शक्तीमान, दो जहान के मालिक के रूप में, लोक-कल्याण और परोपकार करने हेतु गुरु गद्दी पर विराजमान हुए थे।** श्री गुरु अंगद देव जी ने आपको ब्यास नदी के किनारे एक नए नगर श्री गोइंदवाल साहिब जी को बसाने की हिदायत दी थी और आप ने गुरु पातशाह जी की हिदायत को सम्मान देकर गोइंदवाल साहिब जी नामक शहर को बसा कर, इस शहर को सिख धर्म के प्रमुख प्रचार-प्रसार केंद्र के रूप में निरूपित किया था। आप को श्री गुरु अंगद देव ने 29 मार्च सन् 1552 ई. को खडूर साहिब नामक स्थान पर, गुरु गद्दी पर सुशोभित किया था। आप भी सन् 1552 ईस्वी से लेकर सन् 1574 ई. तक अर्थात 22 वर्षों तक गुरु पद पर विराजमान रहे थे।

गुरु गद्दी पर आसीन होते ही धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में क्रांति करने हेतु, श्री गुरु अमरदास जी ने अपने कार्यकाल में प्रचलित लंगर की प्रथा को बहुआयाम देकर उस समय में जात-पात और छुआछूत को जड़ से समाप्त कर दिया था। राजा और रंक एक हो गये, गरीबी और अमीरी की दीवार को आप ने तोड़ दिया था। गुरु दरबार में हाजिर होने से पूर्व प्रत्येक श्रद्धालु को पंगत में बैठकर लंगर छकना (भोजन प्रसाद ग्रहण करना) अनिवार्य था, ऐसा आदेश आप ने पारित किया था ताकि जात-पात और भेदभाव के ग्रहण को समाज में से मिटाया जा सके। आप ने गुरबाणी में फ़रमान किया है-

जाति का गरबु न करि मूरख गवारा।।
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा।।1।।रहाउ।।
(अंग क्रमांक 1127)

अर्थात मूर्ख! गवार, जात का गर्व मत कर, इस गर्व के कारण अनेक विकारों में वृद्धि होती है।।1।। रहाउ।।

श्री गुरु अमरदास साहिब जी के वचनों का सम्मान करते हुए उस समय में शहंशाह अकबर जलालुद्दीन ने भी गुरु दरबार में हाजिर होने से पूर्व पंगत में बैठकर लंगर को ग्रहण कर स्वयं का जीवन सफल किया था।

मुगल-ए-आजम शहंशाह अकबर ने इस प्रथा से प्रभावित होकर विस्मय बोध में आकर कुछ जागीरें भेंट करने का गुरु पातशाह जी के समक्ष प्रस्ताव रखा था, गुरु पातशाह जी ने बड़ी दृढ़ता और प्यार से इस प्रस्ताव को ना मंजूर कर दिया था एवं वचन किए थे कि गुरु का लंगर जागीरों से नही अपितु परमात्मा की बक्शीश और सिखों की नेक किरत-कमाई से ही चलता है।

उस समय में सती प्रथा अपने चरम सीमा पर थी जिसका की श्री गुरु अमरदास जी ने डटकर विरोध किया और हुकूमत से इस प्रथा को बंद करने के लिए फ़रमान भी जारी करवाया था। आप ने अपनी पुरजोर आवाज को बुलंद कर फ़रमान किया कि--

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंनि्।।
नानक सतीआ जाणीअनि् जि बिरहे चोट मरंनि्।।
(अंग क्रमांक 787)

अर्थात उन स्त्रियों को सती नहीं मानना चाहिए जो पति की लाश के साथ जल कर मरती हैं। हे नानक! दरअसल वह ही स्त्री सती कहलाने की हकदार है, जो अपने पति के वियोग के दुख से मर जाती है।

आप ने घुंघट (पर्दा प्रथा) को भी बंद करवाया था। उस समय में बाल विधवाओं को दूसरा विवाह करने की इजाजत नहीं थी, इन बाल विधवाओं को तां उम्र तड़प कर, रो-रो कर, तन्हा रहकर जीवन व्यतीत करना पड़ता था। इन बाल विधवाओं का जीवन नर्क में जीवन बिताने के समान, जीवन व्यतीत करना पड़ता था। बाल विवाह के पुनर्विवाह हेतु आप ने विशेष सामाजिक उपक्रमों को आयोजित कर, बाल विधवाओं को बसाने का महत्वपूर्ण कार्य किया था इन बाल विधवाओं की दोजख भरी जिंदगी को आप ने स्वर्ग में/जन्नत में परिवर्तित करने का अभूतपूर्व प्रयास किया था। आप ने अपने कार्यकाल में विधवा विवाह की प्रथा को प्रारंभ किया था एवं उस समय में मृत्यु के पश्चात होने वाली समस्त कर्मकांड की बुराई वाली रस्मों को भी आप जी ने अग्रणी रहकर समाप्त करवाया था। गुरु पातशाह जी के द्वारा स्त्रियों के जीवन में बहुआयामी सुधार लाकर, बहुत बड़े परोपकार का कार्य किया गया था। आप ने मानवता का संदेश देकर सभी को एक परमपिता-परमेश्वर की संतान माना एवं जात-पात के भेद को समाप्त कर दिया। उस समय में गोइंदवाल साहिब नगर में स्वच्छ पीने का पानी मुहैया कराने हेतु आपने एक बावड़ी भी बनवाई थी, 84 सीढ़ियों वाली यह बावड़ी वर्तमान समय में भी मौजूद है। उस समय में हिंदू तीर्थ यात्रियों पर 'जजिया' नामक कर हुकूमत के द्वारा लगाया जाता था जिसे आप ने अपने विशेष प्रयासों से समाप्त करवाया था।

श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने सिख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उस समय में 22 मंजियाँ (आसान) स्थापित किये थे और इन 22 मंजियों (आसनों) पर एक-एक प्रमुख प्रचारक की नियुक्ति की थी एवं इन 22 मंजियों (आसनों) के मुखियाओं के अधीन 52 पेढ़ीयों की स्थापना कर, प्रचारकों की नियुक्ति की थी, विशेष इन धर्म प्रचारकों में स्त्रियों को भी सम्मान पूर्वक स्थान दिया गया था। इन प्रचारकों के कारण सिखी का बूटा प्रफुल्लित हुआ और सिख धर्म का विद्युतिय वेग से प्रचार-प्रसार हुआ था। हिंदू धर्मीयों और मुस्लिम धर्मीयों ने भी सिख धर्म को ग्रहण कर, गुरु जी के सिख बन गये थे। अफगानिस्तान निवासी व्यापारी अल्लाह यार खान ने भी सिख धर्म को ग्रहण किया था, जिसे बाद में गुरु पातशाह जी ने एक मंजी (आसन), सिख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए बक्शीश की थी।

श्री गुरु अमरदास जी ने परिणय बंधन (विवाह) करते समय, अपने होने वाले साथी के प्रमुख गुणों को सम्मुख रखने का उपदेश दिया था। आप ने अपनी साहिबजादी (पुत्री) बीबी दानी का विवाह (आनंद कारज) भाई रामा नामक एक साधारण से इंसान से संपन्न किया था। एवं अपनी दूसरी साहिबजादी पुत्री बीबी भानी जी का विवाह (आनंद कारज) चने बेचने वाले अनाथ गबरु जवान भाई जेठा जी (भावी श्री गुरु रामदास जी) से संपन्न किया था।

श्री गुरु अमरदास जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 'महला 3' के नाम से 18 रागों में 907 पद्य संग्रहित हैं। आप के द्वारा वारां जिनका नाम गुजरी, सूही, रामकली और मारु है, इन वारांओं को आप ने रचित किया गया है। आप की प्रमुख बाणीयां आनंद साहिब जी और पट्टी है। आप के समकालीन शासक शहंशाह अकबर जलालुद्दीन (सन् 1556 ई. से लेकर सन् 1605 ई. तक) थे।

आप ने अपने सिखों को उपदेश करते हुए वचन किये कि समस्त समस्याओं का समग्र समाधान एक है! जो एक से नहीं जुड़ा, वह एकता को जन्म नहीं दे सकता है, फिर तो अनेकता बनी रहेगी। अनेकता में दुख है, अनेकता में अंधेरा है, अनेकता में दोजख है। एक स्वर्ग है, एक प्रकाश है, एक रोशनी हैं, एक में जीना आनंद में जीना है, अनेकता में जीना दुख में जीना है, अनेकता अंधकार में धकेलती है, एकता प्रकाश में विलीन करती है, जीवन का मुजस्मा है एकता! रस का स्वरूप है एकता! गुरबाणी में अंकित है-

तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ इकु करि इकु पछाणिओ।।
(अंग क्रमांक 1394)

अर्थात है गुरु अमरदास! आप ने एक परमेश्वर का ही मनन किया, मन में एक ओंकार का ही चिंतन किया, केवल एक परम-परमेश्वर को ही माना है।
गुरबाणी का फरमान है-

एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक।।
बिनु बुझे तूं सदा नापाक।। (अंग क्रमांक 374)

अर्थात यदि तुम एक नाम रुपी वस्तु का बोध कर लोगे तो तुम पवित्र जीवन वाले हो जाओगे। प्रभु नाम की सूझ के बिना तुम सदैव ही नापाक हो, अनेकता क्षणभंगुर है, नाश है परंतु एक निश्चल है, सदैव है, जो एक से जुड़ जाता है, सदैव हो जाता है अमरत्व को प्राप्त हो जाता है, परम तत्व को प्राप्त हो जाता है, श्री गुरु अमरदास जी की जहाँ तक दृष्टि गई, वहाँ तक आप ने केवल एक को ही देखा। आप के इन्हीं उपदेशों ने गुरुसिखों को आदर्शवादी बनाया।

श्री गुरु अमरदास साहिब जी भावी श्री गुरु रामदास जी की प्रेमा भक्ति और सेवा से अत्यंत प्रभावित हुए थे, आप ने भावी गुरू, श्री गुरु रामदास जी को अपनी कई का कसौटियों पर परखा था, भावी गुरु, श्री गुरु रामदास जी ने इन सभी कसौटियों की परीक्षाओं को प्रवीणता से पास किया था। श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने श्री गुरु रामदास जी को अपना गुरु गद्दी का भविष्य का उत्तराधिकारी घोषित किया एवं आप 3 सितंबर सन् 1574 ई. को गोइंदवाल साहिब सुबा पंजाब में श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति में ज्योति-ज्योति समा गये थे।

श्री गुरु रामदास साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ।।
बधोहु पुरखि बिधातै ताँ तू सोहिआ।।(अंग क्रमांक 1362)

सिख धर्म के चौथे गुरू, श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति श्री गुरु रामदास जी रुहे ज़मीं पर, महापुरुषों की दुनिया में एक अवतारी गुरु हुये है, आप का आविर्भाव (प्रकाश) 25 सितंबर सन् 1534 ई. को चुना मंडी लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ था। सोढ़ी कुल में जन्मे श्री गुरु रामदास जी अपने माता-पिता की प्रथम संतान और परिवार में ज्येष्ठ होने के कारण आप को भाई जेठा जी कहकर संबोधित किया जाता था। आप की आयु जब 7 वर्ष की थी तो आप के जीवन में एक बड़ा वज्रपात हुआ और आप के माता-पिता जी का देहांत हो गया था। आप के पिता जी का नाम भाई हरिदास जी एवं माता जी का नाम माता दया कौर जी (बीवी अनूपी जी) था, भविष्य के पालन-पोषण हेतु आप की नानी जी आप को उनके नौनिहाल बासरके नामक ग्राम में ले आई थी। आप अपनी आयु के 9 वें वर्ष में श्री गुरु अमरदास साहिब जी के सानिध्य में आ गए थे और गुरु पातशाह जी की मेहर दृष्टि के कारण आप का ह्रदय प्रेम के रंग में सराबोर होने लगा था, दिन-प्रतिदिन आध्यात्मिक आभा मंडल की उन्नति होने लगी थी, आप की गिनती उनके प्रमुख सिखों में होने लगी थी, उस समय में आप घुंगणिआँ (चने) बेचने का व्यवसाय करते थे और जीवन के शेष समय में आप श्री अमरदास जी की सेवा में समर्पित रहते थे। आप के लिए गुरु का हुकुम सर्वोपरि था। भविष्य में आप नये बसे हुए नगर गोइंदवाल साहिब जी में स्थानांतरित हो गए थे।

श्री गुरु रामदास जी की सेवा और प्रेमा भक्ति पर प्रसन्न होकर श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी का विवाह (आनंद कारज) आप के साथ संपन्न किया था। गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुये, बीबी भानी जी की कोख से आप को 3 सुपुत्र रत्न बाबा पृथ्वी चँद जी, बाबा महादेव जी, और भावी श्री गुरु अर्जुन देव जी की प्राप्ति हुई थी। एक दिन गुरु पातशाह जी ने अपने दामाद भाई जेठा जी से कहा कि आपने हमसे दहेज में कुछ मांगा नहीं है, यदि आपको कुछ हमसे मांगना है, तो मांग लो? उस समय में आप ने जो गुरु पातशाह जी से जो मांग की थी, उसे गुरबाणी में इस तरह अंकित किया गया है--

हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो।।
हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो।।(अंग क्रमांक 78)

अर्थात है मेरे बाबुल! मुझे दहेज में हरि प्रभु के नाम का दान दो, वस्त्रों के स्थान पर हरि का नाम दो और शोभा बढ़ाने वाले आभूषणों इत्यादि के स्थान पर प्रभु का नाम ही दो, उस प्रभु के नाम से मेरा गृहस्थ जीवन संवर जायेगा।

आप ने दुनियावी रिश्तों को तवज्जो ना देकर स्वयं को पूर्णतया सेवा कार्यों में समर्पित कर दिया था। जब गोइंदवाल शहर में बावड़ी (बाउली) के भव्य निर्माण का कार्य चल रहा था तो आप ने स्वयं के कर-कमलों से आगे रहकर, इस सेवा में हिस्सा लेते थे। आप की निष्काम सेवाओं से प्रसन्न होकर श्री गुरु अमरदास साहिब जी कि आप पर विशेष आसक्ती थी। आप ने स्वयं को सिख धर्म की समस्त सेवाओं के लिए ढाल लिया था। श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने आप को कई कसौटियों पर परखा था और आप ने प्रत्येक कसौटी की परीक्षा को प्रवीणता से पास किया था, श्री गुरु अमरदास जी ने आप को एक नए नगर का निर्माण करने का आदेश दिया और इस आदेशानुसार आप ने गुरु पातशाह जी के स्वप्नों और संकल्पों को साकार करना प्रारंभ कर दिया था। आप ने 'गुरु का चक' नाम के नगर का निर्माण किया और इस स्थान पर एक सरोवर का भव्य निर्माण किया, वर्तमान समय में इस सरोवर को श्री अमृतसर नाम से संबोधित किया जाता है एवं यहीं 'गुरु का चक' पश्चात श्री अमृतसर शहर के नाम से सुप्रसिद्ध है, जो कि सिख धर्म की श्रद्धा, आस्था और प्रेमा भक्ति का एक महान पावन - पुनीत केंद्र है। आप के सेवा कार्यों की प्रसिद्धी चारों दिशाओं में फैल चुकी थी, आप की उपमा में भाटों (भट्ट) ने गुरूबाणी में अंकित किया है-

जनकु सोइ जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ।।
सतु संतोखु समाचरे अभरा सरु भरिआ।।
अकथ कथा अमरा पुरी जिसु देइ सु पावै।।
इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणि आवै।।
(अंग क्रमांक 1398, भाट कलसहार के 13 सवैये संपूर्ण)

राजा जनक वह ही है, जिसने परम सत्य को जाना है और वृत्तीय को तुरीय पद में स्थापित किया है। सत्य-संतोष को अपनाया और खाली मन को नाम से भर दिया। अकथनीय कथा उसे प्राप्त होती है, जिसे ईश्वर देता है और वह ही पाता है। यह जनक जैसा राज आप ही को शोभा देता है।

श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने 16 सितंबर सन् 1574 ई. को भरे दरबार में समूह संगत और अपने परिवार के सामने श्री गुरु रामदास जी को गुरु गद्दी पर सुशोभित किया था और उस समय तक एकत्र सभी गुरुओं की वाणियों और भक्तों की वाणियों को आप ने श्री गुरु रामदास जी को सौंप दी थी। श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने श्री गुरु रामदास जी के समक्ष नतमस्तक हो कर, गुरु गद्दी सौंपी थी, उस समय में आप वैराग्य में आकर बोल उठे की है गुरु पातशाह जी! आप स्वयं जानते हैं कि मैं गरीब तो लाहौर की गलियों में सूखे पत्ते की तरह इधर-उधर कचरे के ढेर में पड़ा रहता था, मेरे अनाथ की कोई बाँह पकड़ने वाला नहीं था, गुरु पातशाह जी यह तो आपकी ही मेहर है कि मेरे जैसे कीड़े को प्यार से देखा और सहारा देकर आज 'फर्श से अर्श' तक पहुँचा दिया। आप सन् 1574 से लेकर सन 1581 तक, 7 वर्षों तक गुरु स्थान पर विराजमान रहे थे।

अपने कार्यकाल में सिख धर्म के चहुँमुखी प्रचार-प्रसार के लिए आप ने 22 मंजियों (आसनों) के अतिरिक्त मसंदों की प्रथा को कायम किया था, इन मसंदों ने सिख धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना विशेष योगदान अर्पित किया था। आप ने अमृतसर शहर को एक व्यवसाय केंद्र में तब्दील करने के लिये अलग-अलग 52 कार्य क्षेत्रों में रोजगार के साधनों को उपलब्ध कराने हेतु योजनाबद्ध तरीके से विशेष प्रयास किए थे।
आप ने सन् 1577 ई. में अमृतसर सरोवर का भव्य निर्माण प्रारंभ किया था, इस निर्माण कार्य को श्री गुरु अर्जुन देव जी ने अपने कार्यकाल में संपन्न किया था। इसके अतिरिक्त अमृतसर शहर का विकास, रामसर और संतोखसर सरोवरों के निर्माण में भी आप का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सिख धर्म के इस प्रमुख तीर्थ का भव्य निर्माण कर श्री गुरु रामदास जी ने जो जगत् को दिया है, वाकई इस तरह का तीर्थ रुहे ज़मीं पर ना बना है और ना ही बनेगा। इस महान तीर्थ की शोभा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी में अंकित है–

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ।।
बधोहु पुरखि बिधातै ताँ तू सोहिआ।।
(अंग क्रमांक 1362)

हे गुरु राम दास जी की नगरी! मैंने सब स्थानों को देखा है लेकिन तेरे जैसी कोई नगरी नहीं है, दरअसल कर्ता पुरुष, विधाता ने स्वयं तुझे बनाया है, तो ही तू शोभा दे रही है। इस तरह का महान तीर्थ स्थान श्री गुरु रामदास जी ने बक्शीश किया है पश्चात यह तीर्थ स्थान बक्शीशे दे रहा है। लोक-कल्याण और परोपकार के लिये जो तामीरी रुचि श्री गुरुरामदास जी ने आत्मसात की थी, वो ही तामीरी रुचियां सिख श्रद्धालुओं में विशेष रूप से पाई जाती है, जैसे कि- धर्मशालाओं का निर्माण करना, लंगर लगाना, अस्पताल और विद्यालयों का निर्माण करना, गुरू धामों की उसारी (भव्य निर्माण) करना इत्यादि। इन बख्शीशों को, इन रहमतों को सिख श्रद्धालुओं ने श्री गुरु रामदास जी से प्राप्त की है उनके द्वारा प्रदान की गई प्रेरणाओं का ही परिणाम है कि सिख संगत में यह रुचियां वर्तमान और भविष्य में भी प्रबल रूप से उजागर होती रहेगी।

इन तामीरी रुचियों के कारण ही गुरु पातशाह जी ने अमृतसर शहर में आरामगाह बनवायी, लंगर-पानी का इंतजाम किया है ताकि आये हुये तीर्थयात्रियों को सच की सोच और समझ पड़ सकें, उस अकाल पुरख की बँदगी कर सकें, इसलिए सुबह-शाम सत्संग और कीर्तन के प्रवाह का लंगर आठों पहर चलाया। श्री गुरु नानक देव जी की यह चौथी ज्योति श्री अमृतसर साहिब जी में जगमगाती रही और जगत को प्रकाश देकर रोशन करती रही, जगत को आनंद की अनुभूति करवाती रही, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी 'आसा दी वार' के छंद और पद्यों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आप सच का बोध रखते थे, अनुभव रखते थे, इन वाणियों की रचना से प्रतीत होता है कि आप का ह्रदय प्रेमा रस से सराबोर है। ज्ञान की गंगा का प्रवाह आप के अंतकरण में हो रहा है, आप इतने महान और परोपकारी थे कि सत्ता और बलवंडा नामक भाटों ने ने आप की उपमा को गुरबाणी में इस तरह अंकित किया है-

धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ।।
पूरी होई करामति आपि सिरजणहारै धारिआ।। (अंग क्रमांक 968)

अर्थात हे गुरु रामदास! तू है, जिस ईश्वर ने तेरी रचना की है उसने ही तुझे यश प्रदान किया है, उस सर्जनहार और परमेश्वर की करामात तुझे गुरु रूप में सुशोभित करके पूरी हो गई है।

श्री गुरु रामदास जी के 'महला 4' के नाम से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 30 रागो में 679 पद्य संग्रहित हैं। आप ने अपनी रचनाओं में वाराओं को रचित किया है जिनके नाम- श्री राग, गउड़ी राग, वडहंस राग, सोरठ राग, बिलावल राग, सारंग राग और कानड़ा राग में अंकित है। आप की वाणी जीवात्मा-परमात्मा संबंधी अद्वैत दर्शन से प्रेरित है, आप के द्वारा रचित चार लावा (विवाह के फेरे) की वाणी अत्यंत प्रसिद्ध है, लावा फेरों की बाणी में आप ने जीवात्मा और परमात्मा के मिलन का अद्भुत वर्णन किया है। घोड़ीयां और अलाहणीयां नामक बाणी भी आप के द्वारा रचित की गई, आप के समकालीन शासक शहंशाह अकबर जलालुद्दीन (सन् 1556 ई. से सन् 1605 ईस्वी, तक) थे।

गुरबाणी के महान ज्ञाता श्री गुरु रामदास जी के सम्मान में भाटों ने अरदास (प्रार्थना) की थी, जिसे गुरबाणी में इस तरह अंकित किया है-

हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अंम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई।।
माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई।।
इकु उत्तम पंथु सुनिओ गुर संगित तिह मिलंत जम त्रास मिटाई।।
इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई।।
(अंग क्रमांक 1406)

अर्थात हे सतगुरु रामदास पातशाह जी! हम जीव अवगुणों से भरे हुये है, हमारे में एक भी गुण नहीं है, नामा कीर्तन अमृत को छोड़कर हम केवल विषय-वासनाओं का जहर सेवन कर रहे हैं। माया मोह के भ्रम में भ्रष्ट हो गये है, पुत्र एवं पत्नी के प्रति प्रीत लगाई हुई है। हम सुनते हैं कि गुरु की संगत मोक्ष का एक उत्तम रास्ता है, जिस के संपर्क से मौत का भय मिट जाता है। भाट किरत केवल यही अरदास (प्रार्थना) करते हैं कि हे गुरु रामदास! हमें अपनी शरण में रख लो।

श्री गुरु रामदास जी को अपने महाप्रयाण (ज्योति-ज्योति) के समय का आभास होने पर, आप ने अपने कनिष्ठ पुत्र श्री गुरु अर्जुन देव जी को अपना भविष्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया और पंचम गुरु के रूप में गुरु गद्दी पर सुशोभित कर, आप 2 सितंबर सन् 1581 ई. को गोइंदवाल साहिब जी में श्री गुरु नानक देव की ज्योति में ज्योति-ज्योत समा गये थे।

वर्तमान समय में भी अमृतसर शहर की गलियों में गुरु रामदास साहिब जी की प्रेमा भक्ति की सुनामी मौजूद है, दरबार साहिब के परिसर में गुरु पातशाह जी के द्वारा रचित जीवात्मा और परमात्मा की वाणियों की लहर मौजूद है। समूची दुनिया से जब तीर्थयात्री यहां पहुंचते हैं तो महसूस करते हैं कि जो सुख और चैन यहाँ पर मिलता है, दुनिया के किसी कोने पर नहीं मिलता। इस स्थान पर प्रभु की महिमा के कीर्तन का अखंड प्रवाह चल रहा है इसलिये तो यह स्थान कहलाता है, गुरु रामदास पुर! गुरु का चक! श्री अमृतसर! श्री गुरु रामदास जी की यह महान बक्शीश संपूर्ण संसार में बक्शीश बाट रही है, रहमते बाट रही है, ज्ञान बाट रही है, आनंद की अनुभूति बाट रही है, जब भी कोई तीर्थ यात्री इस में शहर प्रवेश करता है तो वह स्वयं अपने मुख से प्यार भरी रसना को उच्चारित करता है, धन्य श्री गुरु राम दास साहिब जी! धन्य श्री गुरु रामदास साहिब जी! धन्य श्री गुरु राम दास साहिब जी!

श्री अर्जुन देव साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

तेरा कीआ मीठा लागै॥ हरि नामु पदारथु नानकु माँगै॥

'श्री गुरु नानक देव साहिब जी' की ज्योति, सिख धर्म में शहादत की परंपरा की नींव रखने वाले प्रथम शहीद, शहीदों के सरताज, महान शांति के पुंज, गुरबाणी के बोहिथा (ज्ञाता/सागर), सिख धर्म के पांचवें श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी एक महान कवि, लेखक, देशभक्त, समाज सुधारक, लोकनायक, परोपकारी और ब्रह्मज्ञानी ऐसी अनेक प्रतिभा से संपन्न गुरु हुए हैं। आप का जीवन शक्ति, शील, सहजता, पराक्रम और ज्ञान का मनोहारी चित्रण था, सिख धर्म में गुरु जी के इस कार्यकाल को गुरमत का मध्यान्ह माना जाता है। आप ने शहादत का जाम पीते समय अपने शीश पर डाली गई गर्म रेत की तपस को सहजता से सहन किया, उबलती हुई देग (उबलते हुए पानी का बड़ा बर्तन) में उन्हें बैठाया गया और तो और तपते हुए तवे पर आपने बैठकर, उस अकाल पुरख के भाणे को मीठा मानकर, स्वयं शहादत प्राप्त कर ली परंतु अपने धर्म के उसूलों पर आंच तक नहीं आने दी थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी में अंकित है-

तेरा कीआ मीठा लागै॥ हरि नामु पदारथु नानकु माँगै॥
(अंग क्रमांक 394)

अर्थात हे प्रभु-परमेश्वर तेरे द्वारा किया हुआ प्रत्येक कार्य मुझे मीठा लगता है। है नानक! तुझसे तेरा यह भक्त हरिनाम रूपी पदार्थ की दात मांगता है। गुरु पातशाह जी ने इस अत्यंत कठोर सजा को भी उस अकाल पुरख की रिवायत मानकर दुनिया में 'शहीदों के सरताज' के रूप में एक अनोखी शहादत की मिसाल कायम की थी। श्री गुरु अर्जुन देव जी का प्रकाश (आविर्भाव) 15 अप्रैल सन् 1563 को गोइंदवाल की पवित्र धरती पर, गुरु बेटी माता भानी जी के कोख से हुआ था। आप को विरासत से गुरमत की दात प्राप्त थी, आप के पिता सिख धर्म के चौथे गुरु, श्री गुरु रामदास जी के द्वारा आप को शिक्षा-दीक्षा और धार्मिक संस्कारों की परिपक्वता प्राप्त हुई थी एवं आप के नाना सिख धर्म के तीसरे गुरु, श्री गुरु अमरदास साहिब जी थे। आप को श्री गुरु अमरदास साहिब जी से 'दोहिता बाणी का बोहिथा' अर्थात 'दोहता बाणी का ज्ञाता' के रूप में आशीर्वाद प्राप्त था, इस आशीर्वाद के कारण ही आप के भविष्य के अस्तित्व का संज्ञान नजर आ रहा था। आप ने अपना बचपना 11 वर्ष की आयु तक गोइंदवाल साहिब जी में निवास कर ही बिताया था। पश्चात आप अपने पिता श्री गुरु रामदास जी के साथ 'गुरु के चक' श्री अमृतसर साहिब जी में निवास हेतु आ गये थे, इसी निवास स्थान को 'गुरु के महल' के नाम से संबोधित किया गया है। (यही वह स्थान है, जहाँ सिख धर्म के नौवें गुरू, श्री गुरु तेग बहादुर जी का भविष्य में प्रकाश हुआ था), इसी स्थान से ही श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी की बारात निकली थी एवं ग्राम मऊ तहसील फिल्लौर के निवासी भाई संगत राय जी की सुपुत्री, 'गुरु पंथ खालसा' को अपनी महान सेवाएँ अर्पित करने वाली माता गंगा जी का साथ, जीवन संगिनी के रूप में प्राप्त हुआ था। साथ ही उस अकाल पुरख, वाहिगुरु जी की मेहर से आप को माता गंगा जी की कोख से महाबली योद्धा के रूप में संत-सिपाही सुपुत्र श्री गुरु हरिगोविंद जी की दात प्राप्त हुई थी।

श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी की अपने बड़े भाई पृथ्वी चँद से गृह कलह थी, पृथ्वी चँद ने येन-केन-प्रकारेण गुरु गद्दी को प्राप्त करने हेतु सभी प्रकार के नकारात्मक कार्यों को आप के विरुद्ध अंजाम दिये थे। भाई पृथ्वी चँद ने आप से सब कुछ लूट लिया था, एक समय ऐसा भी आया कि 3 दिनों तक लंगर (भोजन प्रसादी) मस्ताना रहा। जगत माता और आप की सुपत्नी ने सारा घर खोज के बड़ी मुश्किल से जैसे-तैसे घर में बचे हुए बेसन की दो रोटियां (प्रशादे) तैयार कर परोस दी और जब दो सुखे प्रशादे (रोटी) गुरु पातशाह जी के समक्ष परोसी तो माता गंगा जी की आंखों से आंसुओं की धाराएं बहने लगी थी,

उस समय में ब्रह्म ज्ञान के प्रतीक गुरु 'श्री अर्जुन देव साहिब जी ने अपनी पत्नी को संबोधित करते हुए वचन किये, जिसे गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी में इस तरह अंकित किया गया है–

रुखो भोजन भूमि सैन सखी प्रिअ संगि सूखि बिहात।। (अंग क्रमांक 1306)

हे सखी! अपने पति-प्रभु के साथ रूखा-सूखा भोजन एवं भूमि पर शयन इत्यादि ही सुखमय है, यदि भाई पृथ्वी चँद सब कुछ लूट कर ले गये तो क्या हुआ? इन सभी दातों को देने वाला मेरा वाहिगुरु मेरे अंग-संग सहाय है। उस अकाल पुरख वाहिगुरु जी को तो कोई लूट नहीं सकता, वह तो मेरे पास हमेशा ही है। आप अत्यंत धीरजवान, क्षमा की मूर्ति और निर्मलता की प्रतिमा थे। प्रभु के प्रति प्यार आपके रोम-रोम में पुलकित होता था। आप ने अपनी बाणी में अंकित किया है-

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता।।
हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता।। (अंग क्रमांक 96)

है अकाल पुरुख! यदि मैं तुझे एक क्षण भर भी नहीं मिलता तो मेरे लिए कलयुग उदय हो जाता है, हे मेरे प्रिय भगवंता! मैं तुझे अब कब मिलूंगा? यदि प्रभु-परमेश्वर का मिलाप हो तो सतयुग है और यदि बिछड़ना है तो कलयुग है!

श्री अर्जुन देव जी को 31 अगस्त सन् 1581 ई. को सिख धर्म के पांचवें गुरु के रुप में मनोनीत कर गुरु गद्दी पर सुशोभित किया था, श्री गुरू अर्जुन देव साहिब जी ने अपने संपूर्ण जीवन काल में इंसानियत के लिए अनेक समाज उपयोगी और धार्मिक कार्यों को अंजाम दिया था। 'गुरु का चक' (अमृतसर) शहर की उसारी (भव्य निर्माण) का कार्य श्री गुरु रामदास जी ने सन् 1570 में प्रारंभ किया था। इस निर्माण कार्य में श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया था। इस शहर की उसारी का कार्य सन् 1588 ई. को समाप्त हुआ था। उस समय में पीने के पानी की अत्यंत बड़ी समस्या थी, इस समस्या का निदान करने के लिए आप ने स्वयं अपने कर-कमलों से प्रथम संतोखसर सरोवर एवं पश्चात अमृतसर सरोवर का भव्य निर्माण सन् 1588 ई. में पूर्ण किया था। इस अमृतसर सरोवर के नाम के कारण ही इस शहर का नाम 'गुरु का चक' से बदल कर अमृतसर हो गया था। 15 अप्रैल सन् 1590 ई. में आप ने तरनतारन शहर की स्थापना कर, इस स्थान पर सरोवर का निर्माण करवाया था एवं कोढ़ से पीड़ित रोगियों के लिये उत्तम चिकित्सालय का निर्माण भी किया था। जालंधर शहर के समीप करतारपुर नामक शहर को भी बसाया था एवं ब्यास नदी के किनारे बसा हुआ शहर हरगोविंद पुर भी आपकी ही देन है। संगीत और कविता आप के रोम-रोम में समायी हुई थी कारण आप कीर्तन के रसिक और आशिक थे। सच जानना, जब कोई ह्रदय संपूर्ण रुप से परमात्मा की भक्ती में लीन हो जाता है तो अंतर्मन से स्वयं राग उद्बोधित है। जब परमात्मा के नाम-स्मरण की परम खूशी ह्रदय से प्राप्त होती है तो ह्रदय में स्वयं ही संगीत के झरनों का प्रवाह प्रस्फुटित होता है, विश्व का इतिहास गवाह है कि संगीत और साजों का अविष्कार संत-महात्माओं ने किया है। आप ने सिरंदा नामक साज का स्वयं अविष्कार किया था और आप को सिरंदा साज बजाने में महारत हासिल थी। निश्चित ही आप गीत और संगीत की अद्भूत प्रतिमा थे। आप के द्वारा रचित बाणियां: सुखमनी साहिब जी, बावन अखरी,बारह माहा, गुणवंती ते दिन रैन, वारा: 6 गउड़ी, जैतसरी, रामकली मारु और बसंत राग में है।

आप के समकालीन शासक शहेनशाह अकबर (सन् 1556 ई.-सन 1605 ई.), शहेनशाह जहाँगीर (सन् 1605 ई.-सन् 1626 ई.) थे। प्राप्त सिख इतिहास के स्रोतों के अनुसार उस समय में आप ने अपने सिखों को घोड़ों के आयात-निर्यात व्यवसाय करने हेतु प्रोत्साहित किया था।

संपूर्ण कायनात के श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संपादन सिख धर्म के संस्थापक प्रथम गुरु, श्री गुरु नानक देव जी से ही प्रारंभ हो चुकी थी। श्री गुरु नानक देव जी ने समकालीन सभी भक्तों, संतों और विद्वानों की वाणी का संकलन प्रारंभ किया। प्रमुख रूप से इन वाणियों में एक अकाल पुरख की महिमा का वर्णन किया गया है। इस आदि ग्रंथ की बीड़ की बंदीश में उन भक्तों की वाणियों को ही संग्रहीत किया गया है जो सच और यथार्थ के अनुकूल है, जो निर्गुण की भक्ति कर एक प्रभु-परमात्मा अर्थात एकेश्वरवाद में विश्वास रखते हो, इस सारे बहुमूल्य खजाने की विरासत आप ने दूसरे गुरू, श्री गुरु अंगद देव जी को सौंपी थी।

श्री गुरु अंगद देव जी ने इन वाणियों का छोटी-छोटी पुस्तकों के रूप में प्रचार-प्रसार किया पश्चात श्री गुरु नानक देव जी की बाणी और श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा रचित वाणियों का संकलन तीसरे गुरु, श्री गुरु अमरदास साहिब जी को विरासत के रूप में मिला। इस तरह से इन वाणियों का संकलन चौथे गुरू, श्री गुरु रामदास साहिब जी के कार्यकाल से होते हुए पांचवें गुरू, श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी को अनमोल ज्ञान का यह सागर खजाने के रूप में प्राप्त हुआ। इन सभी वाणियों की प्रमाणिकता ठीक रहे और उनमें कोई मिलावट ना हो इसलिए पांचवे श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने भाई गुरदास जी की सहायता लेकर इन सारी वाणियों को रामसर नामक स्थान पर क्रमानुसार संकलित कर, 'श्री आदि ग्रंथ' साहिब जी की स्थापना की थी। इस स्थापना दिवस को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रथम प्रकाश पर्व के रूप में पूरी दुनिया में मनाया जाता है और इसी दिन 'श्री हरिमंदिर साहिब जी अमृतसर में 'श्री आदि ग्रंथ' को सुशोभित किया गया था एवं बाबा बुड्ढा जी को प्रथम हेड ग्रंथी के रूप में मनोनीत किया गया था। 'श्री आदि ग्रंथ' की वाणियों का प्रचार-प्रसार कर समाज में अज्ञानता को दूर कर, ज्ञान का प्रकाश इन वाणियों के ज्ञान से किया जाता था। 'श्री आदि ग्रंथ' में सिख धर्म के प्रथम 5 गुरूओं की बाणी अंकित है और समकालीन 15 भक्तों की और 11 भटों की एवं तीन गुरुसिखों की वाणिओं का संकलन किया गया है। जिन 15 भक्तों की वाणियों का भी संकलन किया गया है। वो सभी भक्त स्वयं मेहनत, मजदूरी कर किरत करते थे एवं परमात्मा के सच्चे नाम का प्रचार-प्रसार करते थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के संपादन में वाणियों को इस तरह से अनुक्रमित किया गया है। जिससे इसमें किसी भी प्रकार की मिलावट की कोई संभावना नहीं रहती है। प्रत्येक वाणी को इस तरह से अंकित किया गया है कि उसके क्रमांक से जिन गुरुओं की या भक्तों की वाणी है तुरंत पता चल जाता है। इस तरह से जिन रागों में वाणी को अंकित किया गया है उनको भी नाम से दर्शाया गया है। साथ ही उन रागों के कौन से घर/ताल (PITCH) में शबद (पद्य) का उच्चारण करना है, उसे भी वर्णित किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में प्रत्येक पढ़ी जाने वाली बाणी की विशेषता को भी पढ़ने के पहले अंकित किया गया है, इस कारण से चंवर-तख्त के मालिक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को संपूर्ण कायनात का गुरु माना जाता है, इसमें अंकित बाणी इंसानियत की बाणी है। कायनात में स्थित प्रत्येक प्राणी के कल्याण के लिए ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की स्थापना हुई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की इन्हीं विशेषताओं के कारण सारे ही धर्म, मजहब और पंथ के व्यक्ति बहुत ही आदर-सत्कार के साथ विनम्रता पूर्वक अपना शीश झुकाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अभिवादन करते हैं।

श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने इस महान, अनमोल, अद्वितीय और अलौकिक ग्रंथ का संपादन कर, इस महान 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' को अपने स्वयं के अधीन ना रखते हुए, इसे इंसानियत की भलाई के लिए हरि मंदिर साहिब, दरबार साहिब अमृतसर में सुशोभित कर दिया था और 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के समक्ष नतमस्तक होकर वचन किये-

बाणी गुरु गुरु है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे।।
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरु निसतारे।।
(अंग क्रमांक 982)

कथनी और करनी के महाबली गुरु पातशाह जी ने अपनी सेवाओं के माध्यम से अपनी प्रखर-प्रज्ञा के ज्ञान का जगत् को आभास करवा दिया था। उस समय में भट्टों की वाणी में गुरु पातशाह जी की प्रशंसा में वचन किये-

जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ।।
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ।।
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ।।
जपुउ जिन् अरजुन देव गुरु फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ।।
(अंग क्रमांक 1409)

अर्थात जब तक माथे पर भाग्योदय नहीं हुआ, तब तक हम बहुत भटकते रहे। कलयुग के घोर समुद्र में डूब रहे थे और संसार समुद्र में डूबने का पश्चाताप कभी मिट नहीं रहा था।

भाट मथुरा का कथन है कि, सच्ची बात यह है कि दुनिया का उद्धार करने हेतु ईश्वर ने गुरु श्री अर्जुन देव साहिब जी के रूप में अवतार धारण किया है उन्होंने गुरु श्री अर्जुन देव साहिब जी का जाप किया वह पुनः गर्भ योनि के संकट में नहीं आये। उस समय के मुगल शासक जहाँगीर को गुरु जी द्वारा इंसानियत के गुरु, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संपादन मंजूर नहीं था कारण वह चाहते थे कि संपादित ग्रंथ में उनकी तारीफ की जाए एवं किसी एक विशेष धर्म को विशेष मान-सम्मान दिया जाये परंतु श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने पूरी कायनात के गुरु के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संपादन किया था। इस कारण से उस तत्कालीन मुगल साम्राज्य में गुरु जी को 'यासा-ए-सियासत' के तहत शहीद करने की सजा सुनाई थी। इस कानून के अंतर्गत उस समय के साधु-संतों, महात्माओं को ऐसी मौत की सजा दी जाती थी कि, सजा देते समय इस पृथ्वी पर उनका रक्त गिरना नहीं चाहिए ताकि कोई रक्त बीज तैयार ना हो कारण ऐसा माना जाता था कि यदि ऐसा हुआ तो आम जनता में विद्रोह हो जाएगा और कई प्राकृतिक आपदाओं का भी सामना करना पड़ सकता है। इस कारण से गुरु जी के साथ तीक्ष्ण कशाघात कर उन्हें भी 'यासा-ए-सियासत' कानून के तहत मौत की सजा सुनाई गई थी।

श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी भविष्य में आने वाली घटनाओं से परिचित थे, इसलिए आप जब शहादत के प्रेम वाले मार्ग पर चल रहे थे तो आप ने गुरु गद्दी पर 25 मई सन् 1606 ई. को अपने होनहार, कर्म-धर्म योद्धा, महाबली सुपुत्र श्री गुरु हरगोबिंद जी को गुरु गद्दी पर विराजमान किया था।

गुरु जी को सुनाई गई सजा के तहत श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी के शीश पर गर्म-गर्म रेत डाली गई थी, जिसके कारण उनके पूरे शरीर पर छाले पड़ गए थे। दूसरे दिन उन्हें उबलती देग (उबलते हुए पानी का बड़ा बर्तन) में उबाला गया था। जिससे आप का माँस शरीर से उखड़ गया था एवं इस सजा के चलते हुए तीसरे दिन आप को तपते हुए गर्म तवे पर बैठाया गया था, इतनी अत्यंत वेदना झेलने के पश्चात भी आप ने अकाल पुरख की रिवायत को मीठा मान कर, 25 मई सन् 1606 ई. के (ज्येष्ठ सुधि चौथ) दिवस शहादत को प्राप्त किया था। दुनिया के इतिहास में इतनी क्रूरता से किसी ने भी इतनी महान शहादत नहीं दी है। श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ऐसे महान शहीद थे जिनका रक्त जमीन पर नहीं गिरा था। आप ने जबर का मुकाबला सबर से किया था इसलिये तो उन्हें “शहीदों के सरताज” की उपाधि से विभूषित गया है। जिसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में इस तरह अंकित किया गया है-

सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेनि्॥
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि॥
(अंग क्रमांक 1384)

अर्थात सहनशील व्यक्ति, सहनशीलता में रहकर कठिन साधना के द्वारा शरीर को जला देते हैं एवं उस अकाल पुरख (खुदा) के निकट हो जाते हैं और यह भेद किसी को नहीं देते हैं।

श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने इंसानियत की रक्षा हेतु जो महान शहादत दी है, वह हमें शिक्षा प्रदान करने की बड़ी से बड़ी मुश्किल का भी सब्र की सहायता से निराकरण किया जा सकता है इसलिये गुरु जी के महान शहीदी दिवस पर ठंडे जल का शरबत (कच्ची लस्सी) आम संगत में बांटकर, श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी को श्रद्धा के सुमन अर्पित किये जाते हैं। सिख इतिहास में अंकित है कि श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने बचपन में बाल लीलाओं का कौतुक करते हुए श्री गुरु अमरदास साहिब जी के निवास का दरवाजा अपने शीश से धक्का देकर खोला था, समय आने पर आप ने धर्म का दरवाजा, धर्म की खातिर शहीद होकर खोला।

ऐसे महान श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी को सादर नमन!

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

दलभंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु पर उपकारी ॥

श्री गुरु नानक देव जी की ही ज्योति सिख धर्म को 'मीरी-पीरी' की दात बक्शीश करने वाले, दाता बंदी छोड़ सिख धर्म के छठे (षष्टम गुरू) गुरू, श्री गुरु हरगोबिंद जी परोपकार की मूर्ति, युगांतकारी, क्रांतिकारी, महाबली योद्धा और 'संत-सिपाही' के रूप में महान गुरु हुए हैं। आप का प्रकाश 9 जून सन् 1595 ई. में गुरु की वडाली जिला अमृतसर, सुबा पंजाब की पवित्र धरती पर, माता गंगा जी की कोख से हुआ था। आप को विरासत में ही धार्मिक और आध्यात्मिक संस्कार अपने पिता पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी से प्राप्त हुए थे। आप की देहबोली अत्यंत सुंदर थी और शारीरिक यष्टि से आप हष्ट-पुष्ट और ऊंचे-लंबे थे। पारिवारिक कलह के कारण आप को बचपन में जान से मारने का 3 बार षड़यंत्र किया गया था परंतु उस अकाल पूरख (प्रभु-परमेश्वर) की कृपा से आप सुरक्षित रहे थे पश्चात सुरक्षा के दृष्टिकोण से श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने बाल हरगोविंद जी और माता गंगा जी को अमृतसर में भविष्य के निवास के लिए स्वयं के सानिध्य में ही रखा था। आप की शारीरिक और आध्यात्मिक शिक्षाएँ भाई गुरदास जी एवं बाबा बुड्ढा जी के मार्गदर्शन में संपन्न हुई थी, विशेष रूप से आप को अस्त्र-शस्त्र विद्या, घुड़सवारी, कुश्ती, तैराकी और गुरबाणी का प्रशिक्षण देकर इन विद्याओं में निपुण किया गया था। आप केवल 10 वर्ष की आयु में ही कई विद्याओं में निपुणता प्राप्त कर चुके थे। गुरु के महल (सु पत्नियां) के रूप में आप को बीबी दामोदरी जी, बीबी नानकी जी और बीबी महादेवी जी का सानिध्य प्राप्त हुआ था। आप को 5 पुत्र रत्न बाबा गुरूदित्ता जी, बाबा सुरजमल जी, बाबा अनिराय जी, बाबा अटल जी और श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की प्राप्ति हुई थी, आप की एक पुत्री बीबी वीरो जी भी थी।

उस समय में जब श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी को वक्त की हुकूमत के आदेशानुसार गिरफ्तार करके लाहौर ले जाया जा रहा था तो समय की नजाकत और बादशाह जहाँगीर के षड्यंत्र को संज्ञान में लेते हुए, आप को आभास हो चुका था कि लाहौर से आप की पुनः वापसी संभव नहीं है, समय की प्रतिकूल परिस्थितियों को देखते हुए, आप ने अपने सुपुत्र श्री गुरु हरगोबिंद जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर षष्टम गुरु के रूप में 25 मई सन् 1606 ई. को मनोनीत कर, गुरू गद्दी पर बाबा बुड्ढा जी के कर-कमलों से सुशोभित किया था। उस समय में गुरु पातशाह की आयु 11 वर्ष की थी, उस समय में प्रचलित मर्यादा के अनुसार गुरु पातशाह जी को पीरी (गुरता अर्थात आध्यात्मिक का प्रतीक) की तलवार सुशोभित की गई और उसी समय विद्वान बाबा बुड्ढा जी के द्वारा आप को मीरी अर्थात बादशाह की तलवार भी पहनाई गई, "जहाँ पीरी धर्म ज्ञान और अध्यात्म का प्रतीक थी, वहीं मीरी शक्ति, सामर्थ्य और राजसत्ता की प्रतीक थी"। उस समय की प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुसार यह संज्ञान लिया गया कि मीरी के बिना पीरी की रक्षा संभव नहीं है, शक्ति के बिना भक्ति कायरता है एवं न्याय और सत्य की रक्षा के लिए शक्ति को भी धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया। सतगुरु पातशाह जी 'संत-सिपाही' का रूप कहलाये, आप जी को 'मीरी-पीरी के मालिक के रूप में ख्याति प्राप्त हुई अर्थात 'मीरी-पीरी' का सिद्धांत 'भक्ति-शक्ति, शास्त्र-शस्त्र, धर्म-राजनीति, देग-तेग, और राजयोग के मिले-जुले स्वरूप की एक समन्वयक नीति पर आधारित है। आप के द्वारा सत्य और सत्ता की एकत्र शमा को रोशन किया था क्योंकि गुरु पातशाह जी जानते थे कि सत्ता के बिना सच का वजूद नहीं है और सच के बिना सत्ता बेहूदी है, यदि सच और धर्म को सत्ता से दूर कर दे तो सत्ता जुल्म के अखाड़े में परिवर्तित हो जाती है, यदि राज सत्ता नही तो धर्म नहीं चलेगा और यदि धर्म नहीं तो मनुष्य शैतान में परिवर्तित होकर हैवान बन जायेगा। 'मीरी-पीरी' के इस सिद्धांत को धारण करने के पश्चात गुरु पातशाह जी ने संगत में हुक्मनामा जारी किया कि आप गुरु दरबार में धन के स्थान पर अस्त्र-शस्त्र, युद्ध सामग्री और घोड़े इत्यादि भेंट किया करें। आप के मार्गदर्शन में 52 प्रशिक्षित विशेषज्ञ योद्धाओं की नियुक्ति की गई और आप के द्वारा सिख योद्धाओं की एक सशक्त सेना का निर्माण कर, युवाओं में एक नई ऊर्जा, जोश और क्रांति की शमा का निर्माण किया गया था।

जहाँ गुरु दरबार में शबद्-कीर्तन हुआ करते थे, वहीं अब गुरु दरबार में वीर रस पर आधारित वारों का गायन कर, शस्त्र संचालन, घुड़सवारी और मल्ल युद्ध का भी अभ्यास किया जाता था। इससे उस समय में युवाओं में स्वाभिमान, आत्मविश्वास और देश-धर्म की रक्षा हेतु मर मिटने का जज्बा तैयार हुआ था।

श्री गुरु हरगोबिंद जी सन् 1606 ईस्वी से सन् 1644 ईस्वी तक गुरु गद्दी पर विराजमान रहे थे, आप ने अपने 38 वर्षों के कार्यकाल में 'गुरु पंथ खालसा' की महान सेवा करते हुए सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्यों को अंजाम दिया था। मुगल सम्राटों के अत्याचार, अनीतियों और युद्धों के प्रतिशोध का सफलतापूर्वक मुकाबला करने हेतु आप ने सिख धर्म के प्रचार-प्रसार और विकास के लिये निरंतर सक्रियता से कार्य किया था। आप की बख्शीश से कई प्रचार केंद्रों को स्थापित किया गया था, आप द्वारा प्रदान 'मीरी-पीरी' के सिद्धांत अनुसार दरबार साहिब श्री अमृतसर जी के समक्ष सन् 1609 ई. में 'श्री अकाल तख्त साहिब जी' की स्थापना की गई थी। आस्था और श्रद्धा के महान केंद्र दरबार साहिब जी के समक्ष (सामने) आप ने भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी के सहयोग से शक्ति और न्याय के महान केंद्र 'श्री अकाल तख्त साहिब जी' का निर्माण स्वयं के कर-कमलों से किया था। इसी स्थान पर आप ने विराजमान होकर सिख धर्म की धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं का निवारण करना एवं संगत के निजी विवादों का निवारण करना, साथ ही समस्त शिकायतों का निवारण करने का महत्वपूर्ण कार्य इसी तख्त साहिब से आरंभ किया था। वर्तमान समय में भी 'बाबा बुड्ढा जी एवं 'शेर-ए-पंजाब' महाराजा रणजीत सिंह जी की श्री साहिब (कृपाण) 'श्री अकाल तख्त साहिब जी' में सुशोभित है। आप ने 'श्री अकाल तख्त साहिब जी' को सिखों की सेवा और त्याग का प्रतीक बताया था। आप के ही कार्यकाल में ढाढी जत्थों की परंपरा का प्रारंभ हुआ था, (गुरूबाणी और सिख इतिहास को लोकगीत और लोक संगीत के माध्यम से गाकर प्रस्तुत करने की परंपरागत विधि) इन जत्थों के द्वारा वर्तमान समय में भी वीर रस की वारों का गायन कर, श्रद्धालुओं में एक नवचेतना और जोश का निर्माण किया जाता है। आप ने सिख योद्धाओं को शिकार करने के लिए भी प्रेरित किया था। आप ने अमृतसर के समीप लोह गढ़ के किले का निर्माण करवाया और इस किले में अस्त्र-शस्त्र के भंडारण की व्यवस्था कर, सैनिकों के उत्तम प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई थी। आप ने सुरक्षा की दृष्टि से बाबा गुरूदित्ता जी के सहयोग से शिवालिक की पहाड़ियों की तलहटी में किरतपुर नामक शहर की स्थापना की और इस शहर को सिख गतिविधियों का प्रमुख केंद्र निरूपित किया था। आप ने विशेष रूप से व्यापार और व्यवसाय को प्रोत्साहित कर सिखों को आर्थिक रूप से संपन्न भी किया था, आप ने विशेष रूप से गुरु परिवार के असंतुष्ट सदस्यों से संपर्क कर उनकी नाराजगी को दूर कर उन्हें 'गुरु पंथ खालसा' की मुख्यधारा में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। आप ने हिंदू और मुस्लिम धर्म के सभी धार्मिक स्थलों का बराबरी से निर्माण कर सामाजिक सद्भावना की प्रेरणा अपनी सिखों को प्रदान की थी। आप ने धर्म प्रचार हेतु सन् 1612 ई. से लेकर सन् 1628 ई. तक लगातार यात्राएँ कर संगत को 'मीरी-पीरी' के सिद्धांत की शिक्षाएँ प्रदान की थी। आप ने उस समय में हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल इत्यादि महत्वपूर्ण स्थानों पर क्षेत्रीय प्रचारकों को नियुक्त किया एवं कई व्यापारियों को भी धर्म प्रचार के कार्य के लिए प्रेरित किया था।

बीबी कौलां नामक मुस्लिम महिला जो कि साईं मियां मीर की शिष्या थी, गुरु पातशाह जी के संपर्क में आकर बीबी कौलां जी उनसे अत्यंत प्रभावित हुई तो इस बीबी कौलां के पिता जी जो कि लाहौर शहर के काजी थे उन्होंने अपनी ही पुत्री के लिये सजा-ए-मौत का फतवा जारी कर दिया था, ऐसी विकट परिस्थितियों में गुरु पातशाह जी ने बीबी कौलां को अपनी शरण में लिया और गुरु पातशाह जी ने उनकी निष्काम सेवाओं से प्रभावित होकर कौल सर नामक सरोवर एवं उनकी आध्यात्मिक साधना हेतु एक भव्य भवन का निर्माण भी करवाया था। गुरु पातशाह जी ने स्त्रियों की दुर्दशा को सुधारने हेतु विशेष प्रयत्न किये, साथ ही दहेज प्रथा के आप सख्त विरोधी थे। आप ने स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा के लिए भी विशेष प्रयत्न किये थे।

गुरु पातशाह जी जब धर्म प्रचार-प्रसार हेतु श्रीनगर (गढ़वाल) में थे तो आपकी मुलाकात महाराष्ट्र के शूरवीर योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरु श्री समर्थ रामदास जी से हुई, तब श्री गुरु रामदास जी ने उन्हें कलगी और कृपाण धारण कर, घोड़े पर सवारी करते हुए देखा तो अचंभित होकर प्रश्न किया कि, आप तो श्री गुरु नानक देव की गद्दी पर विराजमान हैं उन्होंने तो मोह-माया का त्याग किया था परंतु आप तो शस्त्र धारी और अपनी सेना के साथ घोड़े पर भ्रमण कर रहे हैं!

आप कैसे साधु हैं? उस समय में गुरु पातशाह जी ने उत्तर दिया था कि **"बातां फकीरी जाहिर अमीरी'!** यह शस्त्र गरीब और मजलूम की रक्षा के लिए और अत्याचारियों के विनाश के लिए हैं। जब गुरु पातशाह जी ने अपने प्रचार दौरे के तहत गुजरात पहुँचे तो आप का शाही रूप देखकर पीर शाहदौला ने प्रश्न किया! **'हिंदू क्या और पीरी क्या? औरत क्या और फकीरी क्या? दौलत क्या और त्याग क्या? पुत्र क्या और वैराग्य क्या'?** उस समय में गुरु पातशाह जी ने उन्हें उत्तर दिया, **औरत ईमान है! पुत्र निशान है! दौलत गुजरान है! फकीर ना हिंदू है ना मुसलमान है!** पीर शाहदौला जी गुरु पातशाह जी के इस उत्तर से संतुष्ट हुये थे।

गुरु पातशाह जी चमत्कार प्रदर्शनों के प्रबल विरोधी थे, चमत्कारी शक्तियों का दुरुपयोग करना, आप प्रभु-परमात्मा के कार्य में हस्तक्षेप मानते थे। गुरु पातशाह जी के पुत्र बाबा अटल राय ने चमत्कार कर सर्पदंश से मृत अपने बालसखा मोहन को जीवित किया तो गुरु पातशाह जी को इससे अत्यंत दुखी हुए थे और बाबा अटल जी ने अपराध बोध से ग्रसित होकर जल समाधि लेकर अपने प्राण त्याग दिए थे। ठीक उसी प्रकार जब बाबा गुरदित्ता जी ने चमत्कार कर मृत गाय को पुनर्जीवित किया तो गुरु पातशाह जी ने दुखी होकर उसे विधि के विधान के प्रतिकूल माना, इससे दुखी होकर अपराध बोध में आकर बाबा गुरदित्ता जी ने भी अपने प्राण त्याग कर प्रायश्चित किया था।

गुरु पातशाह जी के यश, प्रतिष्ठा, परोपकार और उपदेशों के बहुपक्षीय असर के कारण उस समय का बादशाह जहाँगीर चिंतित था, पृथ्वी चँद, मेहरबान और चँदू की प्रारंभ से ही गुरु पातशाह जी के प्रति ईर्ष्या थी, इन सभी का साथ लाहौर के सूबेदार मुर्तजा खान ने दिया और समय की हुकूमत को इन सभी लोगों की शिकायतों के कारण गुरु पातशाह जी को गिरफ्तार कर लिया और ग्वालियर के किले में कैद कर नजर बंद कर दिया था। जिससे कि पूरे देश में आम लोग आक्रोशित हो गये और खास करके सूबा पंजाब से हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने ग्वालियर के किले को घेर लिया एवं किले के बाहर लगातार गुरबाणी का कीर्तन करने लगे। इधर गुरु पातशाह जी ने मुगल शासन का भोजन अस्वीकार कर दिया, वह केवल श्रद्धालुओं का भोजन ही ग्रहण करते थे। आम जनता के आक्रोश को देखते हुए एवं संगत के असीम प्रेम व श्रद्धा को देखते हुए बादशाह जहाँगीर अचंभित था। ऐसे समय में सूफी पीर मियां मीर ने सुझाव दिया कि आप गुरु पातशाह जी को नजरबंदी से तुरंत रिहा कर देवें और बादशाह जहांगीर ने गुरु पातशाह जी की रिहाई के तुरंत हुक्म जारी कर दिए थे।

ग्वालियर के किले में गुरु पातशाह जी को नजरबंद हुए 2 वर्षों से अधिक का समय हो चुका था और इस किले में देश के विभिन्न भागों से 52 राजाओं को गिरफ्तार करके करके रखा गया था। गुरु पातशाह जी ने इन 52 राजाओं से अत्यंत प्रगाढ़ संबंध स्थापित हो गये थे। गुरु पातशाह जी ने पीर मियां मीर जी के द्वारा बादशाह जहाँगीर को इन 52 राजाओं को भी कैद से मुक्त करने का प्रस्ताव रखा। बादशाह जहाँगीर गुरु पातशाह जी की महानता और सूफी संतो वाली वृत्ति से अत्यंत प्रभावित हुआ और उन्होंने शर्त रखी कि जो भी राजा गुरु पातशाह जी के दामन को पकड़कर बाहर आएगा उसे तत्काल प्रभाव से मुक्त कर दिया जाएगा। इस शर्त पर दयालु गुरु पातशाह जी ने युक्ति लगाकर एक विशेष 52 कलियों वाला चौगा बनवाया और प्रत्येक राजा इन 52 कलियों वाले चौगे के दामन को थाम कर गुरु पातशाह जी के साथ किले की कैद से सुरक्षित बाहर आ गए थे। यह देश के 52 राजा, क्रांती की शमा गुरु पातशाह जी के सदैव ऋणी रहें। इन 52 बंदियों को कैद के बंधन से मुक्त करवाने के फलस्वरूप गुरु पातशाह जी 'दाता बंदी छोड़' के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इस महान ऐतिहासिक घटना की स्मृति में वर्तमान समय में ग्वालियर के किले में भव्य गुरुद्वारा 'दाता बंदी छोड़' जी सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार ऐसा भी माना जाता है कि गुरु पातशाह जी की रिहाई का सुझाव जहाँगीर को उसकी पत्नी नूरजहाँ के द्वारा भी दिया गया था। इस घटना के पश्चात गुरु घर के मुगल साम्राज्य के साथ संबंध ठीक-ठाक रहे थे।

शहंशाह शाहजहां की मृत्यु के पश्चात गुरु घर के विरोधियों के षड्यंत्र पुन: जोर पकड़ने लगे और बाज पकड़ना एवं घोड़े पकड़ने जैसी साधारण बातों को तूल दे कर, इस विवाद की परिणीति युद्धों में परिवर्तित हो गई। सत्ता के नशे में मदमस्त मुगल सेना ने गुरु पातशाह जी पर 4 बार आक्रमण किये, पहला युद्ध सन् 1628 ई. में अमृतसर साहिब जी में हुआ, दूसरा युद्ध सन् 1630 ई. में हरि गोविंदपुर शहर में हुआ और तीसरा युद्ध सन् 1631 ई. में मेहराज नामक स्थान पर हुआ था साथ ही चौथा एवं अंतिम युद्ध सन् 1635 ई. में करतारपुर साहिब जी में हुआ था। इन युद्धों में गुरु पातशाह जी ने लगातार जीत हासिल की थी कारण यह युद्ध नहीं अपितु धर्मयुद्ध थे, इन चारों युद्धों में गुरु पातशाह जी के सिखों ने अद्भुत युद्ध कौशल का परिचय देते हुए अपने स्वाभिमान, आत्मविश्वास, आत्म गौरव और देश भक्ति की भावनाओं का परिचय दिया था।

आप के समकालीन शासक शहेनशहा जहाँगीर (सन् 1605 ई. से सन् 1626 ई.) तक एवं शहेनशाहा शाहजांह (सन् 1627 ई. से सन् 1658 ईस्वी,) तक थे।

श्री गुरु जी की स्तुति में गुरू वाणी की किल्ली कहलाने वाले भाई गुरदास जी नें अपनी वाणी में अंकित किया-

पंजि पिआले पंज पीर छठमु पीरु बैठा गुरुभारी।
अरजन काइआ पलटिकै मूरति हरिगोविंद सवारी॥
चली पीड़ी सोढीआ रूपु दिखावणि वारो वारी।
दलभंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी।
पुछनि सिख अरदासि करि छिअ महलाँ ताकि दरसु निहारी।
अगम अगोचर सतिगुरु बोले मुख ते सुणहु संसारी।
कलिजुग पीढ़ही सोढीआँ निहचल नीव उसार खलहारी॥
जुगि जुगि सतिगुर धरे अवतारी ॥48॥

श्री गुरु हरगोबिंद जी ने 'गुरता गद्दी' की महत्वपूर्ण जवाबदारी श्री गुरु हरि राय जी को सौंपने के पश्चात आप ने अपने 'सचखंड गमन' (अकाल चलाना) की पूर्व तैयारी आरंभ कर दी थी। भरे दीवान में आप ने गुरू वाणी के द्वारा उपस्थित संगत को उपदेशित किया था। आप ने इन गुरवाणी से संगत को धीरज देखकर समझाया था। उस समय आप ने सिख धर्म के पांचवें गुरु श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी की वाणी को अपने मुखारविंद से उच्चारित कर जो वचन कहे थे उसे गुरू वाणी में इस तरह अंकित किया गया है–

मारु महला 5 घरु 4 असटपदीआं
एक ओंकार सतिगुरुप्रसादि
चादना चादनु आँगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना॥
आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥
तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोध लोभु तिआगना॥
मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना॥
जागना जागनु नीका हरि किरतन महि जागना॥
लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना॥
इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतिक भागना॥
कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना॥
(अंग क्रमांक 1018)

भौतिक रूप से दीयों को जलाकर वातावरण में जो बाहरी रूप से प्रकाश होता है उससे उत्तम तो अपने अंतर्मन के ह्रदय में प्रभु-परमेश्वर के नाम का प्रकाश करना सबसे उत्तम है। अन्य नामों को जपने से उत्तम प्रभु-परमात्मा का नाम जपना सबसे सुंदर है। श्री गुरु हरिगोविंद जी ने गुरू वाणी के उपरोक्त पद्य के द्वारा उपस्थित सभी संगत को उपदेश दिया था और साथ ही 'बाबा बुड्ढा जी के सुपुत्र 'भाई भाना जी को आपने अपने वचनों के द्वारा सूचित किया कि आप 'रमदास' नामक स्थान पर पुनः प्रस्थान करें और उस स्थान पर बाबा बुड्ढा जी के द्वारा संचालित गुरबाणी शिक्षा-दीक्षा के केंद्र को संभालते हुए सभी विद्यार्थी और संगत को गुरबाणी कंठस्थ करने का महत्वपूर्ण कार्य की देखरेख करे।

श्री गुरु हरिगोविंदजी के अत्यंत निकटवर्ती 'ढाडी वारां (गुरु वाणी और सिख इतिहास को लोक गीत और लोक संगीत के माध्यम से गाकर प्रस्तुत करने की परंपरागत विधि) को गाने वाले भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला जी को आपने अपने वचनों से उद्बोधन करते हुए कहा कि आप दोनों भी अपने निवास स्थान पर पुनः प्रस्थान करो और 'ढाडी वारा' कला के द्वारा संपूर्ण इलाके की संगत को गुरबाणी और सिख इतिहास से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य निरंतर करते रहने का आग्रह किया था। साथ ही आप ने श्री गुरु हरि राय जी को अपने अंतिम समय में उपदेशित करते हुए कहा कि श्री गुरु नानक देव साहिब जी की रीत और परंपराओं का प्रचार-प्रसार करते रहना एवं 'शीतलता और शांति' को जीवन के मूल मंत्र के रूप में आत्मसात करना और अहंकार से दूरी बनाकर रखनी है। 2200 घुड़सवारों की सेना को सदैव साथ में रखना है और जरूरत के अनुसार इस सेना का उपयोग भी करना है। श्री गुरु हरिगोविंदजी ने अपनी सौभाग्यवती (सुपत्नी) को अंतिम समय में जो वचन उद्गारित किए थे उसे इतिहास में इस तरह अंकित किया गया है-

अब मानो मम बाइ जाइ बकाले तुम रहु।
तिंह तां बस तुम जाइ सति गुरिआइ तोहि होइ॥

अर्थात आप ने अपने मायके 'बाबा बकाला' नामक स्थान पर प्रस्थान कर जाओ और सचमुच ही एक दिन आप के सुपुत्र श्री तेग बहादुर जी को 'गुरता गद्दी' की बख्शीश अवश्य प्राप्त होगी। इस अंतिम समय में गुरु जी ने स्वयं के पास से तीन वस्तुएं बक्शीश की थी जिसमें प्रथम 'कटार दूसरे क्रम में एक 'रुमाल' और तीसरे क्रम में 'पोथी साहिब' जी को भेंट स्वरूप दिया था।

भविष्य में यह रुमाल 'धर्म की चादर' के रूप में परिवर्तित हो गया और यह भेंट स्वरूप प्राप्त हुई कटार 'धर्म को बचाने' के लिए 'तेग' के रूप में परिवर्तित हो गई थी।

श्री गुरु हरगोबिंद 6 चैत्र संवत 1701 अर्थात 3 मार्च सन् 1644 को अपनी सफल और सार्थक जीवन यात्रा को पूर्ण कर, किरतपुर साहिब जी में ज्योति-ज्योत (अकाल चलाना) समा गए थे।

जिस स्थान पर आप का अंतिम संस्कार हुआ उसी स्थान पर गुरुद्वारा पातालपुरी सुशोभित है। आप का अंतिम संस्कार श्री गुरु हरि राय जी बाबा बुड्ढा जी के सुपुत्र भाई भाना जी और सिखों में से प्रमुख रूप से भाई जोध राये जी और गुरु पुत्र बाबा सूरजमल जी एवं भावी श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी इत्यादि, इन सभी महानुभावों ने मिलकर किया था।

श्री गुरु हरि राय साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

नैंह मलेश को दरशन देहैं॥ नैंह मलेश के दरशन लेहैं॥

श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति, शांति की मूर्ति, कोमल हृदय के स्वामी, आयुर्वेद के महान चिकित्सक, प्रकृति प्रेमी, और पशु पक्षियों के प्रति हमदर्दी रखने वाले सिख धर्म के सातवें गुरु श्री गुरु हरि राय जी का प्रकाश (आविर्भाव) 30 जनवरी सन 1630 ई. में किरतपुर, जिला रोपड़, सुबा पंजाब में माता निहाल कौर जी की कोख से हुआ था। आप के पिता बाबा गुरदित्ता जी श्री गुरु हरगोबिंद जी के जेष्ठ पुत्र थे। आप की धार्मिक, शारीरिक और आध्यात्मिक शिक्षाएँ श्री गुरु हरगोबिंद जी एवं भाई गुरदास जी के मार्गदर्शन में संपन्न हुई थी। जहाँ पर आपको भक्ति की विरासत और धरोहर ने कोमल हृदय, भावुक और उदार बनाया, वहीं पर शक्ति की विरासत और धरोहर ने आपको साहसी निर्भीक और धर्म योद्धा बनाया था। आप को 'गुरु के महल' के रूप में बीबी किशन कौर (बीबी सुलखनी जी) की प्राप्ति हुई थी। आप के दो पुत्र बाबा राम राय जी और श्री गुरु हरकृष्ण साहिब जी हुए है।

श्री गुरु हरगोबिंद जी को 5 पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई थी, जिसमें सबसे ज्येष्ठ बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अनि राय जी, बाबा अटल जी, बाबा सूरजमल जी एवं भावी गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी थे। आप की एक सुपुत्री बीबी वीरों थी, उस समय में परिस्थितियों अनुसार दूरदर्शिता का परिचय देते हुए भविष्य की गुरु गद्दी आप ने अपने पौत्र श्री गुरु हरि राय जी को बक्शीश करने का योग्य फैसला लिया था। सिख धर्म की यह अद्वितीय घटना है कि भविष्य में आठवीं पातशाही श्री गुरु हरकृष्ण जी ने भविष्य की गुरु गद्दी अपने दादा जी के छोटे भाई दादा समान श्री गुरु तेग बहादुर जी को बक्शीश करी थी अर्थात दादा ने अपने पौत्र को गुरु गद्दी पर विराजमान किया और भविष्य में पौत्र ने अपने दादा को गुरु गद्दी पर सुशोभित किया था।

शांति की मूर्ति और कोमल हृदय के स्वामी श्री गुरु ही राय जी बचपन से ही संवेदनशील और शांत स्वभाव की गंभीर प्रकृति के थे| गुरु दरबार की सभी मर्यादा और सिद्धांतों का भली-भांति आप अनुपालन करते थे। श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का भावी गुरु श्री गुरु हरि राय साहिब जी से अत्यंत स्नेह था। भावी गुरु श्री गुरु हरि राय साहिब जी भी अपने दादा श्री गुरु हरगोबिंद जी के नक्शे कदमों पर चलकर जीवन सफल कर रहे थे। आप के जीवन का अधिकतम समय कीरतपूर के सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में व्यतीत हुआ था, इसलिए आप की प्रकृति कोमल, दयालु, भावुक और संवेदनशील हो गई। आप एकांत प्रिय परमात्मा की भक्ति में लिप्त होकर हमेशा दान-पुण्य के कार्यों की सेवा करते थे।

उस समय में किरतपुर में गुरु श्री हरगोविंद साहिब जी के कर-कमलों से सुंदर बगीचे को लगाया गया था। नित्य-नेम की हाजिरी एवं संगत से मुलाकात के पश्चात गुरु जी इस सुंदर बाग में टहलने जाते थे। गुरु पातशाह जी के साथ ही उनके पौत्र भावी श्री गुरु हरि राय जी चहलकदमी करते थे। एक दिन भावी श्री गुरु हरि राय साहिब जी के लंबे चोले के कारण बाग का एक फूल टूट गया था। जब श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने जानकारी लेते हुए पूछा कि इस फूल को तोड़कर 'कुदरत का विनाश' किसने किया? तो उस समय ज्ञात हुआ कि फूल भावी श्री गुरु हरि राय जी के लंबे चोले के कारण पेड़ की टहनी के अटकने से टूट गया था। श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने उस समय अपने पौत्र भावी श्री गुरु हरि राय जी को मृदु भाषा में स्नेहित होकर समझाया था कि पुत्र जी जब आप बड़े चोला धारण करते हो तो उसे संभालकर आगे कदम रखना चाहिए। इस वाक्य का भावार्थ था कि जब जीवन में बड़ी जवाबदारी को निभाना हो तो दामन को संभालकर, सुरक्षित होकर कदम बढ़ाना चाहिए। इस वचन को भावी श्री गुरु हरि राय जी ने तहजीवन एक मंत्र के रूप में अपनाया और आप हमेशा अपने चोले को संभालकर, सुरक्षित कर चलते थे। आप ने सदैव गुरु घर की गरिमा और मर्यादाओं को संज्ञान में रख कर अपना जीवन व्यतीत किया था। किरतपुर की धरती पर श्री गुरु हरगोबिंद जी ने एक दिन भरे दरबार में फ़रमान जारी किया था। जिसे इतिहास में इस तरह अंकित किया गया है–

श्री गुरु हरिगोविंद आगिया कीन, पुरनमासी महि दिन तीन।
तिस दिन होइ है दरस हमारा इतना करो मंगल कारा॥

पुरनमासी (पूर्णिमा) को अभी तीन दिवस शेष है और आप सभी संगत उस दिन मित्र परिवार और रिश्तेदारों के साथ दरबार में आमंत्रित हैं। तीन दिनों पश्चात पूर्णिमा के दिवस सजे हुए बड़े पंडाल में विशाल जनसमूह (संगत) के समक्ष बाबा बुड्डा जी के पुत्र भाई भाना जी के कर-कमलों से 'गुरता गद्दी' की समस्त रस्मों को पूर्ण कर श्री गुरु हरि राय साहिब जी को 'गुरु गद्दी' का उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया था। उस समय श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने जिन वचनों को उद्गारित किया था, उन वचनों को इतिहास में इस तरह अंकित किया गया है-

पुन सभ को ,गुरुकही सुनाइ मम सति अबि जोन हरि राये॥

आज के पश्चात 'श्री गुरु नानक साहिब जी की ज्योति श्री गुरु हरि राय जी में समाहित हो चुकी है। उपस्थित संगत को बहुत बधाइयाँ! आज के पश्चात श्री गुरु हरि राय जी सिख धर्म के 7 वें गुरु होंगे और गुरु 'श्री हरगोविंद साहिब जी' स्वयं प्रथम 'गुरु गद्दी' के समक्ष नतमस्तक हुए थे। भाई भाना जी ने 'गुरता गद्दी' के तिलक को श्री गुरु हरि राय साहिब जी के कपाल पर लगाया था।

गुरु पुत्रों में से एक भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी ने 14 वर्ष की आयु के श्री गुरु हरि राय जी जो कि रिश्ते में आपके भतीजे लगते थे और आप से आयु में 10 वर्ष छोटे थे। भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी ने स्वयं आगे होकर शीश झुकाकर नतमस्तक की मुद्रा में अभिवादन किया था। उपस्थित सभी संगत ने भी नतमस्तक होकर गुरु पातशाह जी का अभिवादन किया था। इस समय माता नानकी जी ने श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी को निवेदन किया था कि पातशाह जी वर्तमान समय से करीब 24 से 25 वर्षों पूर्व आपने वचन किए थे कि भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी कोई साधारण बालक नहीं है। भविष्य में यह बालक 'गुरु गद्दी' के उत्तराधिकारी हो सकते हैं परंतु सच्चे पातशाह जी आपकी यह महिमा समझ में नहीं आई! श्री गुरु हरि गोबिंद साहिब जी ने अपनी सौभाग्यवती पत्नी को वचन स्वरूप जो उत्तर दिया उसे इतिहास में इस तरह से अंकित किया गया है--

श्री गुरुकहि तुम चित तज'समां पाइ तुम आइ।
तुम सुत नंदन अमित बल सभ जग करै सहाइ॥
(उपरोक्त बाणी गुरुबिलास पातशाही 6 वीं में अंकित है।)

आप ने भावी श्री गुरु तेग बहादुर जी के भविष्य के संबंध में उपरोक्त वचन उद्गारित किए थे। इस प्रकार से श्री गुरु हरि राय जी की 'गुरु गद्दी' पर विराजमान हुए थे।

श्री गुरु हरि राय साहिब जी ने अपने कार्यकाल में किरतपुर में निवास करते हुए अपने कर-कमलों से 52 सुंदर बगीचों का निर्माण करवाया था। इन सुंदर बगीचों में स्वयं के कर-कमलों से पेड़ों को लगाया गया था। विशेष रूप से इन 52 बगीचों में दुर्लभ जड़ी-बूटियों का रोपण भी किया गया था ताकि आने वाले समय में लोक-कल्याण हेतु इन दुर्लभ जड़ी-बूटियों का उपयोग किया जा सके। साथ ही आप ने जख्मी और बीमार पशु-पक्षियों की सेवा करने हेतु एक चिड़िया घर का भी निर्माण किया था। लोक-कल्याण और सेवा कार्यों को आगे बढ़ाते हुए उस समय के सभी 'वैद्य राज' और चिकित्सकों को आमंत्रित कर उपलब्ध जड़ी-बूटी और पास ही में स्थित शिवालिक पहाड़ियों से एकत्र जड़ी-बूटियों से आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कर स्वयं के प्रारंभ किए हुए दवाखाना में रोगियों का रोग दूर कर महान सेवाएँ की जाती थी। इस दवाखाना के माध्यम से दुर्गम रोगों का भी सफलतापूर्वक इलाज किया जाता था। यह सभी सेवाएँ गुरु पातशाह जी मुफ्त में उपलब्ध करवाते थे। इसलिये भाई गुरदास जी ने गुरु पातशाह जी को संपूर्ण वैद्य कहा है जो शारीरिक रोगों के साथ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इत्यादि मनोविकारों का भी उपचार करता है।

श्री गुरु हरि राय जी ने अपने पिता श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के वचनों का पालन करते हुए हमेशा 2200 घुड़सवारों की सेना को साथ में रखते हुए शस्त्रों के अभ्यास को अपनी जीवन यात्रा में प्रोत्साहित किया करते थे। सन् 1646 ई. में पंजाब में भीषण अकाल पड़ा था। इस मुश्किल समय में गुरु जी ने अकाल पीड़ितों की सेवा हेतु किरतपुर में स्थित अपने दवाखाने के दरवाजे अकाल पीड़ितों के लिए खोल दिये थे, स्वयं सेवा-सुश्रुषा करते हुए रोगियों का इलाज आप जी ने किया था। गुरु पातशाह जी के व्यक्तित्व में गजब का अलौकिक आकर्षण था, आप के दर्शन कर आम लोग सिक्खी की मुख्य धारा से तेजी से जुड़ने लगे थे। प्रसिद्ध सिख इतिहासकार प्रिंसीपल सतबीर सिंह जी ने लिखा है कि, गुरु पातशाह जी का यश और कीर्ति चारों दिशाओं में सूर्य की किरणों की भांति फैल रही थी, आप के दरबार की सजावट अद्भुत और निराली थी। आप के चेहरे की नूरानी झलक उपस्थित संगत में जीवन-रस भर देती थी। आप के सिखों के द्वारा कई नगरों में धर्मशालाएँ, चिकित्सा सेवा केन्द्र, प्रचार केन्द्र इत्यादि स्थापित किये गये और लगभग 360 प्रचार केन्द्रों की स्थापना की गई थी साथ ही आप ने सिख धर्म के प्रचार के लिये 3 प्रमुख बक्शीश (प्रचार) केंद्र भी स्थापित किये जिसका दायित्व भाई सुथरे शाह जी, भाई भगत भगवान जी, भाई फेरू जी जैसे महान गुरु सिखों को सौंपा था। उस समय में दिल्ली के तख्त पर आसीन शाहजहाँ का पुत्र दारा शिकोह गंभीर रूप से बीमार हो गया था। दारा शिकोह की दुर्गम बीमारियाँ नाइलाज थी। उस समय के 'वैद्य राज' और चिकित्सकों ने शाहजहाँ को सूचित किया था कि बीमार दारा शिकोह का इलाज किरतपुर स्थित श्री गुरु हरि राय जी के दवाखाने में ही संभव है। दारा शिकोह जब किरतपुर से दवाखाने में उपस्थित हुआ तो श्री गुरु हरि राय साहिब जी ने अमूल्य जड़ी बूटियों से निर्मित औषधियों से दारा शिकोह का इलाज कर उसे रोग मुक्त किया था। इस कारण दारा शिकोह की गुरु घर पर अपार श्रद्धा थी।

सन् 1658 ई. में कुटिल नीतियों के महारत औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को नजर बंद करवा दिया था और अपने भाइयों के विरोध में बगावत का बिगुल फूंक दिया था। इस कारण दारा शिकोह पर भी आक्रमण हो चुका था। दारा शिकोह अपनी जान बचाने के लिए दिल्ली से लाहौर की और पलायन कर गया था। उस समय श्री गुरु हरि राय साहिब जी का किरतपुर से करतारपुर साहिब की और आगमन हुआ था। वहाँ से गुरु पातशाह जी बाबा बकाला नामक स्थान में भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी को भेंट दे कर गोइंदवाल साहिब नामक स्थान पर पहुँचे थे। जब आप जी गोइंदवाल साहिब नामक स्थान पर संगत के बीच धर्म का प्रचार-प्रसार कर संगत को गुरु घर से जोड़ रहे थे तो उस समय दारा शिकोह ने गुरु जी के समक्ष उपस्थित होकर मदद की गुहार लगाई थी। गुरु पातशाह जी हमेशा 2200 घुड़सवारों की सेना से सुसज्जित रहते थे। इस घटना को इतिहास में इस तरह अंकित किया गया है-

जो शरण आये तिस कंठ लावै॥

अर्थात जो गुरु की शरण में आ गया उसे गुरु पातशाह जी ने अपने कंठ (गले) से लगाना ही है।

गुरु पातशाह जी ने अपनी सैन्य शक्ति से दारा शिकोह की मदद की थी पश्चात चुगलखोर धीरमल ने औरंगजेब के कान भरे थे और कहा कि यदि श्री गुरु हरि राय साहिब जी मदद नहीं करते तो तुम अपने भ्राता दारा शिकोह को जान से मारने में कामयाब हो जाते थे। इस चुगलखोरी में धीरमल की विशेष भूमिका थी। श्री गुरु हरि राय जी की ओर से दारा शिकोह की मदद की गई थी और दरिया के किनारे उन्होनें अपनी सेना को तैनात कर औरंगजेब की सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया था। इस तरह से दारा शिकोह पलायन कर सुरक्षित लाहौर की ओर प्रस्थान कर गया था। तत्पश्चात 'मसंद' धीरमल के द्वारा औरंगजेब को सूचित कर शिकायत की थी कि दारा शिकोह की मदद श्री गुरु हरि राय साहिब जी ने की थी। औरंगजेब ने अपने पत्र के द्वारा श्री गुरु हरि राय साहिब जी को सूचित कर दारा शिकोह की जो मदद की गई थी उसका स्पष्टीकरण मांगा था परंतु श्री गुरु हरि राय साहिब जी ने निश्चय कर लिया था कि-

नैंह मलेश को दरशन देहैं॥ नैंह मलेश के दरशन लेहैं॥

अर्थात कि हम औरंगजेब के मुंह नहीं लगेंगे। गुरु श्री हर राय साहिब जी ने निश्चित किया था कि वो स्वयं औरंगजेब के समक्ष न जाते हुए अपने बड़े बेटे राम राय को औरंगजेब से मिलने के लिए दिल्ली भेजेंगे। राम राय जी को औरंगजेब के निमंत्रण पर दिल्ली भेजने का निश्चय किया और राम राय जी से कहा पुत्र जी हमारे स्थान पर आप दिल्ली जाएंगे। आपकी वाणी पर श्री गुरु नानक देव साहिब जी का वास होगा। आप जो शब्द कहोगे वो सच होंगे परंतु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा निर्मित 'गुरु मर्यादाओं' की सीमा का उल्लंघन नहीं करना है।

श्री गुरु हरि राय साहिब जी ने गुरु पुत्र राम राय के साथ अपने कुछ मसंद भी दिल्ली भेजे थे। दिल्ली पहुंचकर राम राय जी ने गुरु घर की मर्यादाओं के विपरीत करामतों का प्रदर्शन प्रारंभ कर दिया था। राम राय जी बिना कहारों की सहायता से पालकी में बैठकर हवा में उड़ते हुए औरंगजेब के समक्ष हाजिर होते थे। औरंगजेब को खुश करने के लिए राम राय जी औरंगजेब के कहने पर विभिन्न प्रकार की 72 करामतों का प्रदर्शन भरे दरबार में कर चुके थे। गुरु पुत्र राम राय जी की वाणी पर श्री गुरु नानक देव जी का वास था। औरंगजेब के द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों का राम राय जी सही-सटीक और निष्पक्ष जवाब देते थे। इससे औरंगजेब पर राम राय जी का उत्तम प्रभाव पड़ा था।
औरंगजेब के द्वारा गुरु पुत्र राम राय की उत्तम सेवाएँ की गई थी। दरबार में उपस्थित लोगों ने भी आपकी बहुत जय-जयकार की थी। इसका कारण यह भी था कि गुरु पुत्र राम राय भविष्य में भावी गुरु हो सकते थे।
इन सभी घटनाओं से गुरु पुत्र राम राय को इसका बहुत अहंकार हो गया था। अहंकारी राम राय ने भविष्य में 'गुरु गद्दी' के स्वप्न देखना प्रारंभ कर दिए थे। उस समय की नजाकत को देखते हुए औरंगजेब ने भरे दरबार में गुरु पुत्र राम राय से प्रश्न पूछा कि श्री गुरु नानक देव साहिब जी की वाणी में आता है–

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुमि्आर॥ (अंग 466)

इस वाक्य का भावार्थ क्या है?

गुरु पुत्र राम राय ने विचार किया कि यदि मैंने इसका सही भावार्थ किया तो ऐसा ना हो कि औरंगजेब मुझसे नाराज हो जाए उस समय गुरु पुत्र ने गुरुवाणी के इस वाक्य रचना को ही बदल दिया था। भरे दरबार में राम राय ने औरंगजेब को उत्तर दिया कि शायद आप भ्रमित हो गए! इस वाक्य की रचना में तो 'मिट्टी बेईमान की' शब्द को लिखा गया है परंतु लेखक की गलती से इस वाक्य में 'मिट्टी मुसलमान की' शब्द अंकित हो गया है।

गुरु पुत्र रामदास के साथ जो भरोसे के सिख साथी गए थे। उनको यह वाक्य रचना में किया गया बदलाव सहन नहीं हुआ था। जब वापस आकर सिख सेवादारों ने श्री गुरु हरि राय साहिब जी को सूचित किया कि इस दिल्ली यात्रा में बाकी सब तो 'गुरु मर्यादाओं' के अनुसार हुआ परंतु राम राय जी ने जो करामात दिखाई और गुरबाणी की वाक्य रचना को ही बदल दिया, जो कि गुरु मर्यादाओं के विपरीत था। ठीक उसी समय श्री गुरु हरि राय साहिब जी ने वचन उद्धृत किए कि राम राय अब इस लायक नहीं है कि श्री गुरु नानक देव जी के उसूल (सिद्धांतों) की रक्षा कर सकें। राम राय को सूचित कर दो कि वह आज के बाद मेरा मुंह नहीं देखे! उसे जहाँ जाना है वो चला जाए। अहंकारी राम राय ने गुरु पातशाह जी के वचन सुनने के बाद कहा कि मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता है कारण मेरे साथ हिंदुस्तान का बादशाह औरंगजेब है। शातिर बादशाह औरंगजेब अपनी कुटिल कूटनीति में कामयाब हो चुका था उसने गुरु पुत्र राम राय को गुरु जी से और सिख धर्म की मुख्यधारा से अलग कर दिया था। राम राय पुनः भविष्य में गुरु पातशाह जी के मुंह नहीं लगा था। बादशाह औरंगजेब ने राम राय को देहरादून नामक स्थान पर जागीर दी थी। वर्तमान समय में इस स्थान पर राम राय का देहुरा (चबूतरा) बना हुआ है।

श्री गुरु हरि राय साहिब जी के समकालीन शासक शहंशाह शाहजहां (सन् 1627 ई. से सन् 1658 ई.) तक एवं शहंशाह औरंगजेब (सन् 1658 ई. से सन् 1707 ई.) तक थे|

श्री गुरु हरि राय साहिब जी के राम राय और भावी गुरु श्री गुरु हरकृष्णजी नामक दो पुत्र थे। आपने अपनी जीवन यात्रा के अंतिम समय में अपने छोटे पुत्र श्री गुरु हरकृष्ण जी को श्री गुरु नानक देव साहिब जी की ज्योति के रूप में 'गुरता गद्दी' का अगला उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था और 6 अक्टूबर सन् 1661 ई. को आप ज्योति-ज्योत (अकाल चलाना) समा गये थे।

श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय-

स्री हरिक्रिसनि धिआईऐ जिसु डिठे सभु दुखु जाइ॥

श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति, आस्था व श्रद्धा के पुंज, बाला प्रीतम जिनके दर्शन एवं स्मरण मात्र से मनुष्य के दैहिक, दैविक और भौतिक सभी प्रकार के दुखों का निवारण हो जाता है, ऐसे सिख धर्म के 8 वें (अष्टम) श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी का प्रकाश (आविर्भाव) श्री गुरु हरि राय साहिब जी के गृह में माता कृष्णा कौर जी की कोख से 7 जुलाई सन् 1656 ई. को किरतपुर साहिब, जिला रोपड़, सूबा पंजाब में हुआ था।

सन् 1661 ई. में जब सिख धर्म के सातवें गुरु श्री गुरु हरि राय जी का अंतिम समय निकट आया तो आप ने गुरु पुत्र 'श्री हरि कृष्ण साहिब जी को गुरु गद्दी पर विराजमान करने का निर्णय लिया था कारण श्रद्धा और विश्वास का संबंध श्रद्धेय के गुणों और विशेषताओं पर आधारित होता है। श्रद्धेय की आयु से उसका कोई नाता नहीं होता है और यदि श्रद्धा 'गुरु पंथ खालसा' की महान गुरु परंपरा के प्रति हो, जिसमें प्रथम गुरु पातशाह जी की ज्योति को अन्य गुरुओं में प्रज्वलित माना जाता है, तो आयु इत्यादि तथ्य गौण हो जाते है। अमृतवेले (ब्रह्म मुहूर्त) के समय 'आसा जी की वार' के कीर्तन के पश्चात भरे पंडाल में उपस्थित संगत के समक्ष ऊंचे तख्त पर विराजमान कर 'बाबा बुड्ढा जी के पौत्र भाई 'गुरदित्ता जी के कर-कमलों से गुरता गद्दी की समस्त रस्मों को विधिवत पूर्ण कर गुरता गद्दी के तिलक को श्री गुरु हरि कृष्ण जी के कपाल पर सुशोभित कर गुरुआई की बख्शीश की थी।

प्रसिद्ध सिख धर्म के इतिहासकार प्रोफेसर साहिब सिंह जी के अनुसार उस समय श्री गुरु हरि कृष्ण जी की आयु केवल 5 वर्ष 3 महीने की थी। उपस्थित संगत ने नतमस्तक होकर नमस्कार कर आपको गुरु रूप में स्वीकार कर लिया था। बड़े भ्राता गुरु पुत्र राम राय जी को जब यह सूचना मिली कि गुरु गद्दी पर मेरे छोटे भ्राता श्री गुरु हरि कृष्ण जी विराजमान हो चुके हैं तो उन्होंने षड्यंत्र करने प्रारंभ कर दिए थे उन्होंने अपने इस रचित षड्यंत्र को पूर्ण करने के लिये लगातार दिल्ली की यात्रा कर बादशाह औरंगजेब की मदद लेने का प्रयास किया था परंतु उस समय औरंगजेब कश्मीर की यात्रा पर था।

सन् 1664 ई. में जब औरंगजेब कश्मीर से लौटकर दिल्ली पहुँचा तो गुरु पुत्र राम राय ने औरंगजेब से बड़ा बेटा होने के नाते गुरता गद्दी के हक की मांग रखी थी। इस श्री गुरु नानक साहिब जी की गद्दी का केवल मैं ही वारिस हो सकता हूं। इस प्रकार की दबाव पूर्ण मांग बादशाह औरंगजेब के समक्ष प्रस्तुत की थी। औरंगजेब अपनी कुटिल राजनीति में कामयाब हो गया था, वह यही चाहता था कि गुरु गद्दी राम राय जी को ही मिलना चाहिए क्योंकि एहसानमंद राम राय औरंगजेब की सभी बातों को मानते थे इससे संपूर्ण सिख जगत में उसका दबदबा और प्रभाव हो जाता।

उस समय श्री गुरु हरि कृष्ण जी की आयु करीब 7 वर्ष की हो चुकी थी। इस छोटी आयु में गुरु पातशाह जी की और से बड़े-बड़े कार्यों को अंजाम दिया जा रहा था। गुरु पातशाह जी ने किरतपुर स्थान पर कई अचंभित कार्यों को सहजता से अंजाम दिया था। औरंगजेब ने उस समय राजा जयसिंह को मध्यस्थ नियुक्त कर श्री गुरु हरि कृष्ण जी को दिल्ली आमंत्रित करने के लिए पत्र द्वारा सूचित किया था। श्री गुरु हरि कृष्ण जी का दिल्ली यात्रा का कोई कार्यक्रम नहीं था परंतु संगत के दर्शन-दीदार करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया था। उस समय दिल्ली में राम राय गुरु बनकर स्वयं को स्थापित कर रहे थे और संगत को भी गुमराह किया जा रहा था। गुरु जी की सेवा में उपस्थित सिख संगत के आग्रह पर श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने किरतपुर से दिल्ली की और कूच कर दिया था। पालकी में सवार होकर सहपरिवार अपने 2200 घुड़सवारों की सेना सहित गुरु पातशाह जी किरतपुर से गुरूद्वारा पंजोखरा साहिब जी में पधारे थे। यह गुरूद्वारा साहिब अंबाला नामक शहर के करीब स्थित है। इस स्थान पर आप ने विश्राम करते हुए अहंकारी पंडित लालचँद जी के घमंड को चकनाचूर किया था। इस पंडित लाल चँद ने संगत के समक्ष कहा था कि आप अपने आप को हरि कृष्ण कहलवाते हैं तो 'गीता' के किन्हीं दो श्लोकों का अर्थ करके दिखाए।

उस समय श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने मंदबुद्धि छज्जू झीवर नामक व्यक्ति से संपूर्ण गीता के श्लोकों का अर्थ करवाया था और घमंडी लाल चँद के घमंड को तोड़ा था। इस पंडित लाल चँद जी पर गुरु जी की ऐसी कृपा हुई थी कि वह अप्रैल सन् 1699 ई. में खंड़े-बाटे के अमृत को छक कर लाल सिंह के रूप में सज गया था। इस लाल सिंह ने चमकौर की गढ़ी में अपनी महान शहादत दी थी और छज्जू जीवर गुरु जी के आशीर्वाद से धर्म प्रचार-प्रसार के लिए उड़ीसा राज्य में प्रस्थान कर गया था। विशेष ऐतिहासिक तथ्य यह है कि छज्जू जीवर के परिवार में से ही भाई साहिब सिंह जी को पांच प्यारों में से एक के रूप में सजाया गया था। उल्लेखनीय है कि सिख धर्म में चमत्कारों को कोई स्थान नही दिया गया है परंतु यदि गुरु पातशाह जी की कृपा हो तो असंभव भी संभव हो जाता है। गुरु पातशाह जी पंजोखरा शहर से होते हुए दिल्ली पहुँचे थे। उस समय मध्यस्थ राजा जयचँद श्री गुरु हरि कृष्ण जी की परीक्षा लेना चाहता था और जब गुरु पातशाह जी, जयचँद के महल में प्रवेश कर रहे थे तो राजा जयचँद ने अपनी रानियों के वस्त्र दासियों को परिधान करें एवं दासियों के वस्त्र रानियों को परिधान कर दिये थे। जब गुरु जी ने महल में प्रवेश कर दासियों के वस्त्र में रानियों को देखा तो जो वचन उदबोधित किये थे उसे इतिहास में इस तरह से अंकित किया गया है-

महाराज की तु पटरानी। कहां कपट करबे बिध ठानी॥

अर्थात श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने राजा जयचँद और रानियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप को कपट करने की क्या आवश्यकता थी?

श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने दिल्ली में राजा जयसिंह के बंगले में अपना निवास स्थान रखा था। इसी स्थान पर संगत भेंट देकर दर्शन-दीदार करने आती थी। इस स्थान पर जब औरंगजेब उनसे मिलने आया तो श्री गुरु हरि कृष्ण जी उसके मुँह नहीं लगे थे। इतिहास में विभिन्न इतिहासकारों द्वारा अंकित किया गया है कि औरंगजेब आधी घड़ी से लेकर लगभग तीन घड़ी (आधुनिक गणितीय गणना के अनुसार एक घड़ी का समय लगभग 24 मिनट के बराबर होता है) समय तक दरवाजे के बाहर श्री गुरु हरि कृष्ण जी से मिलने का इंतजार करता रहा परंतु 7 वर्ष की आयु के गुरु पातशाह जी ने इस हिंदुस्तान के बादशाह से ना मिलते हुए उसे वापस भेज दिया था। उस वक्त श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने अपने पिता श्री गुरु हरि राय जी के वचन जो इस तरह से इतिहास में अंकित है--

नैंह मलेश को दरशन देहैं। नैंह मलेश को दरशन लैं॥

इन उदबोधित वचनों को पूरा करते हुए बादशाह औरंगजेब से मुलाकात नहीं की थी।
सन् 1661 ई. में ऐतिहासिक तथ्यों को देखा जाए तो जब श्री गुरु हरि राय जी ज्योति-ज्योत समाए थे तो उस समय भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर गए थे। सन् 1661 ई. के समय में जब हम ऐतिहासिक ग्रंथों को संदर्भित करेंगे एवं विभिन्न विद्वान इतिहासकारों को जब हम पढ़कर समझने की कोशिश करेंगे तो उस समय जब श्री गुरु हरि राय जी ज्योति-ज्योत समाए थे तो भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी धर्म प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर यात्राएँ कर रहे थे। आप उत्तर भारत के लखनऊ, कानपुर और बनारस नामक शहर में धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे थे।

जब भावी श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी अपनी इन यात्राओं को समाप्त कर वापस दिल्ली पहुँचे तो आप ने दिल्ली स्थित गुरु घर के श्रद्धालु भाई कल्याणा जी के निवास स्थान पर निवास किया था। गुरु घर के सेवक भाई कल्याणा जी का निवास वह स्थान है जहाँ पर सिख धर्म के 6 वें गुरु श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी जब ग्वालियर के किले से वापसी की यात्रा करते समय इसी स्थान पर भाई कल्याणा जी के निवास में पहुंच कर आप ने विश्राम किया था। इस निवास स्थान पर 21 मार्च सन 1664 से लेकर 23 मार्च सन 1664 तक 3 दिनों तक श्री गुरु हरि कृष्ण जी और भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की मुलाकात होने का इतिहास में ब्यौरा मिलता है।

श्री गुरु हरि कृष्ण जी और भावी गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी की दिल्ली स्थित मुलाकात के जो ऐतिहासिक स्रोत हैं वह 'गुरु की साखीआं' में साखी क्रमांक 21 में अंकित है। प्रिंसिपल सतबीर सिंह जी रचित 'अष्टम बलबीरा' नामक पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक 108 में भी इस मुलाकात का स्त्रोत प्राप्त होता है। इसी प्रकार से जीवन गाथा श्री हरि कृष्ण जी के पृष्ठ क्रमांक 12 (सिख मिशनरी कालेज) में भी इस मुलाकात का जिक्र किया गया है।

श्री गुरु हरि कृष्ण जी दिल्ली में राजा जयचँद के बंगले में निवास करते हुए स्थानीय संगत के दर्शन-दीदार कर रहे थे। सन् 1664 ई. में दिल्ली में अचानक से चेचक (चिकन पॉक्स) नामक संक्रमण की बीमारी का प्रादुर्भाव हो गया था। इस संक्रमण से लगभग पूरी दिल्ली के लोग संक्रमित हो गए थे। दिल्ली में इस संक्रमण की बीमारी ने हाहाकार मचा दी थी। प्रत्येक घर में मौत का तांडव शुरू हो गया था। दिल्ली में पीठासीन बादशाह औरंगजेब ने आम लोगों से मुँह मोड़ लिया था। व्यथित जनता की पुकार सुनने वाला कोई नहीं था परंतु श्री गुरु नानक साहिब जी के घर की महिमा रहे श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने इस संकट के समय दीन दुखियों की सेवा करते हुए स्वयं का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

श्री गुरु नानक साहिब जी ने भी कोढ़ियों की सेवा करके आम जन समुदाय को उपदेश दिया था। जिसे वाणी में इस तरह अंकित किया गया है-

जिउ तपत है बारो बार॥ तपि तपि खपै बहुतु बेकार॥
जै तनि बाणी विसरि जाइ॥ जिउ पका रोगी विललाइ॥
(अंग क्रमांक 661)

इसी प्रकार से सिख धर्म के तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने भी प्रेमा कोढ़ी का इलाज स्वयं के हाथों से किया था। श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी के समय में जब अकाल पड़ा था तो आप ने स्वयं लाहौर में जाकर जन समुदाय की सेवा-सुश्रुषा कर लोगों के दुख दूर किए थे। उस समय श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी की आयु ढाई वर्ष की थी। श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने तरनतारन नामक स्थान पर कोढ़ी खाना बनाकर स्वयं के हाथों से सेवा-सुश्रुषा कर कोढ़ियों का इलाज किया था। इसी प्रकार सिख धर्म के सातवें गुरु श्री गुरु हरि राय जी के द्वारा किरतपुर में संचालित एक बहुत बड़े दवाखाने में दुर्गम रोगों का इलाज जड़ी-बूटियों से किया जाता था। श्री गुरु हरि कृष्ण जी इन सभी इतिहास से अवगत थे और अपने पिता श्री गुरु हरि राय जी के सानिध्य में रहकर आप उन्हीं के पद चिन्हों पर चलकर समाज की सेवा-सुश्रुषा कर रहे थे। दिल्ली में जब चेचक का प्रकोप पूरे जोर पर था तो श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने श्री गुरु नानक साहिब जी द्वारा स्थापित परंपराओं का पूर्ण रूप से निर्वाह किया था। इस संक्रमण के प्रकोप से चाहे जान चली जाए या शरीर साथ छोड़ दें परंतु दीन-दुखियों की सेवा से आप पीछे नहीं हटे थे।

श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने दिल्ली में सेवाएँ करते हुए आम जन समुदाय को दिलासा प्रदान की और संगत को दर्शन-दीदार भी दिए थे। जिसे इस तरह से इतिहास में अंकित किया गया है-

स्री हरिक्रिसनि धिआईऐ जिसु डिठे सभु दुखु जाइ॥

इसी प्रकार 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में अंकित है-

क्रिपा कटाखु अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥१॥
(अंग क्रमांक 681)

गुरु पातशाह जी ने जिस व्यक्ति पर दृष्टि देकर नजर मेहर की उसके दुख तो वैसे ही तुरंत दूर हो गए थे। दिल्ली की गलियों में संक्रमित बीमारी से लाशों के ढेर लगे हुए थे। त्राहि-त्राहि मची हुई थी ऐसे संकट के समय में जन समुदाय का इलाज आप ने स्वयं किया था। स्वयं के दर्शन-दीदार से लोगों के हृदय में ठंडक पहुँचाई थी। दिल्ली स्थित जिस बंगला साहिब गुरूद्वारे में दर्शनाभिलाषी संगत को जल (अमृत) पान करवाया जाता है, वर्तमान समय में उस स्थान पर आप ने स्वच्छ निर्मल जल का एक झरना बनवाया था। सारे संक्रमित लोगों को इस झरने के निर्मल जल का पान करवाया था। अपनी मेहर दृष्टि से आपने सभी जन समुदाय का इलाज किया था। इस संक्रमण की बीमारी से जो कार्य दिल्ली के बादशाह औरंगजेब से नहीं हो सका था। उन सभी कार्यो को आप ने सेवा के रूप में करके दिखाया था।

इस सेवा भाव वृत्ति के कारण चहुँ दिशाओं में श्री गुरु हरि कृष्ण जी की जय-जयकार हो रही थी। इन सेवाओं के माध्यम से आप ने सिख समुदाय को मार्गदर्शन करते हुए, जान की परवाह न करते हुए, सेवा के लिए उपदेशित किया था। आप ने स्वयं इन सेवाओं में हिस्सा लेकर एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया था।

श्री गुरु हरि कृष्ण जी भी इस रोग के प्रकोप से संक्रमित हो गए थे। अपने संक्रमण की परवाह न करते हुए आप ने दिल्ली शहर में अपनी सेवा-सुश्रुषा से काफी हद तक इस रोग पर काबू पा लिया था। आप भी इस संक्रमण के रोग से बहुत ज्यादा बीमार हो गए थे।

श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने अपनी जीवन यात्रा के अंतिम समय को जानकर भविष्य में दी जाने वाली गुरता गद्दी का निर्णय कर लिया था। सन् 1664 ई. में जो दिल्ली में भयानक चेचक (चिकन पॉक्स) नामक रोग का संक्रमण हुआ था तो उस समय श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने दिल्ली में निवास करते हुए स्वयं के दर्शन-दीदार देकर चेचक के रोगियों का सफलतापूर्वक इलाज किया था। स्वयं के निवासित बंगले में गुरु जी ने अपने कर-कमलों से निर्मल जल (अमृत) के एक चश्में का निर्माण भी किया एवं इस चश्में के निर्मल जल (अमृत) को रोगियों को छका कर (पिला कर) चेचक के रोगियों को रोग से सफलतापूर्वक मुक्त किया था। इस संक्रमण के रोग से गुरु जी स्वयं भी संक्रमित हो गए थे। अपनी रोगावस्था में आप ने अपने तख्त पर विराजमान हो गए थे। आप बुरी तरह से चेचक के संक्रमण से ग्रसित हो गए थे। इस समय में भी बादशाह औरंगजेब आपसे मुलाकात करना चाहता था परंतु आप ने मिलने से साफ इंकार कर दिया था एवं ज्योति-ज्योत समाने के पांच दिन पूर्व ही अपनी माता जी को आप ने जो वचन उद्गारित किए थे वो इस तरह से है-

हमरा तुरकन सौ मेल ना होइ। जो हरि भावै होवै सोइ।
पांच दिवस इम बितत भइआ। अब हम परम धाम को जावै।
तन तज जोति जोत समावै।
(संदर्भित ग्रंथ: महिमा प्रकाश)

जब गुरु जी ने वचन उद्गारित किये की अब हमने ज्योति-ज्योत (अकाल चलाना) समा जाना है तो दिल्ली की संगत और सिखों के मन को आघात पहुँचा था। उस अंतिम समय में निकटवर्ती सिखों ने एकत्र होकर गुरु जी से निवेदन कर कहा कि गुरु पातशाह जी आप यह क्या भाणा/रज़ा वरता रहे हो? उपस्थित सिखों में से एक सिख ने विनम्रता पूर्वक निवेदन किया कि पातशाह जी आप के पश्चात हम किसके सहारे जीवन यात्रा करेंगे? अर्थात भविष्य में हमारे गुरु कौन होंगे?
इन प्रश्नों के फलस्वरूप श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने गुरता गद्दी की विधि की समस्त सामग्रियों को मंगवाया था और उस समय जो घटित हुआ उसका उल्लेख भटवईयां रचित भट वही भादसों थानेसर' नामक ग्रंथ में इस तरह अंकित है--

गुरुहरि कृष्ण जी महला अठमां बेटा गुरु हरिराय जी का।
संमत सत्रां सो इकीस। मासे सुदी चउदस।
बुधवार के देहु। दीवान दरगाह मल के बचन कीआं।
गुरआई की सामग्री ले आउ। हुकम पाए दीवान जी लै आए।
सतिगुरां इस हाथ छुहाए। तीन दफां दाई भुजा हिलाए।

धीमी आवाज से कहा -

इसे बकाला नगरी ले जाना।
पांच पैसे नलीएर।
बाबा तेग बहादर आगै राख। हमारी तरफ से मसतक टेक देना।

इन वचनों से स्पष्ट हो चुका था कि बाबा कौन है? इस रोगावस्था में गुरु जी उठ नहीं सकते थे। इसलिए आप ने सुप्त अवस्था में ही गुरु गद्दी की थाली पर अपने दाहिने हाथ से तीन बार परिक्रमीत करते हुए अपने वचनों से उपस्थित सिखों को उद्गारित कर कहा-

बाबा बसहि बकाले। बनि गुरु संगति सकल समाले।

एवं वचन कर इंगित किया 'बाबा-बाकाले'! अर्थात हमारे पश्चात गुरता गद्दी के अधिकारी 'बाबा-बकाला' नामक स्थान पर होंगे। अपने अंतिम समय में गुरु जी ने अपनी शयनावस्था में ही गुरबाणी के इन श्लोकों का उच्चारण किया था-

जो तुधु भावै साई भली कार। तु सदा सलामत निरंकार।
(अंग क्रमांक 4)

इन गुरबाणी के श्लोकों को उद्गारित करते हुए आप ज्योति-ज्योत समा गये थे।

जोति जोत रली संपूरनु थीआ राम। (अंग क्रमांक 846)

'बाबा बकाले' नामक स्थान पर गुरु श्री तेग बहादुर जी को गुरता गद्दी प्रदान करने हेतु पुरातन स्त्रोत ग्रंथ 'भाई केसर सिंह जी वंशावली नामा' में इस तरह अंकित है-

वकत चलाणे सिखां कीती अरदास।
गरिब नवाज संगत छंड्डी किस पास।
उस वकत बचन कीता बाबा बकालें ।

इसी संदर्भ में पुरातन ग्रंथ 'गुर बिलास पातशाही दसवीं' ग्रंथ के रचयिता क्रित सुखा सिंह जी ने इसे इस तरह से अंकित किया है--

संगत कही प्रभु जंग नाथा। बाबा सही बकाले आहै।
जो कहि करि सतगुरुबच आदि निज। सुख भीतर गये समाए।

गुरु पातशाह जी ने जीवन यात्रा के इस अंतिम समय में उपस्थित सभी संगत के दर्शन-दीदार देकर अपनी माता कृष्णा कौर जी (जो माता सुलखनी जी के नाम से भी जानी-जाती थी) की गोद में अपना शीश रखकर देह त्याग कर दिया था। आप के समकालीन समय में शासक शहंशाह औरंगजेब था। (सन् 1658 ई. से सन् 1707 ई. तक)।

श्री गुरु हरि कृष्ण जी के दिल्ली स्थित निवास स्थान पर वर्तमान समय में गुरुद्वारा बंगला साहिब सुशोभित है। गुरु पातशाह जी द्वारा स्थापित हुआ चश्मा जिसके निर्मल जल (अमृत) से चेचक के रोगियों का इलाज हुआ था। उस चश्में के निर्मल जल को वर्तमान समय में उपस्थित दर्शनाभिलाषी संगत को छकाया (पिलाया) जाता है।

जिस स्थान पर श्री गुरु हरि कृष्ण जी का अंतिम संस्कार किया गया था उस स्थान पर गुरुद्वारा 'बाला साहिब' सुशोभित है (श्री गुरु हरि कृष्ण जी को संगत प्रेम पूर्वक 'बाला प्रीतम' के नाम से भी संबोधित करती है)।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।

श्री गुरु तेग बहादुर जी का संपूर्ण जीवन त्याग, तपस्या, बलिदान और वैराग्य से अभिभूत था। उस कठिन समय में समाज के स्वाभिमान और आध्यात्मिक चेतना के विकास के लिये आपने वैरागमयी और दार्शनिक वाणी की रचना कर, जीवन के सत्य और यथार्थ का चित्रण किया। प्रथम पातशाही श्री गुरु नानक देव साहिब जी ने अपनी चार उदासी यात्राओं में 36000 मील की यात्रा की थी और इन यात्राओं के माध्यम से जगत का कल्याण किया था। इसके पश्चात नौवीं पातशाही 'सृष्टि की चादर, श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' ने जगत कल्याण के लिए सबसे अधिक भ्रमण किया था। गुरबाणी में अंकित है-

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरु सो थानु सुहावा राम राजै॥
(अंग क्रमांक 450)

अर्थात जिस-जिस स्थान पर सतगुरु जी के चरण पड़े वह स्थान अकाल पुरख की कृपा से 'सुहावा' अर्थात स्वर्ग के समान है।

चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास साहिब जी ने अपने मुखारविंद से उच्चारित वाणी में सिख गुरुओं के प्रकाश पर्व के लिए अंकित किया है-

सा धरती भई हरिआवली जिथै मेरा सतगुरु बैठा आइ॥
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ॥
धनु धंनु पिता धन धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरु जणिआ माइ॥
(अंग क्रमांक 310)

अर्थात वह माता धन्य है, वह पिता धन्य है जिसने गुरु को जन्म दिया और वह स्वर्णिम समय 5 बैसाख सन् 1678 का दिवस था। (1 अप्रैल सन् 1621 दिन रविवार) अमृत वेले (ब्रह्म मुहूर्त) के इस सौभाग्य भरे समय में नौवीं पातशाही श्री गुरु तेग बहादुर जी का प्रकाश (आविर्भाव) हुआ था।

प्रकट भए गुरुतेग बहादर सकल सृष्टि पर ढापी चादर॥

गुरु पातशाह जी के प्रकाश पर जब पिता 6वीं पातशाही श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने युग रक्षक, बाल तेग बहादुर को अपनी गोदी में उठाया और नतमस्तक होकर पास ही खड़े हुए भाई बिधि चँद से कहा था यह बालक अलौकिक होगा, भविष्य में यह बालक दिन के रक्षक होंगे और बड़े-बड़े संकटों का नाश कर देंगे। यह निर्भय बालक दुश्मनों को जड़ से उखाड़ के रख देंगे। जिसे इस तरह से अंकित किया गया है--

दिन रथ संकट हरि॥ एह निरभै जर तुरक उखेरी॥

सर्व कला समर्थ श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का नामकरण कर श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने स्वयं तेग बहादुर नाम रखा था। तेग बहादुर शब्द फारसी भाषा से प्रेरित है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी में अंकित है-

जा तुधु भावै तेज वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि॥
(अंग क्रमांक 145)

तेग का अर्थ होता है कृपाण या खड़ग।

देग तेग जग में दो चलें॥

अर्थात आप तेग के साथ-साथ अत्यंत बहादुर भी होंगे। बचपन में आपको पूरे परिवार से बहुत लाड़ प्यार मिला था और आपको आप की बड़ी बहन बीबी वीरो जी बहुत ही प्यार करती थी। आश्चर्य की बात है कि गुरु जी ने बाल अवस्था में कभी भी रो कर दूध नहीं मांगा था। बाल तेग बहादुर ने अपनी बाल लीलाओं से सभी का मन मोह लिया था। एक दिन आप खेलते-खेलते श्री गुरु हरगोबिंद जी की गोद में जाकर बैठ गए और गुरु जी के पीरी वाले गातरे (कृपाण को संजो कर रखने वाले कपड़े से बने हुए पट्टे को गातरा शब्द से संबोधित किया जाता है) को कस कर पकड़ लिया था। जब गुरु जी ने बाल तेग बहादुर से गातरा छुड़ाने का प्रयत्न किया तो आप ने उसे और कस कर पकड़ लिया था। उस समय श्री गुरु हरगोबिंद जी ने भाव-विभोर होकर कहा था कि पुत्र जी अभी समय नहीं आया है, जब समय आएगा तो आपको तेग चलना भी पड़ेगी और खाना भी पड़ेगी।

एकांत प्रिय बाल तेग बहादुर जी जब बड़े भ्राता भाई गुरदित्ता जी के परिणय बंधन में शामिल हुए तो उस समय आप ने अपने सुंदर वस्त्र और आभूषण एक गरीब बालक को उतार कर दे दिए थे। गुरु तेग बहादुर जी ने अपनी समस्त शिक्षा-दीक्षा रामदास में बाबा बुड्ढा जी से ग्रहण की थी। आप को गुरमुखी, संस्कृत, फारसी भाषा का उत्तम ज्ञान था। 6 वर्ष तक आप ने बाबा बुड्ढा जी से शिक्षा ग्रहण कर गुरबाणी को कंठस्थ किया था। भाई गुरदास जी ने भी आपको शिक्षा प्रदान की थी। बाल तेग बहादुर ने भाई गुरदास जी से ब्रजभाषा के अतिरिक्त अन्य कई भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया था। साथ ही आपने शस्त्र विद्या और घुड़सवारी की भी शिक्षा भाई गुरदास जी के निरीक्षण में सिखी थी। आपको भाई गुरदास जी ने शस्त्र कला और युद्ध कला में भी निपुण किया था। आप ने गुरुघर के रबाबी भाई बाबक जी से उत्तम गुरमत संगीत का ज्ञान प्राप्त किया था। श्री गुरु तेग बहादुर जी को मृदंग बजाने में महारत हासिल थी। साथ ही आप ने गुरमत संगीत के 30 रागों का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया था एवं गुरमत संगीत के 31 वें राग, राग जै-जै वंती का आप ने अविष्कार भी किया था। आप ने गुरबाणी के 116 शबद् 15 रागों में रचित किये है।

बाल तेग बहादुर की बाल्यावस्था में ही उनके भ्राता बाबा अटल जी अकाल चलाना (स्वर्गवास) कर गए थे। उसी समय में आपकी दादी जी माता गंगा जी भी अकाल चलाना (स्वर्गवास) कर गई थी। जब आप 8 वर्ष की आयु के थे तो 13 जनवरी सन् 1629 ई. को श्री गुरु नानक देव साहिब जी के पुत्र बाबा श्री चँद जी भी ज्योति-ज्योत समा गये थे। बाबा श्री चँद जी जो कि सारी उम्र बाल्यावस्था में रहे जिनकी आयु 100 वर्ष से भी अधिक थी और आप का बाल तेग बहादुर जी से अत्यंत निकट का स्नेह था। बाल तेग बहादुर जी भी बाबा श्री चँद जी का अत्यंत आदर-सत्कार करते थे। जब बाल तेग बहादुर जी की आयु 10 वर्ष की हुई तो 17 नवंबर सन 1631ई. में बाबा बुड्ढा जी अकाल चलाना (स्वर्गवास) कर गये थे। बाबा बुड्ढा जी का सिख इतिहास में अत्यंत मान-सम्मान था। आप दरबार साहिब अमृतसर के प्रथम हेड ग्रंथि मनोनीत किए गए थे। इन सभी दुखी प्रसंगों के कारण त्याग और वैराग्य की मूरत बाबा तेग बहादुर जी की विस्मय बोध युक्त जीवन यात्रा वैराग से अभिभूत थी। गुरु जी ने अपनी रचित वाणियों को अत्यंत वैराग भाव से रचित किया था। आप की वैरागमयी बाणी इस तरह से अंकित है-

चिंता ता की कीजिऐ जो अनहोनी होइ।
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नहीं कोइ।
(अंग क्रमांक 1429)

श्री गुरु तेग बहादुर जी का परिणय बंधन (आनंद कारज) 11 वर्ष की आयु में बाबा लालचंद जी की सुपुत्री बीबी गुजरी जी "गुरु के महल" के साथ संपन्न हुआ था, (बीबी गुजरी जी को सिख संगत सम्मान पूर्वक माता गुजरी जी के नाम से भी संबोधित करती है)। श्री गुरु तेग बहादुर जी ने 14 वर्ष की आयु में करतारपुर के युद्ध में मुगल सेनाओं के विरुद्ध लड़ते हुए अद्भुत युद्ध कौशल का परिचय दिया था। आप ने अपने नाम तेग बहादुर जी के विशेषण अनुसार तेग के धनी के रूप में अर्थात तेग बहादुर के रूप में प्रस्थापित हो चुके थे।

11 अगस्त सन् 1664 ई. को आप को नौवें गुरु के रूप में गुरता गद्दी पर विराजमान किया गया था। गुरता गद्दी के समय में उठे हुए विवाद को आप के परम भक्त मख़्खन शाह लुबाना ने गुरता गद्दी पर आपके हक के लिए संगत को सबूत प्रदान किया था। वर्षो की एकांत साधना और समर्पित भक्ति के कारण गुरु पातशाह जी मोह-माया से निर्लिप्त होकर एक बैरागी का जीवन व्यतीत कर रहे थे, गुरु पद के प्रति भी आप का रंच मात्र मोह नही था परंतु बार-बार निवेदन करने पर, गुरु-परंपरा की महान विरासत का दायित्व ग्रहण करने के लिये आप ने सहमति दर्शायी थी।

22 नवंबर सन् 1664 ई. को आप ने बाबा-बकाला नामक स्थान से लोक-कल्याण हेतु एवं धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी धार्मिक यात्राओं को प्रारंभ किया था। आप ने देश के विभिन्न प्रांतों की यात्रा की थी। विशेष रूप से सूबा पंजाब और हरियाणा में आप ने यात्राएँ कर सिखी के बूटे को प्रफुल्लित किया था। आप ने बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड होते हुए आसाम तक की यात्रा की थी। साथ ही साथ आप उड़ीसा, दिल्ली, हरियाणा के मार्ग से होते हुए पुनः पंजाब में पधारे थे। गुरु जी द्वारा आयोजित यात्राएँ धर्म प्रचार-प्रसार के लिए तो थी ही अपितु आप ने इन यात्राओं के माध्यम से अनेक आध्यात्मिक' सामाजिक, आर्थिक उन्नयन और मानव जाति के कल्याण के लिए रचनात्मक कार्यों को अंजाम दिया था। आप ने इन यात्राओं के माध्यम से अंधविश्वास, रूढ़ियों की आलोचना कर नए आदर्शों को प्रस्थापित किया था। आप ने इन यात्राओं के माध्यम से अनेक रोगियों को रोग से मुक्त किया था। आप जी उत्तम वैद्य और आयुर्वेद चिकित्सक थे। जहाँ-जहाँ भी आप गये उन स्थानों पर लोक-कल्याण हेतु धर्मशालाएं बनाई। कई कुएँ खुदवाकर स्वच्छ पीने के पानी का इंतजाम किया था। आप ने अपने जीवन में अनेक परोपकार के कार्य किए थे। आप उत्तम वास्तु शिल्पकार थे, आप ने 19 जून सन् 1665 ई. को ग्राम सहोटा के समीप ऊंचे टीले पर मोहरी गड्ड (नींव का पत्थर) रखकर चक नानकी (श्री आनंदपुर साहिब जी) नगर का निर्माण किया था। उस समय में इस नगर की रचना अपने आप में वास्तुशिल्प का अनोखा अविष्कार थी।

उस समय के समकालीन हुक्मरान (सन् 1658 ई. से सन् 1707 ई. तक) जुल्मी बादशाह औरंगजेब की हठधर्मिता थी कि उसे अपने धर्म के अतिरिक्त किसी दूसरे धर्म का वजूद मंजूर नहीं था। औरंगजेब ने सभी आम जनता को इस्लाम धर्म स्वीकार करने का सख्त आदेश दे दिया था। उस समय के आदेशानुसार इस्लाम स्वीकार करो या मृत्यु को गले लगा लो, इस आदेश का जोर-जुल्म से पालन किया जा रहा था। जबरदस्ती तलवार की धार पर लोगों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जा रहा था। इससे अन्य धर्म के लोगों का जीवन अत्यंत कठिन हो गया था। उस समय औरंगजेब के अत्याचार से पूरे देश में त्राहि-त्राहि मच गई थी। उस समय कश्मीर के ब्राह्मणों ने पंडित कृपाराम जी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल के रूप में गुरुजी से मिलकर जुल्मी औरंगजेब से बचाने के लिए गुहार लगाई थी। उस समय गुरु जी ने वचन किए कि यदि कोई महापुरुष शहादत देगा तो हिंदू धर्म को बचाया जा सकता है। निकट खड़े बाल गोविंद राय जी ने उस समय केवल 9 वर्ष 6 महीने की आयु की अवस्था में अपने पिता श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को वचन किए थे कि पिता जी इस समय आप से बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है? गुरु जी ने कश्मीरी पंडितों के माध्यम से उस समय के हुक्मरान औरंगजेब को सूचना भिजवाई थी कि यदि श्री गुरु तेग बहादुर जी ने इस्लाम कबूल कर लिया तो हम सभी भी अपना धर्म परिवर्तन कर लेंगे।

जुल्मी औरंगजेब ने गुरु जी की गिरफ्तारी के आदेश जारी कर दिए थे। परंतु गुरु जी स्वयं अपने चुनिंदा सेवादार साथियों सहित दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गए थे। गुरु पातशाह जी और उनके साथी भाई सती दास जी, भाई मती दास जी एवं भाई दयाला जी को मुगल सैनिकों ने गिरफ्तार कर अनेक प्रकार की शारीरिक यातनाएं दी थी। 9 नवंबर सन् 1675 ई. को दिल्ली के चाँदनी चौक में भाई सती दास जी ने जब इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इंकार कर दिया तो उन्हें रुई में लपेट कर ज़िन्दा जलाया गया था। भाई सती दास जी ने जुल्म के खिलाफ लड़ते हुए हँसते-हँसते शहादत का जाम पिया था। 10 नवंबर सन् 1675 ई. को इसी तरह भाई मती दास जी को भी इस्लाम ना कबूल करने के कारण बांधकर शरीर के बीच से आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिए थे। भाई मती दास ने हँसते-हँसते शहादत का जाम पिया था। अपनी अंतिम सांस तक आप जपु जी साहिब जी का पाठ करते रहे थे। 10 नवंबर सन् 1675 ई. को जुल्मी मुगल सेना ने भाई दयाला जी को एक बड़े बर्तन में पानी डालकर उबालकर शहीद कर दिया था। भाई सती दास जी एवं भाई मती दास जी दोनों सगे भाई थे। यह दोनों भाई और साथ ही भाई दयाला जी गुरु जी के परम-श्रद्धालु और हमेशा साथ में रहने वाले अत्यंत प्रिय निकटवर्ती साथी थे। आप ने अपने सिखों को शिक्षाएँ देकर वचन किये थे-

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।। (अंग क्रमांक 1427)

भाई सती दास जी और भाई मती दास जी के परदादा भाई परागा जी 6 वें गुरु हरगोबिंद साहिब जी के प्रमुख सेनापति थे और उन्होंने मुगलों से युद्ध कर मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति भी दी थी।

11 नवंबर सन् 1675 ई. को श्री गुरु तेग बहादुर जी के समक्ष समय के हुक्मरानों ने तीन शर्तों को रखा था। कोई करामात दिखाओ, या इस्लाम धर्म को कबूल कर लो और यदि दोनों शर्तों को मानने को तैयार नहीं हो तो मृत्यु के लिए तैयार हो जाओ। ऐसे कठिन समय में पूरे देश की आँखें गुरु जी के फैसले पर टिकी हुई थी। गुरु जी ने इंसानियत की जमीर को ज़िन्दा रखने के लिए स्वयं की शहादत का फैसला लिया था। सर्व कला संपूर्ण श्री गुरु तेग बहादुर जी अपनी आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा चाहे जो करामात दिखा सकते थे परंतु इंसानियत को जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने का संदेश देने के लिए आपके द्वारा लिया गया फैसला इस पूरे मुल्क की तकदीर बदलने वाला था। विश्व के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण मौजूद नहीं है कि किसी दूसरे के धर्म को बचाने हेतु स्वयं की शहादत को अर्पित कर देना। आप के द्वारा इंसानियत के जमीर को नंगा होता हुआ देखा नहीं गया था। इसलिए अपनी शहादत की चादर से आप ने इंसानियत के जमीर को ढककर, इंसानियत अस्मत को बे-आबरु होने से बचा लिया था। जिसे एक कवि ने इस तरह से शब्दांकित किया है-

तेग बहादुर के चलत भयो जगत में शोक॥
है है है सब जग भयो जै जै जै सुर लोक॥

श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी से पूरे जगत में शोक की लहर फैल गई थी और दुनिया में हाहाकार मच गया था परंतु धरती तो धरती स्वर्ग लोक में भी गुरु पातशाह जी की शहादत की जय-जयकार गूंज उठी थी।

उस समय गुरु पातशाह जी के परम भक्त भाई लक्खी शाह बंजारे ने गुरु जी के धड़ का संस्कार अपने घर में आग लगाकर किया था। वर्तमान समय में इस स्थान पर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की स्मृति में गुरुद्वारा रकाबगंज की विलोभनीय इमारत दिल्ली में सुशोभित है। भाई जैता जी ने मुगल सैनिकों की आँख में धूल झोंक कर गुरु जी के शीश को लेकर श्री आनंदपुर साहिब की ओर प्रयाण किया था। उस समय श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने भाई जैता जी को रंगरेटा, गुरु का बेटा' की उपाधि से सुशोभित कर सम्मान किया था।

इस दुनिया में गुरु साहिब के दर्शाए मार्ग पर चलकर ही अमन और शांति कायम हो सकती है। सत्ता का गुरूर और जोर-जुल्म से आज तक कोई विजय प्राप्त नहीं कर सका है। अंत में इंसानियत के जमीर के रक्षक श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की पावन-पुनीत-पवित्र शहादत को समर्पित चँद पंक्तियां-

तिमिर घना होगा, तमा लंबी होगी, पर क्या कभी तमस से विहान रुका है?
ज्ञान के विहान का विधान रुका है? इंसानियत की जमीर का पहरेदार रुका है?

क्या बाहुबल के दम पर धर्म का अवसान हुआ है? मिट गए मिटाने वाले, गुरुओं के ज्ञान के सम्मुख, क्या शमशीर के वार से धर्म का विहान रुका है?
जो मिटाने चले थे सत्य का दीप, खुद ही बुझ गए अज्ञान के साये में।
धर्म की धरा पर सदा सत्य की विजय हुई, क्या कभी असत्य से धर्म का उत्थान रुका है?
गुरुओं की वाणी में अमर है सत्य, जग से अनैतिकता का हर पहर मिटा है।
जब-जब अंधकार फैला पथ पर, सद्गुरुओं के ज्ञान से सत्य का प्रकाश रोशन हुआ है?

ऐसे महान गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत को सादर नमन!

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय-

हक्-हक् अंदेश गुरु गोविंद सिंह, बादशाह दरवेश गुरु गोविंद सिंह

करुणा, कलम और कृपाण के धनी, श्री गुरु नानक देव की दसवीं ज्योति, युगांत कारी, युग दृष्टा, भक्ति और शक्ति की मूर्ति, महान विचारक, दार्शनिक, महाबली योद्धा, श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी का प्रकाश (आविर्भाव) 22 दिसंबर सन् 1666 ई. को माता गुजरी जी की कोख से हुआ था, जब आप का प्रकाश हुआ तो उस समय में गुरु पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी इस धरा का भार उतारने के लिए पूर्व की ओर यात्रा करते समय ढाका (बांग्लादेश) में थे।

एक युगांतकारी और युग दृष्टा गुरु का जीवन प्रकाश पुंज की भाँति होता है, जिसके सद्कार्य, सुविचार और इंसानियत के लिये किये गये लोक-कल्याण के कार्य संपूर्ण विश्व को एक नई रोशनी देकर प्रकाशित करते हैं। आप ने अपने सत्कर्मों से वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में भूतकाल से प्रेरित होकर, एक स्वर्णिम वैभवशाली भविष्य की कल्पना की थी और उस कल्पना को साकार करने हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। इस देश के गौरवशाली इतिहास में युगांतकारी दशम गुरु पातशाह जी ने अपने समय की तत्कालीन विसंगतियों से ग्रस्त धर्म और राष्ट्र की पीड़ा का अनुभव कर, भविष्य के स्वर्णिम काल के लिये न केवल धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपना सर्व वंश शहीद करवा कर, त्याग, संयम और समर्पण का एक नया इतिहास रचित किया अपितु अनीति, अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध कठोर संघर्ष और कर्म ज्ञान एवं भक्ति के प्रति समर्पण अर्थात एक संत के रूप में समर्पण और एक सिपाही के रूप में कठिन संघर्ष कर वह 'संत-सिपाही' कहलाये।

गुरु दशम् पिता ने अपने उद्देश्य 'धर्म चलावन संत उबारन, दुष्ट सबन को मूल उपारन' को प्राप्त करने हेतु आप ने इंसानियत के प्रहरी के रूप में समाज के शताब्दियों से पीड़ित शोषित और उपेक्षित वर्ग की चिंता कर उनका सहारा बने। आप ने 'गुरु पंथ खालसा' की नींव रख सामाजिक समरसता की आधारशिला को रखा था। एक अनोखे और महान साहित्यकार के रूप में भक्ति और शक्ति को समर्पित साहित्य का सृजन किया। जहाँ गुरु पातशाह जी साहस, स्वाभिमान एवं त्याग की मूर्ति थे, वहीं आप विनम्रता और सद्भावना की भी प्रतिमूर्ति थे। आप का जीवन जितना विविधता से भरा हुआ था वहीं आप का व्यक्तित्व उतना ही विशाल-विराट और महान था। इन विशेषताओं के कारण ही आप युगांतकारी, युगदृष्टा के रूप में प्रतिष्ठित हुए। निश्चित ही आपका जीवन एक बिजली की चमक की तरह था, आसमान में चमकती बिजली की आयु भले ही लंबी नहीं होती परंतु जितनी भी होती है उसमें कणखर चमक और कर्कश आवाज होती है, जो सभी का ध्यान आकर्षित करती है।

बचपन में आपका बाल सुलभ मन मित्रों के साथ अलग-अलग दल बनाकर युद्ध जैसे असामान्य खेलों में रमता था। आप हमेशा तीर-कमान और गुलेल से लक्ष्य संधान कर अपनी अलौकिक प्रतिभा का प्रदर्शन करते थे। उस समय में पटना के राजा फतेह चंद और उनकी पत्नी संतान प्राप्ति की मनोकामना के साथ आप का ध्यान लगाते हैं तो एक दिन बाल गोविंद राय राज महल में जाकर रानी की गोद में बैठकर ममतामयी आवाज में कहते हैं, देख माँ मैं आ गया! रानी का ममतत्व जाग जाता है, रानी तब अचंभित होती है जब बाल गोविंद राय उस समय महल में बने पूरी-छोलेऔर खीर की मांग करते हैं। वर्तमान समय में पटना साहिब जी में इस राज महल में ही गुरुद्वारा बाल लीला साहिब सुशोभित है और इस गुरुद्वारे में प्रतिदिन पूरी-छोले और खीर प्रसाद के रूप में वितरित की जाती है। उस समय में आप ने अपने स्वाभिमान का परिचय देते हुये नवाब की जाती हुई सवारी को सलाम करने से मना कर दिया था।

जब बाल गोविंद राय अपने पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी की आज्ञा से श्री पटना साहिब जी से श्री आनंदपुर साहिब जी आये तो उनकी सुलभ बाल लीलाओं ने सभी आनंदपुर वासियों का दिल जीत लिया था। उस समय में माता गुजर कौर जी के मार्गदर्शन में आपको शस्त्र और शास्त्र की विधिवत शिक्षा प्रदान की गई थी। गुरबाणी के ज्ञान के अतिरिक्त हिंदी, ब्रजभाषा, संस्कृत, अरबी और फारसी भाषाओं के ज्ञान की उत्तम समुचित व्यवस्था आप के लिए की गई थी साथ ही घुड़सवारी और युद्ध कला आदि का प्रशिक्षण भी आप को दिया गया था। कारण आप के दारोमदार और व्यक्तित्व से ही भविष्य की नीतियों का निर्धारण होना शेष था।
उस समय में बादशाह औरंगजेब की धार्मिक नीतियों ने देश में त्राहि-त्राहि मचा दी थी। हिंदू कश्मीरी ब्राह्मणों को चुन-चुन कर इस्लाम धर्म में उनका धर्म परिवर्तित करवाया जा रहा था ऐसे कठिन समय में ब्राह्मणों का एक दल गुरु पातशाह जी की शरण में श्री आनंदपुर साहिब में आया और उन्होंने अपनी पीड़ा गुरु पातशाह जी के समक्ष व्यक्त की, सुनकर गुरु पातशाह जी चिंतित मुद्रा में बोले के इस कठिन समय में किसी महान महापुरुष की शहादत की आवश्यकता है। पास ही विराजमान 9 वर्षीय गोविंद राय ने कहा कि पिता जी इस समय आप से बड़ा कौन धर्मात्मा महापुरुष है? श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने उस समय इसे अकाल पुरख की आज्ञा मानकर कश्मीरी पंडितों से वचन किये की जाओ और कह दो औरंगजेब से कि यदि श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी इस्लाम स्वीकार कर लेंगे तो हम सभी धर्म परिवर्तित कर लेंगे, इस चुनौती की परिणीति उनकी शहादत में हुई और 11 नवंबर सन् 1675 ई. को दिल्ली के चांदनी चौक में गुरु पातशाह जी ने अपने साथी भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दयाला जी के साथ तिलक और जनेऊ की रक्षा के लिए महान शहादत अर्पित की थी।
ऐसे कठिन समय में 9 वर्ष की बाल अवस्था में ही बाल गोविंद राय को गुरु गद्दी पर सन् 1675 ई. में विराजमान कर दिया गया था। निश्चिती इस कठिन समय में आप को माता गुजरी जी का आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। माता जी ने एक आदर्श माता के साथ-साथ एक जिम्मेदार पिता का दायित्व भी बखूबी निभाया था। आप को 'गुरु के महल' के रूप में माता जीतो जी, माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ था। आप को 4 साहिबजादों, साहिबजादा अजीत सिंह जी, साहिबजादा जुझार सिंह जी, साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह की प्राप्ति पुत्र रत्नों के रूप में हुई थी। आप की रचित प्रमुख वाणियां जाप साहिब, तवप्रसादि, शबद् हजारे, चौपाई साहिब, दशम् ग्रंथ और ज़फ़रनामा है।
गुरु पातशाह जी ने समाज में चेतना जागृत करने हेतु साहित्य की भूमिका पर विशेष बल दिया और विभिन्न प्रदेशों के कवियों, लेखकों को गुरु दरबार में आमंत्रित कर उन्हें रचनाओं को रचित करने हेतु प्रोत्साहित किया। उस समय में इन कवियों की वीर रस की रचनाओं ने समाज में नई ऊर्जा और अभूतपूर्व चेतना का निर्माण किया था। उस समय निर्मल पंथ की चढ़दी कला में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा था। समय की हुकुमत से टकराने के लिए गुरु पातशाह जी ने उत्तम योद्धा और रणबांकुरे तैयार किये थे, केवल 42 वर्ष की छोटी आयु में आप ने 14 युद्ध लड़े थे पर सभी युद्धों पर निश्चय कर अपनी जीत करी थी। आप के पहले युद्ध पहाड़ी राजाओं से होते रहे तत्पश्चात पहाड़ी राजा और मुगल शासन की संयुक्त सेना का डटकर मुकाबला कर, आप ने अपनी जीत को देश और धर्म की रक्षा के लिए हासिल किया था।

दशम पिता गुरु पातशाह जी ने 13 अप्रैल सन् 1699 ई. बैसाखी पर्व पर 'गुरु पंथ खालसा' की साजना मानवता के कल्याण एवं जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने के लिए की थी आप ने देश के विभिन्न भागों से पधारे अपने 5 सिखों की कठिन परीक्षा लेकर (इस परीक्षा में यह पाँच प्यारे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर शहादत का जाम पीने को तैयार हुये थे) उन्हें सर्वप्रथम खंडे-बाटे की पाहुल का अमृत छका कर, (अमृत पान की विधि) पंज प्यारे सजाये एवं गुरु पातशाह जी ने पांच ककार कंधा, केश, कड़ा, कृपाण और कच्छा को धारण करना अनिवार्य किया। साथ ही गुरु पातशाह जी ने आप स्वयं भी इन पांच प्यारों से अमृत पान कर, गुरु और चेला को एक कर, एक सामाजिक समरसता की आधारशिला को रखा था।
'गुरु खालसा पंथ' की स्थापना (सन् 1699 ई.) के पश्चात गुरु पातशाह जी के समक्ष युद्ध की चुनौतियां लगातार प्राप्त होती रही, 'गुरु पंथ खालसा' की खालसा फौज विजय पर विजय प्राप्त कर रही थी इससे औरंगजेब ने बौखलाकर, मुगल सैनिकों और 22 पहाड़ी राजाओं की सेना ने संयुक्त रूप से गुरु पातशाह जी पर एक साथ आक्रमण करने का निश्चय किया था।

गुरु पातशाह जी ने इन युद्धों में शत्रु सेना का डटकर मुकाबला किया था। जब समय ने करवट बदली तो एक कठिन समय में मजबूर होकर आनंदपुर साहिब का किला दिसंबर की पिछली रात को छोड़ना पड़ा था, सरसा नदी के किनारे पर शत्रुओं ने अपनी सौगंध और धर्म को त्याग कर पीछे से आक्रमण कर दिया था। अचानक हुए युद्ध में सैकड़ों जांबाज सिख सैनिक वीरता पूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। कई सिख सैनिक सरसा नदी की बाढ़ में बह गए थे। गुरु पातशाह जी का बहुमूल्य सामान और महत्वपूर्ण साहित्य भी इस बाढ़ के प्रवाह में बह गया था। इस अफरा-तफरी में गुरु पातशाह जी का संपूर्ण परिवार उजड़ गया था। गुरु पातशाह जी अपने दो बड़े साहिबजादे, साहिबजादा अजीत सिंह और साहिबजादा जुझार सिंह एवं 5 प्यारे और 40 सिखों के साथ चमकौर की गढ़ी में पहुँचे थे और माता गुजरी जी अपने दोनों छोटे साहिबजादे, साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह जी के साथ उनके रसोइये गंगाराम (गंगू) के साथ उसके गांव सेहड़ी पहुँच गए थे। माता साहिब कौर जी और माता सुंदरी जी गुरु पातशाह जी के विद्या दरबार के विद्वान भाई मणी सिंह जी के साथ हरिद्वार पहुँच गए थे। जिस स्थान पर गुरु परिवार बिछड़ा था वर्तमान समय में उस स्थान पर गुरुद्वारा 'परिवार विछोड़ा साहिब जी' सुशोभित है।

चमकौर की गढ़ी में एक और दस लाख की विशाल सेना थी और दूसरी और मात्र 40 सैनिक! मुगलों ने तीन दिशाओं से आक्रमण किया। घनघोर युद्ध हुआ और गुरु पातशाह जी के निर्देश पर पाँच-पाँच खालसा सैनिक 'बोले सो निहालः सत श्री अकाल' का जयघोष कर बारी-बारी से गढ़ी से बाहर आते रहे और यथासंभव अत्यंत वीरता का प्रदर्शन कर, शत्रु सेना का भारी नुकासान कर वीरगति को प्राप्त होते रहे। सिखों ने गुरु पातशाह जी से साहिबजादों के साथ रात के अंधेरे में गढ़ी से बाहर सुरक्षित निकल जाने का निवेदन किया परंतु गुरु पातशाह जी ने कहा कि आप सभी मेरे पुत्र हैं! उन्होंने पहले 17 वर्ष के ज्येष्ठ साहिबजादे अजीत सिंह को युद्ध के लिए स्वयं तैयार किया और आशीर्वाद देकर पाँच सिखों के साथ में भेजा। रणभूमि में बाबा अजीत सिंह अपने शौर्य और युद्ध कौशल का अद्भुत परिचय देते हुए शहादत प्राप्त की थी पश्चात मात्र 13 वर्ष की किशोरावस्था के साहिबजादे जुझार सिंह ने अपने भाई की वीरता से उत्साहित होकर रणभूमि में जाने की आज्ञा मांगी और गुरु पिता का आशीर्वाद लेकर पाँच सिखों के साथ साहिबजादा जुझार सिंह जी ने युद्ध भूमि में शत्रुओं का जमकर प्रतिकार कर शत्रु सेना के दांत खट्टे कर दिए। एक जुझारू योद्धा की तरह साहिबजादा जुझार सिंह भी वीरगति को प्राप्त हुये। (शहीदी: 23 दिसंबर सन् 1705 ई.) दोनों साहिबजादों की शहादत पर गुरु पातशाह ना दुखी हुए और ना उदास! पंचम गुरू, 'शहीदों के सरताज' श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी की रचित बाणी-

तेरा कीआ मीठा लागै॥
हरि नामु पदारथु नानकु माँगै॥

का स्मरण कर उन्होंने अकाल पुरख का शुकराना किया और कहा, 'दोनों साहिबजादे सिखी सिदक में पूरे उतरे हैं और परीक्षा में पास हुए।

माता गुजरी जी और दोनों छोटे साहिबजादों, साहिबजादा जोरावर सिंह (जन्म:28 नवंबर सन् 1696 ई. स्थान: श्री आनंदपुर साहिब जी) और साहिबजादा फतेह सिंह जी (जन्म:12 दिसंबर सन् 1698 ई. स्थान: श्री आनंदपुर साहिब जी) को जब गुरु घर का रसोइया गंगू उर्फ गंगाराम अपने घर लाया तो उनके जेवरात, आभूषण, सोने की मोहरें इत्यादि कीमती सामान देखकर और सरकारी इनाम के लालच में उसका ईमान डोल गया और उसने माता जी साहिबजादों को गिरफ्तार करवा दिया था। माता गुजरी जी ने रात भर साहिबजादों को धर्म और न्याय के लिये श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी और श्री गुरु तेग बहादुर जी के महान बलिदानों की साखियाँ सुनाई और उनका मनोबल बढ़ाया। साथ ही किसी भय या लालच में आकर अपने धर्म से विचलित ना होने की सीख दी।

दुसरे दिन दोनों साहिबजादों को नवाब वजीर खान की कचहरी में पेश किया गया। जब दीवान सुच्चा नंद ने साहिबजादों से नवाब साहब को झुक कर सलाम करने का कहा तो उनका उत्तर था, 'हमारा शीश केवल अकाल पुरख के अलावा किसी के सामने नहीं झुक सकता! साम, दाम, दंड और भेद के उपायों द्वारा साहिबजादों को धर्म-परिवर्तन कर इस्लाम कबूल करने के लिये उकसा कर, प्रयत्न किये गये और बड़े साहिबजादों एवं गुरु पातशाह की मृत्यु की गलत सूचना दी गई।

सुख-सुविधाओं और ऐशो आराम के प्रलोभन दिये गये। दीवान सुच्चा नंद ने नवाब को भड़काया साहिबजादों को बागी और बागी के पुत्र कहा था। उनके जीवन को मुगल सल्तनत के लिये भावी खतरा बताया और उन्हें सजा-ए-मौत देने का सुझाव दिया परंतु काजी का सुझाव था कि इस्लाम में बच्चों को सजा की अनुमति नहीं हैं, तब नवाब वजीर खान ने साहिबजादों को निर्णय लेने के लिये समय दिया। दो दिन तक पुनः भय और प्रलोभन द्वारा साहिबजादों के धर्म परिवर्तन का प्रयास किया गया, परंतु वे रंचमात्र भी भयभीत नहीं हुए थे कारण जगत् माता गुजरी जी ने आपको गुरबाणी का निम्न फ़रमान अच्छी तरह से दृढ़ करवा दिया था, गुरबाणी का फरमान है-

प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै॥
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख॥
(अंग क्रमांक 293)

अर्थात प्रभु की कृपा से ही जीव की मुक्ति होती है। जिसकी प्रभु-परमेश्वर रक्षा करता है उसे कोई दुख नहीं लगता है।

अंततः क्रूर नवाब ने काजी के सुझाव पर दोनों साहिबजादों को जीवित दीवार में चुनवा देने का अमानवीय एवं क्रूरतम आदेश दिया। इस सरहिंद की कचहरी में उस समय में मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद खान भी उपस्थित थे और उन्होंने उस समय में वजीर खान को ऐसी नीच हरकत करने के लिये बहुत लताड़ा था और इस सजा का डटकर विरोध किया था, जबकि नवाब के दोनों सगे भाई नाहर खान और खिजर खान चमकौर के युद्ध में सिखों के हाथों से मारे गये थे। नवाब शेर मोहम्मद खान ने जो वचन सरहिंद की कचहरी में कहे थे, वह निम्नलिखित है--

वैर गुरुदे संग तुमारा, इन मासुमों ने किआ बिगाड़ा॥
शीरखोर मत बालक मारो, ना हक जुलम करो नबारो॥

वजीर खान ने एक ना सुनी और दीवार में जीवित चुनते समय जहाँ उन्हें इस्लाम स्वीकार करवाने के प्रयास किए गए वहां दोनों साहिबजादे वाहिगुरु के नाम का जाप करते रहे। दीवार के कंधों तक आने पर दीवार गिर गई, तब तक दोनों साहिबजादे बेहोश हो चुके थे। बाद में कुरान के विरुद्ध वजीर खान के आदेश पर जल्लाद साशल बेग व बाशल बेग द्वारा साहिबजादों के गले रेत दिए गये। (शहीदी: 26 दिसंबर सन् 1704 ई.) साहिबजादों की शहादत का दुखद समाचार माता गुजरी जी के लिये हृदयविदारक सिद्ध हुआ और उन्होंने उस अकाल पुरख का ध्यान कर, अपने प्राण त्याग कर ब्रह्मलीन (अकाल चलाना) हो गई। कुछ ऐतिहासिक स्रोतों और विद्वान इतिहासकारों का यह भी मानना है की उस समय में ठंडे बुर्ज से मुगल सैनिकों ने जगत् माता गुजर कौर जी धक्का देकर बुर्ज से नीचे फेंक कर शहीद किया था।

अमर शहादत के इस पवित्र स्थल पर सुशोभित है 'गुरूद्वारा फतेहगढ़ साहिब' जी। जगत माता गुजरी जी और साहिबजादों के अंतिम संस्कार की घटना भी उल्लेखनीय है। गुरूदेव के एक श्रद्धालु दीवान टोडरमल को अंतिम संस्कार के लिये इस शर्त पर अनुमति दी गई कि वे आवश्यक जमीन के क्षेत्रफल के बराबर सोने की अशर्फियां खड़ी कर (बिछाकर नहीं) उसका मूल्य चुकाएंगे। अंतिम संस्कार स्थल पर सुशोभित है, 'गुरूद्वारा श्री जोती (ज्योति) सरुप (स्वरुप) साहिब।

चमकौर की गढ़ी से सफलतापूर्वक निकलकर गुरु पातशाह जी दिन-रात पैदल चलकर माछी वाड़े के घने जंगलों में पहुँच गये, अत्यंत कठिन परिस्थिति एवं दिसंबर की सर्द रातों में गुरु पातशाह ईंटों का तकिया बनाकर धरती पर सोने को विवश थे, उसी स्थान पर गुरु पातशाह जी के दो मुस्लिम श्रद्धालुओं ने आप को उच्च का पीर बनाकर लुधियाना के जट्टा पूरा में पहुँचा दिया था। इसी स्थान पर गुरु पातशाह जी को ज्ञात हुआ कि नवाब वजीर खान के द्वारा छोटे साहिबजादों और माता गुजरी को शहीद कर दिया गया है। उस समय में गुरु पातशाह जी ने वचन कर कहा कि मेरे साहिबजादे अमर हो गये और अब सरहिंद की ईंट से ईंट बज जायेगी। साथ ही गुरु पातशाह जी ने पास ही लगा पौधा जमीन से उखाड़ कर वचन किये कि अब मुगलों की जड़ें इस धरती पर से इसी तरह उखाड़ दी जाएगी।

इसके पश्चात गुरु पातशाह जी के खालसाओं ने खदिराणे की ढ़ाब पर लौट कर आए 40 मुक्तों से मिलकर आर-पार का युद्ध किया था। इस युद्ध में शत्रु सेना बहुत बुरी तरह से पराजित हुई थी, सिखों को अभूतपूर्व विजय प्राप्त हुई थी परंतु कई सैनिक और 40 मुक्तें भी वीरगति को प्राप्त हो गये थे। इन युद्धों में अद्भुत विजय प्राप्त कर गुरु पातशाह जी ने स्वयं एक महान सेनानायक की भूमिका को अदा किया था। इस स्थान पर गुरुद्वारा 'श्री मुक्तसर साहिब जी' सुशोभित है।

इन ऐतिहासिक परिपेक्ष्यों के दौरान गुरु पातशाह जी लगातार यात्राएँ कर रहे थे, इन यात्राओं के द्वारा आप 'धर्म चलावन: संत उबारन्' के महा वाक्य के अनुसार अपने लक्ष्य की और निरंतर बढ़ रहे थे पश्चात आप ने साबों की तलवंडी (दमदमा साहिब जी) नामक स्थान पर पहुँच गये और इसी स्थान पर गुरु जी को शांति व स्थायित्व प्राप्त हुआ। इस स्थान पर, आप की वर्षों के पश्चात माता साहिब कौर जी और माता सुंदरी जी से मुलाकात हुई थी। इस स्थान से आप ने अपने धर्म प्रचार-प्रसार के कार्य को प्रारंभ किया एवं प्रचारकों को गुरबाणी का विशेष प्रशिक्षण दिया था। इस स्थान (दीना कंगड़ इलाके में भाई देसा सिंह जी की चौपाल) से आप ने औरंगजेब को अत्यंत कठोर भाषा में ज़फ़रनामा (विजय पत्र) फारसी भाषा में लिखा था। फारसी भाषा के विद्वानों के द्वारा ऐसा माना जाता है कि ज़फ़रनामा फारसी भाषा की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इस स्थान के महत्व को समझते हुए इस 'साबो की तलवंडी' को 'गुरु की काशी' कहकर भी संबोधित किया जाता है। इसी स्थान पर गुरु पातशाह जी ने 'आदि ग्रंथ' में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को जोड़कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपूर्णता को संपन्न किया था। अपने जीवन के अत्यंत कठिन दिनों के पश्चात गुरु पातशाह जी इस स्थान पर दम लिया था इसलिए इस स्थान को श्री दमदमा साहिब जी कहकर भी संबोधित किया गया है। वर्तमान समय में यह स्थान श्री दमदमा साहिब जी सिख धर्म के महान तख्त के रूप में सुशोभित है। आप के समकालीन शासक शहंशाह औरंगजेब (सन् 1658 ई. से सन् 1707 ईस्वी, तक) एवं शहंशाह बहादुर शाह जफर (सन् 1707 ई. से सन् 1708 ईस्वी, तक) थे।

ज़फ़रनामा (विजय पत्र) को पढ़कर औरंगजेब अत्यंत व्याकुल हो गया और उसे इतनी आत्मग्लानि हुई थी उसने अपना शरीर त्याग दिया था पश्चात गुरु पातशाह जी अपनी दक्षिण की यात्रा करते हुये 'अबचल नगर श्री हजूर साहिब नांदेड़' (महाराष्ट्र) में पहुँच गए थे। इस नांदेड़ नामक स्थान से गुरु पातशाह जी ने अपने खालसा धर्म के प्रचार-प्रसार के अभियान को पुनः प्रारंभ किया था। इस स्थान पर अधिक से अधिक संगत ने सिख धर्म को ग्रहण कर, अमृत पान कर 'गुरु पंथ खालसा' में दीक्षित हो गये थे। इसी स्थान पर आप ने बैरागी माधव दास को सच का आईना दिखा कर 'गुरु का बंदा' बना लिया और इस बंदा सिंह बहादुर ने अमृत पान कर सिख धर्म को स्वीकार कर लिया था। गुरु पातशाह जी ने अपने इस वीर सेनानी को 5 तीर, एक शमशीर और 5 सिखों के साथ हुकुमनामा देकर, धर्म युद्ध के लिए पंजाब की ओर जाने की आज्ञा प्रदान की थी।

इधर वजीर खान ने षड़यंत्र कर, गुरु पातशाह जी को शहीद करने के लिए गुल खान और जमशेद खान नामक पठानों को प्रलोभन देकर नांदेड़ भेजा था। दोनों ही पठान अत्यंत चतुराई से गुरु पातशाह जी के श्रद्धालु बन गए और एक दिन अचानक रहिरास साहिब जी के पाठ के पश्चात उन्होंने मिलकर गुरु पातशाह जी पर छुरे से, धोखे से वार कर दिया। गुरु पातशाह जी ने अपनी कृपाण से दोनों का ही हिसाब कर दिया था अर्थात उनका जीवन समाप्त कर दिया था। उस समय गुरु पातशाह जी के पेट पर लगे गंभीर घाव को टांके लगाकर सिल दिया गया था परंतु कुछ दिनों के पश्चात कमान पर तीर चढाते हुए या सिला हुआ घाव खुल गया एवं रक्त स्त्राव होने लगा था, तभी गुरु पातशाह जी को पूर्वाभास हो चला था कि उनका अकाल पुरख से मिलने का समय निकट आ गया है।

7 अक्टूबर सन 1708 ई. गुरु पातशाह जी ने संगत को एकत्र कर देहधारी गुरु परंपरा की समाप्ति की घोषणा की एवं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु गद्दी पर विराजमान कर अपनी अंतिम फतेह 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह'! का जयघोष कर ज्योति-ज्योति (अकाल चलाना) समा गये थे। वर्तमान समय में यह स्थान सिख धर्म के प्रसिद्ध तख्त के रूप में 'अबचल नगर' गुरुद्वारा श्री सचखंड हजूर साहिब नांदेड़' (महाराष्ट्र) सुशोभित है।

ऐसे महान युगांतकारी, युगदृष्टा, साहिबे कमाल: श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी को सादर नमन!

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी: निर्मिती एवं स्वरुप

बाणी गुरु गुरु है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे॥ गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरु निसतारे॥ (अंग क्रमांक 982)

अर्थात वाणी गुरु है और गुरु ही वाणी है, गुरु और वाणी में कोई अंतर नही है, गुरु की वाणी ही गुरु है और गुरबाणी में सारे अमृत मौजूद है।

संपूर्ण सृष्टि के गुरु 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' का संकलन और संपादन सिख धर्म के संस्थापक प्रथम गुरु 'श्री गुरु नानक देव साहिब जी' से ही प्रारंभ हो चुकी था। श्री गुरु नानक देव साहिब जी ने समकालीन सभी भक्तों, संतों और विद्वानों की वाणी का संकलन प्रारंभ किया। प्रमुख रूप से इन वाणियों में एक अकाल पुरख की महिमा का वर्णन किया गया है। इस सारे बहुमूल्य खजाने की विरासत को आप ने दूसरे श्री गुरु अंगद देव साहिब जी को सौंपी थी। श्री गुरु अंगद देव साहिब जी ने इन वाणियों की छोटी-छोटी पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर प्रचार-प्रसार किया था पश्चात श्री गुरु नानक देव जी की बाणी और श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा रचित वाणियों का संकलन तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास साहिब जी को विरासत के रूप में मिला। इस तरह से इन वाणियों का संकलन चौथे गुरु श्री गुरु रामदास साहिब जी के कार्यकाल से होते हुए पांचवें गुरु श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी को विरासत में मिला। इन सभी वाणियों की प्रमाणिकता ठीक रहे और उनमें कोई मिलावट ना हो इसलिए पाँचवे गुरु श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने भाई गुरदास जी की सहायता लेकर इन सारी वाणियों को क्रमानुसार संकलित कर श्री आदि ग्रंथ की स्थापना की थी। इस स्थापना दिवस को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पहले प्रकाश पर्व के रूप में पूरी दुनिया में मनाया जाता है साथ ही इसी दिन श्री हरि मंदिर साहिब जी अमृतसर में श्री आदि ग्रंथ को सुशोभित किया गया था एवं उस समय में बाबा बुड्ढा जी को प्रथम हेड ग्रंथी के रूप में मनोनीत किया गया था। 'श्री आदि ग्रंथ' की वाणियों का प्रचार-प्रसार कर समाज में अज्ञानता को दूर कर, ज्ञान का प्रकाश इन वाणियों से किया जाता था।

'श्री गुरु नानक देव साहिब जी' के द्वारा स्थापित 'शबद् गुरु के सिद्धांत को इस महान ग्रंथ में विशेष सम्मान दिया। गुरु पातशाह जी ने **'गुरु ग्रन्थ जी मानिओ प्रगट गुरां की देह'** का संदेश दिया। सिख दर्शन में बाणी को गुरु और ग्रंथ को उस अकाल पुरख का स्वरूप माना गया है। 'श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी' ने जब 'आदिग्रन्थ' का संपादन किया तो **'पोथी परमेसर का थान'** कह कर बाणी को पोथी का सम्मान किया और 'आदिग्रन्थ' को श्री हरिमंदिर साहिब, अमृतसर में आदर सहित सुशोभित किया। श्री गुरु नानक देव साहिब जी ने भी अपनी वाणी को खसम (परमात्मा) के आदेश से प्राप्त बाणी कहा है और 'शबद्' को 'गुरु' की उपमा प्रदान की है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी एकमात्र ऐसे ग्रन्थ है, जिसका प्रतिदिन नियमानुसार 'प्रकाश' और 'सुखासन' किया जाता है। 'प्रकाश' से आशय प्रातः कालीन पाठ के लिए ग्रंथ का वस्त्र आवरण (रुमाला साहिब) हटाकर विधि पूर्वक सम्मान से खोला जाना है और 'सुखासन' से आशय रात्रि-विश्राम के लिए ग्रन्थ को वस्त्र-आवरण में (रुमाला साहिब) में रखकर विधि पूर्वक, सम्मान से, सर्व सुविधा युक्त निर्धारित कक्ष में विश्राम कराया जाता है। एक जीवित गुरु की भाँति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के श्रद्धा पूर्वक दर्शन कर, शीश झुका कर, मत्था टेक कर सम्मान देने की प्रारंभ से ही परंपरा है।

सिख धर्म के नौवें गुरु 'धर्म की चादर, श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को स्वयं आप दशमेश पिता श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने 'श्री आदि ग्रंथ' में अंकित की थी। श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने 7 अक्टूबर सन् 1708 ई. में श्री आदि ग्रंथ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी संबोधित कर महाराष्ट्र की पवित्र धरती 'श्री अबचल नगर हजूर साहिब' नांदेड़ में युग-युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को दसों गुरुओं की जागती-ज्योति, नाम के जहाज, बाणी के बोहिथा, अमृत सागर, ज्ञान सागर, जोहरा-जहूर, हाजरा-हजूर इत्यादि उपमाओं से सुशोभित कर गुरु स्थान पर सुशोभित किया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी एक ऐसा अद्भुत एवं विलक्षण अपरंपार ग्रंथ है जिसे गुरु की महिमा प्राप्त है। साथ ही यही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है, जिसमें सिख गुरुओं और समकालीन संतो-भक्तों द्वारा उच्चारित वास्तविक वाणी संकलित है।

सन् 1708 ई. में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का जो शुद्ध एवं पूर्ण स्वरूप था, वर्तमान समय में भी वह ही मूल स्वरूप विद्यमान है। इसमें कोई कमी, वृद्धि या परिवर्तन नहीं किया गया है। यह प्रामाणिकता श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को एक विलक्षण ग्रंथ बनाती है। भाई गुरदास जी लिखते है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पूर्ण सतगुरु हैं और पूर्ण स्वरूप में तैयार किये गये है, साथ ही इसमें बदलाव करना असंभव है, इस महान ग्रंथ को संपादित करते समय पूर्ण रूप से संतुलित किया गया है, इसमें न कुछ बढ़ाया जा सकता है और ना ही कुछ घटाया जा सकता है।
गुरबाणी में अंकित है-

पूरा सतिगुरु जाणीऐ पूरे पूरा ठाटु बणाइआ॥
पूरे पूरा तोलु है घटै न वधै घटाइ वधाइआ॥
(वारा भाई गुरदास जी 26:16)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी तथ्यों पर आधारित है। यह बाणी आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है। वाणी में सृष्टि की रचना, सृष्टि की रचना का समय, सृष्टि की विशालता और विनाश आदि संबंधी जो वर्णन है, वह पूर्णतः विज्ञान सम्मत है। जल को जीवन कहा गया है। 'श्री गुरुग्रंथ साहिब जी' के अनुसार परमात्मा के हुक्म से गैसें उत्पन्न हुई। गैसों से जल और जल से वनस्पति और जीव-जंतु उत्पन्न हुये है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फ़रमान है-

साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ॥
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ॥ (अंग क्रमांक 19)
इसी तरह 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की बाणी का फ़रमान है-
पाताला पाताल लख आगासा आगास॥ (अंग क्रमांक 5)

अर्थात लाखों आकाश और पाताल होने का संकेत इस वाणी में है।
इसी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फ़रमान है-

कोटि ब्रहमंड जा के ध्रमसाल॥ (अंग क्रमांक 1156)

अर्थात धर्म का आचरण करने हेतु करोड़ों ब्रह्मांड का निर्माण किया।
इसी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फरमान है-

धरती होरु परै होरु होरु॥ (अंग क्रमांक 3)

अर्थात इस धरती पर सृजनहार ने रचना की है, वह परे से परे है।

इसी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फरमान है-

केते इंद चंद सूर केले केते मंडल देस॥ (अंग क्रमांक 7)

अर्थात अनेक इंद्र, चंद्र, सूर्य और मंडलों का संकेत है एवं मंडल अंतर्गत देश है॥
इसी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फरमान है-

कई बार पसरिओ पासार॥ (अंग क्रमांक 276)

अर्थात सृष्टि की बार-बार की रचना का संकेत है।
इसी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फरमान है-

खेलु संकोचै तउ नानक एकै॥ (अंग क्रमांक 292)

अर्थात सृष्टि के विनाश का चित्रण है। यह संकेत और चित्र विज्ञान की नवीनतम खोजों के अनुरूप हैं। अन्य जीवों के कल्याण के लिए परमात्मा ने मनुष्य की रचना की है और उसके लिए स्त्री-पुरुष को माध्यम बनाया है। इस प्रकार वैज्ञानिक दृष्टि से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी तथ्यात्मक है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के संपादन में वाणियों को अनुक्रमित किया गया है। जिससे इसमें किसी भी प्रकार की मिलावट की कोई संभावना नहीं रहती है। प्रत्येक वाणी को इस तरह से अंकित किया गया है कि उसके क्रमांक से जिन गुरुओं की या भक्तों की वाणी है तुरंत पता चल जाता है, जिससे की पूर्ण वाणी मूल रूप से सुरक्षित है। इस तरह से जिन रागों में वाणी को अंकित किया गया है उनका भी नाम से दर्शाया गया है। साथ ही उन रागों के कौन से घर/ताल (PITCH) में शबद (पद्य) का उच्चारण करना है, उसे भी वर्णित किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में प्रत्येक पढ़ी जाने वाली वाणी की विशेषता को भी पढ़ने के पहले अंकित किया गया है।

प्रत्येक पद्य के शीर्षक में 'राग' और 'महला' (गुरुवाणी कार) अंकित किया गया है। पहला अंक 'बंद' का सूचक है। दूसरा अंक उस 'घर' का सूचक है जिस ताल में पद्य का गायन करना है। तीसरा अंक बाणी कार द्वारा संबंधित राग में रचित कुल पदों की संख्या' का सूचक है।

एक पद्य (अंग क्रमांक 450) के उदाहरण द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की इस विलक्षण अंक प्रणाली को समझा जा सकता है-

आसा महला 4॥
जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे॥
जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे॥
हरि संता नो होरू थाउ नाही हरि माणु निमाणे॥
जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे॥1॥
जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरु सो थानु सुहावा राम राजे॥
गुरसिखी सो थानु भलिआ लै धूरि मुखि लावा॥
गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा॥
जिन् नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा॥2॥
गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे॥
करि सेवहि पूरा सतिगुरु भुख जाइ लहि मेरी॥
गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी॥
जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी॥3॥
गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरु डिठा राम राजे॥
कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मीठा॥
हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिना् मेरा सतिगुरु तुठा॥
जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा॥4॥12॥19॥

आसा महला चौथा में यह बाणी चतुर्थ गुरु श्री गुरु रामदास साहिब जी द्वारा रचित है। जो राग आसा में है, अंक 4 अर्थात इस पद्य में कुल 4 बंद हैं। प्रत्येक बंद चार पंक्तियों का है। अंक 12 इस पद्य का गायन राग आसा में घर 12 में किया जाना चाहिए। अंक 19 अर्थात यहां तक आसा राग में महला चौथा के 19 पद्य आ चुके हैं। इस प्रकार प्रत्येक पद्य को पूर्णतः सुरक्षित और संतुलित किया गया है। निश्चित ही इस संकलन में किसी प्रकार की कमी-वृद्धि करने की कोई संभावना ही नहीं है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी एक सम्पूर्ण साहित्यिक रचना के रूप में प्रतिष्ठित है। बाणी कारों ने वाणी द्वारा परमात्मा का गुणगान किया है जिसका संबंध साहित्य में भाव पक्ष से है, सम्पूर्ण वाणी पद्य में है। काव्य के विभिन्न रूपों में चतुष्पदी, अष्टपदी, छन्द, श्लोक, वार आदि का प्रयोग है। उल्लेखनीय है कि ग्रन्थ के वाणी कारों ने वाणी में संदेश को अधिक महत्व दिया है, छंद विधान को नहीं। प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों के सहज प्रयोग से वाणी सरल एवं व्यवहारिक है। वाणीकारों ने कला पक्ष काव्य के सौंदर्य रस, छंद और अलंकार के प्रति विशेष ध्यान नहीं दिया। रस और अलंकार सहज रूप से वाणी में व्यक्त हुए हैं। पद्य के केंद्रीय और स्थायी भाव को व्यक्त करने वाले बंद के आगे 'रहाउ' शब्द का प्रयोग है। जिसका अर्थ है, टेक अर्थात ठहर कर विचार करना। निश्चित ही गुरबाणी धुर परमात्मा की वाणी है और परमात्मा की वाणी का परमात्मा के समान ही सर्व सुंदर और सम्पूर्ण होना स्वाभाविक है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का बाहरी स्वरूप जितना भव्य है, उसका आंतरिक सौंदर्य अर्थात दर्शन उतना ही विराट और आनंदमय है।

श्री आदि ग्रंथ में सिख धर्म के प्रथम 6 गुरुओं की वाणी अंकित है और समकालीन 15 भक्तों के अतिरिक्त 11 भट्टों (भाई भीखा जी, भाई कलसहार जी, भाई जालप जी, भाई किरत जी, भाई सल्ल जी, भाई नल्ल जी, भाई भल्ल जी, भाई गयंद जी, भाई मथुरा जी, भाई बल्ल जी और भाई हरिबंस जी) की वाणीओं का संकलन किया गया है। साथ ही तीन गुरु सिखों की वाणी (भाई सुंदर जी, भाई बलवंड जी, भाई सत्ता जी) की भी वाणियों को भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में संकलित किया गया है। जिन 15 भक्तों और गुरु सिखों की वाणियों का संकलन किया गया है। वह सभी भक्त एवं गुरसिख स्वयं मेहनत, मजदूरी कर किरत करते थे एवं परमात्मा के सच्चे नाम का प्रचार-प्रसार करते थे। जिनका संबंध देश के विभिन्न धर्मों, वर्गों, जातियों और क्षेत्रों से रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सर्वधर्म और सद्भावना का ग्रंथ, मानवता का सर्व सांझा ग्रंथ और वाणी को सर्व सांझी गुरबाणी कहा जाता है। इस महान ग्रंथ के संपादन के समय 'श्री गुरुअर्जुन देव साहिब जी' ने फ़रमान किया था-

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा॥
(अंग क्रमांक 747)

निश्चित ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संबंध किसी धर्म, जाति या वर्ण विशेष से नहीं है वरन् चारों वर्णों के कल्याण से है। इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में जहां हिंदू धर्म ग्रंथ, वेद, उपनिषद, स्मृति, शास्त्र आदि के संदर्भ हैं, वहीं मुस्लिम-यहूदी ग्रंथ 'कतेब' के भी संदर्भ हैं। 'सरबत का भला' की अवधारणा इसी विलक्षणता का प्रतीक है। निश्चित ही 'एकेश्वरवाद' पर आधारित सिख धर्म

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई॥ (अंग क्रमांक. 611)
सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ॥ (अंग क्रमांक 653)
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥ (अंग क्रमांक 1349)

जैसे गुरबाणी के संदेशों में विश्वास रखता है। धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण, लिंग आदि के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव स्वीकार नहीं करता है। अनेकता में एकता को भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता कहा गया है और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी इस विशेषता का यह एक साक्षात प्रमाण है। निश्चित ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का केन्द्रीय विषय 'भक्ति से मुक्ति' है इसलिए चंवर, तख्त के मालिक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को संपूर्ण सृष्टि का गुरु माना जाता है। इसमें अंकित वाणी इंसानियत की वाणी है। सृष्टि में स्थित प्रत्येक प्राणी के कल्याण के लिए ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की स्थापना हुई है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन वाणी का संदेश एवं शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है, विश्व-प्रेम, विश्व-शांति और विश्व कल्याण विभिन्न देशों द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति, एकता और सद्भावना की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। वर्तमान समय का यह दुर्भाग्य है कि विश्व में आर्थिक और सैन्य महाशक्ति बनने की एक प्रतियोगिता चल रही है। जिससे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में नित्य-प्रतिदिन नई विसंगतियां उत्पन्न हो रही हैं। इन विषम परिस्थितियों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन वाणी के प्रेम, कर्म, ज्ञान और भक्ति के संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो गये हैं। सदा प्रासंगिक रहेगी 'सरबत का भला' की पवित्र अवधारणा जो विश्व शांति, विश्व-प्रेम, विश्व-बंधुत्व और विश्व कल्याण का आधार है और सदा शुभ और मंगलकारी रहेगा '੧ੴ सतिगुर प्रसादि॥' का पावन गुरु मंत्र जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का आधार है और मानव-कल्याण का भी एक पावन-पुनीत गुरूमंत्र है।

'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रत्येक धर्म, मजहब और पंथ के व्यक्ति बहुत ही आदर-सत्कार के साथ विनम्रता पूर्वक अपना शीश झुकाकर 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' को नमन करते हैं।

अध्याय दो-

गुरु पंथ खालसा की ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण जानकारी– (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

पांच तख्त-

श्री अकाल तख्त साहिब-

श्री अकाल तख्त साहिब का निर्माण छठे गुरु श्री गुरु हरगोबिंद साहिब, मीरी-पीरी (भक्ति और शक्ति) के दाते ने करवाया है। यह अमृतसर, पंजाब , भारत में दरबार साहिब (स्वर्ण मंदिर) परिसर में स्थित है । श्री अकाल तख्त साहिब की सृजना सन 1609 ई. को श्री दरबार साहिब अमृतसर साहिब की परिक्रमा में दर्शनी ड्योढ़ी के सामने की गई है। श्री अकाल तख्त साहिब का 'गुरु पंथ खालसा' में प्रमुख स्थान है। श्री अकाल तख्त साहिब से संपूर्ण पंथ को राजनीतिक एवं धार्मिक गतिविधियों का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। श्री अकाल तख्त साहिब से जो भी हुक्म जारी होता है, उसे प्रत्येक सिख को, चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में हो उसे मानना उतना ही जरूरी है, जितना जीने के लिए भूख मिटाना। पंथ की प्रत्येक समस्या का निराकरण पांच सिंह साहिबान इकट्ठे होकर, तख्त साहिब पर बैठ कर, सर्वसम्मति से विचार करते है और इसके पश्चात हुक्म जारी होता है। जारी हुक्म व्यक्ति विशेष के लिए भी हो सकता है एवं समस्त पंथ के लिए भी!

तख्त पटना साहिब-

तख़्त श्री पटना साहिब या श्री हरमंदिर जी, पटना साहिब सूबा बिहार के पटना शहर के पास पटना सिटी में स्थित सिख आस्था से जुड़ा यह एक ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है। यहाँ सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह का जन्म स्थान है। गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म 22 दिसम्बर सन 1666 ई. शनिवार को माता गुजरी के गर्भ से हुआ था। उनका बचपन का नाम गोबिंद राय था। इस स्थान का निर्माण शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह द्वारा करवाया गया था, यह विलोभनीय गुरुद्वारा स्थापत्य कला का सुन्दर नमूना है।

तख्त श्री केसगढ़ साहिब-

तख्त श्री केसगढ़ साहिब श्री आनंदपुर साहिब सूबा पंजाब में स्थित है। यह स्थान खालसे का जन्म स्थान भी कहलाता है। आनंदपुर साहिब में धार्मिक स्थलों के समूह में सबसे महत्वपूर्ण गुरुद्वारा केशगढ़ साहिब है, जो इस स्थान पर स्थित है जहाँ "खालसा" का जन्म हुआ था। यह वह स्थान है जहां 1699 ई. में बैसाखी के दिन (13 अप्रैल) को दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने यहां पांच प्यारे सिखों को "पंज प्यारों" के रूप में सजा कर खालसे की स्थापना की थी। गुरु जी के आदेश पर, हजारों सिख इस पहाड़ी पर एकत्र हुए थे जहां अब गुरुद्वारा केशगढ़ साहिब है। इस समारोह ने गुरु जी के अनुयायियों को एक नई पहचान दी, जिसका उद्देश्य सिखों को जोर / जुल्मी राज्य के खिलाफ संघर्ष के लिए तैयार करना और देश के भविष्य को सुरक्षित करना था।

तख्त श्री दमदमा साहिब-

श्री गुरु गोविंद सिंह जी तख्त श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो जिला बठिंडा, (सूबा पंजाब) के स्थान पर मुगलों के घेरे से आजाद होकर (लक्खी जंगल में) कुछ समय आराम से रहे थे। इस स्थान पर गुरु जी की हजूरी में कवि सम्मेलन भी हुआ करते थे। यहीं पर गुरु जी ने भाई मनी सिंह जी के हाथों श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ (ग्रंथ) को दोबारा लिखवाया था।

तख्त श्री हजूर साहिब-

दक्षिण भारत के नांदेड़ शहर अबचल नगर तख्त सचखंड (सूबा महाराष्ट्र) में स्थित है। इसी स्थान पर श्री गुरु गोविंद सिंह जी की ज्योति-ज्योति समाये थे। इसी स्थान पर श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु गद्दी प्रदान की थी और अपने पश्चात गुरु पंथ खालसा को गुरु मानने का आदेश दिया था।

पांच प्यारे-

1. भाई दया सिंह जी- आप जाति के खत्री थे और लाहौर (पाकिस्तान) के निवासी थे।
2.भाई धर्म सिंह जी- आप जाति के जाट थे और हस्तिनापुर (दिल्ली) के निवासी थे।
3.भाई हिम्मत सिंह जी- आप जाति के दर्जी थे और द्वारका (गुजरात) के निवासी थे।
4.भाई मोहकम सिंह जी- आप जाति के झीवर थे और जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) के निवासी थे।
5.भाई साहिब सिंह जी- आप जाति के नाई थे और बीदर (कर्नाटक) के निवासी थे।

शहीद प्यारे-

पांच प्यारों में से चमकौर के युद्ध में शहीद होने वाले तीन प्यारों के नाम निम्नलिखित है-
1. भाई हिम्मत सिंह जी।
2.भाई मोहकम सिंह जी।
3.भाई साहिब सिंह जी।

चार साहिबजादे-

1. साहिबजादा बाबा अजीत सिंह जी।
2.साहिबजादा बाबा जुझार सिंह जी।
3.साहिबजादा बाबा जोरावर सिंह जी।
4.साहिबजादा बाबा फतेह सिंह जी।

चार वज्र कुरुतियां-

1. केशों की बेअदबी करना।
2. कुठा मांस खाना।
3. पराई स्त्री/पराए पुरुष का गमन (भोग) करना।
4. तंबाकू का सेवन करना।

पांच ककार-

1. केश।
2. कंघा (लकड़ी से निर्मित)।
3. कड़ा (लोहे से निर्मित)।
4. कृपाण (श्री साहिब जी)।
5. कच्छहरा (कच्छा)।

अमृतसर में स्थित पांच सरोवरों के नाम-

1. श्री अमृतसर साहिब जी।
2. श्री संतोखसर साहिब जी।
3. श्री रामसर साहिब जी।
4. श्री विवेक साहिब जी।
5. श्री कौलसर साहिब जी।

खालसा के चार रंग-

1. नीला रंग।
2. काला रंग।
3. सफेद रंग।
4. केसरी रंग।

सिखों के चार धाम-

1. श्री ननकाना साहिब जी।
2. श्री अमृतसर साहिब जी।
3. श्री तरनतारन साहिब जी।
4. श्री मुक्तसर साहिब जी।

सिखों के चार संस्कार-

1. जन्म संस्कार।
2. अमृतपान संस्कार।
3. आनंद कारज संस्कार
4. अंतिम संस्कार।

सिखों का अभिवादन-

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह!

सिखों का जयकारा-

बोले सो निहाल, सत श्री अकाल।

सिंह और कौर का शाब्दिक अर्थ–

सिंह अर्थात शेर! कौर अर्थात राजकुमारी!

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रदत्त तीन सिद्धांत-

1. किरत करो अर्थात कष्ट कर के कमाई करो।
2. नाम जपो अर्थात प्रभु-परमेश्वर का स्मरण करो।
3. वंड छको अर्थात जो प्राप्त हो उसे बांट कर खाओ।

गुरु पंथ खालसा-

वह तैयार-बर-तैयार (सजग) सिखों का समूह जो श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के दर्शाये मार्ग पर चलकर जीवन व्यतीत करते है।

गुरु सिखों के दसवंद (किरत कमाई का दसवां हिस्सा) के संबंध में जानकारी-

अपनी किरत कमाई के दसवें हिस्से (दसवंद) को धर्म कार्यों और समाज कार्यों के लिये खर्च करना प्रत्येक सिख का कर्तव्य है।

सिख इतिहास के सबसे बड़े सरोवर के संबंध में जानकारी-

सिख इतिहास में सबसे बड़ा सरोवर तरनतारन साहिब जी सूबा पंजाब में है। इस ऐतिहासिक और पवित्र सरोवर की लंबाई उत्तर दिशा की और 955 फीट है एवं दक्षिण दिशा की और 935 फीट है साथ ही पश्चिम दिशा की और 770 फीट है। इस संपूर्ण परिसर में परिक्रमा की लंबाई, उत्तर दिशा की और 1044 फीट है और दक्षिण दिशा की ओर 1020 फीट है साथ ही पश्चिम दिशा की और 860 फीट है एवं पूर्व दिशा की और 861 फीट है। बारी दोआब नहर की सबराऊ शाखा से इस सरोवर में जल का प्रवाह किया जाता है। इस पवित्र सरोवर की सेवा महाराजा जींद के द्वारा की गई थी। (सौजन्य से-पंजाबी पीडिया)

आनंद कारज-

सिख धर्म में विवाह समारंभ के संपूर्ण कार्यक्रम को ‘आनंद कारज’ के नाम से संबोधित किया जाता है।

कृपाण-

किरपा+आन (सिख की कृपाण कृपा करती है जुल्म नही करती अपितु भला करती है)।

कड़ाह प्रसाद-

चार वस्तुएं (शुद्ध घी, आटा, शक्कर, शुद्ध जल का आवश्यकता अनुसार तैयार किया गया मिश्रण) को अग्नि के ऊपर तय विधि अनुसार पका कर, पंचामृत कड़ाह प्रसाद तैयार किया जाता है।

परिक्रमा-

परिक्रमा अर्थात स्वयं को गुरु के समक्ष समर्पित करना।

पीर-

'गुरु पंथ खालसा' में गुरु के शस्त्रों को पीर की उपाधि से सुशोभित किया गया है।

मीरी-पीरी-

संत-सिपाही और भक्ति-शक्ति के रूप में दो कृपाण है जिन्हें गुरु घर के अनन्य भक्त बाबा बुड्ढा जी ने षट्म पातशाह श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी को धारण करवाई थी।

खालसा के आध्यात्मिक माता-पिता-

माता साहिब कौर जी और पिता श्री गुरु गोविंद सिंह जी।

गुरु पंथ खालसा के सिखों ने इन पांच धर्म के लोगों से मेलजोल नहीं रखना-

1. मीणे सिख।
2. मसंदीये सिख।
3. राम राये सिख।
4. धीर मल्लिये सिख।
5.और सिर गुंमीये सिख।

गुरु पंथ खालसा की सर्जना-

गुरु पंथ खालसा की सर्जना सन् 1699 ई. में बैसाखी दिवस पर 'श्री आनंदपुर साहिब जी' में हुई थी।

नवीन वर्ष-

सिख धर्म का नवीन वर्ष चैत महीने की एक तारीख से प्रारंभ होता है।

सिख इतिहास का प्रथम सरोवर–

सिख इतिहास का प्रथम सरोवर संतोखसर सरोवर है।

वाहिगुरू–

वाहिगुरु शब्द 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में 16 बार अंकित है, इस वाहिगुरु शब्द को प्रथम बार भक्त गयंद जी ने उच्चारित किया था।

सिख इतिहास का प्रथम युद्ध-

सिख इतिहास का प्रथम युद्ध 'श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी' के समय में एक बाज के हक को लेकर हुआ था।

कलगी-

श्री गुरु हरगोबिंद जी ने सर्वप्रथम कलगी सजाई थी।

रहिरास शब्द का अर्थ-

जीवन रुपी रास्ते की वस्तुएं रास्ते की पूंजी।

सिख रियासतें-

सिख रियासतों के नाम इस प्रकार है-

1.पटीयाला

2.जींद

3.नाभा

4. फरीदकोट

5. कैथल

6. कपूरथला

7. कलसीयां।

गुरूमंत्र-

वाहिगुरू-वाहिगुरु गुरु मंत्र है जप हऊमै खोई। (वारा-- भाई गुरदास जी)।

पंजाब-

पंज + आब पांच पवित्र नदियों वाला प्रदेश (सुबा)।

तीर-

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के तीर के आगे सवा तोला सोना लगा होता था।

नगाड़ा और निशान साहिब जी-

नगाड़ा एक प्रकार का वाद्य यंत्र है और निशान साहिब 'गुरु पंथ खालसा के ध्वज को कहते है। यह दोनों ही वस्तुएं श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के समय में प्रचलित हुई थी।

होला महल्ला-

होला अर्थात आध्यात्मिक रंग में स्वयं को रंगने का संदेश और महल्ला अर्थात आक्रमण करना और यह आक्रमण हमें जुल्म, जालिम और स्वयं के अवगुणों पर करना है।

सरदार शब्द का शाब्दिक अर्थ-

मुखिया, आगु, नेतृत्व प्रदान करने वाला, शिरोमणी, सर (शीश), दार (तली)।

गुरुद्वारा गोलसर साहिब जी-

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के बाज का नाम गोला था, इस बाज की स्मृति में गुरुद्वारा गोलसर साहिब जी पातशाही दसवीं का निर्माण मारवा खुर्द जगाधरी (हरियाणा) नामक स्थान पर किया गया है।

गुरु पंथ खालसा के कवियों के संबंध में जानकारी-

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के दरबार में उस समय के देश के 52 कवि अपनी सेवाएं समर्पित करते थे।

आनंद कारज विवाह अधिनियम (एक्ट)-

यह अधिनियम सन् 1909 ई. में भारत में और सन् 1955 ई. में पाकिस्तान में पास हुआ था।

श्री आनंदपुर साहिब जी में स्थित किलों के नाम-

1. निर्मोह गढ़
2. लौह गढ़
3. फतेहगढ़
4. होलगढ़
5. केसगढ़।

खालसा के पांच गुण-

1.युद्धवीर।
2. दानवीर।
3. परमवीर।
4. दानवीर।
5. ज्ञानवीर।

गुरु पंथ खालसा के पांच मुक्तों के नाम-

1. भाई दया सिंह जी।
2.भाई राम सिंह जी।
3.भाई दयाल सिंह जी।
4. भाई ईश्वर सिंह जी।
5. भाई फतेह सिंह जी।

धर्म शब्द का अर्थ-

धर्म शब्द संस्कृत के ध्री धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ होता है, धारण करने वाला।

कैक्सटन हॉल-

लंदन शहर का वह स्थान जहाँ सरदार उधम सिंह जी ने जलीया वाले बाग के हत्याकांड के दोषी जनरल माइकल ओ डायर को गोली मारी थी।

देग-तेग फतेह का अर्थ है-

देग का अर्थ है- जरूरतमंदों को भोजन!
तेग का अर्थ है- शक्तिहीन और निसहाय लोगों की रक्षा करना!
फतेह का अर्थ है– जीत, विजय।

गुटका साहिब (दैनिक पाठ की छोटी पुस्तक) अर्थ-

हीरो को रखने वाला डब्बा।

कीर्तन-

सिख रहत मर्यादा के अनुसार गुरबाणी को गुरमत रागों में उच्चारण करना किर्तन है।

देश का विभाजन-

सन् 1947 ई. में भारत देश का विभाजन हुआ था, भारत देश में विभाजित पंजाब का हिस्सा चड़दा पंजाब और पाकिस्तान में विभाजित पंजाब का हिस्सा लेहंदा पंजाब कहलाता है। इस विभाजन की दुर्देवी घटना में लाखों के अंतर्गत हिंदू, सिख और मुसलमानों का कत्ल हुआ था।

व्हाइट हाउस (यू.एस.ए.)-

व्हाइट हाउस संयुक्त राज्य अमेरिका के वाशिंगटन डी.सी. में स्थित एक भवन का नाम है। यह अमेरिका के राष्ट्रपति का आधिकारिक निवास तथा मुख्य कार्य स्थल है। इस भवन में प्रतिवर्ष श्री गुरु नानक देव साहिब जी का प्रकाश पर्व अत्यंत हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है।

नगाड़ा-

सिख धर्म में श्री गुरु हरगोबिंद जी के समय से ही मीरी-पीरी के सिद्धांत के साथ नगाड़ा भी प्रचलित हुआ था। नगाड़ा राजसी सत्ता का प्रतीक है, सन् 1684 ई. में श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी की और से दीवान चंद नामक सिख के मार्गदर्शन में रणजीत नगाड़े का निर्माण किया गया था। जो कि सिख धर्म की आजादी का प्रतीक है। नगाड़ा वर्तमान समय में भी प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब जी में अरदास (प्रार्थना) के समय पारंपरिक तौर पर बजाया जाता है।

गुरु नानक देव जी विश्वविद्यालय अमृतसर-

इस विश्वविद्यालय का निर्माण श्री गुरु नानक देव साहिब जी के 500 वर्ष प्रकाश पर्व के अवसर पर अमृतसर में किया गया था।

सचखंड एक्सप्रेस-

श्री अमृतसर साहिब जी और अबचल नगर 'श्री हजूर साहिब जी' नांदेड़ (महाराष्ट्र) को जोड़ने वाली रेलगाड़ी।

हुक्मनामे का प्रारंभ-

श्री अकाल तख्त साहिब जी से सर्वप्रथम हुकुमनामा श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने जारी किया था।

जिन्दा शहीद-

चप्पड़ चिड़ी के युद्ध के पश्चात बाबा दीप सिंह को जिन्दा शहीद की उपाधि से नवाजा गया था।

सिखों का रहन-सहन –

सिखों का रहन-सहन दो प्रकार होता है-

1. स्वयं की शख्सियत के अनुसार और
2. पंथक रहन-सहन अनुसार।

अमृत संचार की मर्यादा (शिष्टाचार)-

अमृत संचार के समय, गुरमत मर्यादा के अनुसार कम से कम 6 गुरु सिखों का होना आवश्यक है।

सुनहरिया-

अमृत संचार करते समय, तैयार होने वाले अमृत के बाटे के नीचे जो पत्थर का कुंडा रखा होता है वह सुनहरीया कहलाता है।

अदक् (आधा अक्षर)-

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अदक् अर्थात आधा अक्षर का संपूर्ण गुरबाणी में कहीं भी उपयोग नहीं किया गया है।

गुरु साहिबान के हमशक्ल सिखों के संबंध में जानकारी-

बाबा गुरदित्ता जी श्री गुरु नानक देव साहिब जी के और भाई संगत सिंह जी श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के हमशक्ल थे।

फिफ्टी के संबंध में जानकारी-

ब्रिटिश राज के दौरान, अंग्रेजों द्वारा सिखों को फौज में भर्ती किया गया था। उस समय सिख सैनिकों को वर्दी में पांच ककार पहनने की आजादी के साथ दस्तार पगड़ी को बांधने की मांग सैनिकों द्वारा की गई थी। उस समय बांधे जाने वाली दस्तार (पगड़ी) की लंबाई लगभग 5 मीटर होती थी इस दस्तार को शीश पर मजबूती से सजाने के लिए, शीश पर एक ढाई मीटर का कपड़ा (केसकी) बाँधी जाती थी, जो की पगड़ी दस्तार का 50% कपड़ा था। इस ढाई मीटर के कपड़े को फिफ्टी कहकर अंग्रेजों द्वारा संबोधित किया गया था। पश्चात समय अनुसार इस फिफ्टी ने शीश पर बांधने वाली पट्टी का रूप धारण कर लिया।

गुरु का बोहिथा (जहाज)-

'गुरु पंथ खालसा' में सम्मान पूर्वक भाई मंझ जी को गुरु का बोहिथा (जहाज) कहकर संबोधित किया जाता है। (मंझ पिआरा गुरु को गुर मंझ पिआरा, मंझ गुरु का बोहिथा जग लंगणहारा)।

दो नीले/बसंती निशान साहिब के संबंध में जानकारी–

1. दो नीले निशान साहिब उन गुरुद्वारों/गुरु धामों में सुशोभित किए जाते हैं जो श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी की पावन-पुनीत स्मृति से संबंधित हो|
2. श्री गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी के छोटे साहिबजादे बाबा जुझार सिंह, बाबा फतेह सिंह जी की स्मृति में भी जो गुरुद्वारा/गुरुधाम सुशोभित है, उन पावन-पुनीत स्थानों पर भी दो नीले/बसंती निशान साहिब लगाए जाते हैं|
3. दो नीले/बसंती निशान साहिब उन पावन-पुनीत गुरुद्वारों/गुरु धामों में भी सुशोभित किए जाते हैं जो गुरु पंथ खालसा के शहीदों के चरण चिन्हों से चिन्हित है|

सिखों का खान-पान -

सिखों का खानपान सादा होना चाहिए, जिससे कि मन में विकार नहीं पैदा होते हैं। गुरबाणी का फरमान है-

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु।। जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार।।१।। रहाउ।। (अंग क्रमांक 16)

सिखों की पोशाक-

सिखों की पोशाक सादी होना चाहिए, जिससे कि मन ना भटके और मन में अहंकार का भाव ना आये। गुरबाणी का फरमान है-

बाबा होरु पैनणु खुसी खुआर।। जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार।।१।। रहाउ।।
(अंग क्रमांक 16)

पांच प्रकार की सिक्खी-

1.धंधे की सिखी।
2. देखा-देखी की सिखी।
3. हिरस (लालच) की सिखी।
4. सिदक की सिखी।
5.भाऊ (प्रेम) की सिखी।

गुरुमुखी के अक्षरों की रचना-

गुरुमुखी के अक्षरों की रचना श्री गुरु अंगद देव साहिब जी ने सन् 1541 ई. में की थी।

जफरनामा-

जफ़रनामा अर्थात विजय पत्र: यह एक ऐसा पत्र है जो दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा औरंगजेब को लिखा गया था। 'जफरनामा' एक ऐसा साहित्यिक पत्र है जो हमेशा इतिहास में याद रखा जाएगा। जो कार्य तलवार नहीं कर सकी वो कार्य 'दशमेश पिता' ने अपनी कलम से कर के दिखाया था। यह पत्र मूल रूप से फारसी भाषा में रचित है। यह पत्र फारसी भाषा की सर्वोत्कृष्ट रचना माना जाता है। 'जफरनामा' अपने आप में बहुत ही विशाल और अद्भुत रचना है। इस पत्र को 'दशमेश पिता' ने चमकौर के युद्ध के पश्चात 'दिना कंगड़' के इलाके में स्थित भाई देसा सिंह की चौपाल पर बैठकर लिखा था। इस पत्र को लेकर पंज प्यारे में से एक भाई दया सिंह जी एवं भाई तरन सिंह स्वयं औरंगजेब के पास गए थे।

बाबा गुरदित्ता जी की शख्सियत-

बाबा गुरदित्ता जी ‘गुरु पंथ खालसा’ कि वह महान शख्सियत थे, जिनके पिता श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी थे, दादा श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी थे, परदादा श्री गुरु रामदास साहिब जी थे, पुत्र श्री गुरु हरि राए साहिब जी थे, गुरु हरि राए साहिब जी के पुत्र श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी थे, बाबा गुरदित्ता जी के भाई श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी थे एवं भतीजा (भाई का बेटा) श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी थे।

गुरुओं के समय के अंतिम शहीद-

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी द्वारा गोद लिया हुआ पुत्र बाबा जोरावर सिंह और भाई मान सिंह जी, जिन्होंने चित्तौड़गढ़ के किले के सामने 6 बैसाख सन् 1704 ई. को शहादत प्राप्त की थी।

पांच विकार-

1. काम
2. क्रोध
3. लोभ
4. मोह और
5. अहंकार। यह पांच विकार है, जो गुरु की कृपा और गुरुवाणी से जुड़कर इन विकारों से बचा जा सकता है।

बाबा बघेल सिंह जी की शख्सियत-

बाबा बघेल सिंह जी 'गुरु पंथ खालसा' कि वह महान शख्सियत थे, जिन्होंने दिल्ली के लाल किले पर पहली बार केसरी निशान साहिब (ध्वज) को शान से झुलाया था। आप करोड़ सिंहियां मिसल के जत्थेदार थे।

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी द्वारा बाबा बंदा सिंह बहादुर जी को पंजाब भेजने से पूर्व प्रदान किये गये उपहार-

1. तरकश के पांच तीर।
2. लिखित हुकुमनामें।
3. निशान साहिब (ध्वज)।
4. नगाड़ा।
5. एक फौजी टुकड़ी और पांच सिख।

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी द्वारा बाबा बंदा सिंह बहादुर के साथ पंजाब भेजे गये सिख-

1.भाई विनोद सिंह जी।
2.भाई कहान सिंह जी।
3.भाई बाज सिंह जी।
4.भाई रण सिंह जी।
5.भाई राम सिंह जी।

सारागढ़ी का युद्ध-

सारागढ़ी के महान, अद्वितीय और अनोखे युद्ध को विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज किया गया है। यह युद्ध रविवार, 12 सितंबर, सन् 1897 ई. को समाना रेंज पर सारागढ़ी की चौकी पर हुआ था। यह चौकी कोहाट जिला के सीमा वर्ती गांव जो कि मस्तान (लॉकहार्ट) के किले से लगभग दो माइल्स की दूरी पर जंग तीरा नामक स्थान पर स्थित है। इस युद्ध को एक विशेष दर्जा प्राप्त है क्योंकि अद्वितीय वीरता की इस गाथा में 36 सिख रेजिमेंट के 21 साहसी अमृतधारी सिख वीरों ने लगभग 10,000 ओरकज़ई और अफरीदी आदिवासियों, कबाइलियों का सामना कर सैकड़ों शत्रुओं को मारकर शहादत का जाम पिया था। इन शहीद गुरु सिखों की स्मृति में किला लॉकहार्ट, अमृतसर और फिरोजपुर में स्मारक बनाये गये है।

कवि संतोख सिंह जी की कुछ प्रसिद्ध पुस्तकें-

1.आत्म प्रकाश।
2. गुरु नानक प्रकाश सन् 1880 ई.।
3. जपजी साहिब का गर्ब गजनी टीका सन् 1886 ई.।
4. आत्म पुराण का अनुवाद।
5. वाल्मीकि रामायण का अनुवाद।
6. गुरु प्रताप (सूरज प्रकाश) सन् 1900 ई.।

'गुरु पंथ खालसा' की 6 बक्शीशें-

1. सुथरेशाही।
2. संगत साहिबीऐ।
3. भगत भगवानीऐ।
4. मीहां शाहीऐ।
5. मीत मलीऐ।
6. बखत मलीऐ।

संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करने हेतु श्री गुरु गोविंद सिंह जी के द्वारा काशी भेजे गये पांच सिखों के नाम-

1.भाई राम सिंह जी।
2. भाई कर्म सिंह जी।
3. भाई वीर सिंह जी।
4.भाई गंडा सिंह जी।
5. भाई शोभा सिंह जी।

इन 5 सिखों को गुरु पातशाह जी ने हिंदू धर्म ग्रंथों के अध्ययन के लिये काशी भेजा था।

गुरुद्वारा अधिनियम (एक्ट)-

गुरुद्वारा अधिनियम (एक्ट) 1 जुलाई सन् 1925 ई. को पास हुआ था। इस अधिनियम के तहत सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और अकाली दल के अधीन गुरुद्वारों का प्रबंध एवं समस्त अधिकार इन्हें प्रदान कर दिए थे।

जनरल जोरावर सिंह-

जनरल जोरावर सिंह ने जम्मू के डोगरा सेना के सेनापति के रूप में लद्दाख, बाल्टिस्तान, लेह जीत कर जम्मू राज्य का हिस्सा बनाया. इन्होने तिब्बत क्षेत्र के मानसरोवर और कैलाश (तीर्थ पुरी) तथा भारत और नेपाल के संगम स्थल तकलाकोट तक विजय हासिल की. इन्होने भारत की विजय पताका भारत के बाहर तिब्बत और बाल्टिस्तान तक फहरायी, तोयो (अब चीन में) में युद्ध करते हुए गोली लगने से इनका देहांत हुआ और तोयो में आज भी इनकी समाधी मौजूद है.

श्री दरबार साहिब अमृतसर में स्थित बुंगे (बुर्ज)-

श्री दरबार साहिब अमृतसर में कुल 84 बुंगे थे, जिनमें से प्रमुख बुंगे-- ज्ञानियों के बुंगे, रागीयों के बुंगे, अकालियों के बुंगे, संप्रदाय बुंगे. सरदारों के बुंगे, धर्म बुंगे (संपूर्ण जानकारी के लिए पढ़ सकते हैं गुरूमुखी में ज्ञानी ज्ञान सिंह जी द्वारा रचित पुस्तक: ज्ञानी ज्ञान सिंह तवारीख़ अमृतसर)।

सिरपाऊ बक्शीश (प्रदान) करने का अधिकार क्षेत्र-

किसी योग्य गुरु सिख को सिरोपाऊ बक्शीश करने का अधिकार हेड ग्रंथी साहिब जी के क्षेत्र में आता है।

श्री अकाल तख्त साहिब जी के जत्थेदार-

श्री अकाल तख्त साहिब जी के प्रथम जत्थेदार के रूप में भाई गुरदास जी को नियुक्त किया गया था। इतिहास में ऐसा जिक्र आता है कि श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने ग्वालियर प्रस्थान करने से पूर्व भाई गुरदास जी को जत्थेदार नियुक्त किया था पश्चात के इतिहास की जानकारी प्राप्त नहीं होती है। सन 1633 ई. में भाई गुरदास जी ब्रह्मलीन (अकाल चलाना) हो गये उसके पश्चात का इतिहास अज्ञात है, सिख विद्वानों का विचार एक ही सन् 1699 ई. तक पृथ्वी चंद की संतान ही इस स्थान का प्रबंध करती रही थी, सन् 1699 ई. में भाई मणी सिंह जी ने स्वयं श्री अकाल तख्त साहिब और श्री हरिमंदिर साहिब जी की सेवा-संभाल की थी।

अमृत वेला (ब्रह्म मुहूर्त)-

जब रात्रि का एक पहर शेष रहता है, उस समय को अमृतवेला (ब्रह्म मुहूर्त) कहते हैं अर्थात पौ फटने से पूर्व 3 घंटे का समय।

श्री आनंदपुर साहिब के किले से श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी का प्रयाण-

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने पंजाबी महीना पोह की 6 व 7 (विक्रमी संवत् 1759) के मध्य रात्रि के पिछले पहर को श्री आनंदपुर साहिब जी का किला छोड़ा था (सन् 1704 ई. के हिसाब से 20 और 21 दिसंबर की मध्य रात्रि का पिछला पहर)।

सिख धर्म में निगोड़ा (अभागा)-

सिख धर्म के अनुसार, सिख धर्म के अनुयायी जो खंडे-बांटे का अमृत (अमृत पान की विधि) ग्रहण (छककर) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं, वह सभी गुरु वाले सिख है और जिसने इस प्रण को अधूरा छोड़ दिया, वह निगोड़ा है! गुरबाणी का फरमान है-

निगुरे का है नाऊ बुरा।। (अंग क्रमांक: 434)

श्री दरबार साहिब अमृतसर साहिब जी के सरोवर की लंबाई, चौड़ाई और गहराई-

श्री दरबार साहिब अमृतसर सरोवर की लंबाई 500 फीट, चौड़ाई 490 फीट और गहराई 17 फीट है।

श्री अमृतसर दरबार साहिब जी में सुबह की प्रथम देग-

दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब जी मैं सुबह की देग (कड़ा प्रसाद) की सेवा संत श्याम सिंह जी आटा मंडी वाले (अमृतसर) परिवार की और से की जाती है। संत श्याम सिंह जी आटा मंडी वालों ने श्री दरबार साहिब जी में 70 साल तक सरंदे नामक वाद्य के साथ कीर्तन किया था।

विद्यासागर ग्रंथ-

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी और उनके कवियों द्वारा रचित रचनाओं का संकलन इस ग्रंथ में किया गया था। श्री आनंदपुर साहिब जी का किला छोड़ते समय यह विद्यासागर नामक ग्रंथ सरसा नदी में बह गया था।

श्री गुरु गोविंद सिंह जी का अंतिम युद्ध-

श्री गुरु गोविंद सिंह जी का अंतिम युद्ध खदराना की पहाड़ियों पर श्री मुक्तसर साहिब जी में हुआ था।

बुद्धि चंद की मिट्टी वाली कच्ची गढ़ी-

चमकौर साहिब जी में स्थित इस बुद्धि चंद की वाली मिट्टी की कच्ची गढ़ी में गुरु पातशाह जी ने 40 सिखों के ठहरने की व्यवस्था की थी।

पटना साहिब की पवित्र धरती-

पटना साहिब की पवित्र धरती को तीन सिख धर्म के गुरुओं ने अपने चरण चिन्हों से पवित्र किया है।

1. श्री गुरु नानक देव साहिब जी।
2. श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी।
3. श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी।

गुरु पंथ का दर्जा प्राप्त करने वाले पांच सिख-

1.भाई दया सिंह जी।
2.भाई धर्म सिंह जी।
3.भाई संत सिंह जी।
4.भाई संगत सिंह जी।
5.भाई मान सिंह जी (चमकौर की गढ़ी में)।

लकड़ी के डंडे (सलोत्तर) से शेर का शिकार करने वाला सिख-

श्री गुरु गोविंद सिंह जी के सिख भाई रोशन सिंह जी ने आगरा में स्थित जैजों के जंगल में लकड़ी के डंडे (सलोत्तर) से शेर का शिकार किया था।

दल खालसा-

दल खालसा,तत खालसा और बंदई खालसा की संयुक्त सेना का नाम था।

मुखलिस (लोहगढ़, यमुनानगर सूबा हरियाणा)-

मुखलिस (लोहगढ़) (यमना नगर, हरियाणा) नामक स्थानों को बाबा बंदा सिंह बहादुर जी ने अपनी राजधानी के रूप विकसित था।

केंद्रीय (सेंट्रल) सिख संग्रहालय-

केन्द्रीय (सेंट्रल) सिख संग्रहालय का निर्माण श्री अमृतसर में सन् 1922 ई. को हुआ था।

गांव शेर मजला (उधमपुर) जम्मू–

श्री गुरु नानक देव साहिब जी के समय की रबाब गांव शेर मजला (उधमपुर) जम्मू में सुशोभित है। प्रसिद्ध इतिहासकार सरदार भगवान सिंह जी खोजी द्वारा इस रबाब की खोज 15 अगस्त सन् 2021 की गई और संगत के सम्मुख इस रबाब को प्रकट किया गया था।

श्री गुरु नानक देव साहिब जी का कड़ा-

श्री गुरु नानक देव साहिब जी का कड़ा बिरंची पुर (उड़ीसा) में सुशोभित है,इस स्थान की सेवा-संभाल इतिहासकार सरदार भगवान सिंह जी 'खोजी' संगत के सहयोग से कर रहे है।

बिलासपुर सूबा उत्तराखंड का 'गुरु पंथ खालसा' में महत्व-

शहीद भाई मती दास जी का परिवार वर्तमान समय में इस स्थान बिलासपुर सूबा उत्तराखंड में निवास करता है। (इतिहासकार सरदार भगवान सिंह 'खोजी' द्वारा इस परिवार की खोज की गई है)।

अरब के सीबी और बुद्धू जनजाति के कबीले-

अरब के सीबी और बुद्धू जनजाति के कबीले वह कबीले है जो वर्तमान समय में भी श्री गुरु नानक साहिब जी को खुदा मानती हैं और वर्तमान समय में भी जपुजी साहिब का पाठ करती हैं।

चरण पाहुल (सिखों के अमृत पान की पुरातन विधि)-

चरण पाहुल (सिखों के अमृत पान की पुरातन विधि) में 11 बार मूल मंत्र का पाठ क्रमानुसार (महान कोष ग्रंथ के अनुसार) ही पढ़ा करते थे।

श्री गुरु नानक देव साहिब जी के विभिन्न देशों में प्रचलित पर्यायवाची नाम-

1.भारत में श्री गुरु नानक देव साहिब जी,
2. तिब्बत में नानक लामा जी,
3. सिक्किम (भूटान) में गुरुरिपोचिआ,
4.मक्का में हिंदजा,
5.रूस में नानक कदर मदर,
6. इराक में बाबा नानक,
7.नेपाल में नानक ऋषि,
8. बगदाद में नानक पीर,
9. मिस्र में नानक वली,
10. चीन में बाबा फुसा,
11. मजार शरीफ में पीर बालगदान,
12. श्री लंका में नानक आचार्य के नाम से श्री गुरु नानक साहिब जी जाने जाते हैं।

बड़ा घल्लूघारा(नरसंहार)-

यह घल्लूघारा सन 1762 ई. में हुआ जिसमें बीस हजार से भी अधिक संख्या में सिख, शहीद हुए थे। यह घल्लूघारा मलेरकोटला के पास कूप रोहिरा संगरूर (सूबा पंजाब) नामक स्थान पर हुआ। जब अहमदशाह अब्दाली/दुर्रानी ने हजारों सिख परिवारों पर चारों तरफ से अचानक हमला कर दिया। इस हमले में कोई सभी सिख शहीद हुए परन्तु कौम की चढ़दी कला एवं दृढ़ता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि किसी भी सिख ने हथियार नहीं डाला और ना ही आत्मसमर्पण किया या अब्दाली के पास जान बख्शने के लिए खुशामद की, बल्कि संकट सिर पर आया तो लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

छोटा घल्लूघारा(नरसंहार)-

छोटा घल्लूघारा सिखों की सामूहिक कुर्बानी एवं इकट्ठे होकर अपने आप को देश-धर्म के लिए न्यौछावर करने की घटना है, जिसमें 10 हजार से अधिक सिख शहीद हुए। यह घल्लूघारा गुरदासपुर जिले के काहनूवान नामक स्थान पर सन् 1746 ई. में हुआ था। यह हमला जकरिया खान के पुत्र याहिया ख़ाँ एवं लखपत राय ने मिलकर किया। इन दिनों हजारों सिख काहनूवान के जंगल में ठहरे हुए थे। लखपत राय ने काहनूवान के जंगल में आग लगा दी, जिसके कारण सिखों को यहाँ से निकलकर रावी पार कर, कटुए की तरफ चले गए। शत्रुओं ने भूखे एवं निहत्थे सिखों के समूह पर चारों तरफ से हमला कर दिया एवं उनको शहीद कर दिया था।

तीसरा घल्लूघारा (नरसंहार)-

13 अप्रैल सन् 1978 बैसाखी के दिन, निरंकारी कांड हुआ था, उस समय 13 सिख शहीद हुए थे, इस कांड को तिसरा घल्लूघारे के नाम से जाना जाता है।

भंगाणी का युद्ध-

सन् 1686 ई. में पाउंटा साहिब के पास भंगानी के स्थान पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने बाविस धार के राजाओं से अपने जीवन की पहली बार युद्ध किया था। इस जंग की खूबी यह थी कि मुस्लिम एवं हिन्दू समाज के लोगों ने मिलकर गुरु साहिब का साथ दिया। इसमें पीर बुद्धशाह के दो पुत्र एवं भाई जीत मल एवं भाई सांगो जी भी शहीद हुए। इस जंग में गुरु साहिब की शानदार विजय हुई एवं साजिश करके आए सारे पहाड़ी राजाओं को ज़बरदस्त हार नसीब हुई।

गुरुद्वारा सुधार लहर-

19वीं सदी के अंत में सिखों ने यह महसूस किया कि सिख धर्म की परंपराओं को अपना कर सिक्खी की आन-बान-शान को फिर से गुरमत मर्यादा अनुसार स्थापित किया जाए। सिंह सभा लहर ने सिख धर्म में चेतना फूंक कर, जागृति के लिए पहले ही मैदान तैयार कर लिया था। उस समय बहुत सारे पुरातन एवं ऐतिहासिक गुरुद्वारे पीढ़ी दर पीढ़ी महंतों के कब्जे में थे। वह गुरु घर में आयी हुई दसवंद (किरत-कमाई का दसवां हिस्सा) एवं अन्य आमदनी को अपने निजी स्वार्थ और ऐश्वर्य के लिए ही उपयोग करते थे। गुरद्वारा सुधार लहर, जिसे अकाली लहर भी कहते हैं, का उद्देश्य गुरूद्वारों को महंतों की धक्केशाही से आज़ाद करके, संगत के अपने प्रबंध में लाना था।

इस लहर का जोर सिखों में दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था परंतु सरकार एवं स्वार्थी लोग इसके विरुद्ध थे। इन गुरुद्वारों को आजाद कराने हेतु सिखों को असहनीय कष्टों का सामना कर, लगातार शहादतें देनी पड़ी थी एवं कई तरह की भयानक यातनाएं सहनी पड़ी।

पर ज्यों-ज्यों अकालियों ने प्रचार किया यह सिंघ सभा लहर आम लोगों में और भी जोर पकड़ती गई। सिख धर्म के लोकतांत्रिक नियमों के आधार पर यह मांग होने लगी कि गुरुद्वारे में प्राप्त दसवंद को लोक-कल्याण एवं विधायक कार्यों के लिए खर्च किया जाये एवं इस लहर के माध्यम से छुआछूत को दूर करने पर भी जोर दिया गया। एक तरफ इन मांगों का प्रचार हो रहा था एवं दूसरी तरफ महंतों की ऐश परस्ती और आचरण- हीनता की पोल खुल रही थी। इन कारणों से इस लहर का असर गाँव-गाँव और घर-घर में होने लगा। इस लहर के कारण ही सभी गुरुद्वारों को संगत ने आजाद करवा लिया था। सब से पहली घटना, जिसने संगत का ध्यान गुरुद्वारों के सुधार की तरफ खींचा, वह सन 1914 ई. में हुई और वह घटना थी गुरुद्वारा रकाब गंज का विवाद! सरकार ने एक सड़क बनाने के लिए गुरुद्वारे की एक दीवार का हिस्सा तोड़ दिया। सिक्खों ने इस के विरुद्ध आंदोलन किया एवं अंत में सरकार को संगत के आगे झुकना पड़ा।

सन 1919 ई. में सिख लीग की स्थापना ने गुरुद्वारा सुधार लहर को और शक्ति दी। सिक्खों ने सरकार के साथ असहयोग आंदोलन प्रारंभ कर दिया उन्होंने श्री दरबार साहिब एवं खालसा कॉलेज अमृतसर के प्रबंध को सिक्खों के हाथ में देने की मांग की। सरकार ने खालसा कॉलेज का प्रबंध सिखों की प्रबन्धक कमेटी को सौंप दिया। सन 1920 ई. में अमृतसर में एक सिख समागम हुआ, जिसमें सिख गुरुद्वारों के प्रबन्ध के लिए एक कमेटी की स्थापना हुई। ननकाना साहिब के साके में और पंजा साहिब, गुरु के बाग एवं जैतो के मोर्चे में सिखों को शहिदीयां देकर अत्यंत कष्टों का सामना करना पड़ा। आखिर सरकार को सिखों की मांग कबूल करनी पड़ी और 6 जुलाई सन 1925 ई. को सिख गुरुद्वारा एक्ट पास किया गया, जिसके द्वारा सिख गुरुद्वारों का प्रबंध सिक्खों में के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में आ गया।

सिंघ सभा लहर

19वीं सदी के अंतिम तीन चार दशकों में जब सिख नेताओं ने अनुभव किया कि सिख धर्म की रीतियों पर हिन्दू धर्म का गहरा प्रभाव पड़ गया है एवं सिख रहित मर्यादा में गुरबाणी अनुसार सुधार करना जरूरी हो गया है तब सिंघ सभा लहर-अस्तित्व में आई। एक कारण यह भी था कि जब पंजाब में ईसाइयों ने अपने मिशन का प्रचार आरम्भ किया एवं आर्य समाज लहर ने ज़ोर पकड़ा तो उसके प्रतिक्रमण के कारण भी सिंघ सभा लहर को जन्म लेना पड़ा। इस लोक-लहर के चलने का तात्कालिक कारण यह बना कि अमृतसर मिशन स्कूल के चार विद्यार्थियों ने सन 1873 ई. के शुरू में ईसाई मत धारण करने का फैसला कर लिया। इस बात ने सिख जनता के मनों में बहुत दुखदायी असर किया। सिख नेता इन विद्यार्थियों को फिर से सिक्खी की तरफ प्रेरित करने में सफल हो गए। पहली अक्तूबर 1873 ई. में अमृतसर में सिख नेताओं का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें कई प्रसिद्ध ज्ञानी, निर्मले एवं उदासी भी शामिल हुए। उन सबकी बातचीत एवं विचार-विमर्श के बाद श्री गुरु सिंघ सभा नाम की संस्था अस्तित्व में आई, जिसे उस समय के कानून के अधीन पंजीकृत करवा लिया गया। इस सभा के उद्देश्य थे-

1. सिख धर्म के मूल सिद्धांतों का प्रचार करना
2. जाति-पाति एवं छूत-छात को दूर करना
3. जन्म, विवाह एवं मौत आदि समय के रीति रिवाज को सिख मर्यादा के अनुसार लागू करना
4. सिख धर्म एवं इतिहास सम्बन्धी साहित्य लिखना एवं उसे प्रकाशित करना
5. पंजाबी पढ़ना एवं लिखना तथा प्रचलित करना
6. पतित हुए सिखों को सुधार कर फिर से गुरु के साथ जोड़ना
7.विद्यालय एवं महाविद्यालयों की स्थापना कर पढ़ाई का प्रबंध करना, जिससे कि सिख एवं गैर-सिख विद्यार्थी सभी इसका लाभ उठा सके।

इस लहरी ने जोर पकड़ा एवं सिंघ सभा की शाखाएं लाहौर एवं पंजाब के अन्य बड़े-बड़े शहरों में कायम की गई। प्रोफेसर गुरमुख सिंह के प्रयत्नों से पंजाबी को महाविद्यालयों के स्तर पर मान्यता मिल गई। सन 1880 में श्री गुरु सिंघ सभा ने पंजाबी का अखबार शुरू किया। इसके बाद इस लहर ने उन्नति की एवं सारे देश में जगह-जगह सिंघ सभाएं स्थापित की गई, इन सभाओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में रागी जत्थों एवं प्रचारकों द्वारा प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया।
सिंघ सभा लहर शताब्दी सन 1973 ई. में मनाई गई। इस जत्थेबंदी की तरफ से सिंघ सभा पत्रिका नाम का एक मासिक पत्र जारी किया गया। सिंह सभा लहर के संस्थापक प्रो. गुरमुख सिंह, सरदार ठाकुर सिंह आदि का नाम प्रमुख है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी-

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी 15 नवंबर सन् 1920 में अस्तित्व में गुरुद्वारा सुधार लहर के फलस्वरूप अस्तित्व में आई। सन् 1921 ई. में इसके प्रथम प्रधान (अध्यक्ष) के रूप में बाबा खड़क सिंह जी को चुना गया था। आप संस्था के तीन बार प्रधान चुने गये थे। गुरुद्वारा एक्ट को कानूनी मान्यता प्राप्त होने के पश्चात आप जी दो बार और प्रधान चुने गए। तीसरी बार सन् 1925 ई. में आप को पुनः एक बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का प्रधान चुना गया था। आप के ही कार्यकाल में दिल्ली में स्थित कनॉट प्लेस मार्केट को कानूनी मान्यता प्राप्त हुई थी। इसके जिम्मे गुरुद्वारों का प्रबंध, सिक्ख धर्म के प्रचार का कार्य गुरमत मर्यादा अनुसार करना एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों को बढ़ा कर उनके प्रबंध करना है। गुरुघरों में हाजिर होने वाली संगत के निवास एवं अन्य सभी प्रकार के समुचित प्रबंध को करना है। सिखों की विरासत की सेवा-संभाल करना है। सिख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समुचित साहित्य को अनेक भाषाओं में समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार प्रकाशित करना है।

इस कमेटी ने उत्तर प्रदेश में प्रचार के लिए अलीगढ़, हापुड़ एवं बुरहानपुर में सिख मिशन कायम किये हुए हैं। इसके अलावा, इस कमेटी ने पंजाब एवं पंजाब के बाहर सिख धर्म का प्रचार करने के लिए रागी जत्थे एवं प्रचारक नियुक्त किये हुए हैं ।

यह कमेटी प्रत्येक वर्ष उन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति (Scholarship) देती है जो कि कमेटी की तरफ से धार्मिक परीक्षा के मुकाबले में उच्च दर्जे में पास होते हैं। कमेटी अमृत प्रचार के लिए जगह-जगह प्रचारक जत्थे भेजती है एवं धार्मिक कॉलेजों के लिए आर्थिक सहायता देती है। कुछ वर्ष हुए, इस कमेटी ने केंद्रीय सिख अजायब घर की स्थापना की, जिसमें सिखों की बहुमूल्य विरासत की ऐतिहासिक वस्तुएं, बड़े-बड़े ऐतिहासिक चित्र, तस्वीरें एवं हाथ से लिखे पुरानीं पांडुलिपियां आदि रखी हुई हैं। सिख इतिहास रिसर्च बोर्ड इस कमेटी का एक खास विभाग है, जिसके अधीन सिख रेफरेंस रिसर्च लाइब्रेरी है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी प्रत्येक महीने गुरमत प्रकाश नामक और हिंदी में गुरमत ज्ञान पत्रिका प्रकाशित करती है।

जलियांवाला बाग-

सरदार हिम्मत सिंह जी जिन्हें जलाह गांव की जागीर मिली थी, इसलिये उनके नाम से जलियांवाला शब्द जुड़ गया था। आप जीवन भर 'शेरे-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह' जी की सेवा में समर्पित रहे थे और आप ने अमृतसर शहर में एक बाग बनवाया था, जिसे जलियांवाला बाग के नाम से संबोधित किया जाता है।

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी की कलगी-

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी की कलगी को सरदार कमलजीत सिंह जी बोपाराए ने 12 वर्षों की मेहनत से खोज निकाला था।

आजादी के पश्चात हुए भारत और चीन के बीच युद्ध के दौरान पंजाबियों का योगदान-

सन 1962 ई. में चीन के साथ हुये युद्ध के दौरान राष्ट्रीय रक्षा कोष (नेशनल डिफेंस फंड) के नाम से धन एकत्र किया गया था, उस समय विभाजन के महज 15 वर्षों के पश्चात भारत सरकार के पास पैसा नहीं था, उस समय इस कोष में संपूर्ण भारत से 8 करोड़, जिसमें से पौने चार करोड़ रुपये केश केवल पंजाब से एकत्र किया गया था, उस समय देश हित में पंजाबियों ने अपने पहने हुए गहने भी इस कोष में दान कर दिए थे। उस समय संपूर्ण भारत वर्ष से 252 किलो सोना इस कोष में एकत्र हुआ था, जिसमें से 246 किलो सोना अकेले पंजाब से देश हित के लिए इस कोष में दान किया था और बाकी 6 किलो सोना संपूर्ण देश से एकत्र किया गया था। श्री गुरु रामदास जी के शहर अमृतसर और शेष पंजाब के माझे इलाके से 130 किलो सोना एकत्र किया गया था। जब की पंजाबियों की देश में गिनती केवल 2% मानी जाती है और शेष भारत की गिनती 98% मानी जाती है। द विजनरी (The visionary) नामक पुस्तक में इस घटना को अंकित किया गया है। यह पुस्तक स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों की जीवनी पर लिखी गई थी,जिसके लेखक स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों जी के पुत्र सरदार गुरिंदर सिंह जी कैरों है।

निहंग-

निहंग अर्थात अहंकार से रहित, या मगरमच्छ, निधड़क, निडर, बेपरवाह! कहा जाता है कि, निहंग सिंघों को श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी की लाडली फौज भी कहा जाता है। निहंग सिंह दशमेश पिता जी द्वारा प्रदान किया गया बाना और शस्त्र सजाकर हमेशा तैयार-बर-तैयार रहते हैं। निहंग सिंघों की प्रमुख विशेषता है कि समाज में निर्भय होकर विचरण करना और युद्ध के मैदान में निश्चय कर विजय को प्राप्त करना एवं अपनी अंतिम सांसों तक दुश्मन का डटकर मुकाबला करना, भक्ति और शक्ति का प्रतीक है निहंग सिंघ! बुड्ढा दल और तरुणों का दल निहंग जत्थेबंदी के दो अलग-अलग भाग हैं।

बुड्ढा दल और तरुणों का दल-

बुड्ढा दाल और तरुणों का दल निहंगों के दो अलग-अलग दल है, इसका निर्माण नवाब कपूर सिंह जी ने किया था। बुड्ढा दल का प्रमुख कार्य श्री दरबार साहिब जी में टिककर श्री दरबार साहिब जी की रक्षा करना और रणनीति बनाकर तरुणों के दल को जूझने के लिए मार्गदर्शित कर प्रेरणा देना, इन दोनों दलों का निर्माण नवाब कपूर सिंह जी ने सन् 1734 ई. को किया था।

होला महल्ला-

होला महल्ला अरबी भाषा का शब्द है, जो हूल शब्द का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ है भले कामों के लिए जूझना, शीश तली पर रखकर युद्ध करना या तलवार की धार पर चलना! होला महल्ला अर्थात वह स्थान है जिसे युद्ध में फतेह कर अपना ठिकाना बनाया जाता है।

गतका-

गतका सिखों का मार्शल आर्ट/शस्त्र विद्या 'गुरु पंथ खालसा' का एक अभिन्न अंग है। इस विद्या से गुरु के सिख शारीरिक तंदुरुस्ती और बल प्राप्त करते हैं, साथ ही युद्ध कला में निपुण हो जाते हैं। इस शस्त्र विद्या कला में एक मजबूत लंबी काठी का प्रयोग किया जाता है, साथ ही लकड़ी या लोहे से बनी ढाल का भी उपयोग किया जाता है। दो योद्धाओं के मध्य इस शस्त्र विद्या को खेला जाता है। एक हाथ में स्थित लाठी से आक्रमण कर, दूसरे हाथ में स्थित ढाल से सामने वाले व्यक्ति द्वारा किए गए आक्रमण को बचाया जाता है। श्री गुरु हरगोबिंद जी ने सिखों को युद्ध कला में निपुणता हासिल करने हेतु 'श्री अकाल तख्त साहिब जी' के सामने ही गतका बाजी/शस्त्र विद्या के खेल और मल्ल अखाड़े स्थापित किए थे। इस कला में निपुणता प्राप्त करने से गुरु सिखों में आत्मविश्वास, फुर्तीलापन उत्पन्न होता है, गतके के इस खेल को सिख योद्धा कृपाण एवं अन्य शस्त्रों से भी खेलते हैं।

चंवर साहिब (चौर साहिब) जी-

चंवर साहिब अत्यंत पुरातन राजा-महाराजाओं की आन-बान और शान बढ़ाने वाली परंपरा है। पुरातन समय से ही रिवाज चला आ रहा है कि राजा-महाराजाओं की शोभा, आदर-सत्कार बढ़ाने हेतु चंवर साहिब जी को सम्मान से शीशे के ऊपर फेहरा कर इसके द्वारा सम्मान किया जाता है।

इसमें कोई शंका नहीं है कि पुराने समय में चंवर साहिब जी को तैयार करने हेतु याक नामक पशु की पूंछ के बाल उपयोग में लाए जाते थे। वर्तमान समय में गुरु सिखों के लिए 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की आन-बान और शान एवं आदर-सम्मान और संस्कार को मुख्य रखते हुए चंवर साहिब जी का उपयोग किया जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के अतिरिक्त किसी और विशेष व्यक्ति के लिए चंवर साहिब जी का उपयोग नहीं हो सकता है।

मंजी प्रथा और मसंद प्रथा

श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने मंजी प्रथा को प्रारंभ किया था। (जिसमें सर्वप्रथम 20 गुरसिख और 2 सिंघनियों को प्रचारक के रूप में नियुक्त किया गया था।) यह 22 प्रचारक गुरु साहिबान के उद्देश्यों को दूर-दराज के इलाकों में प्रचारित करते थे और धार्मिक विषयों पर संगत से विचारों का आदान-प्रदान कर उन्हें सिख धर्म से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करते थे। श्री गुरु अमरदास साहिब जी की 22 मंजीयों (आसन) की प्रथा के पश्चात श्री गुरु रामदास जी ने मसंद प्रथा को प्रारंभ किया था, मसंद शब्द अरबी भाषा के मनसद शब्द का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ वह गद्दी जो सिंहासन के पश्चात दूसरे क्रमांक की मानी जाती थी।

सिख धर्म में मसंद का ओहदा बहुत ऊंचा माना जाता है, धार्मिक वृत्ति के जवाबदार सिखों को ही मसंद की पदवी पर मनोनीत किया जाता था। यह मसंद, गुरु साहिबान के संदेश को आम जनता तक दूर-दूर तक पहुँचाते थे और दसवंद (किरत कमाई का दसवां हिस्सा) की माया जो इकट्ठी होती थी, उस माया को गुरु साहिब जी की हजूरी में हाजिर करना मसंदों का कर्तव्य था। मसंदों द्वारा दसवंद के रूप में एकत्रित माया को गुरु साहिबान की और से धर्म कार्यों के निमित्त खर्च की जाती थी। समयानुसार, धीरे-धीरे या मनोनीत मसंद स्वार्थी होने लगे तो दशमेश पिता श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने मसंद की प्रथा को अपने कार्यकाल में समाप्त कर दिया था।

निशान साहिब-

प्रत्येक गुरूद्वारे में निशान साहिब किसी ऊंचे स्थान पर स्थापित किया जाता है, लाजमी तौर पर प्रत्येक गुरूद्वारे परिसर में निशान साहिब जी शान से झूलाना/लहराना चाहिए। निशान साहिब जी की पोशाक का रंग बसंती या नीला होता है और इसके सबसे ऊंचाई वाले सिरे पर सरब लौह (शुद्ध लौह धातु) का खंडा बना होता है। त्रिकोण स्वरूप का निशान साहिब जी सुती या रेशमी कपड़े का बना होता है जो कि प्रभुसत्ता का प्रतीक है। 'गुरु पंथ खालसा' में निशान साहिब जी की प्रथा श्री हरगोबिंद साहिब जी के समय से प्रारंभ हुई थी। सन् 1609 ई. में श्री अकाल तख्त साहिब जी की स्थापना के समय निशान साहिब जी झुलाये गए थे, उस समय में निशान साहिब जी को अकाल ध्वजा या गुरु का निशान के नाम से संबोधित किया जाता था। वैसे तो निशान फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ झंडा होता है। दरबार साहिब श्री अमृतसर में सर्वप्रथम निशान साहिब सन् 1771 ई. में भंगी मिसल के जत्थेदार सरदार झंडा सिंह जी ने सुशोभित किया था पश्चात सन् 1783 ई. में उदासी महंत संतोष दास जी और महंत प्रीतमदास जी ने उद्यम कर देहरादून से साल के वृक्ष से निर्मित एक लंबा खंबा लाकर श्री अकाल तख्त साहिब जी के पास वाले बुंगे के पास अच्छे से गाड़ कर, निशान साहिब जी को झुलाया गया इस कारण से इस बुंगे को झंडा बुंगा के नाम से संबोधित किया जाता है।

सिरोपा/(सिरपाऊ)-

सिख धर्म में सर्वप्रथम सिरोपा श्री गुरु अंगद देव साहिब जी ने भावी गुरु 'श्री गुरु अमरदास साहिब जी' को प्रदान किया था। सिख धर्म में सिरोपा को मान-सम्मान और चढ़दी कला का प्रतीक माना जाता है और इसे आध्यात्मिक एवं दुनियावी दोनों ही रूप में पेश किया जाता है। आध्यात्मिक तौर पर सिरोपा को परमात्मा द्वारा भक्तों पर की गई बख्शीश के रूप में देखा जाता है और दुनियावी तौर पर सिरोपा को सिखों को चढ़दी कला में रखने के लिए एवं सम्मान के तौर पर इसे प्रदान किया जाता है। सिरोपा का अर्थ है सिर से लेकर पैरों तक को ढकने वाला कपड़ा! ऐतिहासिक गुरु धामों में आमतौर पर केसरिया या नीले रंग के सिरोपा प्रचलित हैं। सिरोपा 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की हजूरी में ही दिया जाता है, गुरबाणी का फ़रमान है-

पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे।।
(अंग क्रमांक 631)

उस प्रभु-परमेश्वर ने शोभा का वस्त्र पहना कर, अपने सेवक को अपने साथ विलीन कर, संपूर्ण जग में लोकप्रिय बना दिया है।

(विशेष नोट-प्रबंधकों को विनम्र निवेदन है कि वह अपने वक्तव्य में सिरोपा भेंट किया गया, वाक्य के स्थान पर सिरोपा बक्शीश किया गया वाक्य का ही उच्चारण करें)।

अमृत पान-

अमृत पान एक पुण्य कर्म है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में पांच (पंज) प्यारों के समक्ष अमृत पान की विधि को किया जाता है। इस पुण्य कर्म का अर्थ होता है कि खंडे-बांटे का अमृत पान (अमृत पान की विधि) करने वाला जीव, भविष्य में गुरमत के उसूलों का धारणी होगा। श्री गुरु नानक देव जी के समय से लेकर श्री गुरु तेग बहादुर जी के समय तक सिख के तौर पर दीक्षा देने के लिए चरण-पाहुल की परंपरा प्रचलित थी। दशम पिता श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने इस प्रचलित परंपरा में तब्दीली कर खंडे-बाटे कि पाहुल से अमृत छका कर (अमृत पान की विधि) खालसा को सजाया, उस समय से ही वर्तमान समय तक पंज (पांच) प्यारों के द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में लोहे के बाटे (बर्तन) में शुद्ध जल लेकर उस जल में लोहे के खंडे से पताशो को घोलकर पांच वाणियों का पाठ कर (जपु जी साहिब, त्वप्रसाद सवैये, चौपाई साहिब, आनंद साहिब और 40 पउड़ियों का पाठ कर, आसन पर आसीन पांच (पंज) प्यारे अमृत तैयार करते हैं। पश्चात इस अमृत को अधोरेखित विधि के अनुसार, अभिलाषी जीवों को छकाया जाता है। इस विधि के पूर्ण होने पर अभिलाषी जीव 'गुरु पंथ खालसा' में शामिल हो जाते हैं।

तीन ताप: आधि, बिआधि और ऊपाधि-

ताप का अर्थ दुख शब्द से निहित है इस सृष्टि के लोग तीन तापों से ग्रसित है।

आधि: अधिकतम क्रमवार दैहिक और मानसिक रोगों से ग्रसित! पिछले जन्मों में किए गए कर्मों के कारण आधे रोग सूक्ष्म शरीर के द्वारा आते हैं।

बिआधि: भौतिक शरीर के वह रोग जो इस जन्म में किए गए कर्मों से उपजते हैं, जैसे शारीरिक बीमारियां।

उपाधि: आध दैवीक वह दुख जो बाहर के आलौकिक की जगत के कारण से होते हैं, जो इंसान के वश में नहीं है। जैसे- बाढ़, तूफान, भूकंप, बिजली का गिरना' आक्रमण, जंग, युद्ध, चोरी, डाके इत्यादि। इन पापों से बचने का उपाय केवल एक ही है, प्रभु-परमेश्वर का सिमरन!

चार पदार्थ-

चारि पदारथ जे को मागे।।
साध जना की सेवा लागै।।
(अंग क्रमांक 266)

यदि कोई व्यक्ति 4 पदार्थ: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अभिलाषी हो तो उसे संत जनों की सेवा में लग जाना चाहिए।

विस्तार से हम इसे इस तरह भी विश्लेषक कर सकते हैं-

1.धर्म- अर्थात जीवन में निहित कर्तव्यों का पालन करना यानीकि नियम में रहना और अच्छे कर्म करते हुए सच्चा और पवित्र जीवन व्यतीत करना।

2.अर्थ- अर्थ आर्थिक रूप से धन को प्राप्त कर भौतिक साधनों को पाना।

3.काम- काम जीवन की जायज और उचित इच्छाओं को पाना।

4.मोक्ष- मोक्ष सांसारिक बंधनों से मुक्ति अर्थात आवागमन के चक्कर से मुक्त होने के लिए प्रभु के स्मरण की बख्शीश प्राप्त करना।

दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब जी की 4 चौकियां-

4 चौकियां इस प्रकार से है-

1.अमृत वेले ब्रह्म मुहूर्त के समय, आसा दी वार की चौकी।

2.सवा पहर पर दिन चढ़ने पर, चरण कमल की चौकी अर्थात प्रभ के 'नित धिअवऊ' शबद् गाए जाते हैं।

3.शाम के समय रहिरास साहिब के पहले सोदर की चौकी 'सो दरु केहा सो घरु केहा' शबद् गाए जाते हैं।

4.चार घड़ी रात बीतने पर, पुर कलयाण की चौकी, इस चौकी के अंतर्गत कलयाण् राग के शबद् गाए जाते हैं।

चार धुनियां-

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के बड़े सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी ने सिख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए चार धुने स्थापित किए थे। इसके अंतर्गत नाम के रस में डूबे और बंदगी वाले गुरु सिखों को गुरबाणी के प्रचार-प्रसार के लिए दूर-दराज के इलाकों में भेजा गया था।

इन 4 धुनी के मुखियाओं के नाम इस तरह है-
1. बाबा अलमस्त जी।
2. बाबा फुल जी।
3.बाबा बालू हसना जी।
4.बाबा गोईंदा जी।
इन्होंने उदासी मत में विचरण कर के सिखी का प्रचार-प्रसार किया और देहरादून, नानकमत्ता, हैदराबाद एवं बहादुरगढ़ (जिला होशियारपुर) नामक स्थानों पर अपने केंद्र स्थापित किए थे।

श्री गुरु नानक देव साहिब जी के समय करेंसी के भाव-

श्री गुरु नानक देव जी के समय बहलोल लोदी का राज होने के कारण बहलोल दिनार चलते थे। सन् 1451 ई. से सन् 1486 ई.) इस करेंसी को रजत धन कहकर भी संबोधित किया जाता था। इब्नबतूता (तुगलक काल) और अबू फजल (अकबर काल) के दौरान समान के दरों की सूचियां तैयार की गई थी। इन सूचियों के अनुसार (स्त्रोत खोज पत्रिका, पंजाबी यूनिवर्सिटी, अंक क्रमांक 1969 में अंकित है)।
अनुमानित समान के दरों सूची इस तरह है-
30 गज कपड़ा ₹ 3 बहलोल दिनार, देसी घी 3.50 बहलोल दिनार, प्रतिमान चावल 65 पैसे (बहलोल दिनार) प्रति मन, गेहूं 50 पैसे प्रति मन (आधा बहलोल दिनार) के दाम तय थे।

दरबार साहिब अमृतसर पर हमला करने वाले शासक-

1. मस्सा रंगड़ (सन् 1704 ई.)।
2. जकरियां खान (सन् 1746 ई.)।
3. जहान खान (सन् 1757 ई.)।
4. अहमदशाह अब्दाली (सन् 1762 ई.)।
5. इंदिरा गांधी (सन् 1984 ई.)।

कुछ चुनिंदा हुक्मनामे और फर्मान-

1. नाम जपो, किरत करो, वंड छको (बांट कर खाना)।
2. पहिल पंगत पाछे संगत।
3. पूजा अकाल की, परचा शब्द का, दीदार खालसे का।
4. शस्त्र गरीब की रक्षा, जरवाणे की भक्षा।
5. गरीब का मुंह गुरु की गोलक।
6. जो शरण आवे तिसु कंठ लावे।
7. वाहिगुरु जी का खालसा। वाहिगुरु जी की फतेह।
8. बोले सो निहाल सत श्री अकाल।
9. औरत ईमान, दौलत गुजरान, पुत्र निशान।
10. गुरु तेग बहादुर धर्म की चादर।

11. जब लग खालसा रहै निआरा। तब लग तेज दीउ मैं सारा।
जब इह गहे बिपरन की रीत। मैं न करों इन की परतीत।
12. मन्नु साढ़ी दातरी असीं मन्नु दे सोए
जिउं जिउं मन्नु वढदा असीं दूणे चौणे होए|
13. सिक्खी सच्ची सुच्ची मन नीवां मति उच्ची।
14. देग तेग फतेह।
15. पंथ की जीत।
16. राज करेगा खालसा आकी रहे न कोई।
17. चूं कार अज हमा हीलते दर गुजस्सत हलाल असत्त बुरदन बशमशीर दस्त॥
18. सैफ सरोही सैहथी यहै हमारे पीर॥
19. ना को बैरी नाहि बिगाना सगल संगि हमको बनिआई॥
20. भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आनि॥
21. मुरदा होइ मुरीद न गली होवणा।

चढ़दी कला के प्रतीक खालसाई बोले-

सिख चरित्र का मुख्य लक्षण चढ़दी कला एवं सरबत का भला है। जो परमात्मा के सिदक के आसरे अपनी आत्मिक अवस्था को ऊँचा नहीं रख सकता, सरबत (सारी मानवता) की भलाई के लिए की जा रही सेवा के कर्तव्य को नहीं निभा सकता, वह पूर्ण सिख कहलाने का अधिकारी नहीं है। गुरसिख का आचरण दुख-सुख को एक सार मान कर तैयार-बर-तैयार रहना है, उसके लिए जीत-हार एवं पतझड़-बहार एक बराबर है, वह दुःख में सुख मनाते हुए सब का भला चाहता है।
इस तरह सच्चे सिख का व्यवहार हमेशा चढ़दी कला वाला होता है, वह कभी भयभीत नहीं होता, डोलता नहीं। उसकी ऊंची सुरती एवं उसके सच्चे बोल, तोल-मोल कर बताते हैं कि वह जिंदगी की मुसीबतों से व्यंग करता है। वह कभी अकेला नहीं होता, सवा लाख कहलाता है, अगर कभी अकेला रहता भी है तो' फौजां आईयां' फरमाता है। अगर वह जीवन की यात्रा खत्म कर के इस जगत से विदायगी लेता है तो उसे 'फतेह गजाउंदा' अथवा 'चढ़ाई करना' ही कहा जाता है। वह कभी मरता नहीं क्योंकि वह दिन-रात यही गाता है-

'मैं ना मरउं मरबो संसार।।
अब मुहि मिलिओ है जीआवनहारा।।

इस तरह हमेशा निर्भय एवं निरवैर हो कर सिख, मन वाणी, कर्म करके चढ़दी कला में रहता है। वह मन चित्त करके अकाल पुरख का ध्यान करता है एवं अंदरूनी ज्योति को जगमगाता है इसलिए वो कि वह आत्म-सम्मान के आसमान को छूता रहे एवं फिर कर्म एवं अमल करके नम्रतापूर्वक ‘सरबत का भला’ मनाता है ताकि किसी तरह का कोई अहंकार पैदा ही न हो। इस तरह की ऊँची सुरति एवं ऊँची और श्रेष्ठ किरत वाले पुरुष के बोल बाणी भी ऊंची और पवित्र होती है, वह कभी 'ढहंदी कला' (हीन भावना) की तरफ जात ही नहीं। खालसे के गड़गज बोले इसी वृत्ति के सूचक हैं। वह जहां शूरवीर सिंहों के ऊंचे किरदार की झलक को पेश करते हैं, वहां यह भी प्रकट है कि उनमें पुरुष-सुर की प्रधानता है।

खुशी को खुशा, होली को होला एवं बोली को बोला कहना उन की' स्वाभाविक बोल चाल अंग है। फिर कभी उनको किसी चीज की कमी का अहसास नहीं होता, बल्कि भयानक कठिनाइयों एवं कुछ ना होने के बावजूद भी उनकी चढ़दी कला हमेशा बरकरार रहती है।

खालसाई बोलों का जन्म-काल 18 वीं सदी के असहनिय कठिनाइयों के दौर में अपनी चरम सीमा पर था। जब दिल्ली की मुगल सरकार सिखों का विनाश करने पर तुली हुई थी, जब 10 दिसंबर सन 1710 ई० को उस समय की हुकूमत ने यह फरमान जारी किया था कि जहां भी कोई नानक नाम-लेवा मिले, उसे जान से मार दिया जाए।

इस समय भी सिख चढ़दी कला में रहे। खतरनाक समय में भी चढ़दी कला के बोले यह प्रगट करते हैं कि मुसीबत के समय भी सिखों के हौसले कितने बुलन्दी पर थे? कुछ खालसाई बोले इस प्रकार से हैं-

1 . आम आदमी— लड़का पगड़ी बांध रहा है।
   खालसा जी— भुजंगी दस्तार सजा रहा है।
2. आम आदमी— स्त्री रोटियों को पका रही है।
   खालसा जी— बीबी प्रशादे सजा रही है।
3. आम आदमी— भाई कड़ाह बना रहा है।
   खालसा जी— भाई देग सजा रहा है।
4. अकलदान- डंडा।
5. अफलातून– रजाई।
6. अकाल बुगां- अकाल तख्त का पहला नाम।
7. अराका- घोड़ी।
8. अकाली- काल के भय से।
9. अडिंग-बडिंग— सोने का भाव रहित सिख, नीलाम्बर धारी निहंग सिंघ (सिंह)।
10. आकड़ भन्न- बुखार।
11. अनथक सवारी- जूता।
12. आकी होना- बंदीखाने में पड़ना, जेल जाना।
13. अंगीठा- चिता।
14. सिरजोड़- गुड़।
15. शहीद- धर्म की खातिर मिटने वाला।
16. सुचाला- लंगड़ा
17. सिरी साहिब- बड़ी कृपाण।
18. शहीदगंज– जहां सिंह शहीद हुए हों।
19. सेवा करना- पिटाई करना।

20. सोध देना - पिटाई कर सीधे रास्ते पर लाना।
21. सब्ज पलाउ - साग।
22. समुन्द्र - दूध।
23. कच्चा पिल्ला - रहित मर्यादा में ढीला।
24. सरबलोह - शुद्ध लोहा, अकाल पुरुख।
25. कमरकस्सा करना - तैयार-बर-तैयार रहना।
26. अकाल चलाना - परलोक गमन करना।
27. सरबलोहिया - वह सिख जो लोहे के बर्तनों में ही प्रशाद एवं पानी छकता है।
28. कराड़ी - मूली ही खाता है।
29. कड़ाका - भूख।
30. सलोतर - मोटा डंडा।
31. कुरहित - सिक्खी रहत मर्यादा के विरुद्ध कर्म।
32. सवाइआ - थोड़ा।
33. केसकी - छोटी दस्तार, पगड़ी।
34. सवा लाख - एक।
35. कोतवाल - चाकू।
36. सवा लाख फौज - केवल एक सिख।
37. खारा समुन्द्र - लस्सी।
38. गधी चुंघणां - हुक्का पीना।
39. गढ़ तोड़ना - भारी भरकम काम पूरा करना, पेशाब करना।
40. गिदड़ - डरपोक।
41. गुप्ता - गूंगा।
42. तनखईआ - जो रहित मर्यादा की कुरेत के कारण सजा का भागी हो।
43. घल्लूघारा - अति भयानक/घनघोर जंग।
44. चरनदासी - जूता।
45. तैयार-बर-तैयार - रहित मर्यादा में परिपूर्ण सिख।
46. चलाको - सुई।
47. चलाका - सुंआ।
48. दस्तार - पगड़ी।
49. चढ़ाई करना - हल्ला बोलना।
50. दबड़ू-घुसड़ू - रहित मर्यादा में ढीला रहना।
51. चीता भगाना - पिशाब करना।
52. चुगल - शीशा।
53. दमड़ा - रुपये।
54. छिल्लड़ - रुपये।

55. दियाल कौर- कड़छी।
56. जहाज- गड्ढा।
57. दिदारा सिंह- शीशा।
58. जहाजे चढ़ना- अमृत छक कर सिंह सजना।
59. दुमाला- ऊँची सजाई हुई दोहरी दस्तार।
60. जक्का- दहीं।
61. देग- प्रसाद पानी, कड़ाह प्रसाद।
62. जगत जूठा- हुक्का, तम्बाकू।
63. धर्मराज की पुत्री- नींद।
64. जंगल पाणी जाना- पाखाना जाना।
65. धर्मराज का पुत्र- बुखार।
66. ठाणेदार- गधा।
67. नड़ीमार- हुक्का पीने वाला।
68. ठीकर- शरीर, देही।
69. प्रशादा- रोटी।
70. ठीकरी- रुपये।
71. पाहुल- खंडे का अमृत।
72. तनख्वाह- सजा, धार्मिक कुरहित करने पर सजा।
73. पवण- प्रकाश।
74. फटड़- प्रशादा मेंढ.।
75. भगवती- तलवार।
76. बदाम-भुने हुए चने।
77. भाजा-सब्जी, तरकारी।
78. भुजंगी- सिक्ख का लड़का।
79. मस्ताना-फटा हुआ, बीमार, अपने में मस्त रहने वाला।
80. मोरचा लाना- जरूरी काम के लिए मेहनत करना, दुश्मनों से लोहा लेना।
81. बहीर-सिंघों का चलते-फिरते रहने वाला दल।

कृपाण का मोर्चा-

भारत के आर्म्स एक्ट (11) 1878 के अनुसार बिना लाइसेंस या सरकारी छूट के बिना कोई भी व्यक्ति स्वयं के पास हथियार नहीं रख सकता है। इन हथियारों में तलवार भी शामिल है, कृपाण और तलवार को बराबरी का दर्जा दिया गया है। बीसवीं सदी के प्रारंभ में कई सिख संस्थाओं ने सिखों को कृपाण रखने पर कोई पाबंदी नहीं लगानी चाहिए, ऐसे कई आवेदन समय-समय के हुक्मरानों को दिए गए और लिखा कि यह सिखों का धार्मिक चिन्ह है। प्रथम तो अंग्रेज सरकार ने इस बात को कोई तवज्जो नहीं दी परंतु प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के मन में विचार आया कि इस पाबंदी के कारण सिखों की फौज में भर्ती पर नकारात्मक प्रभाव ना पड़े।

इस शोध के फलस्वरूप अंग्रेज सरकार की और से घोषणा की गई थी सिखों को कृपाण रखने की इजाजत है परंतु कृपाण के आकार और स्वरूप के संबंध में कोई निश्चित पैमाना नहीं बनाया गया और इस कारण से कृपाण धारी सिखों पर मुकदमे दर्ज होते रहे थे।

गुरुद्वारा सुधार लहर के दौरान अकाली दल ने कृपाण रखने की आजादी को एक विशेष मुद्दा निरूपित किया परंतु अंग्रेज सरकार ने इस पर से पाबंदी नहीं हटाई थी, इस कारण से सिखों के द्वारा कृपाण का मोर्चा प्रारंभ हो गया था। इस मोर्चे के कारण हजारों सिखों को आर्म्स एक्ट के उल्लंघन करने पर जेल भेज दिया गया था। कृपाण उत्पादन करने वाले कारखानों पर छापे मारे गए और 9 इंच के ऊपर कृपाण बनाने वाले कारखानों के संचालकों को गिरफ्तार कर लिया गया था इस मोर्चे के हक में सन् 1922 ई. में 'कृपाण बहादुर' नाम से एक साप्ताहिक पत्रिका भी प्रकाशित की गई थी। इस पत्रिका के संपादक सरदार सेवा सिंह जी ने अपने चर्चित लेखों के द्वारा आम राय कायम करने में बड़ी भूमिका निभाई थी। 3 फीट की कृपाण धारण करने वाले सिखों को गिरफ्तार किया जाने लगा था, इन गिरफ्तार सिखों को 'कृपाण बहादुर' के खिताब से नवाजा जाने लगा था। सन् 1922 ई. में अंग्रेज सरकार और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मध्य एक समझौता हुआ और तुरंत प्रभाव से सिखों पर से कृपाण रखने की पाबंदी को समाप्त कर दिया गया। शर्त यह रखी गई कि केवल धार्मिक समागमों में या अमृत छकाने के समय या पंज (पांच) प्यारों के द्वारा नगर कीर्तन की अगुवाई करते समय, कृपाणों को नंगा (बिना म्यान) के रखा जा सकता है, बाकी समय कृपाण को म्यान में सुरक्षित रखना है, इस शर्त के साथ ही कृपण का मोर्चा समाप्त हो गया था।

खालसा-

खालसा शब्द अरबी भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है शुद्ध, बेदाग जिसमें मिलावट न हो, जिस भूमि पर राजा का सीधा अधिकार हो और कोई दूसरा मालिक न हो, भगत कबीर जी ने भी वाणी में फरमान किया है-

कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी।।
(अंग 655)

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने हुक्मनामा में पूर्व देश की संगत को गुरु का खालसा कह कर संबोधित किया था। गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने सन 1699 ई. के हुक्मनामा में पटना की संगत को संबोधित किया। "खंडा पहुल द्वारा खालसा" का नाम दिया गया था।

ऑल इंडिया सिख स्टूडेंट फेडरेशन-

ऑल इंडिया सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन को सिख कौम का हरियावल दस्ता के नाम से संबोधित किया जाता है। इस संस्था की स्थापना 13 सितंबर सन् 1944 ई. को भाई अमर सिंह जी अंबावली जी के द्वारा की गई थी। इस संस्था के सर्वप्रथम प्रधान (अध्यक्ष) सरदार स्वरूप सिंह जी को मनोनीत किया गया था। इस संस्था की लाहौर में आयोजित सर्व प्रथम बैठक में इस जत्थे बंदी को निम्नलिखित प्रमुख कार्य सौंपे गए थे।

1. सिख विद्यार्थियों को एकजुट कर उनके हक और हितों की रक्षा करना।
2. सिख विद्यार्थियों को गुरु साहिबान के बहुमूल्य इतिहास की जानकारी प्रदान करना।
3. सिख विद्यार्थियों के द्वारा एक उत्तम और सुदृढ़ समाज का निर्माण करना जिससे कि कौम की चढ़दी कला बरकरार रहें।
4. गुरबाणी सिख इतिहास, रहत मर्यादा के संबंध में बैठक आयोजित कर विचार-विमर्श करना।
5. सिखों की धार्मिक, राजनीति, वैयक्तिक भाईचारे और आर्थिक उन्नति के लिए लगातार प्रयत्न करना।
6.गुरूमुखी भाषा के संवर्धन के लिए सतत प्रयास करना।
7.विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रयत्न करना।
8. पतित होने वाले सिखों को और नशा करने वाले सिखों को पंथ की मुख्य धारा में लाकर उनके जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाना। ऐसे कुछ प्रमुख उद्देश्य इस संस्था के कार्य क्षेत्र के रूप में निरूपित किये गये है|

अध्याय तीन-
गुरु पंथ खालसा: अनकहे इतिहास के पन्ने
(दुर्लभ दस्तावेजों और प्रमाण पर आधारित)
श्री दरबार साहिब जी अमृतसर का निर्माण: एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

वर्तमान समय से लगभग 450 वर्ष पूर्व जिस पुरातन समय में 'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब अमृतसर जी' के समय भवन निर्माण करते समय आवाज (ध्वनि) की आवृत्ति (Frequency of sound) को ऊंचा करने के लिए आधुनिक समय की तरह लाउड स्पीकर आदि यंत्र नहीं होते थे। व्यक्ति को अपनी बात दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए स्वयं के कंठ के जोर पर ही निर्भर रहना पड़ता था। उस समय 'श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी' ने जब 500 फीट लंबे और 490 फीट चौड़े सरोवर के मध्य 'श्री हरमंदिर साहिब जी' का निर्माण किया था। इस पुरी परिक्रमा और परिसर के निर्माण कार्य के लिये ध्वनि की आवृत्ति (Frequency of sound) तकनिकी विज्ञान को विशेष महत्व देकर संपूर्ण निर्माण कार्य को विशिष्ट शैली में निर्मित किया गया था। श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब की परिक्रमा के दरवाजे से सरोवर पर निर्मित पुल से होते हुए दरबार साहिब के मध्य स्थित मुख्य दरवाजे की लंबाई 240 फीट है और चौड़ाई 21 फीट है। पुल से मुख्य इमारत के छत की ऊंचाई 26 फीट 9 इंच है और छत पर निर्मित गैलरी की ऊंचाई 4 फीट है। इस गैलरी के उपर दरबार साहिब के मुख्य गुंबद स्थित है। सरोवर के मध्य स्थित इमारत के मुख्य प्रवेश द्वार के दायीं ओर एवं बायीं और 19-19 छोटे आकार के गुंबद एक विशेष ऐतिहासिक महत्व के तहत स्थापित किये गये है। इस सरोवर की गहराई 17 फीट है। 'श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी' ने इस निर्माण कार्य के अंतर्गत कई अद्भुत पहलुओं पर विशेष ध्यान रखकर इस निर्माण कार्य को संपन्न किया था। इस अद्भुत वास्तु को निर्माण करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था कि सरोवर की परिक्रमा पर उपस्थित संगत (श्रद्धालुओं) और सरोवर के बीच स्थित 'श्री हरमंदिर साहिब जी' की परिक्रमा में उपस्थित संगत (श्रद्धालुओं) को दरबार साहिब में चल रहे कीर्तन की आवाज एक समान रूप से चारों और सुनाई देवें। गुरु जी ने स्वयं ध्वनि की आवृत्ति (Frequency of sound) विज्ञान के सूत्र को आत्मसात कर विशिष्ट ध्वनि लहरों के गुणों के अनुसार परिसर के भवन निर्माण को उन कोणों के अनुकूल निर्माण करवाया था। अर्थात 'श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी' की ध्वनि की आवृत्ति (Frequency of sound) विज्ञान और ज्यामिति गणित (Geometry) के अनुसार ध्वनि लहर के गुणों से परावर्तित होने वाली ध्वनि और सरोवर के जल द्वारा ध्वनि अवशोषण की मात्रा का उत्तम ज्ञान था। इस निर्माण में मुख्य भवन और परिक्रमा के चारों और निर्मित भवनों के निर्माण में विशेष रूप से भवनों की ऊंचाई, खिड़की, दरवाजों की लंबाई, चौड़ाई और दूरी का खास ध्यान रखा गया था। एक दीवार से दूसरी दीवार तक की दूरी इस तरह से समायोजित की गई थी कि किसी भी प्रकार से चल रहे कीर्तन की आवाज में रुकावट पैदा न हो और भवनों के निर्माण के कारण ध्वनि की आवृत्ति का समन्वय एक समान किया गया, जिससे आवाज न फटेगी और न ही गुंज पैदा करेगी। इस विशेष ध्वनि की आवृत्ति (Frequency of sound) की व्यवस्था से आवाज मुलायम और सुरीली होकर एक समान होगी उस समय में इस तरह के ध्वनि की आवृत्ति (Frequency of sound) विज्ञान का उपयोग करना बहुत ही तकनीकी और सूझबूझ का कार्य था।

उस समय दरबार साहिब में उपस्थित श्रोताओं को इस तरह से महसूस होता था कि जैसे अकाल पुरख की इलाही वाणी साक्षात् आकाश से अवतरित होकर, मनमोहक कीर्तन की सुरीली धुन के रूप में संपूर्ण वातावरण को प्रभु-परमेश्वर के प्यार से ओतप्रोत कर रही हो। इस सुंदर वातावरण में 'श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी' स्वयं कीर्तन से इस इलाही वाणी में प्रेम का अद्भुत रंग भर कर समा बांध देते थे। गुरु जी के साथ भाई गुरदास जी संगत करते थे और बाबा बुड्ढा जी रबाब की सुरीली धुनों से गुरु जी का कीर्तन में साथ देते थे। 'श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी' की जीवन यात्रा के समय 7 प्रमुख कीर्तनी जत्थे दरबार साहिब में अपनी सेवाएं समर्पित करते थे। विशेष इन जत्थों में 6 रबाबी मुस्लिम धर्म के थे। सन् 1900 ईस्वी. के दशक में 15 कीर्तनी जत्थे सेवाएं अर्पित करते थे।

इतिहास गवाह है जब ‘गुरु पंथ-खालसा’ के महान कीर्तनकार भाई मनसा सिंह जी दरबार साहिब में कीर्तन करते थे तो ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ के नेत्र ईश्वर भक्ति में झुक कर, सत्कार से नम हो जाते थे। ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ इलाही कीर्तन के माध्यम से अकाल पुरख से सुरमयी वार्तालाप करते थे। दरबार साहिब में कीर्तन की हाजिरी भरने वाले रागी सिंह (कीर्तन कारों) का विशेष सम्मान होता है। उस समय प्रसिद्ध कीर्तनकार बड़े-बड़े राजा, महाराजाओं की हवेली में कीर्तन करने से स्पष्ट इनकार कर देते थे क्योंकि वो अपने कंठ में से सुर निकालने हेतु दरबार साहिब जी को ही उपयुक्त स्थान मानते थे। इन कीर्तनकारों की दरबार साहिब में सेवाएं निश्चित होती थी।

एक दिन ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ को ज्ञात हुआ कि गुरु घर के महान कीर्तनकार भाई मनसा सिंह जी की आर्थिक हालत ठीक नहीं है। ‘गुरु पंथ खालसा’ के महान रागी मनसा सिंह जी का गरीबी के बोझ तले दबा हुआ होना महाराजा जी को रास नहीं आया और वह स्वयं महान कीर्तनकार भाई मनसा सिंह जी के घर उसकी आर्थिक मदद करने हेतु पहुंच गए थे परंतु भाई मनसा सिंह जी ने घर का दरवाजा नहीं खोला और घर के भीतर से ही महाराजा को विनम्रता पूर्वक धन्यवाद कर आर्थिक मदद लेने से इनकार कर दिया था। ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ तुरंत जान गए थे कि जो व्यक्ति गुरु की शरण में जीवन व्यतीत करता है वह हमेशा सुखी और तृप्त होता है। ऐसे सेवादारों को वाहिगुरु जी स्वयं हमेशा चड़दी कला में हमेशा रखते हैं। जब देश के महान कविवर श्री रविंद्र नाथ टैगोर जी ने दरबार साहिब में ‘गुरु पंथ खालसा’ के महान कीर्तनकार भाई सुंदर सिंह जी का कीर्तन सुना तो वो इस कीर्तन के दीवाने हो गए थे उन्होंने भाई सुंदर सिंह जी को सूचित करते हुए निवेदन किया कि वो जिस स्थान पर निवास कर रहे हैं उस स्थान पर आकर आप जी कीर्तन करें। भाई साहब जी ने स्पष्ट इंकार कर कहा था कि यदि रविंद्र नाथ जी को कीर्तन श्रवण करना है तो उन्हें दरबार साहिब में ही उपस्थित होना पड़ेगा। जब टैगोर जी पुनः बंगाल प्रस्थान कर रहे थे तो उन्होंने कहा था कि यदि भाई सुंदर सिंह जी दरबार साहिब के कीर्तनिये नहीं होते तो मैं उन्हें उठाकर बंगाल लेकर जाता था।

वर्तमान समय में दरबार साहिब जी में अत्याधुनिक ध्वनिक्षेपण यंत्र स्थापित किए गये है, जो अत्यंत सूक्ष्म ध्वनि को भी मुलायम और सुरीला बनाकर संपूर्ण दरबार साहिब एवं परिक्रमा में एक जैसा चारों ओर फैला देते हैं। जैसे हवा का एक झोंका फूलों की खुशबू से वातावरण को सुगंधित कर देता है।

जब अमृत वेले (ब्रह्म मुहूर्त) में 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की पालकी को दरबार साहिब में लेकर जाते हैं तो इस पालकी के आगे एक सिख नौजवान श्रद्धालु पूरी शक्ति से नरसिंगा नामक वाद्य को बजाता है। जब इस नरसिंगा वाद्य से निकली ध्वनि लहर दरबार साहिब जी की दीवारों को छू कर पुनः परावर्तित होती है तो इस परिक्रमा का परिसर निश्चित ही विस्मय की भक्ति के रंग में सराबोर होकर वातावरण में एक अद्भुत पवित्रता पैदा करता है। उस समय ऐसा महसूस होता है कि परमेश्वर स्वयं 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' के सत्कार में आकाश से अवतरित होकर अनादि-नाद का अनोखा कीर्तन कर ‘अनहद’ की ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं। इसी समय एक सेवादार सिख अपनी विशेष आवाज में सतनाम. . . . . श्री वाहिगुरु साहिब जी का उच्चारण करता है तो उस सिख सेवादार की आवाज बिना माइक के पूरे परिक्रमा के परिसर में एक समान गूंज कर श्रद्धालुओं को अभिभूत करती है।

'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब' के संदर्भ में कुछ अद्भुत-अलौकिक, महत्वपूर्ण जानकारियां-

1.'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' की की नींव का पत्थर श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने एक माघ 1645 (जनवरी 1558 ई). को मुसलमान फकीर साईं मियां मीर के कर-कमलों से रखवाया था। साईं मियां मीर गुरु साहिब के परम मित्र एवं श्रद्धालु थे। सन 1604 ईस्वी. में श्री हरमंदिर साहिब दरबार साहिब का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ था।

साथ ही विश्व के समस्त मंदिरों के प्रवेश द्वार पूर्व दिशा की ओर स्थित होते हैं कारण सूर्य की प्रथम किरण ने प्रकाश के स्वरूप में मंदिर को प्रकाशित करना चाहिए परंतु 'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' का प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा में स्थित है। इस कारण से सूर्य की प्रथम किरण प्रकाश के स्वरूप में दरबार साहिब के पिछले हिस्से को प्रथम प्रकाशित करती है। इसे सिख धर्म में इस तरह निर्देशित किया गया है कि गुरवाणी के ज्ञान का प्रकाश सूर्य के प्रकाश से भी सर्वोत्तम होता है।

2.'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' के प्रवेश द्वार से यदि हम दृष्टिक्षेप करें तो दरबार साहिब के दायीं एवं बायीं और 19-19 की संख्या में छोटे गुंबद स्थित है। यह दायीं एवं बायीं और स्थित गुंबद यह दर्शाते हैं कि जब हम 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' का प्रकाश करते हैं तो 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' को यदि हम पठन के लिए सम्मान पूर्वक खोलते हैं तो 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' के अंगों (गुरु श्री ग्रंथ साहिब जी के पृष्ठों को सम्मान पूर्वक गुरूमुखी में 'अंग' कहकर संबोधित किया जाता है) के दाएं और एवं बाएं और क्रमानुसार गुरबाणी की 19-19 पंक्तियां अंकित हैं।

3.'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' के परिक्रमा के परिसर एवं सरोवर के चारों और कहीं भी मेंढक और बगुले आज तक दिखाई नहीं पड़ते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि इस तरह की वृत्ति के लोगों का गुरु घर 'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' में कोई स्थान नहीं है।

4.दुनिया में समस्त निर्मित गुरूद्वारों के प्रवेश द्वार पर ही निशान साहिब (सिख धर्म का ध्वज) स्थित होता है परंतु 'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' में मुख्य निशान साहिब पीछे की और ऊपर में स्थित है। इस पुरे परिसर का यदि हम हवाई अवलोकन करें तो ऐसा प्रतीत होता है, जैसे पूरा परिसर खुले समुद्र में यात्रा करते हुए जहाज के समान अवलोकित होता है। जो कि यह दर्शाता है कि इस जीवन रूपी यात्रा में केवल प्रभु के नाम-स्मरण के जहाज में ही यात्रा कर कलयुग रुपी गहरे समुद्र को पार किया जा सकता है।

5.'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' में सरोवर के मध्य स्थित मुख्य इमारत का गुंबद कमल के फूल के आकार में उल्टा स्थित अर्थात (विरुद्ध दिशा में) है। कमल के फूल के आकार में यह उल्टा गुंबद 'विनम्रता' का प्रतीक है। साथ ही 'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' के एकदम समक्ष स्थित 'श्री अकाल तख्त साहिब जी' की मुख्य इमारत के गुंबद को कमल के फूल के सीधे आकर में स्थापित किया है। जो कि सिख धर्म की 'चड़दी कला' का प्रतीक है। ठीक इसी प्रकार श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब की पूर्ण परिक्रमा जमीनी सतह की समतल भूमि से निचे की और स्थित है हमें परिक्रमा स्थल पर पहुंचने के लिये सीढ़ियों से उतरकर नीचे की और जाना पड़ता है। जो कि सिख धर्म की विनम्रता को दर्शाता है। साथ ही जब हम 'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' से श्री अकाल तख्त साहिब जी की और जाते है तो हमें ऊंची सीढ़ियों को चढ़कर जाना पड़ता हूँ। जो कि खालसा की चड़दी कला को निर्देशित करता है।

6.श्री अकाल तख्त के मुख्य दीवान हाल से आप सीधे 'श्री हरिमंदिर साहिब जी' के मुख्य दिवान में हाल में विराजमान 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' के सीधे दर्शन कर सकते है परंतु 'श्री हरमंदिर साहिब जी' के मुख्य दीवान हाल से श्री अकाल तख्त साहिब जी के मुख्य दीवान हाल के दर्शन नहीं कर सकते है। जो कि यह दर्शाता है कि राज सत्ता को हमेशा धर्म की सेवा करने वालों पर दृष्टिक्षेप कर उनकी सेवा में तत्पर रहना चाहिए एवं धर्म की सेवा करने वालों को राज सत्ता की और दुर्लक्ष करना चाहिये।

7.'श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी' के भवन निर्माण के मध्य स्थित मुख्य इमारत के चारों दरवाजों को चारों दिशाओं के कोण से निर्धारित नहीं किया जा सकता है। यहां मुख्य इमारत 360 डिग्री के कोण से एक समान दिखाई पड़ती है अर्थात यदि हम 360 डिग्री के कोण में घूम कर इस इमारत का अवलोकन करेंगे तो सभी कोणों से यह मुख्य इमारत एक जैसी दिखाई पड़ती है।

8.’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ मैं सेवाएं समर्पित करने वाले कीर्तनी जत्थों की संख्या 19 है, इन जत्थों में से प्रतिदिन 8 जत्थे, 15 चौकियों में कीर्तन कर अपनी सेवाएं समर्पित करते हैं। इस स्थान पर भाषण नहीं दिया जाता है और केवल गुरबाणी का पठन ही किया जाता है।

9.’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में केवल ‘श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी’ के सबद, दशमेश पिता ‘श्री गुरु गोविंद साहिब जी’ की वाणी भाई गुरदास जी की वाणी और भाई नंद लाल जी की रचनाओं का ही पठन किया जाता है।

10. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ मैं बेशकीमती सोने के छतर जड़ाऊ सिरका सोने की मालाएं ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ की श्री साहिब (बेशकीमती कृपाण), 108 सच्चे मोतियों की माला, सोने के दरवाजे, सोने के चक्र, दो सोने के पंखे, पांच सोने की करिआं, पांच चांदी के बाटे, हीरे जड़ित चांदनी, बेशकीमती चंदन का बना हुआ चंवर, ढोड़ी साहिब के लिए सोने की जोड़ी, इत्यादि बहुमूल्य वस्तुएं सुशोभित हैं।

11.सन 1922 ईस्वी. में अंग्रेज सरकार के द्वारा ‘श्री दरबार साहिब, हरमंदिर साहिब जी’ की चाबियां शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन कर दी गई थी। सन 1962 ईस्वी. में इस परिसर में प्रबंधक कमेटी के द्वारा तांबे और लौह अयस्क के मिश्रण से बने खंभों पर दो निशान साहिब सुशोभित किए गए थे, यह दोनों निशान साहिब मीरी और पीरी (भक्ति और शक्ति) का प्रतीक हैं।

12. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में हुकुमनामा बाएं ओर से लिया जाता है एवं कीर्तन दाएं ओर से किया जाता है। जबकि और गुरु स्थानों पर कीर्तन बाएं ओर से होता है।

13. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में तीन बार हुकुमनामा लिया जाता है–
1. प्रकाश करते समय।
2. आसा दी वार के कीर्तन के पश्चात।
3.रात्रि के सुखासन के समय।

14. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ का प्रबंध ‘श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी’ ने सन 1699 ईस्वी. में भाई मनी सिंह के सुपुर्द किया था। उस समय गुरु साहिब जी ने भाई मनी सिंह जी को एक नगाड़ा, एक निशान साहिब जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीड़ (पोथी साहिब) एवं 5 सिख सेवादार उनके साथ प्रबंधन के लिए नियुक्त किये थे।

15. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ ने अपने कार्यकाल के समय एक कीमती चांदनी भेंट की थी, इस चांदनी की कीमत उस समय ₹80 लाख थी। यह चांदनी साका नीला तारा (ऑपरेशन ब्लू स्टार) की कार्यवाही के तहत जलकर खाक हो गई।

16. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ के परिसर में ऐतिहासिक बेरी के तीन पेड़ हैं-
1. दुख भांजनी बेरी।
2.बेर बाबा बुड्ढा जी।
3. इलायची बेरी। इलायची बेरी का पेड़ ‘श्री अकाल तख़्त साहिब जी’ के सामने स्थित है। इसी स्थान पर एक अन्य इमली का पेड़ भी स्थित है। ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ के कार्यकाल के समय ‘श्री अकाल तख़्त साहिब जी’ के जत्थेदार सरदार फूला सिंह जी ने इस इमली के पेड़ से बांधकर ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ को पांच कोड़े मारने की सज़ा सुनाई थी। यह समस्त पेड़ एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में दरबार साहिब जी के परिसर में स्थित हैं।

17.’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में पालकी के आवागमन का समय–
1. ग्रीष्म ऋतु में प्रातः काल (अमृत वेले) 4.30 बजे।
2. शीत ऋतु में प्रातः काल 5.30 बजे।
3. प्रतिदिन रात्रि को ‘श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी’ की सवारी को रात 10:30 बजे सुनहरी पालकी में विराजमान करके गुरुद्वारा कोठा साहिब जी (श्री अकाल तख्त साहिब जी) में सुखासन के लिए लेकर जाया जाता है। ऋतुओं के हिसाब से इस समय में 15 मिनट का अंतर कम या अधिक हो सकता है।
18. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ का सन 1803 ईस्वी. में नूतनीकरण करते समय ‘शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी’ ने एक मुस्लिम कारीगर यार मोहम्मद खान की देखरेख में सेवा प्रारंभ करवाई थी। इस सेवा का प्रारंभ 162 सेर शुद्ध सोने से किया गया था, यह महान सेवा लगभग 27 वर्षों तक निरंतर चलती रही थी। इसके पश्चात नूतनीकरण करते समय लगभग 500 किलो शुद्ध सोने से भी अधिक सोना उस समय लगा दिया गया था। जिसकी उस समय कीमत 150 करोड़ रुपए से भी अधिक थी।

19. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ प्रत्येक दिवस दूध मिश्रित जल से (कच्ची लस्सी) से सफाई की जाती है ताकि संगमरमर की चमक बरकरार रहे और भविष्य में इस संगमरमर पर फंगस का प्रादुर्भाव न हो एवं गुरु साहिब का चंदौआ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रकाश स्थान पर चौरस आकृति का बंधा हुआ वस्त्र) प्रत्येक सप्ताह के बुधवार एवं शुक्रवार को बदला जाता है।

20. 'श्री हरमंदिर, दरबार साहिब जी' के ग्रीष्म ऋतु में किवाड़ खुलने का समय रात 2:00 बजे है एवं शीत ऋतु में किवाड़ खुलने का समय ब्रह्म मुहूर्त (अमृतवेला) में सुबह 3:00 बजे है। साथ ही किवाड़ के मंगल होने का समय रात 10:00 बजे है। प्रतिदिन रात 12:00 बजे दरबार साहिब के फर्श की सफाई होती है। दरबार साहिब को कभी भी ताला नहीं लगाया जाता है।

21. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में ‘श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी’ ने ‘श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी’ की स्थापना संवत 1661 मिति भादों सुदी प्रथम (30 अगस्त सन 1604 ईस्वी।) में की थी और प्रथम हेड ग्रंथि के रूप में बाबा बुड्ढा जी को नियुक्त किया था। इस दिवस को प्रत्येक वर्ष ‘श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी’ के प्रथम प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस स्थान पर कुल तीन स्थानों पर ‘श्री गुरुग्रंथ साहिब जी’ का प्रकाश होता है।
22. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ पीछे की ओर स्थित सरोवर के घाट को हर की पौड़ी के नाम से संबोधित किया जाता है। दरबार साहिब के तैयार होने के पश्चात सबसे पहले इसी स्थान पर ‘श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी’ ने अमृत (पवित्र जल) ग्रहण किया था। सरोवर के मध्य स्थित इमारत के मुख्य प्रवेश द्वार के दायीं ओर एवं बायीं और 19-19 छोटे आकार के गुंबद एवं दरबार साहिब के दर्शनी भाग में 7 गुंबद स्थित है एवं पीछे की ओर स्थित सरोवर घाट के ऊपर 13 गुंबद स्थित हैं, साथ ही ‘श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी’ को 10 गुरुओं की ज्योत के रूप में निरूपित किया जाता है, यदि इन सभी अंकों को जोड़ा जाए तो उसका जोड़ कुल 68 होता है। अर्थात इसे तरह से माना गया है कि 'श्री दरबार साहिब अमृतसर जी' में स्नान करने से 68 तीर्थ स्थानों का पुण्य प्राप्त होता हैं।
23. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में प्रतिदिन 6 अरदास (प्रार्थना) की जाती है-
1.गुरु साहिब जी के प्रकाश के पश्चात, ‘श्री आनंद साहिब जी’ का पाठ करने के पश्चात।
2. ‘आसा दी वार’ कीर्तन के भोग के पश्चात।
3.दोपहर 12:00 बजे ‘श्री आनंद साहिब जी’ के पाठ के पश्चात।
4.दोपहर (मध्याह्न काल) 3:00 बजे चरण कमल आरती करने के पश्चात।
5. रहरास साहिब जी के पाठ के पश्चात।
6. रात्रि को कीर्तन सोहिला के पाठ के पश्चात।
24.’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में महाराजा फरीदकोट के अथक प्रयासों से सन 1930 ईस्वी. में ‘श्री दरबार साहिब जी’ में बिजली के प्रबंध हुए थे। जिसके लिए विशेष तौर पर दिनांक 29/08/1897 ईस्वी. में एक स्थाई बिजली घर की नींव रखी गई थी।

25. ’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में चल रहे कीर्तन का प्रसारण प्रत्येक दिवस ब्रह्म मुहूर्त (अमृत वेले) में 4:00 से 6:00 बजे एवं संध्याकाल में 4:30 से 5:30 तक होता है।
26.’श्री हरमंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में ‘रहरास साहिब जी’ के पाठ से पहले, पवित्र ज्योति को प्रज्वलित किया जाता है एवं प्रातः काल ‘आसा दी वार’ कीर्तन के पश्चात इस पवित्र ज्योत को मंगल किया जाता है।

27.श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर में बसंत राग गाने की जो प्राचीन समय से मर्यादा चली आ रही है, वह और किसी अन्य गुरु घर में नहीं है। प्रथम बसंत राग के प्रारंभ के संबंध में लोहड़ी के त्यौहार वाली शाम को बाबा गुरबख्श सिंह जी से संबधित शहीद गंज नामक स्थान पर जोड़ मेला होता है, फिर गुरुद्वारा थड़ा साहिब जी जो कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के इतिहास से संबधित स्थान है, उस स्थान पर भव्य समागम होता है, ऐसा प्रतीत होता है, मानो धरती पर बसंत उतर आया हो। लोहड़ी की रात को 9 बजे श्री दरबार साहिब के अंदर कीर्तन मंगल करके अरदासिया सिंघ अरदास करता है, जिसमें श्री दरबार साहिब के अंदर बसंत राग गाने की अरदास की जाती है। अरदास के बाद रागी सिंह "माहा माह मुमारखी वड़िया सदा बसंत" वाला बसंत राग का पहला सबद, जो श्री गुरु नानक देव जी ने उच्चारित किया था, का बसंत राग में गायन करते हैं। इस प्रकार श्री दरबार साहिब में बसंत राग गाने की शुरुआत होती है। मर्यादा अनुसार हर रागी जत्था पहला सबद बसंत राग से ही गाता है। हर चौकी के दौरान 'बसंत की वार' नामक वाणी की पहली दो पौड़ियां गाई जाती हैं और तीसरी पौड़ी अंत में गाकर चौकी के कीर्तन की समाप्ति की जाती है। यह सिलसिला होला मोहल्ला के दिन तक चलता है। होला मोहल्ला के दिन 'आसा दी वार' की समाप्ति की अरदास में ही बसंत राग गाने की समाप्ति की भी अरदास की जाती है। (**स्त्रौत: गुरमति प्रकाश - अगस्त 1988 के पृष्ठ 52-53).**

28. ‘श्री हरि मंदिर साहिब, दरबार साहिब जी’ में स्थित लंगर घर दुनिया का सबसे बड़ा सामुदायिक रसोईघर माना जाता है। इसे पूरी तरह से स्वयंसेवकों द्वारा संचालित किया जाता है, जिन्हें 'सेवक' कहा जाता है। इस लंगर घर में प्रतिदिन दिन, लगभग 150,000 से 200,000 लोग यहां भोजन ग्रहण करते हैं। त्योहारों और विशेष अवसरों पर यह संख्या और भी बढ़ जाती है। लंगर घर का संचालन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (SGPC) के अधीन होता है, जो गुरुद्वारों का प्रबंधन करता है। लंगर घर में पूरी तरह से शाकाहारी भोजन परोसा जाता है, जिसमें आमतौर पर दाल, सब्जी, चपाती और खीर शामिल होते हैं। भोजन बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सभी सामग्री स्वच्छ और उच्च गुणवत्ता वाली होती है। गेहूं, दालें, और अन्य सामग्री अक्सर श्रद्धालुओं द्वारा दान की जाती हैं। लंगर घर में भोजन बनाने, परोसने, और सफाई करने का कार्य पूरी तरह से स्वयंसेवकों द्वारा किया जाता है। वे बिना किसी भेदभाव के सेवा करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह श्रद्धालु हो या कोई अन्य, लंगर घर में सेवा कर सकता है। सेवा करने वालों में युवा, वृद्ध, महिलाएं, और पुरुष सभी शामिल होते हैं। लंगर में आने वाले सभी लोग एक साथ, जमीन पर बैठकर भोजन करते हैं, ताकि समानता का संदेश प्रसारित हो। भोजन करने से पहले हाथ धोना और सिर ढकना अनिवार्य होता है। लंगर घर का वातावरण अत्यंत स्वच्छ और पवित्र होता है। साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है, ताकि सभी को स्वच्छ और पौष्टिक भोजन प्रसादि/लंगर मिल सके। इतने बड़े पैमाने पर भोजन बनाने के लिए आधुनिक रसोई उपकरणों और तकनीकों का उपयोग किया जाता है। हालांकि, कुछ पारंपरिक विधियों को भी संरक्षित किया गया है। **श्री हरि मंदिर साहिब का लंगर घर न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह मानवता, सेवा, और समानता का प्रतीक भी है।** यह पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार सेवा और समर्पण के साथ समाज में एकता और सामूहिकता स्थापित की जा सकती है।

29. सरदार लहणा सिंह जी मजीठिया एक प्रसिद्ध सिख वैज्ञानिक से, जिन्होंने सिख राज्य के समय में कई खोजें कीं। है। सन 1825 ई. में मजीठा गांव में सरदार लहणा सिंह जी का जन्म हुआ। आपके पिता का नाम देसा सिंह मजीठिया था। सन 1832 ई. में जब आपके पिता जी का देहांत हो गया, तो इन्हें पहाड़ी क्षेत्रों और कांगड़ा का नाजिम नियुक्त किया गया। इसके अलावा, आपने एक घड़ी भी तैयार की जो धूप के हिसाब से समय बताती थी। यह सिख राज्य की उस समय की सबसे पहली तैयार की गई घड़ी थी, जिसे उन्होंने शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी को दिया और शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह ने वह घड़ी दरबार साहिब की परिक्रमा में लगवा दी, जो आज भी वहां मौजूद है। 'साहिबे कदर' के नाम से भी सरदार लहणा सिंह जी को जाना जाता है। आज इस वैज्ञानिक के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।

वर्तमान समय में भी अमृतसर शहर की गलियों में गुरु रामदास साहिब जी की प्रेमा भक्ति की सुनामी मौजूद है, दरबार साहिब के परिसर में गुरु पातशाह जी के द्वारा रचित जीवात्मा और परमात्मा की वाणियों की लहर मौजूद है। समूची दुनिया से जब तीर्थयात्री यहां पहुंचते हैं तो महसूस करते हैं कि जो सुख और चैन यहाँ पर मिलता है, दुनिया के किसी कोने पर नहीं मिलता। इस स्थान पर प्रभु की महिमा के कीर्तन का अखंड प्रवाह चल रहा है इसलिये तो यह स्थान कहलाता है, गुरु रामदास पुर! गुरु का चक! श्री अमृतसर! श्री गुरु रामदास जी की यह महान बक्शीश संपूर्ण संसार में बक्शीश बाट रही है, रहमते बाट रही है, ज्ञान बाट रही है, आनंद की अनुभूति बाट रही है, जब भी कोई तीर्थ यात्री इस में शहर प्रवेश करता है तो वह स्वयं अपने मुख से प्यार भरी रसना को उच्चारित करता है, धन्य श्री गुरु राम दास जी!   धन्य श्री गुरु रामदास जी! धन्य श्री गुरु राम दास साहिब जी!

सभी संगत (पाठकों) से निवेदन है कि जब भी 'श्री दरबार साहिब जी' में दर्शनों के लिए उपस्थित हो तो इस दृष्टिकोण से 'श्री दरबार साहिब जी' के नजारे देख कर अनोखे, आत्मिक, अलौकिक सुख का आनंद प्राप्त करें।

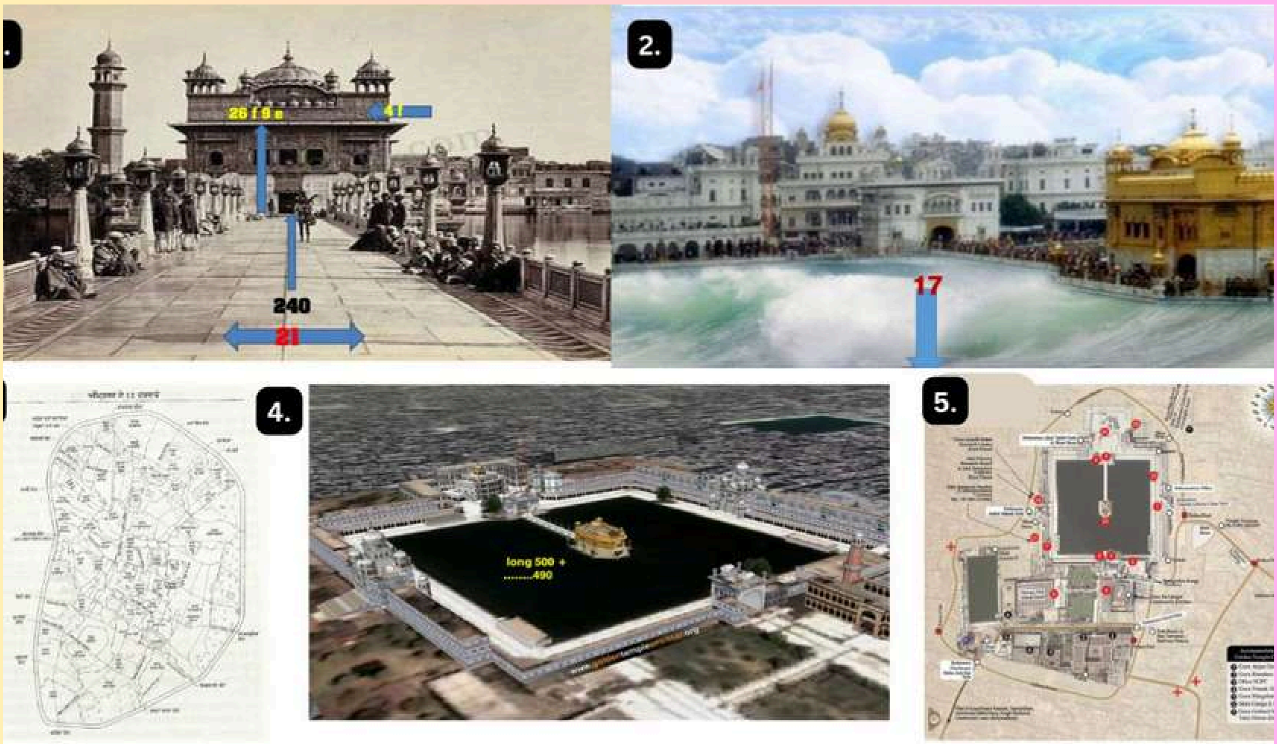

1. श्री दरबार साहिब जी की मुख्य ईमारत का नाप
2. श्री दरबार साहिब जी के सरोवर की गहराइ को दर्शात नाप
3. श्री दरबार साहिब जी का संपूर्ण भौगोलिक नक्शा
4. श्री दरबार साहिब जी का हवाई दृश्य
5. भौगोलिक नक्शे अनुसार श्री दरबार साहिब जी का निर्माण कार्य

. श्री दरबार साहिब अमृतसर
. शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह
. श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी

4. श्री दरबार साहिब में किर्तन करते हुए रागी सिंह
5. कविवर रविम्द्रनाथ टैगोर

जीवन के रंग-गुरबाणी के संग, (गुरबाणी बोले राम)

विश्व में सिख धर्म को सबसे आधुनिक धर्म माना गया है। सिख धर्म एक मार्शल धर्म भी है। ऐसी क्या विशेषता है इस धर्म की? जो सिख धर्म के अनुयायी हैं, उनकी एक विशेष प्रकार की 'जीवन शैली' होती है। इनके जीवन में विनम्रता और व्यक्तिगत स्वाभिमान और 'गुरबाणी' का विशेष महत्व है। प्रत्येक सिख श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा 'किरत करो, नाम जपो और वंड़ छकों' के सिद्धांत के अनुसार जीवन व्यतीत करता है अर्थात कष्ट करो, प्रभु-परमेश्वर का स्मरण करो और जो भी प्राप्त हो उसे बांट कर खाओ। सिख धर्म की बुनियाद अंधविश्वास को ना मानने में है। अज्ञानता को दूर करने के लिए मानवीय जीवन में गुरबाणी की शिक्षाओं से दिव्य ज्ञान को प्राप्त कर गुरबाणी की शिक्षाओं के अनुरूप सिख 'जीवन शैली' चलती है। यदि प्रत्येक गुर सिख अपने जीवन में, इस लेख में संकलित 50 गुरबाणी की निम्नलिखित पंक्तियों को कंठस्थ कर, अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या को मधुर, आनंदित और उत्साह की ऊर्जा से संचारित करने के लिये, अपने जीवन के क्रियाकलापों को करते समय गुरबाणी की इन पंक्तियों का शुद्ध पठन करें तो निश्चित ही इस लोक के साथ-साथ परलोक भी सफल होगा एवं भविष्य का जीवन, जलप्रपात के झरने के द्वारा उत्पन्न कल-कल की ध्वनि की तरह अविरल, अविरत, अविराम, अलौकिक, आनंद की अनुभूति देने वाला होगा।

1.सुबह उठते समय-

बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ।।1।। रहाउ।।

(अंग क्रमांक 378)

अर्थात उठते-उठते, सोते-खाते, श्वास लेते अथवा खाते समय, है अकाल पुरख, परमेश्वर तुम मुझे कभी भी विस्मृत ना हो।

2.स्नान के समय -

उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै।।

(अंग क्रमांक 305)

अर्थात वह प्रतिदिन सुबह उठकर उद्यम करता है, स्नान करता है और फिर नाम-रूपी अमृत के सरोवर में डुबकी लगाता है।

3. तैयार होने के समय-

सेई सुंदर सोहणे।।
साधसंगि जिन बैहणे।
(अंग क्रमांक 132)

अर्थात वहीं व्यक्ति सुन्दर एवं शोभनीय हैं, जो सत्संग में वास करते हैं।

4. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को नमन करते समय-

गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु।।

(अंग क्रमांक 50)

अर्थात गुरु की शरण में आकर शुभ आचरण एवं रहन-सहन की शिक्षा ग्रहण करों पश्चात तुम्हे कदाचित दुखी नहीं होना पड़ेगा।

5.भोजन के समय-

ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार।। (अंग क्रमांक 257)

एक अकाल पुरख - परमात्मा ही वह दाता है, जो समस्त जीवों को भोजन-पदार्थ देने वाला है।

6. पानी पीते समय-

जिउ प्राणी जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई।। (अंग क्रमांक 757)

अर्थात जैसे प्राणी जल के बिना मर जाता है, वैसे ही गुरु के बिना शिष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

7.घर से बाहर जाते समय-

घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई।।

संगि सहाई जह हउ जाई।। (अंग क्रमांक 1340)

अर्थात घर, बाहर प्रत्येक स्थान पर प्रभु ही विद्यमान है, जहाँ भी हम जाते हैं, परमपिता परमात्मा हमें साथ देकर सहायता करता है।

8.पढ़ाई करते समय-

विदिआ विचारी ताँ परउपकारी।। (अंग क्रमांक 356)

अर्थात यदि विद्या का विचार-मनन किया जाए तो ही परोपकारी बना जा सकता है।

9.किसी अजनबी की मदद करते समय-

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई।।

(अंग क्रमांक 1299)

अर्थात न कोई शत्रु है, न ही कोई पराया है, मेरा सब के साथ प्रेम बना हुआ है।

10.अनावश्यक भोजन खाते समय-

फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु॥

(अंग क्रमांक 790)

अर्थात उस व्यक्ति का जीना धिक्कार योग्य है, जिसनें स्वादिष्ट पदार्थ खा-खाकर अपना पेट बड़ा लिया है।

11.मल्टी मीडिया देखते समय-

अखी देखि न रजीआ बहु रंग तमासे।

(वारां भाई गुरदास जी 27 पउड़ी 9)

अर्थात दुनिया का तमाशा देख कर आंखे कभी भरती नही है।

12.प्राकृतिक नजारों को देखते हुए-

बलिहारी कुदरति वसिआ ।।

तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥1॥ रहाउ ॥

(अंग क्रमांक 469)

अर्थात हे जगत- रचयिता अकाल पुरख ! मैं तुझ पर बलिहार जाता हूँ, तू अपनी कुदरत में निवास कर रहा है।

13.अन्य धर्मों के लोगों से मिलते समय-

हिंदू तुरक कोऊ राफिज़ी इमाम साफी मानस की जाति सबै एकै पहिचानबो।।

(क्रमांक 47 अकाल उसत्त)

अर्थात कोई हिन्दू है और कोई मुसलमान है,कोई सिया है और कोई सुन्नी है परंतु प्रजाति के रुप में सभी इंसानों को एक ही माना जाता है।

14.गुरुसिखों की मुलाकात के समय-

आगे आवत सिंह जु पावै।।
वाहिगुरु जी की फतिह बुलावै।।

अर्थात जब एक गुरु का सिख, दूसरे गुरु के सिख को मिलता है तो वो उर्जित होकर गुरु फतेह की सांझ करता है।
15.निंदा सुनते समय-

करन न सुनै काहू की निंदा ।।
सभ ते जानै आपस कउ मंदा॥
(अंग क्रमांक 274)

अर्थात जो अपने कानों से किसी की निन्दा सुनता, वह अपने आपको बुरा (निम्न) समझता है।
16.जन्मोत्सव मनाते समय--

पूता माता की आसीस॥
निमख न बिसरउ तुम् कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस।।1।। रहाउ।।
(अंग क्रमांक 496)

अर्थात हे पुत्र! तुम्हें यह माता की आशीष है कि एक क्षण भर के लिए भी तुझे भगवान विस्मृत न हो तथा तुम सदैव ही जगदीश का भजन करते रहो।॥ 1 ॥ रहाउ ॥
17.महिलाओं को समानता का हक देते समय-

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।
(अंग क्रमांक 473)

अर्थात वह नारी कैसे बुरा हो सकती है? जिसने बड़े-बड़े राजा, महाराजाओं एवं महापुरुषों को जन्म दिया है।
18.पराई स्त्री को देखते समय-

देखि पराईआ चंगीआ मावाँ भैणाँ धीआँ जाणै।।
(वारां भाई गुरदास जी क्रमांक 29 पउड़ी)

अर्थात सिखों को पराई स्त्री को अपनी मां, बहन और बेटी के समान समझना चाहिये।
19. दुख: के समय में -

केतिआ दूख भूख सद मार॥
एहि भि दाति तेरी दातार॥
(अंग क्रमांक 5)

अर्थात कईयों को दुख व भूख की मार सदैव पड़ती रहती है, क्योंकि यह उनके कर्मों में ही लिखा होता है। किन्तु सज्जन लोग ऐसी मार को उस परमात्मा की बख्शिश ही मानते हैं। (इन्हीं कष्टों के कारण ही मानव जीव को वाहिगुरु का स्मरण होता है)।
20.किसी भी कार्य को प्रारंभ करते समय-

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ॥
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ॥
(अंग क्रमांक 91)

अर्थात यदि कोई नवीन कार्य प्रारंभ करना हो तो उसकी सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। सतिगुरु जी की प्राप्त शिक्षा के अनुसार सच्चा प्रभु अपने सेवक का कार्य आप संवार देता है।

21.नये कपड़े खरीदते समय-

बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु।।
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार।। 1 ।। रहाउ ।।
(अंग क्रमांक 16)

अर्थात हे परम पिता परमेश्वर जी ! मन-भावना के अनुसार कपड़े पहनने से प्राप्त सुख झूठे होते है।
जिन वस्त्रों को पहनने से तन को पीड़ा हो तथा मन में विकारों की उत्पति हो, ऐसे वस्त्र पहनने व्यर्थ हैं ॥1॥ रहाउ ॥

22.शरीर की देखभाल के समय-

नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि॥
(अंग क्रमांक 554)

अर्थात हे नानक! उस प्रभु को ही याद करना चाहिए, जो इस मानव देहि का पालन पोषण करता है॥

23.नाम जपते समय-

वाहिगुरु गुरमंत्र है जपि हउमै खोई।।
(वारां भाई गुरदास जी क्रमांक 13 पउड़ी 2)

अर्थात वाहिगुरु का नाम गुरु मंत्र है और जिसके जपने से अंहकार दूर होता है।

24.प्रशंसा और निंदा को सुनते समय-

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना॥
(अंग क्रमांक 219)

अर्थात मनुष्य को किसी की प्रशंसा एवं निन्दा करना दोनों ही त्यागने योग्य हैं और उसके लिए मुक्ति के मार्ग को खोजना न्यायोचित है।

25.चिंता करते समय-

चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई।
(अंग क्रमांक 517)।

अर्थात हे नानक! प्रभु के चरण-स्पर्श कर तथा चिन्ता छोड़कर अचिंत रहै।

26.बुरे लोगों की संगत के समय-

कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ।।
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि॥
(अंग क्रमांक 1364)

अर्थात कबीर जी कहते हैं कि बुरी संगत ही मनुष्य को मारती है, जब केले के निकट बेरी होती है तो वह हवा से झूमती है, मगर केले का पेड़ उसके काँटों से चिरता है, अतः कुटिल लोगों की संगत मत करो, (अन्यथा बेकार में ही दण्ड भोगोगे)।

27.श्रृंगार करते समय-

भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो।।
ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो।।
(अंग क्रमांक 722)

अर्थात अपने नयनों पर प्रभु के डर रूपी सुरमे की सिलाइयों डाल और प्रभु के प्रेम का श्रृंगार कर, यदि पति-प्रभु जीव-स्त्री से प्रेम धारण करेगा तो ही वह सुहागिन जानी जायेगी।

28. दहेज देते व लेते समय-

होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि॥
सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो।।
हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो।।
(अंग क्रमांक 79)

अर्थात हरिनाम के दहेज के अतिरिक्त जो लोग दान-दहेज का प्रदर्शन करते है,वह मिथ्याडम्बरी और अंहकारी होते है। हे मेरे बाबुल! मुझे दहेज में केवल हरि-नाम का ही दान व दहेज देना।

29 ना डरो, ना डराओ के सिद्धांत को अमल में लाते समय-

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि।।
(अंग क्रमांक 1427)

अर्थात ना किसी व्यक्ति को डराओ और ना ही किसी का डर मानना है।। नानक का कथन है कि हे मन! सुन, उसी को ज्ञानी कहना चाहिये।।

30.सभी से प्यार करते समय-

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन।।
(अंग क्रमांक 671)

अर्थात मैंने सभी को अपना मित्र बना लिया है और मैं सबका साजन बन गया हूँ।

31. सुंदर घर में रहते समय-

जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि॥
(अंग क्रमांक 269)

अर्थात जिसकी कृपा से तुम महलों में सुख से रहते हो, उस अकाल पुरख का स्मरण हमेशा मन में रखना हैं।

32.गुरबाणी शिक्षण की सेवा करते समय-

जैसे सत मंदर कंचन के उसार दीने तैसा पुंन सिख कउ इक सबद सिखाए का।।
(वारां भाई गुरूदास जी कबित 673)।

33.किसी से धौखा करते समय-

हरि बिसरत सदा खुआरी॥
ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट तुहारी ॥ रहाउ॥
(अंग क्रमांक 711)

अर्थात परमेश्वर को विस्मृत करने से मनुष्य सदैव ही दुखी रहता है। हे परमेश्वर! जिसे तुम्हारी शरण मिली हुई है, फिर वह कैसे धोखे का शिकार हो सकता है॥ रहाउ ॥

34.सेवा करते समय-

सेवा करत होइ निहकामी॥
तिस कउ होत परापति सुआमी॥
(अंग क्रमांक 286)

अर्थात जो सेवक निष्काम भावना से गुरु की सेवा करता है, वह प्रभु को पा लेता है।

35.दसवंद (किरत कमाई का दसवां हिस्सा) देते समय-

घालि खाइ किछु हथहु देइ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ॥1॥
(अंग क्रमांक 1245)

अर्थात जो मेहनत करके निर्वाह करता है, दूसरों की मदद अथवा दान करता है, हे नानक! ऐसा व्यक्ति ही सच्चे जीवन की राह को पहचानता है।

36.किसी बुरे का भी भला करते समय-

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ।।
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ।।
(अंग क्रमांक 1381)

अर्थात बाबा फरीद उपदेश देते हुए कथन करते हैं कि हे प्राणी! अगर कोई तेरे साथ बुरा करे तो उसका भी भला ही कर और मन में गुस्सा मत आने दे। इससे शरीर को कोई रोग अथवा बीमारी नहीं लगती और सभी कुछ प्राप्त हो जाता है।

37. दोस्त बनाते समय-

गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥
(अंग क्रमांक 1421)

अर्थात गुरमुखों से दोस्ती कर और सच्चे गुरु से चित्त लगाना चाहिये।

38.शत्रु की सहायता के समय-

धनु धनु हरि गिआनी सतिगुरु हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ सम द्रिसटि दिखाई ॥
(अंग क्रमांक 594)

अर्थात हरि का ज्ञानवान हमारा सतिगुरु धन्य है, जिसने हमें समदृष्टि से सभी शत्रु एवं मित्र दिखा दिए हैं।

39.अत्याचारी को सबक सिखाते सम-

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ।।
हलाल असतु बुरदन ब शमशेर दसत।।
(1730 ज़फ़रनामा)

अर्थात जब सारे प्रयास विफल हो जाते है तो न्याय के लिये कृपाण हाथ में लेनी ही पड़ती है।

40.धर्म-कर्म करते समय-

सरब धरम महि स्रेसट धरमु॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु॥
(अंग क्रमांक 265)

अर्थात समस्त धर्मों में सर्वोपरि धर्म है ईश्वर के नाम का जाप करना एवं पवित्र कर्मों को करना।

41. धर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति देते समय-

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु॥
(अंग क्रमांक 1105)

अर्थात सच्चा शूरवीर वही समझा जाता है जो अपने धर्म एवं मासूमों के लिए लड़ता है। धर्म एवं गरीबों की खातिर चाहे वह अंग-अंग से कट कर मर जाए किन्तु वह रणभूमि को कदापि नहीं छोड़ता है।

42. शराबी को सलाह देते समय-

जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ॥

आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ॥

(अंग क्रमांक 554)

अर्थात जिसका पान करने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और उन्मादपन दिमाग में आ जाता है, जिससे मनुष्य अपने व पराए की पहचान नहीं कर पाता और अपने मालिक प्रभु की और से धक्के खाता है।

43.जब अश्लील गीत सुनाई पड़े।

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए।।

साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए।। रहाउ ।।

(अंग क्रमांक 820)

अर्थात हे मेरे मोहन! वे मेरे कानों में मुझे कभी न सुनाओ जो मायावी जीव अभद्र गीतों के स्वर एवं ध्वनियाँ गाते हैं और व्यर्थ बोल बोलते है।

44.भाणा(उसकी रजा) मानते समय-

तेरा कीआ मीठा लागै॥

हरि नामु पदारथु नानकु माँगै॥

(अंग क्रमांक 394)

अर्थात है भगवान्! तेरा किया हुआ प्रत्येक कार्य मुझे मीठा लगता है। नानक! तुझ से हरिनाम रूपी पदार्थ ही माँगता है॥

45.अच्छे और बुरे दिनों पर विचार करते समय-

सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु॥

थिती वार सेवहि मुगध गवार॥

(अंग क्रमांक 843)

अर्थात सतगुरु के बिना जगत् में घोर अन्धेरा बना रहता है। मूर्ख गंवार व्यक्ति ही तिथियों एवं वारों को मानते हैं।

46.श्राध्द करते समय-

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही।।

पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही॥

(अंग क्रमांक 332)

अर्थात मनुष्य अपने पूर्वजों (माता-पिता) की उनके जीवित रहने तक तो सेवा नहीं करते परन्तु (उनके) मरणोपरांत पितरों का श्राद्ध करवाते हैं, बताओ, बेचारे पितर भला श्राद्धों का भोजन कैसे पाएँगे? इसे तो कौएं और कुत्ते खा जाते हैं।

47. माता-पिता से लड़ते समय-

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप।

जिन के जणे बड़ीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप॥1॥रहाउ॥

(अंग क्रमांक 1200)

अर्थात हे पुत्र! अपने पिता से क्यों झगड़ा कर रहे हो? जिन्होंने जन्म देकर तुम्हें बड़ा किया है, उनके साथ झगड़ा करना पाप है॥ 1 ॥ रहाउ॥

49.अकाल पुरख की स्तुति करते समय-

प्रभ की उसतति करहु संत मीत॥
सावधान एकागर चीत॥
(अंग क्रमांक 295)

अर्थात हे संत मित्रो! प्रभु की महिमा-स्तुति सावधान एवं एकाग्र चित होकर करो।

50,संगत करते समय-

वडभागी हरि संगति पावहि॥
भागहीन भ्रमि चोटा खावहि॥
(अंग क्रमांक 95)

अर्थात भाग्यशाली व्यक्ती हरि की संगत प्राप्त करता है परंतु भाग्यहीन मनुष्य भ्रम में भटकते और चोटें सहते हैं।

इस जीवन शैली में गुरूबाणी की उक्त 50 पंक्तीयों को कंठस्थ कर, अपनी जीवन यात्रा में चलते-चलते रहोगे तो निश्चित ही इस पृथ्वीलोक पर भी 'सचखंड' का आनंद प्राप्त होगा।

भाई धन्ना सिंह चहल (पटियालवी): सायकल यात्री और लेखक

चरन चलउ मारगि गोविंद॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद॥
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा॥
(अंग क्रमांक 281)

अर्थात अपने चरणों से गोविंद के मार्ग पर चलो, एक क्षण के लिये भी हरि का जाप करने से पाप मिट जाते है। हे नानक! इस प्रकार प्रभु के दरबार में तेरा मस्तक उज्जवल हो जायेगा।

'गुरु पंथ ख़ालसा' के महान, निष्काम सेवादार भाई धन्ना सिंह चहल (पटियालवी) धन्यता का पात्र है, जिसने कश्मीर से लेकर अबचल नगर श्री हजूर साहिब नांदेड़ (महाराष्ट्र) तक और असम से लेकर पेशावर को पार कर जमरोद (अफगानिस्तान) तक के सभी गुरु धामों के दर्शन अपनी सायकल से यात्रा करते हुए किये थे, उस समय भारत देश एक अखंड भारत हुआ करता था, उस समय में सूबा पंजाब के बाहर जाने पर 3 फीट लंबी श्री साहिब (कृपाण) का लाइसेंस लेना पड़ता था। भाई धन्ना सिंह चहल (पटियालवी) का जन्म सन् 1905 ईस्वी. का माना जाता है। आप जी का जन्म ग्राम चांगली तहसील धुरी के जिला संगरूर सूबा पंजाब में हुआ था। आप जी के पिता जी का नाम भाई सुंदर सिंह जी था। आप जी ने 11 मार्च सन् 1930 ई. से लेकर 2 मार्च सन् 1935 ई. तक सायकल से 'गुरु पंथ ख़ालसा' के गुर धामों की कई हजार मीलों की यात्राएं लगातार की थी। भाई धन्ना सिंह चहल (पटियालवी) के द्वारा की गई सायकल यात्राओं से आप जी ने सभी ऐतिहासिक गुरु धामों के दर्शन-दीदार करने हेतु लगभग 20 हजार माइल्स तक कि आप जी ने सायकल से यात्रा की थी साथ ही उस समय के गुरु धामों के इतिहास का ब्यौरा लिखकर अंकित किया था। आप जी यात्रा करते समय हमेशा अपनी साइकिल पर निशान साहिब ('गुरु पंथ ख़ालसा' का केसरिया ध्वज), बैटरी वाली टॉर्च, सायकल पर यात्रा की तख़्ती, श्री साहिब (कृपाण) साइकिल के पीछे कैरियर पर एक लोहे का संदूक (ट्रंक) जिसमें भोजन सामग्री, कुछ शस्त्र और यात्राओं के संस्मरणों को लिखने के लिए एक डायरी एवं कुछ जरूरत का सामान हमेशा अपने साथ रखते थे। आप जी ने इन मार्गों पर पड़ने वाले सभी गुरूधामों के दर्शन तो किये ही अपितु उन गुरुधामों की तस्वीरें भी खींची थी, इन गुरुधामों के मार्गों का संपूर्ण सफर भाई धन्ना सिंह जी चहल ने अपनी सायकल पर किया था, आप जी बड़े प्यार से अपनी सायकल को अरबी पातशाह (अरबी घोड़ा) कहकर संबोधित करते थे।

भाई धन्ना सिंह जी महाराजा पटियाला के कार ड्राइवर व उत्तम मैकेनिक थे, साथ ही आप जी हॉकी भी बहुत अच्छी खेलते थे। नौकरी करते हुए आप जी का परिचय गुरु सिख भाई जीवन सिंह जी से हुआ और आप जी उनकी संगत में रहकर सिखी मान-मर्यादाओं के लिए परिपक्व हो गए थे। भाई धन्ना सिंह जी का असीम स्नेह भाई गुरूबक्श सिंह जी से भी था, भाई गुरूबक्श सिंह जी महाराजा पटियाल की रियासत में हेड मैकेनिक के रूप में नौकरी करते थे और भाई धन्ना सिंह जी उनके पारिवारीक सदस्य की तरह थे, अपनी यात्राओं के दौरान वह चिठ्ठी-पत्रों के द्वारा लगातार भाई गुरूबक्श सिंह जी के परिवार से संपर्क बना कर रखते थे। भाई धन्ना सिंह जी ने उस समय में उपलब्ध सभी सिख धर्म ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया था, उपलब्ध सभी ऐतिहासिक स्रोतों का उन्होंने अपने लिखे हुए इतिहास में जगह-जगह पर ज़िक्र भी किया है। आप जी सायकल यात्री तो थे साथ ही इस यात्रा को संपूर्ण करते हुए आप जी ने अपने अंदर छुपे हुए एक साहित्यकार को प्रकट करते हुए इन गुरूधामों का इतिहास एक उम्दा एवं परिपक्व लेखक की तरह लिखा था।

इन रचनाओं को अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आप जी उत्तम स्तंभकार और कवि थे, एक पंथ दर्दी के दर्द को आप जी ने अपनी कविताओं में प्रकट किया था। एक पंथ दर्दी सायकल यात्री और साहित्यकार, मन में चल रहे हैं अंतर्द्वंदों के हस्तकरधे पर अपनी साहित्यिक रचनाओं को इन यात्राओं को करते हुये, होले-होले बुनते जाता हैं और इस बुनाई को केवल उस अकाल पुरख की कृपा से ही सीखा जा सकता है।

निश्चित ही आप जी के द्वारा की गई गुरूधामों की यात्रा 'गुरुपंथ ख़ालसा' के लिये एक संजीवनी की तरह थी, आप जी ने अपनी यात्राओं की पारस मणि से बिखरे हुए गुरूधामों के इतिहास को एकत्रित उसे स्वर्णिम अक्षरों में शब्दांकित किया है। इन यात्राओं के द्वारा गुरूधामों के इतिहास को लिखने की यशोगाथा में आप भी का स्थान सर्वोत्तम है और अति विशिष्ट भी है।

आप जी ने गुरू धामों पर सुशोभित 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' के स्वरूपों के दर्शन कर उनके संबंध में विस्तार से उत्तम जानकारियां और अपने संस्मरण को डायरियों में अंकित किये है। आप जी ने इन गुरु धामों के प्रबंधन और प्रबंधकों पर भी विशेष टिप्पणियों को अपने संस्मरणों में अंकित की है।

भाई धन्ना सिंह जी ने 11 मार्च सन् 1930 ईस्वी. से लेकर 26 जून सन् 1935 ईस्वी. तक लगभग सौलाह सौ (1600) गुरु धामों की यात्राएं की थी। उस समय में चित्र (फोटो) खींचना वर्तमान समय की तुलना में ना के बराबर था परंतु भाई धन्ना सिंह जी ने विशेष प्रयत्न कर इन ऐतिहासिक स्थानों और गुरूओं की निशानियों की तस्वीरें खींचते थे, उन तस्वीरों के पीछे उस गुरू धाम का नाम, उस शहर का नाम साथ ही अंग्रेजी अंकों में एवं गुरूमुखी के अंकों में तारीख भी ज़रूर लिखते थे। इस महान कार्य को अंजाम देने के लिये आप जी को सरदार ग़िरफ्तार सिंह जी सोढ़ी जी ने उस समय में 147 रुपये का कोडक कंपनी का कैमरा ख़रीद कर दिया था पश्चात सरदार हजूरा सिंह जी ढिल्लों ने भी एक उत्तम दर्जे का कैमरा लेकर आप जी को दिया था (23 अप्रैल सन् 1932 ई.)। पटियाला निवासी भाई जुगराज सिंह जी दर्जी ने आप जी को यात्राओं के लिये उपयुक्त वस्त्र सिल कर दिये थे। इन यात्राओं में भाई धन्ना सिंह जी को जिन प्रेमी सज्जनों से जिस भी प्रकार से सहायता की थी उन सभी का ज़िक्र भाई धन्ना सिंह जी ने अपनी डायरियों में किया है।

उस समय में जिन गुरु धामों को आप जी ने चिन्हित किया था वह किसी और अन्य ऐतिहासिक पुस्तक में अंकित हुआ नहीं मिलता है। जब भाई धन्ना सिंह जी निरंतर यात्रा कर रहे थे तो उस समय में एक पंजाबी पत्रिका में ज्ञानी नाहर सिंह जी ने 'सायकल यात्री का पहाड़ी दौरा' नामक शीर्षक के अंतर्गत इस तरह अंकित किया था कि भाई धन्ना सिंह जी के द्वारा किए जा रहे अथक प्रयास सराहनीय है। इस यात्रा को शिरोमणि विद्वान और पंथ हितैषी प्रोत्साहित कर भाई धन्ना सिंह जी को उच्च कोटि का सम्मान प्रदान कर रहे हैं। पिछले 5 वर्षों से इस वीर (भाई) ने गांव–गांव जाकर अनेक ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण कर, प्रत्येक ऐतिहासिक गुरूद्वारे के इतिहास को एक उत्तम साहित्यकार की तरह रचित किया है। साथ ही उन गुरू धामों की तस्वीरें लेकर, इस यात्रा को रोचक बनाया है। उस समय में ना तो वर्तमान समय की तरह सड़कों की सुविधा थी और ना ही अच्छे रास्ते थे, नदी–नालों और दरियाओं पर वर्तमान समय की तरह पुल नही होते थे, ना ही होटल या धर्मशालायें होती थी। कई बार उन्हें अपनी सायकल को कंधे पर उठाकर भी यात्रा जारी रखनी पड़ती थी, इस तरह की कठिन यात्राएं प्रकृति के मिजाज पर भी निर्भर करती थी, निरवैर भाव से ऐसी धार्मीक यात्राएं करना लोहे के चने–चबाने के समान था।

करुणा, कलम और कृपाण के धनी श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के इस लाडले सिख ने अनेक यातनाएं सहन करके, शारीरिक कष्टों को उठाकर, स्वयं का माली नुकसान उठा कर, उस अकाल पुरख के बहाने में रहकर, गुरुओं के आश्रय पर इस यात्रा के महान यज्ञ को जारी रखा था। निश्चित ही भाई धन्ना सिंह जी के द्वारा सायकल पर की गई गुरूधामों की यह यात्राएं बिखरे हुये रास्तों को जोड़ने की अनौखी दास्तान है। इन यात्राओं के दौरान पुरे भारत वर्ष में प्लेग की घातक बिमारी भी फैली हुई थी पर आप जी ने अपनी यात्राओं को जारी रखा था इन यात्राओं में भाई धन्ना सिंह जी चहल एक बार नहीं अपितु कई बार मौत के मुंह से बचे थे। इन 5 वर्षों में भाई धन्ना सिंह जी ने लगभग 20 हजार माइल्स का सफर किया था और 16 सौ गुरूधामों के दर्शन–दीदार किए थे। उस समय में केवल 500 गुरू धामों की ऐतिहासिक जानकारी लिखित स्वरूप में उपलब्ध थी। पाठक स्वयं संज्ञान ले सकते हैं कि जब भाई धन्ना सिंह जी चहल की यात्राओं पर पुस्तक प्रकाशित हुई और ग्याराह सौ के क़रीब नए गुरू धामों की जानकारी उपलब्ध हुई थी। सिख इतिहास का एक बहुत बड़ा हिस्सा अंधेरे की चादर में डूबा हुआ था, जिसे भाई धन्ना सिंह जी की यात्राओं ने एक नए उजाले की किरण को प्रकाशित कर इन नये गुरू धामों की खोज को चिह्नित किया था। गुरुसिखों के लिये गुरु साहिब जी के चरण–चिन्हों से चिन्हित स्थान पूजनीय, प्रेरणा योग्य और प्रेरणादायक स्रोत होते है, जिसे गुरुवाणी में इस तरह से अंकित किया गया है–

जिथे बाबा पैर धरै पूजा आसणु थापणि सोआ॥
सिध आसणि सभि जगत दे नानक आदि मते जे कोआ॥
(वारां– भाई गुरूदास जी)

गुरूओं के द्वारा चरण चिन्हित स्थान भविष्य में गुरु धामों में परिवर्तित हो गये, निश्चित ही इन गुरू धामों में आत्मिक खोजियों के लिये रूहानियत की खुराक, विद्यार्थियों के लिये विद्यालय, थके हुए मुसाफिरों के लिए आरामगाह, भूखे–प्यासे लोगों के लिये लंगर–पानी और बीमार एवं जरूरतमंदों के लिये उत्तम चिकित्सा सुविधा और अनेक प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है।

इस यात्राओं के दौरान भाई धन्ना सिंह जी ने श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के पहाड़ी दौरे की भी खोज की थी। भाई धन्ना सिंह जी ने इस मार्ग पर पैदल यात्रा करते हुए रिवालसर नामक स्थान पर पहुंचे थे एवं पुन: यात्रा करते हुए आप जी श्री आनंदपुर साहिब तक पहुंचे थे, यह वह ही मार्ग था जिस पर गुरु पातशाह जी ने स्वयं प्रस्थान और आगमन कर अपनी यात्राओं को संपूर्ण किया था।

उस समय पर आप जी राजस्थान की यात्रा नहीं कर पाए थे, आप जी को अचानक गोली लग गई थी, इस कारण से आप जी सिंध, कराची, क्वेटा और बलूचिस्तान की यात्रा भी नहीं कर पाए थे, जिसका उन्हें अपने अंतिम समय में बेहद अफसोस था। आप जी अपने जीवन में भारत से बाहर अफगानिस्तान, ईरान, बगदाद, मक्का शरीफ, सऊदी अरब, तिब्बत और चीन में जाकर भी गुरू धामों की खोज करना चाहते थे परंतु उस समय में आपको पासपोर्ट नहीं मिल सका था। आप जी ने पासपोर्ट बनाने हेतु अपनी पुश्तैनी जमीन को बेचने की भी पेशकश की थी। भाई धन्ना सिंह जी के साथ एक बड़ा हादसा हो गया था जिसकी जानकारी 5 मार्च सन् 1935 ईस्वी. में अंग्रेजी अखबार 'हिंदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित समाचार से मिलती है। जब उनके सहयोगी हीरा सिंह जी राइफल को संभाल रहे थे तो अचानक दुर्घटनावश गोली चल गई थी, जो इस महान सायकल यात्री और लेखक के लिए जानलेवा साबित हुई थी।

भाई धन्ना सिंह जी चहल ने कुल 8 डायरीयों को अपनी यात्रा के संबंध में लिखा है, जिसके कुल 3259 पृष्ठ है, अफसोस जो डायरी वह अपनी अंतिम यात्रा के समय लिख रहे थे वह विलुप्त हो गई, जिसके कारण उनके द्वारा 1 नवंबर सन् 1934 ई. से लेकर 2 मार्च सन् 1935 ईस्वी. तक की ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त नहीं हो सकी। इन 8 डायरियों में लिखा हुआ इतिहास वास्तव में कोई जीवन गाथा नहीं है, संस्मरण भी नहीं है, वार्ता नहीं, किस्सागोई भी नहीं, यह स्मृतियों का पुन: स्फुरण भी नहीं, कल्पना भी नहीं, वास्तव में यह एक सिख इतिहास प्रेमी और पंथ दर्दी के मनोवेगों के घनीभूत दबाव से उत्पन्न उद्गार हैं। जगह–जगह फैले हुए कुछ रूहानियत के एहसास है, कुछ आहटें हैं, जो किसी आख्यान–विख्यान से कमतर नहीं है। इन डायरियों में अंकित छोटी–बड़ी टिप्पणियों के जरिये सिख इतिहास की सभ्यताओं के विस्तृत फ़लक सरोकारों के अनंत क्षितिज और सामाजिक चिंतन के विभिन्न आयामों का प्रकटीकरण है।

भाई धन्ना सिंह जी से प्राप्त डायरियों को लगभग 75 सालों तक उनके पारिवारिक मित्र भाई गुरबख्श सिंह जी के परिवार में पूरी जिम्मेदारी के साथ संभाल कर रखा था। पंजाबी भाषा विभाग के पूर्व संचालक और 'गुरु पंथ ख़ालसा' के निष्काम सेवादार सरदार चेतन सिंह जी ने बड़ी मेहनत से खोजकर पंजाबी 'सथ लांबड़ा' संस्था के सहयोग से 75 वर्षों के पश्चात इस यात्रा के वृतांत को 'गुर तिरथ साइकिल यात्रा' के शीर्षक से एक ग्रंथ रूपी पुस्तक को गुरुमुखी भाषा में प्रकाशित किया गया। इस ग्रंथ रूपी पुस्तक का संपादन स्वयं सरदार चेतन सिंह जी ने किया है। भाई धन्ना सिंह जी ने हिमालय पर्वत के जैसे इस ऊंचाई वाले महान कार्य को अपनी दृढ़ता और निश्चय से केवल 30 वर्ष की आयु में 5 सालों तक अत्यंत कठिनाइयों और जोखिमों को उठाकर इस यात्रा को करते हुए इस इतिहास को रचित कर 'गुरु पंथ ख़ालसा' को अपनी बहुमूल्य सेवाएं अर्पित की है, आप जी के द्वारा की गई महान और निष्काम सेवाओं को सादर नमन!

साभार- उपरोक्त लेख का मुख्य स्त्रोत गुरूमुखी भाषा में रचित की गई ग्रंथ रूपी पुस्तक 'गुर तिरथ साईकल यात्रा' (संपादक– सरदार चेतन सिंह जी) है। इस लेख को लिखने के लिये इतिहासकार सरदार भगवान सिंह जी 'खोजी' (टीम खोज–विचार के मार्ग दर्शक) ने विशेष प्रोत्साहित किया है।

भाई धन्ना सिंघ जी

सायकल यात्री और लेखक

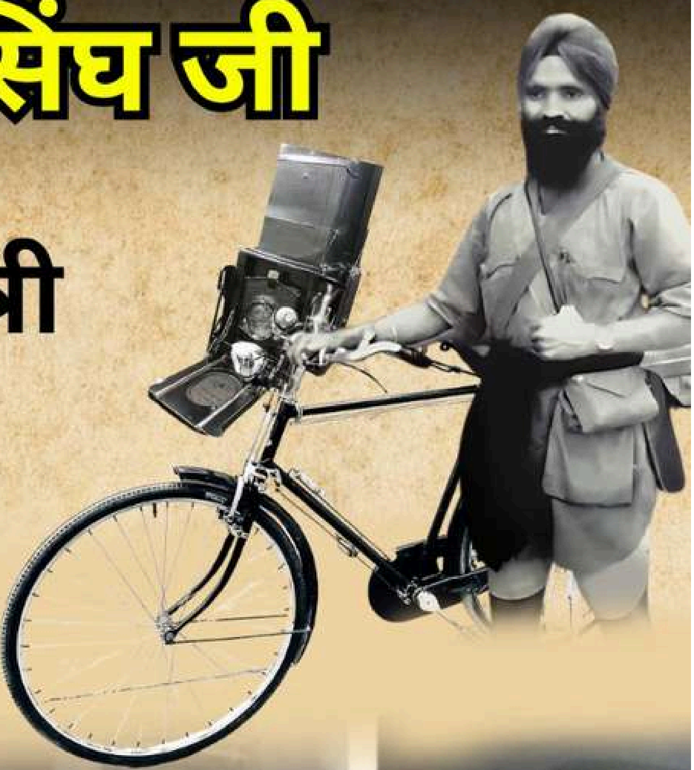

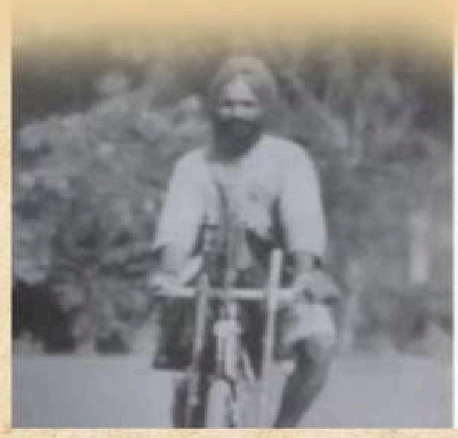

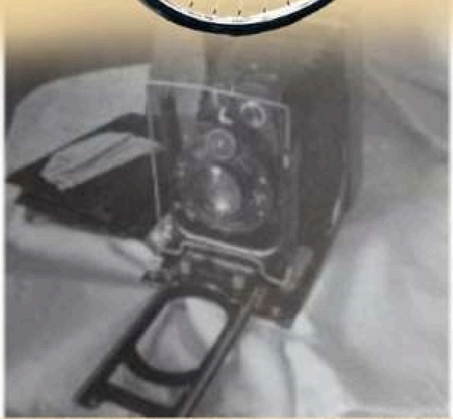

चित्र क्रमांक 1: सायकल स्वार भाई धन्ना सिंघ जी चहल ।
चित्र क्रमांक 2: भाई धन्ना सिंघ जी का कैमरा।
चित्र क्रमांक 3: भाई धन्ना सिंघ जी की हस्तलिखित डायरीयां।

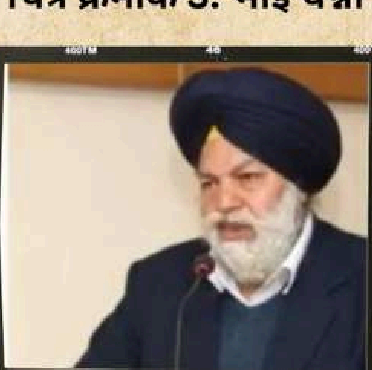

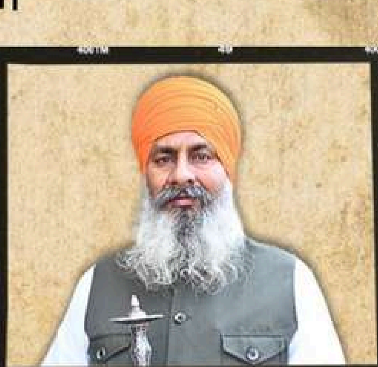

चित्र क्रमांक 4: ग्रंथ रुपी पुस्तक गुर तिरथ साईकल यात्रा के संपादक सरदार चेतन सिंघ ज
चित्र क्रमांक 5: लेखक सरदार रणजीत सिंघ जी अरोरा 'अर्श पुस्तक के साथ।
चित्र क्रमांक 6: इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी खोजी।

भक्ति और शक्ति का पर्व: होला महल्ला

भारतवर्ष में त्योहारों, पर्वों एवं उत्सवों का ऋतुओं के साथ संयोजन, जनमानस की नैसर्गिक अभिव्यक्ति एवं धार्मिक व आध्यात्मिक परंपराओं से एक सूत्र में जुड़ा रहता है। इस देश के मुख्य त्योहारों में होली और दीपावली के पर्व का विशेष महत्व है, जिसे प्रत्येक भारतीय अत्यंत हर्षोल्लास और उमंग से मनाते हैं। निश्चित ही होली हमारी लोक संस्कृति और जीवन से जुड़ा पर्व है। यह पर्व हर्षोल्लास के साथ वातावरण में सतरंगी आभा प्रदान कर, हास्य, व्यंग, उमंग एवं भक्ति के भाव से हमें सराबोर कर देता है। दशम पिता श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने इस पर्व में भक्ति के साथ शक्ति को जोड़कर एक अद्भुत मिसाल कायम की है। 'गुरु पंथ ख़ालसा' के अनुयायी इस पर्व को होली के दूसरे दिवस 'होला महल्ला' के रूप में सम्पूर्ण श्रद्धा और भक्ति भाव से मनाते हैं।

'होला महल्ला' के इस पर्व को 'गुरु पंथ ख़ालसा' के अनुयायी सुबा पंजाब में स्थित श्री आनंदपुर साहिब जी मैं और सुबा महाराष्ट्र के अबचल नगर श्री हजूर साहिब जी नांदेड में अत्यंत हर्षोल्हास, उमंग, भक्ति भाव और वीर रस में सराबोर होकर, शस्त्रों का संचालन, प्रदर्शन (गतका विद्या) एवं घुड़सवारी के जोहर दिखाते हुए विभिन्न रंगों से संपूर्ण वातावरण को रंगीन कर मनाते हैं। इस विशेष दिवस पर 'गुरु पंथ ख़ालसा' के अनुयायी देश-विदेश से इन दोनों प्रमुख स्थानों पर एकत्र होकर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की छत्र-छाया में आयोजित समागम में उत्साह से भाग लेते हैं। इन समागमों में वीर रस से ओतप्रोत कथा, कीर्तन, ढाढ़ी जत्थे अपनी वारों और कविताओं का पठन उपस्थित श्रृद्धालुओं के सम्मुख पेश कर, उपस्थित श्रृद्धालुओं में विशेष जोश, उत्साह और चेतना का सर्जन करते है। इन समागमों में निहंग सिखों के द्वारा गतका विद्या (सिखों का मार्शल आर्ट) के साथ-साथ घुड़सवारी के जौहर और साहसिक खेलों का प्रकटीकरण श्रद्धालुओं का मन मोह लेता है। इन समागमों में सभी श्रद्धालु एक दूसरे को अबीर, गुलाल, गुलाब जल और अन्य रंगों से सराबोर करते हैं। इस दिवस पर युद्धाभ्यास के विभिन्न जोहर और 'हल्ला बोल' का प्रदर्शन सिख श्रद्धालुओं में भक्ति के साथ-साथ शक्ति को भी विशेष रूप से संचारित करता है। जब सारे सिख श्रद्धालु एक साथ ही हल्ला बोल में 'बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' का जयघोष करते हैं तो नजारा देखते ही बनता है।

इस पर्व के माध्यम से श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने देश में एक बहुत बड़े परिवर्तन का आगाज किया था। उस समय में शत्रु सेना के हाथ में जो तलवार थी वह अहम् का प्रतीक थी परंतु श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने सिखों को तलवार नहीं अपितु कृपाण प्रदान करी, जो किसी का हक नहीं मारती थी अपितु हक दिलाती थी। निश्चित ही श्रद्धा, सिमरन और बंदगी से मिली हुई कृपा है कृपाण! गुरु की बख्शीश का प्रतीक है कृपाण! इस रंगों के पर्व के माध्यम से गुरु पातशाह जी ने संदेश दिया कि, मैं जो रंग तुम्हें दे रहा हूं वह अध्यात्म का रंग है, इस रंग को कभी भी उतारने की आवश्यकता नहीं है। जिसे गुरुवाणी में इस तरह अंकित किया गया है-

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ॥
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि॥
धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि॥
(अंग क्रमांक 722)

हे मेरे प्यारे! यदि यह काया ललारी की भट्टी बन जाए और उसमें नाम रूपी मजीठ डाला जाए। यदि रंगने वाला मेरा मालिक स्वयं मेरे तन रूपी चोले को रंगे तो उसे ऐसा सुन्दर रंग चढ़ जाता है, जो पहले कभी देखा नही होता। हे प्यारे! जिन जीव स्त्रियों के तन रूपी चोले नाम रूपी रंग में रंगे हुए हैं, उनका पति, प्रभु, सर्वदा उनके साथ रहता है। नानक की प्रार्थना है कि मुझे उनकी चरण धूलि मिल जाए॥

हे मेरे प्यारे! यदि यह काया ललारी की भट्ठी बन जाए और उसमें नाम रूपी मजीठ डाला जाए। यदि रंगने वाला मेरा मालिक स्वयं मेरे तन रूपी चोले को रंगे तो उसे ऐसा सुन्दर रंग चढ़ जाता है, जो पहले कभी देखा नही होता। हे प्यारे! जिन जीव स्त्रियों के तन रूपी चोले नाम रूपी रंग में रंगे हुए हैं, उनका पति, प्रभु, सर्वदा उनके साथ रहता है। नानक की प्रार्थना है कि मुझे उनकी चरण धूलि मिल जाए॥

दशमेश पिता श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने इस उत्सव का प्रारंभ सन् 1700 ईस्वी. में श्री आनंदपुर साहिब जी में किया था। उस समय में उनके एक अत्यंत प्यारे, अनन्य भक्त विद्वान सिख भाई नंद लाल जी थे, जिसे समय की हुकूमत ने जबरदस्ती, अन्याय कर, मुस्लिम धर्म स्वीकार करवाना चाहा था। आप जी दशमेश पिता श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी की शरण में श्री आनंदपुर साहिब जी में आ गए थे। आप जी ने इस गुरु दरबार के सानिध्य में रहकर संपूर्ण भक्ति भाव से अपनी रचनाएँ फारसी भाषा में रचित की थी, होला महल्ला पर्व पर आप जी की निम्नलिखित रचनाएँ प्रसिद्ध है, जिसे इस प्रकार से अंकित किया गया है–

बाहोश बाश कि हंगामा-ए-नौबहार आमद
बहार आमदो करार आमदो यार आमद

दुनिया में जो शोरगुल है वह संयम रहित है परंतु मेरे आध्यात्मिक गुरु की आहट (आमद) में जो शोर मुझे सुनने को मिला है निश्चित ही वह सच्चा अध्यात्म है। इस अध्यात्म में परमात्मा की स्तुति का संगीत है, यदि इस आनंद को प्राप्त करना चाहते हो तो महल्ला (आक्रमण) कर अपने अवगुणों और अज्ञानता को समाप्त करें। आप जी ने अपनी एक अन्य फारसी भाषा की रचना में अत्यंत भक्ति-भाव से अंकित किया है–

गुले होली ब बागे दर बू करद, लबे चूं गुंचा रा फरखंदर खू करद॥
गुलाबो अंबरो मुशकों अबीरो, चूं बांगा बारशे अज सू बसू करद॥
जहे पिचकारीए पुर जुफरानी, कि हरिबेरंग रा खुसरंगे बू करद॥
गुलाल अफशानी अज दसते मुबारक, ज़मीनों आसमां रा सुरखरु करद॥
दो आलम गशत रंगी अज तुफलैश, चु शाहम जामह रंगी दह गुलू करद॥

जब धरती पर गुलाल और रंगों की वर्षा होती है तो सभी कुछ रंगों से सराबोर होता है, 'होला महल्ला' के पर्व पर 'श्री आनंदपुर साहिब जी' की धरती फूलों की खुशबू की तरह महकती है। गुलाल, गुलाब और खुशबू की महक से आसमान रंगों से सुर्ख हो जाता है, गुरुसिखों के दोनो जहान उसकी रहमत से रंगीन हो जाते है, जिन्हे सतगुरु जी के दर्शन-दीदार हो जाते है, उनकी समस्त चिर-संचित अभिलाषायें पूर्ण होती है। इस पर्व पर गुरु के ख़ालसाओं के द्वारा मस्ती में आकर हर्षोल्हास से एक गीत गुनगुनाया जाता है, जिसके बोल इस तरह है–

लोकां दी बोलीआं ते खालसे दा होला ऐ॥
लोकां दी होलीआं ते खालसे दा बोला ऐ॥
लोकां दिया पगा ते खालसे दा दसतारा ऐ॥
लोकां दिया दाढ़ीयां ते खालसे दा दाहडा़ ऐ॥
लोकां दिया दाल ते खालसे दा दाला ऐ॥
लोकां दिया सबजी ते खालसे दा भाजा ऐ॥
लोकां दे पतीले ते खालसे दा देगा ऐ॥
लोकां दिया तलवारां ते खालसे दा तेगा ऐ।
लोकां लेई दिन ते खालसे दा प्रकाशा ऐ॥
लोकां लेई बेनती ते खालसे दा अरदासा ऐ॥
लोकां लेई पागल ते खालसे दा मसतानां ऐ॥
लोकां लेई नोहणा ते खालसे दा इसनाना ऐ॥

अमृतसर जिले दे विच पिंड तसरिका ऐ॥
चारे पासे खालसे दा चलदा पिआ सिका ऐ॥
लोकां दिया बोलीआं ते खालसे दा होला ऐ॥
लोकां दिया होलीआं ते खालसे दा होला ऐ॥

गुरु पातशाह जी ने इस पर्व के माध्यम से अपने ख़ालसाओं को युद्धाभ्यास के लिए प्रेरित कर, नकली (मसनूई) लड़ाई करवा कर, जोश भरकर, अपने सिखों को हमेशा तैयार-बर-तैयार रहने का संदेश इस पर्व के माध्यम से दिया कारण प्रत्येक सिख को शस्त्र विद्या के अभ्यास का नितनेमी होना आवश्यक है। साथ ही गुरु पातशाह जी ने इस पर्व के माध्यम से जात-पात के भेद को समाप्त कर सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिसे गुरुवाणी में इस तरह अंकित किया गया है—

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस॥
(अंग क्रमांक 15)

अर्थात निम्न में जो निम्न जाति के लोग हैं और फिर उनमें से भी जो अति निम्न प्रभु भक्त हैं, सतगुरु जी फरमाते हैं कि है निरंकार! उनके साथ मेरा मिलाप करो, माया वह ज्ञान अभिमान के कारण वह बड़े हैं उनसे मेरी क्या समानता?

इस पर्व के माध्यम से गुरु पातशाह जी ने समाज के चारों वर्णों को जुल्म के खिलाफ लड़ने के लिए शस्त्र धारी बनाकर, अपनी सामाजिक समरसता के सिद्धांत को बल दिया था। गुरु पातशाह जी ने इन शस्त्रधारी सिखों को शास्त्र का आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर खालसे को विराट और विशाल रूप प्रदान किया इसलिए तो इस फ़ौज को 'गुरु की लाडली फ़ौज' कहकर भी सम्मानित किया गया है। निश्चित ही गुरु जी ने एक नील वस्त्रधारी मार्शल कौम को देश और धर्म की रक्षा के लिए जन्म दिया था जो कि जुल्मों के खिलाफ लगातार संघर्ष करती रही है।
इस पर्व के माध्यम से गुरु पातशाह जी ने अपने सिखों को देश और धर्म की रक्षा के लिए शहीद होने का जज्बा प्रदान किया, जिसे गुरुवाणी में इस तरह अंकित किया गया है—

श्लोक महला 5॥
पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि॥
(अंग क्रमांक 1102)

सर्वप्रथम मृत्यु को कबूल करो, जीने की आशा छोड़ दो, सबकी चरणरज बन जाओ, हे मानव! तो ही हमारे पास आओ॥

उपरोक्त उल्लेखित इस संपूर्ण विश्लेषण से स्पष्ट है कि 'होला महल्ला गुरु पंथ ख़ालसा' का एक विशेष पर्व है, जिसे हम इस तरह से भी विश्लेषित कर सकते हैं कि होला अर्थात आध्यात्मिक रंग में स्वयं को रंगने का एक संदेश और महल्ला अर्थात आक्रमण करना और यह आक्रमण हमें जुल्म, जालिम और अवगुणों पर करना है। हम इसे इस तरह से भी विश्लेषित कर सकते हैं कि अपने शौर्य को युद्ध अभ्यास के माध्यम से प्रकट कर, इस पर्व को हर्षोल्लास और उमंग से मनाना ही 'होला महल्ला' है। गुरु पातशाह जी ने इस सांस्कृतिक धरोहर की समझ को ही पर्व बना दिया जो कि निश्चित कमाल है, निश्चित ही डरपोकों के डर को शौर्य में बदलने का यह पर्व है 'होला महल्ला'!

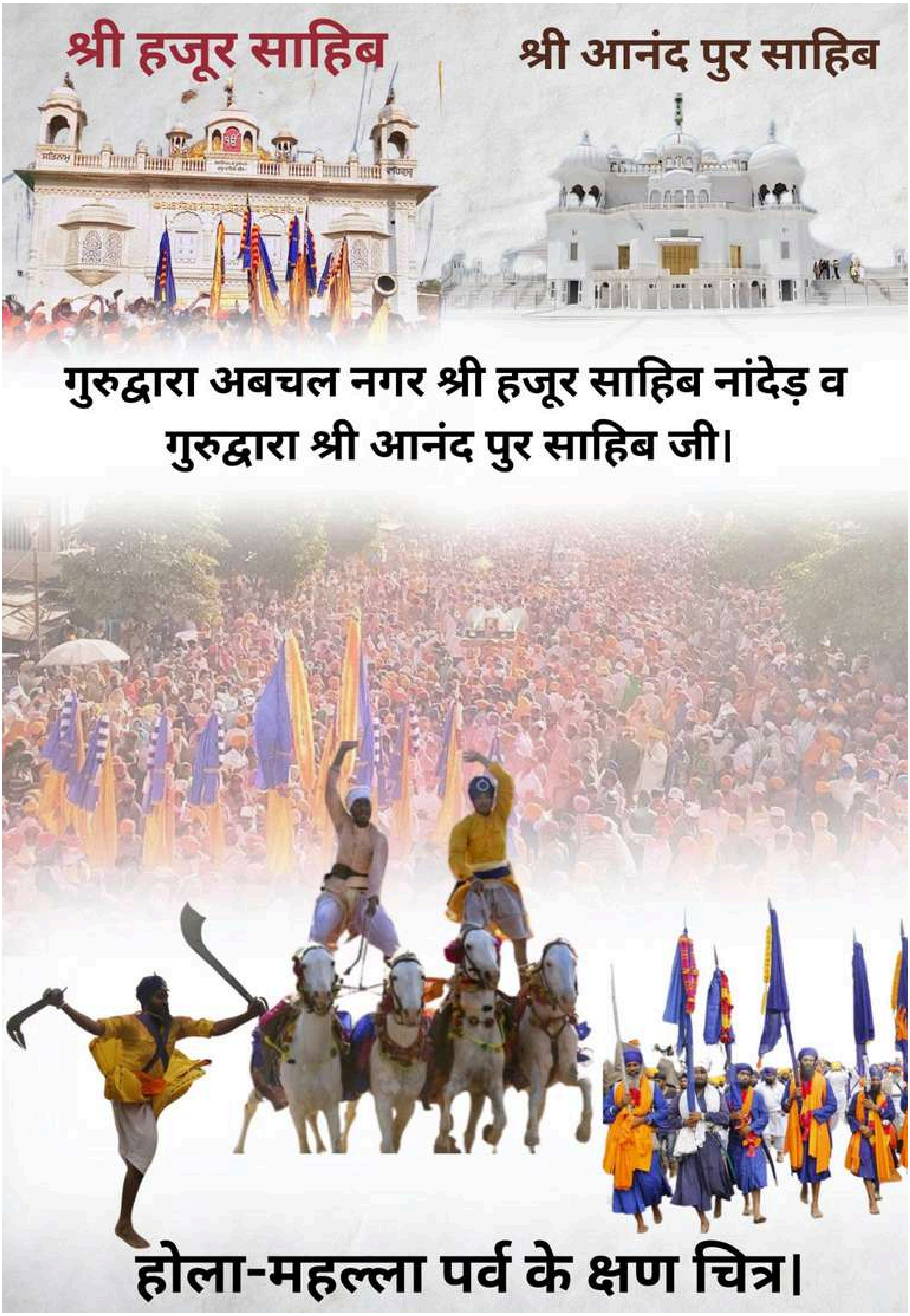
श्री हजूर साहिब
श्री आनंद पुर साहिब
गुरुद्वारा अबचल नगर श्री हजूर साहिब नांदेड़ व गुरुद्वारा श्री आनंद पुर साहिब जी।
होला-महल्ला पर्व के क्षण चित्र।

स्तुति (उसत्तत): श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी

दशमेश पिता ‘श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी’ की महान शख्सियत के संबंध में यदि दुनिया की समस्त नियामत और विशेषताओं के सभी गुण एकत्र किया जाए तो भी उनकी स्तुति करनी एक क़लमकार के लिए अत्यंत कठिन ही नहीं अपितु ना-मुमकिन है। किसी भी क़लमकार की कैफ़ियत ही नहीं कि है कि वह गुरु साहिब के बहुपक्षीय जीवन को अपनी क़लम के शब्दों में समाहित कर सकें। गुरु साहिब का जीवन गुणों का खजाना था, किसी एक व्यक्ति में एक साथ इतने गुणों का होना असंभव है। निश्चित ही आपका जीवन एक बिजली की चमक की तरह था। आसमान में चमकती हुई बिजली की आयु भले ही लंबी तो नहीं होती है परंतु जितनी भी होती है उसमें कणखर चमक और कर्कश आवाज होती है, जो सभी का ध्यान आकर्षित करती है। अपनी छोटी सी आयु में उन्होंने जो असंभव से महान कार्यों को अंजाम देकर कर दिखाया, वह किसी इंसान की तौफ़ीक के बाहर है। निश्चित ही गुरु साहिब साक्षात अकाल पुरख का अवतार थे। ‘श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी’ की बहुपक्षीय शख़्शीयत, सच्चाई के प्रकटीकरण एवं ज़िंदगी को सद्मार्ग पर चलने का दिशा संकेत देता है। गुरु साहिब का जीवन एक ऐसा प्रकाश स्तंभ है, जो सत्य के पथ से भटके लोगों एवं भावी पीढ़ियों के नव-जीवन निर्माण में अपनी यादगार भूमिका निभाता है। ऐसे महान गुरु साहिब की स्तुति करना अर्थात जीवन को शिखरों की ओर उन्मुख करना है। इस सार्थक संदर्भ में गुरु साहिब जी की बहुपक्षीय शख़्शीयत शानदार परंपराओं एवं कालजयी शहीदियों का कोश है।

गुरु साहिब की शख्सियत ने मानव जाति को सच्चाई, पवित्रता, प्रेम और न्याय का पाठ दृढ़ करवाया था, विनय, त्याग, दक्षता, शुचिता, स्थिरता आदि सभी वंदनीय गुणों की पराकाष्ठा उनके चरित्र में मिलती है, नेतृत्व और अनुयायित्व, विद्रोह और क्षमा, कठोरता और करुणा, शस्त्र और शास्त्र, कृपाण और काव्य आदि परस्पर विरोधी तत्वों के सम्मिश्रण से उस महान शख्सियत का निर्माण हुआ। उनके चुंबकीय व्यक्तित्व ने सभी को आकर्षित किया था उन्होंने शहंशाह को ललकारा था एवं शक्तिहीनों को बलशालीयों के सम्मुख खड़ा होने का बल दिया था। आप जी ने एक आम इंसान में अपने अधिकारों और सत्य हेतु लड़ने की प्रेरणा जागृत की थी, पाखंडी और दंभियों को फटकारा था, भ्रम जालों को झिंझोड़ा था एवं मनुष्य की बुद्धि से सांप्रदायिकता का काला चश्मा उतार कर उसे स्वतंत्रता की भावना से रोशन कर मानवता को विकास पथ पर अग्रसर किया था उन्होंने मनुष्य की महानता और मानवता के संदेश को संप्रेषित किया था। वह मनुष्य मात्र को 'एक पिता एकस के हम बारिक' समझते थे, तभी तो उन्होंने बड़े ही आत्मविश्वास से 'मानस की जात सभै एको पहचानबो' की घोषणा की थी।

करुणा, कलम और कृपाण के धनी, संत-सिपाही, जंग के माही, इंसानियत के रहबर, पॅथ बाग के माली, अमृत के दाते, रॅबी रंग राते, साहिब ‘श्री गुरु गोविंद सिंह जी’, शहीदों के पिता एवं शहीद के पुत्र ही नहीं अपितु शहीद पुत्रों के पिता भी थे। ऐसे गुरु जिन्होंने अपने चारों प्यारे पुत्रों को देश, धर्म और इंसानियत के लिए शहादत का जाम पीने की प्रेरणा दी थी। जब गुरु साहिबान के महल (सु-पत्नी) ने आपको साबो की तलवंडी (श्री दमदमा साहिब) में भरे दरबार में पूछा कि साहिबजादे कहां है? तो उस कलगीधर पातशाह ने ‘गुरु पंथ खालसा’ को अत्यंत सम्मान देते हुए बड़े ही फ़ख्र से फ़रमाया था—

इन पुत्रन के सीस पर वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ? जीवित कई हजार।।

दशमेश पिता ‘श्री गुरु गोविंद सिंह जी’ आप स्वयं एक उत्तम कवि और उच्च कोटि के साहित्यकार थे। आप जी ने उस समय के सभी विद्वानों एवं साहित्यकारों का अत्यंत मान-सम्मान किया था और उन्हें सूखे मेवे और अनेक कीमती वस्तुएँ तथा भरपूर माया भेंट स्वरुप प्रदान करते थे। इतिहास गवाह है कि दशमेश पिता ने सन् 1686 ई. में पांवटा साहिब जी में एक साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया था।

इस सम्मेलन में आप जी ने विद्या के महत्व को स्पष्ट कर, विद्या के महत्व को दर्शाने के लिये अपने व्याख्यान में उपदेशित किया था कि दुनिया में आए सभी प्राणी मात्र को विद्या प्राप्त करनी ही चाहिए। आप जी ने उस समय में गुरुवाणी और भाषा के पांच वरिष्ठ विद्वानों का चुनाव किया था उनके नाम क्रमशः

1. भाई राम सिंह जी।

2. भाई कर्म सिंह जी।

3. भाई वीर सिंह जी।

4.भाई गंडा सिंह जी।

5. भाई शोभा सिंह जी थे।

इन 5 सिखों को गुरु पातशाह जी ने हिंदू धर्म ग्रंथों के अध्ययन के लिये काशी भेजा था। इन विद्वान सिखों ने काशी (वाराणसी) में जाकर संस्कृत भाषा की विद्या ग्रहण करने की आज्ञा देकर आशीर्वाद दिया कि, जो विद्या जनसाधारण 12 वर्षों में प्राप्त करते हैं उसी विद्या को आप 12 महीनों प्राप्त करेंगे। श्री गुरु पंथ प्रकाश नामक ग्रंथ में अंकित है-

पढ़ो अबै तुम कांशी जाए। निगमागम विदया मन लाए॥
और पढत जो बरसन मैं है। तुमै महीनयों मैं सो अैहै॥
जोतिक बिदया सभि जग मै है। गुरुघर मैं अबि आए सु रैहै॥
(श्री गुरु पंथ प्रकाश, पृष्ठ 1394)

'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' की आज्ञा का पालन करते हुए यह पाँचो सिख दूसरे दिन अमृत वेले (ब्रह्म मुहूर्त) में तैयार होकर, भगवा वस्त्र धारण कर, खड़ाऊँ पहन कर और कमंडल एवं चिमटा हाथ में लेकर गुरु पातशाह जी की हजूरी में हाजिर हो गए थे। गुरु पातशाह जी ने प्रसन्नतापूर्वक इन पाँचों संतो को अनेक आशीर्वाद प्रदान कर, इन्हें काशी प्रस्थान करने की आज्ञा दी थी। इन पाँचों संतों ने गुरु पातशाह जी के चरणों में नमस्कार कर, परिक्रमा की एवं काशी के लिए रवाना हो गए थे।

इन पाँचों संतो ने काशी पहुँचकर जतने ब्राह्मण के वटवृक्ष के नीचे अपने आसन लगा लिए एवं उस स्थान पर घास-फूस की झोपड़ियाँ बना कर निवास करने लगे, यह 'जतन मठ' ही बाद में 'चेतन मठ' के नाम से निर्मल संप्रदाय का प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान बना। उस समय में काशी में पंडित सदानंद जी प्रसिद्ध उच्चकोटि के संस्कृत के विद्वान थे। विद्या अनुरागी इन पाँचों संतो को महान विद्या के दाता पंडित सदानंद जी के पास ही उनके पढ़ने का प्रबंध हो गया था। पंडित जी स्वयं एक उत्तम और योग्य शिक्षक थे। उन्होंने अपने इन योग्य विद्यार्थियों को मेहनत और लगन से पढ़ाना प्रारंभ कर दिया था। पंडित जी ने अपने इन योग्य विद्यार्थियों को अथाह स्नेह एवं अत्यंत प्रेम दिया। जिस कारण से इन विद्यार्थियों का पंडित जी से उत्तम तालमेल बैठ गया था और इन पाँचों विद्यार्थियों ने भी अपनी शिक्षा, मेहनत और लगन से प्रारंभ कर दी थी। इस कारण से पूरे काशी में इन पंजाबी विद्यार्थियों की ख्याति फैल चुकी थी। कारण जिस विद्या को सीखने में वर्षों का अभ्यास करना पड़ता है, उसी विद्या को यह पंजाबी विद्यार्थी किसी चमत्कार के तहत थोड़े ही समय में सीख जाते थे। दशमेश पिता जी के आशीर्वाद के कारण ही इन उत्साही विद्यार्थियों ने व्याकरण, वेद, वेदांत, न्याय वेदांत और सभी संस्कृत भाषाओं में रचित ग्रंथों को कंठस्थ कर, शीघ्र ही उनके ज्ञाता बन गए थे। लगभग 13 वर्षों तक संस्कृत भाषा का कठिन अभ्यास कर, पूर्ण रूप से पंडित मनोनीत होकर, अपने विद्या दाता पंडित सदानंद जी से आज्ञा प्राप्त कर, इन पाँचों संतो ने पुनः पंजाब की ओर प्रस्थान किया था।

जब ये पाँचों संत पुन: 'श्री आनंदपुर साहिब जी' में पहुंचे तो गुरुपातशाह जी का दरबार सुशोभित था, उपस्थित अपार संगत उपदेशों को श्रवण कर रही थी। शूरवीर योद्धा, शस्त्रधारी सिख अपने-अपने आसनों पर आसीन थे। ऐसे भरे हुए दरबार में ये पाँचों भगवाधारी संत हाथों में ग्रंथ, कमंडल एवं पैरों में खड़ाऊँ पहने हुए कलगीधर दशमेश पिता के समक्ष उपस्थित होकर, दातुन के पुष्प को भेंट कर, गुरु पातशाह जी के चरणों में दंडवत प्रणाम किया, तत्पश्चात् इन संतों ने सावधान होकर दशमेश पिता 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज की भूरी-भूरी प्रशंसा में निम्नलिखित श्लोकों (अनुष्टुप) का शुद्ध संस्कृत भाषा में उच्चारण किया था।

शुद्धाय बुद्धाय निरंजनाय संसारमायापरिवर्जिताय संचिन्तनाय स्वहृदि स्थिताय गोबिन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।1।

भावार्थ- महाराज श्री शुद्ध और प्रबुद्ध मन से, द्रवित हृदय के हैं। जिन्हें संपूर्ण संसार की माया भी नहीं छू सकती है, सद्बुद्धि सहित जिनके हृदय में सज्जनों के हित का चिंतन सदा निवास करता है! ऐसे 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज को सदा नमस्कार है।

आधाय चान्तयाय च मध्यगाय आद्यन्तहीनाय निरंकुशाय ज्योतिस्स्वरूपाय शुभप्रदाय गोविन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।2।

भावार्थ- महाराज श्री आदि, मध्य और अंत से परे हैं, जो निरंकुश (स्वतंत्र) हैं, ज्योति (प्रकाश) के स्वरूप में स्थित हैं, और जो सबके लिए शुभता प्रदान करने वाले हैं, ऐसे 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज को सदा नमस्कार है।

आदित्यवंशाय पुरंदराय संसारसाराय स्वयं प्रभाय। रत्यादिहीनाय जनप्रियाय गोविन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।3।

भावार्थ— आप जी सेवा भाव में सूर्य के वंशज के समान है। सूर्य के प्रकाश से जगत् को आलोकित और प्रज्वलित करते हैं! ऐसे 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज को सदा नमस्कार।

वेदान्तवेद्याय महेश्वराय सोऽहं स्वरूपाय जनेश्वराय। शेषादिगीताय कृताखिलाय गोविन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।4।

भावार्थ-सभी ज्ञान ग्रंथों, वेदों, पुराणों को जानने वाले, जिनमें स्वयं महेश्वर के अलौकिक स्वरूप की सांसे, एक जन नायक के रूप में विद्यमान है। अखिल स्वरूप शेषनाग नाथने वाले, गीता रचने वाले, प्रभु का तेज जिनके स्वरूप में है! ऐसे 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज को नमस्कार है।

चिच्छक्तिरूपाय मनोरमाय संसारवारांनिधितारणाय। आनन्दकन्दाय शुचिप्रभाय गोविन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।5।

भावार्थ- जो स्वयं आद्य शक्ति के मनोरम स्वरूप हैं। संसार में सभी के कष्टों को हरिने और तारने वाले हैं, आनंद स्निग्धता और पवित्रता के ऐसे स्वरूप! 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज को नमस्कार है।

कैवल्यभुताय परात्पराय भोग्याय भोगाय भवाभवाय। प्रह्लादसिंहाय सुखंकराय गोविन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।6।

भावार्थ- ऐसे पृथ्वी वीर, जिन्होंने आद्य देवी, आद्य भौतिक, आध्यात्मिक भोगों के समक्ष, भाव भक्ति के अखंड भक्त, प्रहलाद जैसी भक्ति, स्वयं भक्ति के, स्वयं सिंह पुरोधा! ऐसे 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज को नमस्कार है।

ताराय पाराय परायणाय कालाय पालाय जगद्धिताय। शान्ताय कान्ताय नमोंतकाय गोविन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।7।

भावार्थ- जिन्होंने दुखों का कारण किया, बाधाओं को पार किया, भक्ति भाव का पारायण किया, समय शास्त्र का पालन किया, जो स्वयं सिद्ध, शांति और क्रांति मान स्वरूप हैं! ऐसे 'श्री गुरु गोबिंद सिंह जी' महाराज को सदा नमस्कार है।

सांख्यादितत्वप्रविवेचकाय वैकुंठनाथायरमारमय। श्रौताय सत्याय सुदैशिकाय गोविन्दसिंहाय नमोस्त्वजाय।8।

भावार्थ:- सांख्य आदि समस्त दर्शन शास्त्रों, तत्व अधिक शास्त्रों के ज्ञाता, श्री हरि नारायण, श्री बैकुंठ अधिपति के ध्यान में रमे रहने वाले, सत्य सनातन के प्रणेता! ऐसे 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' महाराज को नमस्कार है।

संस्कृत के श्लोकों के द्वारा भरे दरबार में, गुरु साहिब के समक्ष की गई इन स्तुतियों से गुरु पातशाह जी अत्यंत प्रसन्न हुए थे, उन्होंने जब इन पाँचों संतों की संस्कृत भाषा में उच्च कोटि की प्रवीणता देखी तो अत्यंत हार्दिक प्रसन्न हुए। जिस कारण से इन पांच संतो को काशी में भेजा गया था, वह अत्यंत सफल रहा था। इसलिए यह पाँचों संत गुरु पातशाह जी की कृपा दृष्टि के सदैव पात्र रहे थे।

इसी तरह विभिन्न साधु-संप्रदाय लेखक और दार्शनिकों ने गुरु साहिब की स्तुति को अपने-अपने ढंग से कलमबद्ध किया है। गुरु साहिब की स्तुति में प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान और लेखक मोहम्मद लतीफ ने लिखा है कि, गुरु साहिब धार्मिक गद्दी पर विराजमान रूहानी रहबर है, तख़्त पर विराजमान शहंशाह के शहंशाह और मैदान-ए-जंग में महान योद्धा एवं संगत में बैठे हुए फकीर है। चाहे उनके शाही ठाठ-बाट है पर दिलो दिमाग से आप पर फकीरी छाई हुई है। इसलिए उन्हें बादशाह दरवेश कहकर भी संबोधित किया जाता है। गुरु साहिब ने इंसानियत के प्रत्येक पक्ष को इस तरह से सजाया-संवारा और विकसित किया है कि, देखने-सुनने और परखने वाले आपके बहुपक्षीय जीवन से हैरान रह जाते हैं।

गुरु साहिब का ऊंचा-लंबा कद, नूरानी चेहरा, चक्षुओं में ऐसी चमक की लोगों के चक्षु चुंधिया जाए। कमाल के घुड़सवार, प्रकृति के प्रेमी, जब आप सजे हुए दरबार में प्रवेश करते तो कीमती लिबास और अस्त्र-शस्त्रों से लैस होकर बादशाह की तरह क़लगी सजा कर प्रवेश करते थे। गुरु साहिब जब शिकार पर जाते थे तो सुंदर तेज-तर्रार घोड़े की सवारी करते हुए बाएं हाथ पर बाज और उसके पैरों बंधी हुई डोरी, साथ ही घुड़सवारी करते हुए सवार सिख! क्या नजारा होता होगा?. . . . . इसकी केवल कल्पना की जा सकती है।

निश्चित ही गुरु साहिब एक महान जरनैल, उच्च कोटि के विद्वान, अज़ीम साहित्यकार, गुरूवाणी और संगीत के रसिया, सरबंस दानी, अमृत के दाते, भक्ति और शक्ति के मुजसमे, मर्दे-ए-मैदान, शस्त्र और शास्त्र के धनी, संत-सिपाही, साहिब-ए-कमाल, मर्द अगमंड़ा, दुष्ट-दमन, साहस-सिदक-सब्र-दृढ़ता और चढ़दी कला के मालिक, हिंदुस्तान की समेकित संस्कृति के रखवाले, आदर्श गृहस्थ आश्रम में जीवन व्यतीत करने वाले उत्तम सुपुत्र, प्यारे पिता, और नेक पति ऐसी अनेक विशेषताओं के आभूषण गुरु साहिब के संबंध में लिखते-लिखते अल्फ़ाज़ समाप्त हो गये, क़लम की स्याही समाप्त हो गई, क़लम टूट सकती है, शब्दों के संप्रेषण समाप्त हो गये परंतु 'श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी' की स्तुति कभी भी समाप्त नहीं हो सकती है। गुरु साहिब के संबंध में यही कह सकते हैं कि--

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा।
तु साहिब गुणी निधाना।।

निश्चित ही आप जी निडर, बहादुर एवं 'ना डरना और ना डराना' वाली सोच रखते थे, फिर चाहे वह पहाड़ी राजे हो मुग़ल हुक्मरान, जुल्म और जबर से आपने कभी समझौता नहीं किया था। ऐसे महान गुरु के लिए गुरूवाणी का फ़रमान है-

गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु।।
(अंग क्रमांक 52)

अर्थात गुरु की महिमा अपरंपार है, कोई भी कथन करने वाला उनकी महिमा को कथन नहीं कर सकता है।

प्रसिद्ध फ़ारसी कवि हकीम अल्लाह यार ख़ान जोगी ने आप जी के संबंध में लिखा है-

इन्साफ करे जो जमाना तो यकीं है।
कहि दे की गोविंद का सानी नहीं है।
करतार की सौगंध वा नानक की क़सम है।
जितनी भी हो गोविंद की तारीफ वह कम है।
हरिचंद मेरे हाथ मे पुर जोर क़लम है।
इक आँख से किआ बुलबुला कुल बहिर को देखें।
सागर के मझधार को या लहिर को देखे।

सूफी संत किबरिया ख़ान ने अपने अंदाज में लिखा है-

किआ दशमेश पिता तेरी बात कहूं जो तुने पर उपकार कीए।
इक खालस खालसा पंथ सजा, जातों के भेद निकाल दिए।
उस मुलक-ए-वतन की ख़िदमत में कहीं बाप दीआ कहीं लाल दीए।

साधु वासवानी मिशन के प्रमुख महान सिंधी संत ब्रह्म ज्ञानी साधु टी.एल. वासवानी जी ने गुरु साहिब जी की स्तुति में लिखा है कि आपकी शख्सियत इंद्रधनुष के सतरंगी रंगों से अभिभूत थी उन्होंने लिखा है कि गुरु साहिब में जितने पूर्व में पीर-पैगंबर हुए उन सभी के गुण और धर्म मौजूद थे। निश्चित ही आप जी में 'श्री गुरु नानक देव साहिब जी' की मीठी ज्योत, ईसा मसीह की मासूमियत, बुद्ध का आत्म ज्ञान, हजरत मोहम्मद की तरह विद्वता का कोश, भगवान कृष्ण की चतुराई, प्रभु राम के समान मर्यादा-पुरुषोत्तम वाला जीवन, ऐसे अनेक विशेषणों से आप जी ने गुरु साहिब को आदरपूर्वक सम्मानित कर, उनकी स्तुति की है।

विदेशी लेखकों ने गुरु साहिब की स्तुति में लिखा है-

'शहीद' होना आसान है, लेकिन एक विचार की ख़ातिर निंदा सहते जीना कहीं ज़्यादा मुश्किल है'। -जार्ज लुकाच

'A thousand years Scarce Serve to form a State, An hour may lay it in the dust.' -Lord Byron

'The Past is never dead, it is not even past. -Gavin Stevense

यदि गुरु साहिब की विशेषताओं को समझना हो तो हमें गंज नामा नामक ग्रंथ का अध्ययन करना होगा। इस ग्रंथ में गुरु साहिब के दरबार में अपनी सेवाएं देने वाले 52 कवियों में से एक भाई नंद लाल जी की रचनाएं आलोकित और अद्भुत है। इन रचनाओं में भाई नंद लाल जी अत्यंत खूबसूरती से गुरु साहिब की शख्सियत को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने वाली राह का मार्गदर्शक बताया। गुरु साहिब की शख्सियत झूठ और कुमत की काली रात के अंधेरे को दूर कर मानवी जीवन को इंसानियत की रोशनी प्रदान करती है। इस ग्रंथ में उनकी 200 से अधिक (सिफ़त) गुणों को गुरु साहिब की स्तुति में कलमबद्ध करते हुए अंत में भाई नंद लाल जी ने लिखा है कि बस्स. . . . . मैं यह कह सकता हूं कि तेरे चरणों में अपना शीश रखकर मेरे प्राण निकल जाए। भाई नंद लाल जी गुरु साहिब की एक-एक (सिफ़त) गुण का इतना दीवाना था कि उसे गुरु साहिब की बहुपक्षीय शख्सियत के अतिरिक्त न कुछ दिखता था और न ही कुछ ध्यान आता था।

उस समय में भाई नंद लाल जी औरंगजेब के पुत्र मुअज़म बहादुर शाह को फ़ारसी भाषा की शिक्षा देते थे। आप जी फ़ारसी भाषा के अत्यंत विद्वान थे। जब आप जी एक बार औरंगजेब के दरबार में फारसी भाषा के एक पत्र का अनुवाद करने गए तो औरंगजेब भाई नंद लाल जी की विद्वता को देखकर दंग रह गया और उसने भरे दरबार में अपने कानों को हाथ लगाकर दरबारियों से उनका नाम जानना चाहा तो उसे ज्ञात हुआ कि भाई नंद लाल जी जात से हिंदू है तो उन्होंने उसी वक्त हुक्म दिया था कि या तो भाई नंद लाल जी को दिन-ए-इस्लाम कबूल करवाया जाए या उनका कत्ल कर दिया जाए! भाई नंद लाल जी अपना धर्म और जान बचाने हेतु 'श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी' की शरण में आए थे। गुरु जी भी भाई नंद लाल जी की विद्वता से अत्यंत प्रभावित थे, भाई नंद लाल जी अपनी तमाम उम्र गुरु साहिब के सानिध्य में रहकर साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से अपनी सेवाएं समर्पित करते रहे थे।

ऐतिहासिक स्रोतों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि एक बार गुरु साहिब के साथ भाई नंद लाल जी और कुछ सेवादार सैर करने गए तो गुरु साहिब ने एक पत्थर उठाकर नदी में फेंक दिया एवं अपने सिखों से पूछा कि यह पत्थर क्यों डूब गया तो उन्होंने जवाब दिया था कि पत्थर भारी होने के कारण डूब गया। जब एक और पत्थर उठाकर गुरु साहिब जी ने नदी में फेंका और भाई नंद लाल जी से पूछा कि आप बताएं यह पत्थर क्यों डूब गया?

उस समय भाई नंद लाल जी ने जवाब दिया था कि गुरु जी न मैंने पत्थर देखा न पानी! मुझे तो इतना पता है कि जो आपके हाथ से छूट गया, वह डूब गया। इतनी अधिक श्रद्धा और प्यार था भाई नंद लाल जी का गुरु साहिब से! एक बार गुरु साहिब ने भाई नंद लाल जी से वचन कि आप मुझसे कुछ मांग ले तो उन्होंने जवाब दिया था कि मुझे तो आपके नूरानी चेहरे में पूरी कायनात के दर्शन होते हैं और आपके केसों में मुझे लोक-परलोक दिखाई देते हैं और इससे अधिक मुझे क्या चाहिए? इस वार्तालाप के पश्चात भी जब गुरु साहिब ने फिर भी कुछ तो मांगने के लिए कहा तो आपने अपनी निष्काम सेवाओं को प्रकट करते हुए वचन किये कि है सच्चे पातशाह! बस्स. . . मेरी तो एक ही मांग है, जब मेरी मृत्यु हो तो मेरे तन की राख तुम्हारे चरणों के अतिरिक्त किसी और को न लगे। जब समय ने करवट बदली और गुरु साहिब जी को 'श्री आनंदपुर साहिब जी' का क़िला खाली करना पड़ा तो उस समय भाई नंद लाल जी ने वचन कि गुरु पातशाह मेरा भी दिल करता है कि मैं भी खंडे-बाटे की पाहुल छककर (अमृत पान की विधि) सिंह सज जाओ और कुछ नहीं तो मैं आपके खेमे का पहरेदार बन कर ही अपनी सेवाएं दूंगा। उस समय गुरु साहिब ने वचन किए थे कि तेग चलाने वालों को तेग जरूर चलानी चाहिए और अपने हाथ से एक क़लम आप जी भाई नंद लाल जी को देकर वचन कि, आपकी यह कलम एक सूरमा की तलवार की भांति चलनी चाहिए, एक सिपाही की खड़ग भुजा से सशक्त क़लम की ताकत अधिक होती है। वह कलम ही है जो नेकी, धर्म, सुमिरन, त्याग और शुभ आचरण सिखाती है और यह आपके लिए है। आप पुनः मुल्तान अपने (जद्दी) पैतृक गांव जाएं और धर्म की कीर्ति एवं यशगान करें। भाई नंद लाल जी की क़लम से गुरु साहिब के प्रति हुई निकली हुई सिफ़त इस प्रकार से है-

नासरो मनसूर गुरु गोबिंद सिंह. . .
ऐजदी मंजूर गुरु गोबिंद सिंह. . .
हक हक मंजूर गुरु गोबिंद सिंह. . .
जूमला फैज़ीलूर गुरु गोबिंद सिंह. . .
नूर हरिचशम गुरु गोबिंद सिंह. . .
हक हक आगाह गुरु गोबिंद सिंह. . .
शाहे शहिनशाह गुरु गोबिंद सिंह. . .
खालसे बे दीना गुरु गोबिंद सिंह. . .
हक हक आईना गुरु गोबिंद सिंह. . .
हक हक अंदेश गुरु गोबिंद सिंह. . .
बादशाह दरवेश गुरु गोबिंद सिंह. . .

इन सभी खूबियों से जग-जाहिर होता है कि 'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' हिंदुस्तान की रुहानी शख्सियत थे। निश्चित ही उनका ऊंचा और पवित्र जीवन इंसानियत और प्यार के जज्बे से ओतप्रोत था जो किसी पैगंबर से कम नहीं था। जहां आपके जीवन में एक संत-सिपाही की प्रतिमा झलकती है, वहां आप जी समाज-सुधारक, कौमी-एकता की पहचान और महान जरनैल भी थे। आप जी निडर और लोभ-लालच से परे थे। आप जी का जीवन सेवा, त्याग, सुमिरन से ओतप्रोत था। आप जी ने कभी भी जर-जोरू और ज़मीन के लिए ज़ंग नहीं लड़ी थी और ना ही किसी पर जुल्म कर दुख पहुंचाने के लिए जंग लड़ी थी निश्चित ही आपने जो जंग लड़ी थी वह ग़रीब और मज़लूमों की रक्षा के लिए और जोर-ज़बर के आतंक को समाप्त करने के लिए थी। आप जी ने न किसी की दौलत को लूटा था और न ही किसी की ज़मीन पर कब्जा किया था, न ही किसी बहू-बेटी की इज्जत को बे-आबरू किया था। आपने जो ज़ंग लड़ी वह केवल और केवल सिद्धांतों के लिए थी। सच और हक की रक्षा करने के लिए आपने उस समय ही कृपाण उठाई थी जब सारे समझौते और शांति के रास्ते बंद हो गए थे।

'श्री गुरु गोविंद सिंह जी' के व्यक्तित्व का आयाम हिमालय के शिखर पर विराजमान था। गुरु साहिब की राष्ट्र के प्रति अगाध निष्ठा और देशभक्ति थी। यदि इस देश की पश्चिमी सीमाएं अनेक आक्रमणों को झेलने के पश्चात भी बिना किसी नुकसान के शान से खड़ी है तो उसमें निश्चित ही सिख गुरूओं का मार्गदर्शन और गुरु पंथ खालसा की शहीदियों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस देश की मिट्टी, इस देश की भूमि, धरती, आकाश, पानी और यहां की वायु, निश्चित ही गुरु पंथ खालसा का कर्जदार है, देनदार है. . . कारण राष्ट्रहित में अपना सर्वंश वार देना, गुरु साहिब ने स्वयं अपने परिवार की आहुति देकर हमें सिखाया है। स्वयं के रक्त का एक-एक कतरा बहा देना, एक-एक श्वास को वतन के लिए सुपुर्द कर देना ही राष्ट्र निष्ठा होती है। इन चमकौर के शहीदों ने देश को सिखाया की राष्ट्र धर्म क्या है? राष्ट्र की रक्षा करते हुए अपने अंतिम श्वास की भी आहुति दे देना ही देशभक्ति है और राष्ट्र धर्म है। निश्चित ही श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने हमें एक सूत्र में बांधकर सिखाया है कि धर्म तोड़ना नहीं अपितु जोड़ना सिखाता है, धर्म गिरना नहीं अपितु उठना सिखाता है, धर्म बांटना नहीं अपितु धर्म देश हित में मिटना सिखाता है।

इस आलेख के अंत में गुरु साहिब की स्तुति में हकीम अल्लाह यार ख़ान जोगी की इस नज़म से उन्हें नवाज़ा जा सकता है-

शान का रुतबा तेरा अल्लाह ओह गनी है।
मसकीन ग़रीबों में दलेरों में जरीं है।
अंगद है अमरदास अरजन भी तू ही है।
नानक से लेकर तेग बहादुर तू सभी है।
तीरथ नहीं कोई रुहे रोशन के बराबर।
दर्शन तेरे दस गुरूओं के दर्शन के बराबर।
है गुरु गोबिंद सिंह बहुत उपमा थोर कही तेरी उपमा बड़ी है।।

धन्य-धन्य 'श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी' को टीम 'खोज-विचार' का सादर नमन!

(विशेष आभार— लेख में प्रकाशित संस्कृत के श्लोकों का भावार्थ मेरे सहपाठी पंडित श्री विजय रावल जी 'ज्योतिषाचार्य' (उज्जैन निवासी) ने किया है)।

लाहौर: इतिहास के झरोखों से. . . .

हमारे पंजाबी सभ्याचार में जीवन जीने वाले पुराने बुजुर्गों को बहुत याद आता है लाहौर सिंह! सचमुच पंजाबी सभ्याचार की राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शक्ति के शिखर का केंद्र था शहर लाहौर! पंजाबी सभ्याचार के सुनहरे दौर का गवाह लाहौर! यह शहर दुनिया के किसी भी राज के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। जहां 'शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह' के 40 वर्षों के शासनकाल में एक बार भी अकाल नहीं पड़ा। इस शासनकाल में कभी भी दंगा-फ़साद नहीं हुआ। किसी को भी मौत की सजा नहीं सुनाई गई। निश्चित ही शेर-ए-पंजाब ने उस समय एक कुशल प्रशासक के रूप में बिखरे हुए सिख इतिहास को एकत्रित कर उस स्वर्णिम अक्षरों में शब्दांकित किया था। लाहौर जो दिल्ली और काबुल के तख़्तों के मध्य हिमालय पर्वत की भांति अडोल खड़ा रहा। वह लाहौर जिसने कभी झुकना या पीछे हटना कबूल नहीं किया। पंजाबी सभ्याचार में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि 'जिस लाहौर नहीं तकिया, ओह जमिआ ही नहीं' अर्थात जिसने लाहौर नहीं देखा वह इस धरती पर पैदा ही नहीं हुआ। इस दुनिया के और भी बड़े हिस्से में बड़े-बड़े शहर है जैसे न्यूयॉर्क, सिडनी, मेलबर्न, टोरंटो, मास्को, दिल्ली, कोलकाता, बेंगलुरु इत्यादि परंतु किसी भी शहर के संबंध में ऐसी लोकोक्ति कहीं भी सुनी नहीं गई है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी ने लाहौर शहर की स्तुति में फ़रमान किया है–

लाहौर सहरु अंम्रित सरु सिफती दा घरु।।
(अंग क्रमांक 1412)

अर्थात 'श्री गुरु अमरदास साहिब जी' कथन करते है कि (श्री गुरु रामदास जी के आगमन पर) अब लाहौर शहर नामामृत का सरोवर तथा प्रभु-स्तुति का घर बन गया है।

जब सन 1947 ईस्वी. में देश का विभाजन हुआ जिसे हम आजादी कहते हैं, उस समय 10 लाख से ज्यादा लोग मज़हबी हिंसा में लाशों के ढेर में तब्दील हो गए थे। करोड़ों लोग उजड़ गए, घर-बार उखाड़ दिए गए। देखते ही देखते आंखों के सामने सभी कुछ पराया हो गया। मीठे पानी के कुएं खून से जहरिले हो गए। सदियों से दीवार से दीवार लगाकर बसे हुए पड़ोसी आंखें तरेर कर खून के प्यासे हो गए। अनगिनीत मां-बहनों के सामूहिक बलात्कार किए गए। जवान बेटियों को नग्न कर उनके जुलूस निकाले गए। सदियों से पाई-पाई जोड़ कर बनाई हुई जमीन-जायदादों के मालिकों को मुल्क के हुक्मरानों ने देखते ही देखते सब कुछ छोड़कर देश निकाला दे दिया। सत्ता के लालच में पंजाब उजड़ गया, लूटा-खसौटा गया। आंखों के सामने सब कुछ हो गया, जो बापू कहता था कि देश का विभाजन मेरी लाश पर होगा, वह बापू घूम रहा था। पंजाब की लातों को दोनों हाथों से पकड़कर बेदर्दी से बीच में से चीर दिया गया। किसी भी हुक्मरान को न दया आई, न तरस आया। दोनों ही विभाजित देशों के हुक्मरानों की आंखों में बेबसी के, दर्द के आंसू नहीं छलके। सभी सत्ताधारी गांधी, नेहरु और पटेल के चेहरे पर रौनक थी परंतु हंसते-बसते पंजाब के चेहरे की रौनक क़लम की चंद लकीरों ने मातम में बदल दी थी। अफसोस. . . . हमारे पंजाबी सभ्याचार का लाहौर हमसे अलग कर दिया गया था। जो लाहौर हमारे दुख, सुख, गर्म, सर्द हवाओं और हमारे जन्म एवं मरने पर, हमारी खुशियों और हमारे एहसास-आहटों का प्रतीक था, उस लाहौर को हमारे पंजाबी सभ्याचार से अलग कर दिया गया था। हमारा लाहौर हमसे बेगाना हो गया। उस समय लाहौर दहाड़े मार-मार कर खूब रोया था। हुक्मरानों को बहुत निवेदन किए परंतु हुक्मरान उजड़े पंजाब को अनदेखा कर आजादी के जश्न में मस्त थे। अकेला लाहौर ही क्यों? हमारे पंजाबी सभ्याचार का ननकाना साहिब, हमारा हसन अब्दाल, हमारा पंजा साहिब, हमारी रावलपिंडी, हमारा झंग सियाल, हमारा लायलपुर, हमारा सियालकोट क्यों हमसे अलग कर दिए? क्यों केवल और केवल पंजाब एवं बंगाल का विभाजन आवश्यक था? सीमाएं तो गुजरात और राजस्थान की भी पाकिस्तान से जुड़ी हुई थी उन्हें क्यों नहीं विभाजित किया गया? या पंजाब और बंगाल के क्रांतिकारियों द्वारा देश की आजादी में सक्रिय भाग लेने के कारण इन दोनों राज्यों से बदला लेने के लिए इन राज्यों को क़लम की लकीर से चीर दिया गया। मेरी लेखनी को माफ करना. . . मैं इसे विभाजन नहीं, बीच में से चीरना ही लिखूंगा, क्या गुजरात और राजस्थान में हिंदू और मुसलमान दोनों कौम निवास नहीं करती थी? फिर विभाजन का सिद्धांत इन राज्यों पर क्यों लागू नहीं हुआ? विभाजन का यह सिद्धांत हमारे पंजाबी सभ्याचार के हिस्से में ही क्यों आया? बाबा नानक के अंतिम समय में खेती करने वाला स्थान करतारपुर हमारे देश की सीमा से केवल 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है,

कई वर्षों की मांग के पश्चात वर्तमान समय में इस स्थान के चंद घंटों के दर्शन के लिए, दुनिया भर की कागजी कार्यवाही कर प्रत्येक श्रद्धालु को 20 अमेरिकी डॉलर अदा कर, जाने का आदेश प्राप्त होता है। यह कैसी विडंबना है? या कैसी विवशता है? और तो और यदि आपके पास पासपोर्ट हो तो ही इस गुरू धाम के आप दर्शन कर सकते हैं और यह सभी असहनीय कष्ट इसलिये उठाने पड़ते हैं कि हमारे पंजाबी सभ्याचार के पास हमारा लाहौर नहीं रहा! हमारा तख़्त हमसे बेदर्दी से अलग कर दिया।

वर्तमान समय में भी पंजाबी सभ्याचार में जीने वाले हमारे लोग जो कठिनाइयों का सामना करते हैं उनका कोई ना कोई संबंध लाहौर से अवश्य होता है, फिर चाहे वह पंजाबी भाषा हो, चाहे संस्कृति हो या चाहे हमारी पहचान! पंजाबी सभ्याचार पर खानपान, राजनीति, धर्म, साहित्य, गीत-संगीत प्रत्येक क्षेत्र में लाहौरी सभ्यता का असर पड़ा है। लाहौर की टकसाली बोली जिसे पंजाबी बोली के नाम से संबोधित किया जाता है, भाषा ऐसी जैसे शक्कर के पतासे और मिश्री से भी मीठी! यह सभी हमारी विरासतों को इस विभाजन ने हमारे पंजाबी सभ्याचार से अलग कर दिया। यदि मनोवैज्ञानिक तौर से हम विश्लेषण करें तो विभाजन के पश्चात हमारे पंजाबी सभ्याचार के विचार वर्तमान समय में भी लाहौर शहर के संबंध में कोई बदले नहीं है। लाहौर के तख़्त के दम पर हमारे पंजाबी सभ्याचार ने काबुल और कंधार के तख़्तों को नेस्तनाबूद कर दिया था। दरिया-ए-खेबर में वर्तमान समय में भी शूरवीर योद्धा सरदार हरि सिंह नलवा के घोड़ों के टापू की अनुगूंज गूंज रही है। यदि लाहौर शहर के इतिहास को समझना है तो हमें पिछले 500 वर्षों के इतिहास को अवलोकित करना होगा, गुरूओं के काल से लेकर बाबा बंदा सिंह बहादुर, सिख मिसलें, शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह का स्वर्णिम, गौरवशाली राज और इसके पश्चात सन 1947 ईस्वी तक भी हमारे पंजाबी सभ्याचार की आत्मीयता लाहौरी तहज़ीब से रही है। श्री गुरु नानक देव जी के समय इस शहर में आक्रांता बाबर के द्वारा हमला कर शहर निवासियों का जीना दुर्भर कर उन्हें असहनीय कष्ट दिये था, पुरे शहर में आग लगा दी गई थी। उस समय के वर्तांत को गुरु साहिब जी ने गुरूवाणी में अंकित किया है–

लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु||

(अंग क्रमांक 1412)

अर्थात लाहौर शहर में जुल्म का जहर फैला हुआ है, सवा पहर मासूम लोगों पर मौत का कहर मचा हुआ है। 'श्री गुरु नानक देव साहिब जी' की पांचवी ज्योत श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी की शहादत का स्थान शहीदी गंज नाम से आज भी स्थित है, इसी स्थान पर गुरु के सिखों को दी गई असहनीय यातनाएं वर्तमान समय में भी ह्रदय को संवेदनशील कर रोमांचित कर देती हैं। माताओं के गले में बच्चों के टुकड़े-टुकड़े कर उनके हार डाले गए थे, रोज सवा मन का आटा पीसना और एक-एक रोटी खाकर भी उस अकाल पुरख वाहिगुरु का शुकराना अदा करना और गुरु के भाणे (रजा) में जीवन व्यतीत करती हुई हमारी माताएं! असहनीय कष्टों को झेलकर भी पुन: एक बार 'गुरु पंथ खालसा' के अनुयायियों ने अपनी अक्क्षुण शूरवीरता का परिचय देकर, सिख धर्म की परंपरा और उसके उत्कर्ष एवं पराकाष्ठा के निशान के परचम को लहरा कर, अपनी अद्वितीय सिख विरासत को विशेष आयाम इसी शहर में प्रदान किए थे। सिखों की इस कत्लगाह को हमने अपने बाहुबल से सिखों के शक्ति केंद्र में तब्दील कर दिया था। शहर लाहौर से हमारे पंजाबी सभ्याचार की प्रगाढ़ आत्मीयता कभी भी समाप्त नहीं हो सकती है, कभी भी लाहौर को भुलाया नहीं जा सकता है।

यदि हम वर्तमान समय में नई पीढ़ी की बात करें और कहे कि यह पीढ़ी निर्मोही हो गई हैं, यह अपने पंजाबी सभ्याचार को भूल गई, यह पीढ़ी हमारी विरासत को भूल गई है। ऐसा क्यों हुआ? इस अपसंस्कृति के जन्म लेने का क्या कारण है? यदि हम इसकी तह तक जाएं तो निश्चित ही हमारे पंजाबी सभ्याचार से लाहौर को अलग कर जो कशाघात किया गया उसी का ही यह नतीजा है। जब हमने अपनी राजनीतिक शक्ति और भाषा को ही खो दिया कारण हमारी लाहौरी तहज़ीब हमसे अलग कर दी गई। लाहौर ने वर्तमान समय में भी अपना सांस्कृतिक और सादा जीवन एवं श्रृंगार और शर्म नहीं छोड़ी है। लाहौर में वर्तमान समय में भी अपने हाथों से कीरत करना नहीं छोड़ा। लाहौर आज भी कामचोर और आवारा नहीं हुआ है। यह सभी तथ्य लाहौर के ऊंचे किरदार की निशानी है। अफसोस. . . . अच्छा भाई लाहौर सिंह हमेशा चढ़दी कला में रहना, सुखी बसना और रहती दुनिया तक तेरी शान ऐसी ही बनी रहें। सदा इसी तरह दुआ सलाम होती रहें।

LAHOURE

लाहौर शहर के कुछ विहंगम दृश्य !

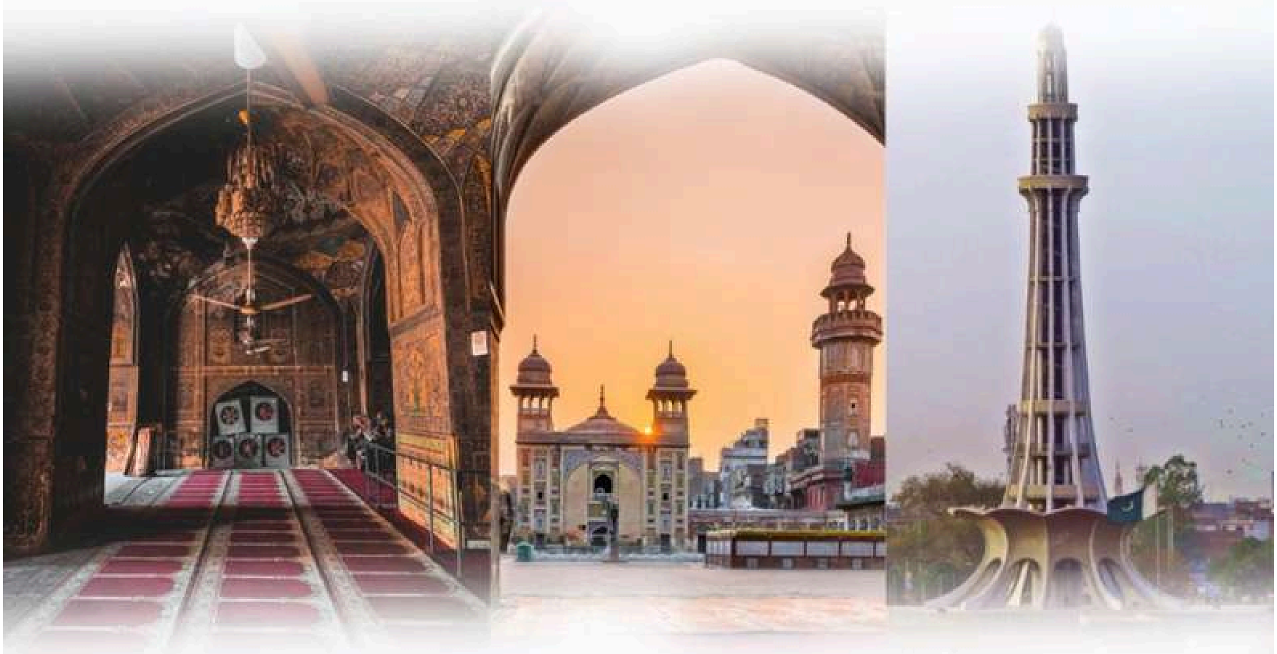

जिस लाहौर नही तकिआ, ओह जमिआ ही नहीं।

दिल्ली फतेह दिवस (कौमी दिवस)–

जु लरै दीन के हेत सुरा सोई. . . सुरा सोई॥
गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ॥
खेतु जु माँडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ॥
सुरा सो पहचानिऐ जु लरै दिन के हेत॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू ना छाडै खेतु॥
जु लरै दीन के हेत सुरा सो। . . . सुरा सोई ॥
(अंग क्रमांक 1105)

अर्थात वह ही शूरवीर योद्धा है जो दीन दुखियों के हित के लिए युद्ध करता है। जब मन–मस्तिष्क में युद्ध के नगाड़े बजते हैं तो धर्म योद्धा निर्धारित कर वार करता हैं और मैदान–ए–जंग में युद्ध के लिए 'संत–सिपाही' हमेशा तैयार–बर–तैयार रहता हैं। वह 'संत–सिपाही' शूरवीर हैं, जो धर्म युद्ध के लिए जूझने को तैयार रहते हैं। शरीर का पुर्जा–पुर्जा कट जाए परंतु आखरी सांस तक मैदान–ए–जंग में युद्ध करता रहता है।
भक्त कबीर जी द्वारा रचित यह वाणी 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में 'मारू राग' के अंतर्गत अंकित है। वीर रस से ओत–प्रोत इस 'सबद' (पद्य) जैसी रचनाओं से प्रेरित होकर जो 'संत–सिपाही', धर्म योद्धा, 'देश–धर्म' की रक्षा के लिए और जुल्मों के खिलाफ लड़ते हुए अपना सर्वस्व न्यौछावर करता है, वह शहीद ही फतेह पाता है।

दिल्ली फतेह दिवस कौमी दिवस गुरु पंथ ख़ालसा के सिखों के लिए निश्चित ही उनकी ज़मीर की जीत और स्वाभिमान का दिवस है। मुगलों से 900 वर्षों की गुलामी और लगातार जुल्मों को सहने के पश्चात, इस स्वर्णिम दिवस का उदय हुआ था। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार सन् 1783 इस्वी. को 'गुरु पंथ ख़ालसा' के योद्धा बाबा बघेल सिंह जी, बाबा जस्सा सिंह जी आहलूवालिया एवं बाबा जस्सा सिंह जी रामगढ़िया के नेतृत्व में सिख सैनिकों ने अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन कर, उस समय में मुगल शासक शहंशाह शाह आलम–द्वितीय को बुरी तरह परास्त कर ऐतिहासिक विजय हासिल की थी एवं 'गुरु पंथ ख़ालसा' के केसरी निशान साहिब को लाल किले पर आन, बान और शान से लहराकर, दिल्ली के मस्तक पटल पर अपनी जीत की शानदार मोहर लगाई थी।

यदि सिखों के स्वर्णिम–गौरवमयी इतिहास का पुनर्निरीक्षण करें तो स्पष्ट होता है कि 'गुरु पंथ ख़ालसा' के सेवादारों ने एक–दो बार नहीं अपितु दिल्ली को 17 बार अपनी शुरवीरता और बाहुबल के दम पर फतेह किया था। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है कि दिल्ली को कौन सी तिथियों पर 17 बार सिखों ने अपने आधिपत्य में लिया था?

1. 9 जनवरी सन 1765 ईस्वी.
2. अप्रैल सन 1766 ईस्व.
3. जनवरी सन 1770 ईस्व.
4.18 जनवरी सन 1774 ईस्वी.
5. अक्टूबर सन 1774 ईस्व.
6. जुलाई सन 1775 ईस्वी.
7. अक्टूबर सन 1776 ईस्वी.
8. मार्च सन 1778 ईस्वी.
9. सितंबर सन 1778 ईस्वी.

10. 23 सितंबर सन 1778 ईस्वी
11. 26 सितंबर सन 1778 ईस्वी
12. अक्टूबर सन 1778 ईस्वी
13. जनवरी सन 1779 ईस्वी
14. 16 अप्रैल सन 1781 ईस्वी
15. 11 मार्च सन 1783 ईस्वी
16. 23 जुलाई सन 1787 ईस्वी
17. 23 अगस्त सन 1787 ईस्वी

इस तरह से कुल 17 बार वर्तमान समय की लुटियन की दिल्ली को सिखों ने अपने आधिपत्य में लिया था। उत्तर भारत खासकर सूबा पंजाब में अत्यंत प्रसिद्ध कहावत है कि 'सिखों के लिए दिल्ली फतेह करना, बिल्ली मारने के जैसा मामूली कार्य है।

उस समय में शहंशाह शाह आलम–द्वितीय ने रायसीना हिल्स के रकाबगंज क्षेत्र की 1200 एकड़ जमीन सिख जरनैल सरदार बघेल सिंह जी को नजराने के तौर पर भेंट स्वरूप प्रदान की थी। इस संबंध में बादशाह शाह आलम–द्वितीय के द्वारा हस्तलिखित हुकुमनामा जो कि फारसी भाषा में लिखा गया था, वह हुकुमनामा वर्तमान समय में भी दिल्ली के राष्ट्रीय अजायबघर में सुरक्षित है।

उस समय में दिल्ली के राज कर्ताओं के द्वारा सोने के 7 स्वर्ण पत्र पर जो हुक्मनामे लिख कर दिए गए थे उसका अपना एक अलग इतिहास है। जब बाबा बघेल सिंह जी ने 11 मार्च सन् 1783 ई. पर दिल्ली पर आक्रमण किया और आप जी ने लाहौर दरवाजा, मीना बाजार और नकारखाना से होते हुए दीवान–ए–आम को अपने आधिपत्य में ले लिया था| दीवान-ए-आम वह स्थान है जहां शाहजहां, औरंगजेब और बहादुर शाह जैसे बादशाह अपने दरबार सजाते थे। आप जी ने दीवान-ए-आम पर आधिपत्य प्राप्त कर, लाल किले के मुख्य प्रवेश द्वार पर 'गुरु पंथ खालसा' के निशान साहिब (केसरी ध्वज) को शान से लहरा दिया था| जिस किले के सामने वाले मैदान पर 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' को शहीद किया था और जिस किले में बाबा बंदा सिंह बहादुर और उनके 740 सिखों को क्रूरता पूर्वक, अत्याचार करके शहीद किया था, वह लाल किला सिखों के कदमों के तले था और इस लाल किले पर निवास करने वाला मुगल शहंशाह शाह आलम–द्वितीय बंदा सिंह बहादुर के वारिसों से अपनी जान की भीख मांगने को मजबूर था। उस समय में दीवान-ए-आम में दरबार लगाकर बाबा जस्सा सिंह आहलूवालिया को सुल्तान–ए–कौम के रूप में मनोनीत कर, दिल्ली के तख़्त पर उनकी ताजपोशी की गई थी और दिल्ली पर सिखों का 9 महीने तक लगातार राज रहा था।

जीवन परिचय बाबा बघेल सिंह जी (सन 1730 ई.– सन् 1802 ई.)

बाबा बघेल सिंह जी एक उत्तम सिख योद्धा और जरनैल थे, आप जी का जन्म ग्राम झबाल कला, जिला तरनतारन सूबा पंजाब में एक गुरु सिख परिवार में हुआ था। आप जी के पुरखों ने सन् 1530 ई. के दशक में ही श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी के सानिध्य में आकर सिख धर्म को ग्रहण कर लिया था। आप जी को सन् 1766 ई. में करोड़ सिंहया मिसल का सरदार मनोनीत किया गया था। उस समय 18 वीं सदी के महान सेना नायकों में बाबा बघेल सिंह जी का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाता था कारण उन्होंने आक्रमणकारी अहमद शाह अब्दाली के रक्त–रंजित आक्रमणों का मुंहतोड़ जवाब देकर अपना दबदबा 18 वीं सदी के प्रारंभ तक स्थापित करके रखा था| बाबा बघेल सिंह जी दलेर, नितिवान, महान योद्धा और कूटनीतिक दूरदृष्टि वाले पंथक सेनानी थे। आप जी के नेतृत्व में करोड़ सिंघया मिसल (दल) का गौरवमयी इतिहास था। इस इतिहास के बिना 18 वीं सदी के मध्य भारत का इतिहास अधूरा है| श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फरमान है–

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै॥
सिरु दीजै काणि न कीजै॥
(अंग क्रमांक 1412)

उपरोक्त अधोरेखित वाणी के अनुसार इस मिसल (दल) ने पूरे उत्तर भारत में अपनी शुरवीरता की पताका को लहरा दिया था| प्रसिद्ध इतिहासकार प्रिंसिपल सतबीर सिंह जी द्वारा रचित इतिहास अनुसार मध्य भारत का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं था, जहां पर बाबा बघेल सिंह जी का दबदबा कायम न हुआ हो, जालंधर से लेकर पीलीभीत तक और अंबाला से लेकर अलीगढ़ तक के क्षेत्र में इनका सिक्का चलता था और इनके नाम की तूती बोलती थी। बाबा बघेल सिंह जी के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि दिल्ली फतेह और दिल्ली में स्थित गुरु धामों और गुरु स्थलों के निर्माण (उसारी) में आप जी के द्वारा दिया गया अनमोल योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जब दिल्ली पर बाबा बघेल सिंह जी अपनी 40 हजार की सिख सेना को लेकर 8 मार्च सन् 1783 ई. को यमुना नदी के बरारी घाट को पारकर, दिल्ली पर आक्रमण किया गया तो शहंशाह शाह आलम–द्वितीय सिखों से मुकाबला करने की बजाय, डर के मारे लाल किले में जाकर छुप गया था। उस समय शहंशाह शाह आलम–द्वितीय ने एक तेज संदेशवाहक की मदद से सरधना की शासक बेगम समरू को अपनी मदद के लिए निवेदन किया था। बेगम समरू का जहां मुगल दरबार से अच्छे संबंध थे वहीं उसने बाबा बघेल सिंह जी को अपना भाई माना हुआ था। इस आक्रमण के दौरान सिख सैनिकों ने बड़ी तेजी से दिल्ली पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था उसी समय ऐन मौके पर बाबा जस्सा सिंह जी रामगढ़िया भी अपने सिख सैनिकों के साथ मदद हेतु दिल्ली पहुंच गए थे।

12 मार्च सन् 1783 ई. को बेगम समरू ने दिल्ली पहुंचकर बाबा बघेल सिंह से तीस हजारी नामक स्थान पर पहुंच कर शांति वार्तालाप को प्रारंभ किया था कारण शंहशाह शाह आलम–द्वितीय, सिखों के समक्ष शरणागत हो गये थे, 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का फरमान है–

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा॥
(अंग क्रमांक 544)

बेगम समरू ने बाबा बघेल सिंह जी के समक्ष अपनी दो मांगों को प्रमुख रूप से रखा था, पहली मांग शंहशाह शाह आलम–द्वितीय एवं उसके परिवार की जान को बक्श दिया जाए एवं लाल किले पर शंहशाह शाह आलम–द्वितीय का अधिकार बरकरार रहें। इस वार्तालाप के लिए सिखों की और से बाबा बघेल सिंह जी को सर्वाधिकार प्राप्त थे। आप जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी का सम्मान करते हुये, अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और कूटनीतिज्ञ दूरदृष्टि के मद्देनजर सिख कौम को अधिकतम लाभ पहुंचाने हेतु अपनी कुछ शर्तों को रखा और मांग की कि वह सभी स्थान जो गुरूओं के चरण–चिन्हों से चिन्हींत हैं एवं वह सभी स्थान जो सिख इतिहास से संबंधित है, उनको तुरंत सिखों के अधिन कर दिया जाए। साथ ही वह सभी स्थान जो 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' की शहादत से जुड़े हुए हैं (गुरुद्वारा शीश गंज साहिब जी, जहां श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को मुगल बादशाह औरंगजेब के आदेश पर शहीद किया गया था और गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब जहां गुरु जी की शीश विहीन देह का अंतिम संस्कार किया गया था), इसके अतिरिक्त गुरुद्वारा बांग्ला साहिब जी, गुरुद्वारा बाला प्रीतम साहिब जी, गुरुद्वारा मजनूं का टीला साहिब जी, गुरूद्वारा मोती बाग साहिब जी, गुरुद्वारा माता सुंदरी जी और गुरुद्वारा बाबा बंदा सिंह बहादुर जी की स्थापना का सेहरा भी बाबा बघेल सिंह के कूटनीतिज्ञ दृष्टिकोण को जाता है। इन सभी स्थानों को सिखों के अधिन कर, उन स्थानों पर भवन निर्माण (उसारी) के कार्य को तुरंत प्रारंभ किया जाए| शहर की कोतवाली को भी सिखों को सौंप दी जाए एवं कर के रूप में जो पैसा इकट्ठा होता है उसका 6 आना अर्थात 37.5 % इन सभी गुरूद्वारों और गुरु धामों के निर्माण में खर्च किए जाएं। इन शर्तों से बाबा बघेल सिंह जी ने दर्शा दिया था कि वह किसी प्रकार का राज–पाट नहीं चाहते है अपितु उनका लक्ष्य गुरुघर की सेवा है, गुरूवाणी का फरमान है–

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे॥
(अंग क्रमांक 534)

बाबा बघेल सिंह जी द्वारा बनवाए गए गुरूद्वारों का इतिहास–

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के महल माता सुंदरी जी और माता साहिब देवी जी की स्मृति में तेलीवाड़ा में गुरुद्वारा साहिब जी का निर्माण।
गुरुद्वारा बंगला साहिब जी, इस स्थान पर श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी ने जयपुर के महाराजा जयसिंह के बंगले में निवास किया था|
उस समय में यमुना नदी के किनारे चार स्मृती स्थल भी बनाए गए थे, इस स्थान पर श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी माता सुंदरी जी एवं उनके द्वारा गोद लिए गए पुत्र साहिब सिंह जी, साथ ही माता साहिब कौर जी का अंतिम संस्कार किया गया था। इसी स्थान पर एक सुंदर विलोभनीय गुरुद्वारे का भवन निर्माण (उसारी) भी किया गया था|
गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब जी, इसी स्थान पर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की शीश विहीन देह का लक्खी बंजारे द्वारा अंतिम संस्कार किया गया था।
गुरुद्वारा शीश गंज साहिब जी, इस स्थान पर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का शीश कलम कर, शहीद किया गया था।
गुरुद्वारा मजनूं का टीला साहिब जी, इस स्थान पर श्री गुरु नानक देव साहिब जी ने निवास किया था।
गुरुद्वारा मोती बाग साहिब जी, इस स्थान पर श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी ने निवास किया था।
उपरोक्त वर्णित दिल्ली के सभी ऐतिहासिक गुरूद्वारों का निर्माण (उसारी) 8 महीनों के भीतर स्वयं बाबा बघेल सिंह जी ने अपने निरीक्षण में करवाए थे।

नवंबर सन् 1783 ई. के अंतिम दिनों तक इन सभी गुरुस्थान और गुरुधामों के भवन निर्माण (उसारी) संपूर्ण हो चुकी थी, दिसंबर सन् 1783 ई. को जब बाबा बघेल सिंह पुनः पंजाब की और प्रस्थान करने लगे तो शहंशाह शाह आलम–द्वितीय ने आपसे मिलने की इच्छा प्रकट की थी एवं अपने वजीर को विशेष रूप से निमंत्रित करने हेतु बाबा बघेल सिंह जी के पास भेजा था, बाबा बघेल सिंह जी की इसके पहले शहंशाह शाह अलम–द्वितीय से कभी भी सीधी मुलाकात नहीं हुई थी। जब बाबा बघेल सिंह जी संपूर्ण रूप से शस्त्रबद्ध होकर अपनी ख़ालसाई शान से शहंशाह शाह आलम–द्वितीय को मिलने लाल किले पर जा रहे थे तो दरबारी नकीब ऊंची आवाज में बोलता जा रहा था कि ख़ालसा जिओ का आगमन हो रहा है, उस समय इन सिंहो की आन, बान और शान के आगे मानों सूरज की रोशनी भी फीकी पड़ गई थी। सभी दरबारियों ने बाबा बघेल सिंह जी का सम्मान पूर्वक अभिवादन किया था। रास्ते के मध्य में बाबा बघेल सिंह जी ने हाथी की सवारी छोड़कर, अपने घोड़े पर सवार हुये एवं घोड़े पर चढ़े–चढ़ाए ही आप जी ने लाल किले के दरबार में प्रवेश किया था। उस समय में आप जी के साथ सरदार दुलचा सिंह जी और सरदार सदा सिंह जी भी पधारे थे। सभी दरबारियों ने कतार बद्ध होकर, आप जी का भव्य स्वागत किया था। बाबा बघेल सिंह जी ने शहंशाह के शाही दरबार में अपनी सिखी मान–मर्यादाओं को बरकरार रखा था। उस समय शहंशाह शाह आलम–द्वितीय की सेना ने आप को सलामी (गार्ड ऑफ ऑनर) प्रदान की थी। शहंशाह ने अपने दोनों हाथ उठाकर बाबा बघेल सिंह जी का सत्कार पूर्वक अभिवादन किया था और अपने समीप ही उन्हें स्थानापन्न किया था। साथ ही पुराने मित्रों की तरह उनका आदर सत्कार किया एवं कहा कि लोगों ने ऐसी अफवाह फैला रखी थी कि सिख लुटेरे होते हैं शहंशाह शाह आलम–द्वितीय, बाबा बघेल सिंह जी और उनके सरदारों की जीवनी से अत्यंत प्रभावित हुआ था उसने अत्यंत आदर सत्कार कर सिखों के प्रति अपनी आस्था को प्रदर्शित किया था। जब बाबा बघेल सिंह जी दरबार से विदा होने लगे तो शंहशाह शाह आलम–द्वितीय ने रु. 5000 कड़ाह प्रसाद के लिए बाबा बघेल सिंह जी के सुपुर्द कर उनकी सम्मान पूर्वक विदाई की थी।

लुटियन की दिल्ली पर राज करने वाले प्रत्येक राज्य कर्ता को हमेशा सिखों के स्वर्णिम इतिहास को ध्यान में रखना चाहिए याद रखें, सिखों के लिए दिल्ली फतेह करना, बिल्ली मारने के जैसा मामूली कार्य है, इस कहावत का इतिहास स्वयं गवाह है|

इस दिल्ली फतेह दिवस (कौमी दिवस) 11 मार्च पर बाबा बघेल सिंह जी, बाबा जस्सा सिंह जी अहलूवालिया, बाबा जस्सा सिंह जी रामगढ़िया और 'गुरु पंथ ख़ालसा' के ख़ालसाई सेवादारों को विनम्र अभिवादन!

चित्र क्रमांक 1:- बाबा बघेल सिंघ जी।
चित्र क्रमांक 2:- बाबा जस्सा सिंघ जी आहलवालीया।
चित्र क्रमांक 3:- बाबा जस्सा सिंघ जी रामगड़िया।

चित्र क्रमांक 4:- दिल्ली स्थित लाल किला।
चित्र क्रमांक 5:- गुरुद्वारा शीश गंज साहिब जी।
चित्र क्रमांक 6:- गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब जी।

दिल्ली फतेह दिवस (११ मार्च) के एतिहासिक स्थल ।

कामागाटा मारू: सिखों के संघर्ष की अद्भुत-अनोखी दास्तान

सवैया॥
देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरो॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करो॥
अरु सिख हौ आपने ही मन को इह लालच हउ गन तउ उचरो॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करो॥
अरु सिख हौ आपने ही मन को इह लालच हउ गुन तउ उचरो॥
जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझ मरो॥
(चंडी चरित्र)

इंसान की फितरत होती कि वह हमेशा अच्छे साधन, संपन्न स्थान पर निवास कर, स्वयं को एवं अपने परिवार को सुखी बनाना चाहता है। इस रिवायत के अनुसार स्वभाव से ही घुमक्कड़ पंजाबी समुदाय ऐसे उत्तम अवसरों की तलाश में रहते हैं और इसी कारण से अधिकतर पंजाबी दुनिया के अनेक हिस्सों में निवास कर, अपनी मेहनत, मशक्कत से उन देशों में अपना एक स्थान स्थापित कर आन-बान-शान से रह रहे हैं| पंजाबी समुदाय 20 वीं सदी के प्रारंभ के पहले से ही कनाडा में निवासित होना प्रारंभ हो गए थे कारण उस समय में जो पंजाबी, सिख ब्रिटिश फौज में नौकरी करते थे और वहां जब कनाडा जैसे देश में घूम कर, जब पंजाब वापस जाते थे एवं वहां की जीवन शैली, मौसम, आधुनिक सुख-सुविधा की चर्चा करते थे तो प्रत्येक पंजाबी की इच्छा प्रारंभ से ही कनाडा में निवास करने की होती थी।

उस समय कनाडा और हिंदुस्तान दोनों ही देश ब्रिटिशों के अधीन थे अर्थात ऐसा था कि एक देश के नागरिक दूसरे देश में जाकर बस सकते थे। ऐसा माना जाता था कि दोनों ही देश में ब्रिटिश राज है तो आम लोगों का कहना था कि हमें कनाडा जाने से रोका नहीं जाना चाहिए। उस समय कनाडा की जनसंख्या अत्यंत कम थी और रोजगार के अवसर सर्वाधिक थे। इस कारण ज्यादा से ज्यादा लोग कनाडा में निवास चाहते थे, जब बहुत अधिक पंजाबी कनाडा में निवासित होने लगे तो वहां के अंग्रेजों ने इसका विरोध किया और वह चाहते थे कि कनाडा में केवल गोरे लोगों को ही रहने का अधिकार है। उस समय कनाडा प्रशासन ने इस तरह के कड़े कानून बना दिए कि केवल गोरे लोग ही वहां पर निवास कर सकें। इन कानूनों का प्रबल विरोध किया गया और अदालतों में कई केस भी दायर किए गए। इस नस्ल भेद और ऊंच-नीच को कोई भी भारतीय स्वीकार नहीं कर सकता था। उस समय चीनी, जापानी और अन्य विदेशियों पर ऐसी पाबंदियां नहीं थी केवल एशियाई मूल के भारतीय लोगों पर इस तरह की पाबंदियां प्रशासन की ओर से लगाई गई थी।

कामागाटा मारू जहाज एक भाप के इंजन से चलने वाला मालवाहू जहाज था। इस जहाज का मालिक एक जापानी जिसका नाम SHINYEI KISEN GOSHI KAISYA था। इस जहाज का निर्माण सन 1890 ईस्वी. में किया गया था। इस जहाज ने अपनी यात्रा हांगकांग से प्रारंभ कर चीन के शहर शंघाई से होता हुआ, जापान के शहर योकोहामा से होता हुआ ब्रिटिश कोलंबिया के वैंकूवर शहर में पहुंचा था। उस समय हवाई यात्राएं नहीं की जाती थी और केवल समुद्री मार्ग से ही इस तरह की यात्राएं संभव थी। उस समय इस जहाज में 376 यात्री, यात्रा कर रहे थे। इन 376 यात्रियों में से केवल 24 यात्रियों को कनाडा में प्रवेश दिया गया और बचे हुए 352 यात्रियों को पुनः हिंदुस्तान भेज दिया गया था। इन 376 यात्रियों में 340 सिख 24 मुस्लिम और 12 हिंदू समुदाय के यात्री थे और यह सभी यात्री ब्रिटिश इंडिया के सम्मानित नागरिक थे।

उस समय उत्तर अमेरिका महाद्वीप में केवल 2000 के लगभग भारतीय निवास करते थे। उस समय कनाडा में निवास करने वाले गोरे बिल्कुल नहीं चाहते थे कि एशियाई मूल के लोग यहां आकर बस जाए। इसलिए उन्होंने भारतीय लोगों के लिए अप्रवासन (IMMIGRATION) के कानून को इतना जटिल और कठिन बना दिया था कि कोई भी भारतीय उन कानून की शर्तों को पूरा ही ना कर सके। उस समय ऐसा कठिन कानून बनाया गया कि जो भी भारतीय ब्रिटिश कोलंबिया में प्रवेश करेगा उसके पास काम से कम $200 की रकम होनी चाहिए। (उस समय एक आम भारतीय की कमाई लगभग 10 सेंट तक प्रतिदिन होती थी) और उस समय डॉलर और रुपये की कीमत में ज्यादा अंतर भी नहीं था। उस समय एक कठिन और अत्यंत जटिल और कठिन कानून बनाया गया। इस कानून को THE CONTINUOUS PASSAGE ACT कहकर संबोधित किया जाता था। इस कानून के तहत उस समय भारतीय मूल के लोगों ने हिंदुस्तान से ब्रिटिश कोलंबिया का टिकट सीधा खरीदना आवश्यक था कारण जब हिंदुस्तान से जहाज चलता है तो उसे सीधा ब्रिटिश कोलंबिया तक की टिकट मिलती ही नहीं थी। उस समय ब्रिटिश कोलंबिया में निवास करने वाले भारतीयों को वहां के मूलभूत अधिकारों से वंचित रखकर केवल एक बंधुआ मजदूर की तरह उनसे काम करवाया जाता था। सन 1860 ईस्वी. में एक बिल पास किया गया जिसके अंतर्गत भारतीयों को उनके वोटिंग के अधिकार से भी वंचित रखा गया था।

उस समय सरदार गुरदित्त सिंह जी जो कि सूबा पंजाब के ग्राम सरहाली के निवासी थे और सिखों के एक बड़े पढ़े-लिखे उत्तम व्यवसायी थे जिन्होंने अपने सहजोंन्मेष से THE CONTINUOUS PASSAGE ACT कानून के संबंध में अच्छी तरह से जानकारी ली हुई थी उन्होंने इस कानून को तोड़ने के लिए जोखिम उठाकर ब्रिटिश कोलंबिया में जाने का अटल इरादा बनाया कारण उनका सोचना था कि जब हम इतनी कठिन और जोखिम भरी यात्रा करके और सभी प्रकार के कानूनों का पालन कर के ब्रिटिश कोलंबिया में पहुंचेंगे तो निश्चित ही हमें उस देश में प्रवेश दिया जाएगा। उस समय बनाए गए कानून की शर्तों को पूरा करने हेतु उन्होंने कामागाटा मारू नामक एक जहाज (श्री गुरु नानक जहाज) को भाड़े पट्टे 60 हजार डॉलर (लीज) पर ले लिया था कारण इस कानून के तहत जहाज के आवागमन के लिए उस ही देश की कंपनी होनी चाहिए और जहाज भी उसी देश की कंपनी का होना चाहिए। उस समय हिंदुस्तान की कोई भी शिपिंग कंपनी नहीं थी और कोई भी हिंदुस्तानी किसी भी जहाज का मालिक नहीं था। भाई गुरदित्त सिंह ने इस जटिल और कठिन कानून के चैलेन्ज को स्वीकार कर उन्होंने गुरु नानक नेविगेशन नामक कंपनी का निर्माण कर, जापानी जहाज कामागाटा मारू को भाड़े पट्टे पर लिया था और उस समय कई बड़े व्यवसायियों ने गुरु नानक नेविगेशन कंपनी के शेयर भी खरीदे थे। उस समय सरदार गुरदित्त सिंह इस काले कानून को चैलेंज कर इसे समाप्त करने का अटल इरादा रखते थे।

जब कामागाटा मारू जहाज का सफर प्रारंभ होने वाला था तो उसके दो दिन पूर्व सरदार गुरदित्त सिंह जी को हांगकांग में गिरफ्तार कर लिया था कारण उस समय सरदार गुरदित्त सिंह जी ने कामागाटा मारू जहाज से सफर करने वाले यात्रियों के लिए टिकट बेचना प्रारंभ कर दिया था। उस समय वहां की सरकार और प्रशासन ने ब्रिटिशों के दबाव में आकर सरदार गुरदित्त सिंह जी को अवैध टिकट बेचने के आरोप में गिरफ्तार कर, उनके जहाज कामागाटा मारू को स्थानीय प्रशासन के होमगार्ड के जवानों ने अपने कब्जे में ले लिया था। वहां का प्रशासन इंग्लैंड और कनाडा प्रशासन के आदेश का भविष्य की कार्यवाही के लिए इंतजार कर रहा था परंतु जब वहां से कोई आदेश नहीं आया तो सरदार गुरदित्त सिंह जी को हांगकांग प्रशासन ने 4 अप्रैल सन 1914 ई. को आदेश पारित कर रिहा कर दिया और ऐसा आदेश पारित किया कि कामागाटा मारू जहाज वहां से अपने भविष्य की यात्रा प्रारंभ कर सकता है और उसी दिन कामागाटा मारू जहाज ने अपनी भविष्य की यात्रा प्रारंभ कर दी थी और उस समय सरदार गुरदित्त सिंह ने भारतीय और कनाडा के ब्रिटिश प्रशासन को टेलीग्राम (तार) भेजकर अपनी यात्रा की जानकारी प्रदान कर दी थी ताकि भविष्य में कनाडा पहुंचकर इन यात्रियों के लिए कोई समस्या खड़ी नहीं होनी चाहिए। जब यह जहाज 8 अप्रैल सन 1914 ई. को शंघाई पहुंचा तो इस जहाज पर वहां से 111 और यात्रियों ने प्रवेश लिया था। इसी प्रकार से जब यह जहाज 14 अप्रैल को पोर्ट मौजी नामक स्थान पर पहुंचा तो इस जहाज पर वहां से 86 और यात्री सवार हुए और जब यह जहाज जापान के योकोहामा शहर में पहुंचा तो वहां से इस जहाज में 14 और यात्री सवार हुए थे। इस तरह से इस कामागाटा मारू जहाज में 376 यात्री सवार हो कर अपनी भविष्य की यात्रा के लिए रवाना हो गये।

जब कामागाटा मारू जहाज शंघाई पहुंचा तो जर्मन की प्रेस की ओर से ब्रिटिश प्रेस को खबर दी गई की एक कामागाटा मारू नामक जहाज में 376 भारतीय सवार होकर शंघाई से वैंकूवर की ओर रवाना हुए है। इस खबर को ब्रिटिश प्रेस ने खूब उछला और बड़ा-चढ़कर प्रकाशित किया। इस खबर का मुख्य शीर्षक BOAT LOADS OF HINDUS ON WAY TO VANCOUVER और HINDU INVASION OF CANADA था अर्थात इस जहाज में हिंदू भर-भर कर आ रहे हैं और यह हमारी संस्कृति को बर्बाद कर देंगे। इस तरह की भ्रामक खबरें संपूर्ण ब्रिटिश कोलंबिया महाद्वीप पर तेजी से फैलाई गई थी। उस समय वैंकूवर में दो तरह के समूह हो गए, एक समूह भारतीयों का था जो वहां पर निवास कर रहे थे एवं दूसरा समूह वहां के मूल निवासियों का था जो किसी भी कीमत पर इन भारतीयों को अपने देश पर प्रवेश करना नहीं देना चाहते थे। वहां पर बसे भारतीय इस जहाज पर सवार हिंदुस्तानियों की मदद के लिए एकजुट हो गए थे।

जब यह जहाज 23 मई सन 1914 ई. को वेंकूवर पहुंचा तो BURRARD INLET नामक गोदी (DOCKYARD) में रुका था और स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों ने इस जहाज के अंदर जाकर सभी प्रकार की जांच की और पाया कि जहाज के 376 यात्री स्वास्थ्य एवं सकुशल है। उस समय जहाज में यात्रा कर रहे एकमात्र पंजाबी डॉक्टर को उन्होंने वैंकूवर शहर में प्रवेश दिया था कारण वह स्थानीय प्रशासन का खबरी था। शर्तें पूरी करने के पश्चात भी कनाडा प्रशासन ने इन यात्रियों को प्रवेश देने से साफ इनकार कर दिया था इससे जहाज के यात्रियों में अत्यंत रोष उत्पन्न हुआ था। उस समय वहां पर निवास करने वाले भारतीय जानते थे कि कनाडा का प्रशासन इन भारतीयों को प्रवेश नहीं देगा इसलिए भविष्य की कानूनी लड़ाई के लिए यह सभी भारतीय “खालसा दीवान संस्था' के माध्यम से एकजुट हो गए थे और उस समय जहाज के यात्रियों ने और स्थानीय लोगों ने इंग्लैंड और भारत के ब्रिटिश प्रशासन एवं वायसराय से भी टेलीग्राम करके गुहार लगाई थी परंतु उसका कोई उपयोग ना हो सका। उस समय कनाडा प्रशासन द्वारा अपने बनाए हुए बहिष्कार वादी कानून का सहारा लेकर जहाज पर अलग-अलग स्थान से सवार यात्रियों के लिए प्रश्न उपस्थित किया और इसी प्रकार से $200 के कानून का भी सहारा लिया गया था। उस समय स्थानीय लोगों ने वहां की अदालत में उत्तम वकिलों की सहायता से मुकदमे भी दायर किये थे। इन कानूनी विवादों के कारण जहाज कामागाटा मारू दो महीने तक कानूनी झमेले में उलझ कर गोदी में खड़ा रहा था। उस समय कनाडा पुलिस और इन यात्रियों के बीच आपस में कहीं झड़प भी हुई थी कारण स्थानीय पुलिस प्रशासन ने एक सी लिंक जहाज से इस जहाज को टोचन/खींच कर/ बांधकर कनाडा की समुद्री हद से बाहर ले जाने की असफल कोशिश की थी। उस समय एक तोपों से लैस जंगी युद्धपोत कनाडा प्रशासन ने जहाज पर आक्रमण के लिए तैयार किया था। स्थानीय पंजाबी नागरिकों ने उस समय रोष में आकर वैंकूवर शहर को आग के हवाले कर, बड़ा नुकसान पहुंचाने की व्यूह रचना बनाई थी। यदि ऐसा होता तो उसे समय एक अत्यंत बड़ा रक्त-रंजीत संघर्ष होना अटल था। इस संघर्ष को टालने हेतु स्थानीय नागरिक, कनाडा प्रशासन और जहाज के यात्रियों के मध्य एक संयुक्त बैठक हुई तत्पश्चात उस समय की अत्यंत जटिल और खूनी संघर्ष की परिस्थितियों को देखते हुए सरदार गुरदित्त सिंह ने इस जहाज के यात्रियों समेत पुन: भारत की ओर यात्रा करने का निर्णय लिया कारण स्थानीय भारतीय नागरिक भी इस संघर्ष के लिए पूरी तैयारी के साथ एकजुट होकर मर-मिटने को तैयार थे लेकिन सरदार गुरदित्त सिंह नहीं चाहते थे कि उन लोगों की वजह से वहां एक रक्त-रंजीत संघर्ष हो।

इस विवाद के चलते हुए कामागाटा मारू जहाज के केवल 24 यात्रियों को ही कानूनी अप्रवास (IMMIGRATION) दिया गया शेष 352 यात्रियों को कनाडा की फौज ने जबरदस्ती जहाज में बैठकर भारत की ओर रवाना कर दिया था। उस समय वैंकूवर में रहने वाले भारतीयों ने इन सभी यात्रियों को सभी प्रकार की सुविधा प्रदान की थी और जहाज के भाड़ा पट्टे की रकम $60000 को चुकाने के लिए स्थानीय लोगों ने चंदा एकत्र कर उस बहुत बड़ी रकम की अदायगी कर, अपने पंजाबी होने का हक अदा किया था। इस से ज्ञात होता है कि पंजाबी सभ्याचार में जीवन व्यतीत करने वाले लोग, आपस में एक सुदृढ़ भाईचारा रखते हैं और अपने लोगों की मदद करने के लिए कभी भी पीछे नहीं हटते हैं।

दिनांक 26 सितंबर सन 1914 ई को यहां जहाज अपनी वापसी की अत्यंत कठिन यात्रा प्रारंभ कर दी और जब यह जहाज अपनी वापसी की यात्रा कर रहा था तो रास्ते में एक हवाई नामक टापू पड़ता है। इस टापू पर आकर हमारे देश के महान युवा क्रांतिकारी शहीद सरदार करतार सिंह सराभा ने आकर इन यात्रियों को संबोधित कर इन यात्रियों का हौसला बढ़ाते हुए भारत को गुलामी की जंजीरों से आजाद करने के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देकर, इन सभी यात्रियों के हृदय में देशभक्ति की ज्योति को प्रज्वलित किया था।

उस समय जब यह जहाज जापान पहुंचा तो बाबा सोहन सिंह जी भकना (गदर पार्टी के महान क्रांतिकारी) ने भी जहाज के यात्रियों से मुलाकात की थी। जब यह जहाज पुन: कोलकाता के समीप बजबज घाट पर पहुंचने वाला था तो एक यूरोपियन नाव पर सवार हथियारबंद सैनिकों ने इस जहाज पर आक्रमण कर कब्जा कर लिया था। उस समय लगभग 6 महीने की समुद्री यात्रा कर यह जहाज कोलकाता से 17 माइल्स की दूरी पर बजबज घाट पर पहुंचना चाहता था कारण इस जहाज के कुछ यात्री कोलकाता गुरुद्वारे में आश्रय लेकर इस शहर में काम धंधे ढूंढ कर अपनी रोजी-रोटी कमाना चाहते थे एवं उस समय जहाज में सुशोभित 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की बीड़ को सम्मान के साथ हावड़ा स्थित सिंघ सभा गुरुद्वारे में पहुंचाना चाहते थे परंतु स्थानीय ब्रिटिश प्रशासन इन यात्रियों के लिए एक इन्ग्रेस नामक अध्यादेश पास कर, इन यात्रियों को जबरदस्ती रेल में बैठाकर पंजाब भेजना चाहता था। इस कारण से यात्रियों का ब्रिटिश प्रशासन से जोरदार विवाद, झगड़ा और फसाद हुआ और नौबत मारपीट तक पहुंच गई। ब्रिटिश सुरक्षा रक्षकों ने इन यात्रियों पर गोली चला दी थी जिससे 20 यात्री जगह पर शहीद हो गए और 29 यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए थे ब्रिटिश प्रशासन ने मनमानी करते हुए 20 लोगों को बिना किसी कारण के शहीद कर दिया था। चश्मदीदों के मुताबिक इन शहीद सिखों की संख्या 75 से भी अधिक थी। शाहिद सिखों का ब्रिटिश पुलिस के द्वारा उसी स्थान पर संस्कार कर दिया गया था। इस हमले के पश्चात भाई गुरदित्त सिंह जी और अन्य सिख पंजाब जाने में सफल हो गए और देश की आजादी के संघर्ष में शामिल होकर जेल चले गए। उस समय पूरी दुनिया प्रथम विश्व युद्ध की दहलीज पर खड़ी थी। उस समय इस घटना की अनुगूंज के कारण पूरे विश्व में अत्यंत रोष प्रकट हुआ कारण उस समय जो सिख सैनिक ब्रिटिश फौज में नौकरी कर रहे थे उन्होंने बगावत कर दी और अपने जीते हुए सभी तमगे वापस कर दिए थे। उस समय कनाडा में जो सिख सैनिक और पूर्व सैनिक निवास कर रहे थे उन्होंने एकत्र होकर ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदान किए गए सभी तमगों और प्रमाण पत्रों को वेंकूवर के एक गुरुद्वारे के प्रांगण में आग के हवाले कर, अपना रोष प्रकट किया था। इस असंतोष से ब्रिटिश प्रशासन पूरी तरह से हिल गया था कारण ब्रिटिश सरकार का पूरी दुनिया में नाम खराब हो गया था। उस समय वेंकूवर के प्रशासन ने कई भारतीयों को उच्च पद से हटा दिया था। उस समय कामागाटा मारू जहाज के यात्रियों से बदसलूकी करने वाले ब्रिटिश अफसर हॉकिनसंस को कनाडा में निवास करने वाले हमारे भारतीय मूल के सरदार मेवा सिंह जी लोपोको ने गोली मार कर, उनकी हत्या कर दी थी। जिसके फलस्वरुप भाई मेवा सिंह जी लोपोकों को फांसी की सजा हुई थी और उन्होनें कनाडा की धरती पर प्रथम सिख शहीद होने का मान प्राप्त किया था। इतिहास पर कालिख पोतने वाली इस घटना का एक सकारात्मक पक्ष यह रहा की पूरी दुनिया में और देश में पंजाबी समुदाय ने अपने प्रज्ञाचक्षु को खोलकर, एकजुट होकर देश की आजादी के लिए संकल्प ले चुका था और पूरी दुनिया के पंजाबी समुदाय ने एक मुठ होकर उस समय चल रहे स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में गदर पार्टी की लहर के साथ स्वयं को झोंक दिया था। इन देश भक्त और जांबाज पंजाबियों के संघर्षों के परिणाम स्वरूप 15 अगस्त सन 1947 ई. को हमारे देश को आजादी मिली थी। गुरवाणी का फरमान है–

महला 5॥
आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ॥
नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइ॥
(अंग क्रमांक 965)

इस क्रूर घटना के लिए सन 2008 ईस्वी. में कनाडा के प्रधानमंत्री ने अधिकृत रूप से माफी मांगी थी और जब इतिहास पर कालिख पोतने वाली इस घटना की शताब्दी मनाई गई तो कनाडा प्रशासन ने और वहां के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने अपनी संसद में इस कथित घटना के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगी थी।

सन 1952 ईस्वी में भारत सरकार ने कोलकाता के समीप स्थित बजबज घाट पर कामागाटा मारू जहाज के जो 20 यात्री शहीद हो गए थे उनकी स्मृति में देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के कर-कमलों से एक स्मृति स्थल का निर्माण किया। इस स्थान पर प्रत्येक वर्ष को 29 सितंबर के दिवस स्थानीय संगत के द्वारा शहीदों की स्मृति में एक धार्मिक समागम का आयोजन भी किया जाता है। इस क्रूर घटना की 100 वीं वर्षगांठ मनाते हुए वैंकूवर में वहां की गोदी के तट पर सन 2012 ईस्वी. में इस घटना की स्मृति में कामागाटा मारू जहाज के आकार का एक स्मृति स्थल का निर्माण 'खालसा दीवान सोसायटी' संस्था के द्वारा किया गया है।

साथ ही इस स्मृति स्थल पर 376 यात्रियों के नाम को उकेर कर अंकित किया गया है कारण कनाडा में निवास करने वाले भारतीय हमेशा इस घटना को अपने स्मृति पटल पर रखकर इस घटना में हुए शहीदों को नमन करते हैं।

हमारी युवा पीढ़ी को इस ज्वलंत इतिहास से रुबरु होना अत्यंत आवश्यक है। इस इतिहास में देश भक्ति भी है, हमारी आजादी के संग्राम की समीक्षा भी है, संस्मरण भी है और इन सब के मिले जुले स्वरूप का आत्ममंथन भी है। निश्चित ही इस इतिहास में जैसे स्मृतियों को सहेजने की आत्मीयता है तो उस समय की परिस्थितियों के दर्द की टीस भी है।

उस समय मतदान के अधिकार के लिए और अपने मान-सम्मान के लिए हमने रक्त-रंजीत संघर्ष किया था और वर्तमान समय में हमने अपने मतदान के अधिकार को मजाक बना दिया है। इतिहास के पुराख्यान का अवलोकन करें तो लगातार 900 वर्षों के संघर्ष के पश्चात हमें आजादी मिली है। इस आजादी को प्राप्त करने के लिए हमारे सभी शहीदों को सादर नमन।

KOMAGATA MARU

कामागाटा मारू: सिखों के संघर्ष की अद्भुत- अनोखी दास्तान

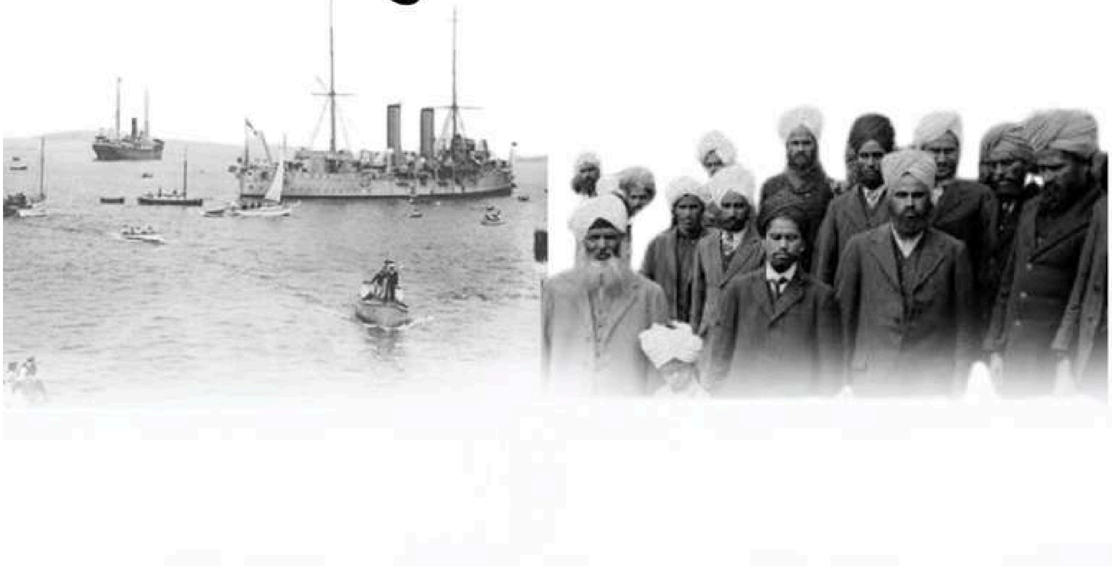

तपते-तवे की दास्तान

मैं सामान्य तवे की तरह ही एक तवा था। आम तवों की तरह. . . लोहे से बना. . .एक सामान्य तवा. . . पर, एक दिन मेरी जिंदगी में ऐसा तूफान आया, जिसने मेरी जिंदगी में उथल-पुथल मचा दी थी।

25 मई सन 1606 ई. का वह दिन! जिसे आज तक कोई नहीं भूल पाया है और ना ही कोई भूल पाएगा। आज ही के दिन लाहौर में शहीदों के सरताज, महान शांति के पुंज, गुरु वाणी के बोहिथा (ज्ञाता/सागर), सिख धर्म के पांचवें गुरु श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी एक महान कवि, लेखक, देशभक्त, समाज सुधारक, लोकनायक, परोपकारी और ब्रह्मज्ञानी ऐसी अनेक प्रतिभा से संपन्न गुरु जी को मुझ गरमा-गरम लाल तपते हुए तवे पर बैठा के असहनीय कठोर यातनाएं दी गयी। अत्याचारियों ने अमानवीय कृत्य को अंजाम देकर हैवानियत कि हद्द कर दीं थी। इस तरह की अमानवीय यातना, जो अब तक किसी ने ना सुनी थी, ना देखी थी।

मुझे आज भी वह दिन बहुत अच्छे से याद है, जिस दिन मैं और गरमा-गरम रेत एक दूसरे से लिपट कर खूब दहाड़ मार-मारकर रोए थे, हमारी आंखों से आंसुओं की सुनामी रुक ही नहीं रही थी, हम शर्म से जारो-जार हो रहे थे, वहां कोई नहीं था। हम चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रहे थे, गुरु साहिब पर अत्याचार करने के लिए हमारा इस्तेमाल एक शस्त्र की तरह किया जा रहा था। "जिस तन लागी सोई जाने" के अनुसार हमारी व्यथा, हमारा दर्द, हमारी मजबूरी केवल और केवल हम ही जानते थे, कोई और नहीं।

अब भी मैं कभी-कभी सोचता रहता हूं कि मैं खुद को बदकिस्मत कहूं या खुशकिस्मत. दुर्भाग्य है कि मैं उन निरंकार स्वरूप साहिब श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी पर हुए अत्याचारों का
भागीदार था, गुरु साहिब पर मेरी आंखों के सामने अमानवीय अत्याचार होते रहे और मैं कुछ नहीं कर सका। मेरी खुशकिस्मत है कि मुझ अभागे और पापी को श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी
के चरणों का पवित्र स्पर्श प्राप्त हुआ था। जो मुझ जैसे भाग्यशाली को ही मिला था। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा...
मुझे अच्छी तरह से याद है, जब श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी ने मुझे अपने चरणों के पवित्र स्पर्श का एहसास दिया था, तो न जाने कैसे, मेरी तपिश कहीं न कहीं शीतल हो चली थी और मैं बर्फ की तरह तुरंत ठंडा-ठार हो गया था, मानो किसी ने मुझे बर्फ के पहाड़ से ढक दिया हो। मेरे अंदर जल रही आग भी शायद उस नाम-सिमरन की ठंडी बयार के आगे झुक गयी थी।
मैं उस प्रत्येक पल-पल का गवाह हूं, जब श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी को कठोर यातनाएं दी जा रही थी और गुरु पातशाह जी उस अकाल पुरख के भाणे को मीठा मानकर, स्थिर मनोभाव से ध्यानमग्न होकर नाम का जाप कर रहे थे उनकी सूरत निरंकार से जुड़ी हुई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों उनके अंतर्मन में चल रहे नाम-सिमरन की ठंडक के सामने, मेरे अंदर जल रही आग और सिर पर गिरती गरमा-गरम रेत गुरु साहिब के आगे बेबस हो गए हों, या यूं कहें कि नाम-सिमरन की शक्ति, जालिमों के जुल्म को नेस्तनाबूद कर रही थी।
गुरु साहिब जी के पवित्र स्पर्श से मेरे अंदर जल रही आग की तपिश तुरंत शांत हो गई थी। पर सच जानना. . . . मेरे अंदर जल रही पश्चाताप की अग्नि की तपिश आज भी मुझे अंदर ही अंदर जलाकर खाक करती रहती है और उस अविस्मरणीय त्रासदी की याद दिलाती है। मुझे लगता है कि पश्चाताप की इस आग की तपिश को कम करने का एकमात्र उपाय पूरी मानवता से अपने अक्षम्य पापों के लिए क्षमा मांगना है। शायद लोगों के आशीर्वाद से मेरे अंदर जल रही पश्चाताप की अग्नि कुछ कम हो जाये। इसलिए, मैं आज अपने पापों के लिए पूरी मानवता से क्षमा मांगता हूं और ईश्वर के चरणों में प्रार्थना करता हूं कि भविष्य में कोई भी क्रूर व्यक्ति ऐसा अमानवीय अत्याचार ना करे, जिससे मानवता शर्मसार हो और मानवीय मूल्यों का अपमान हो और मानवता का सिर शर्म से झुक जाए।

स्रोत- गुरु पंथ खालसा के महान लेखक, सरदार परमजीत सिंह जी सुचिंतन जी की किताब ‘गुरु मिलि चजु अचारु सिखु’।

धन्य-धन्य श्री गुरु अर्जुन देव साहिब की शहादत को सादर नमन!

सिखों का चरित्र

गुरबाणी की संपूर्ण विचारधारा एक उत्तम चरित्रवान व्यक्ति का निर्माण करती है। चरित्रवान व्यक्ति, वह व्यक्ति होता है जो शाश्वत सत्य को पकड़कर, झूठ और झूठी बातों से बचते हुए, गुरुवाणी के मार्ग पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करता है। चरित्रवान व्यक्ति न केवल अपने चरित्र का निर्माण करता है अपितु अपनी कौम के कौमी चरित्र को भी उत्तम आयाम प्रदान करता है। चरित्र दो प्रकार के माने जा सकते है-

1.व्यक्तिगत चरित्र और

2. कौमी चरित्र!

व्यक्तिगत चरित्र का मानक किसी एक व्यक्ति के चरित्र, उसके जीवन के आचरण, उसकी सोच और उसके व्यवहार पर निर्भर करता है, लेकिन कौमी चरित्र का मानक उस राष्ट्र/संप्रदाय/वर्ग/धर्म/समाज के अनुयायियों के समूह की सोच, उनके जीवन जीने के तरीके पर और उनके आचरण पर निर्भर करता है। वर्तमान समय में ऐसा प्रतीत होता है कि अच्छे व्यक्तिगत चरित्र वाले गुरु सिख प्रेमियों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। पवित्र वाणी का फर्मान है-

रहिणी रहै सोई सिख मेरा॥
ओुह ठाकुरु मै उस का चेरा॥
रहित बिनाँ नहि सिख कहावै॥
रहित बिनाँ दर चोटाँ खावै॥
रहित बिनाँ सुख कबहुं न लहे॥
ताँ ते रहित सु द्रिड़ कर रहै॥
ख़ालसा ख़ास कहावै सोई जाँ के हिरदे भरम न होई ॥
भरम भेख ते रहै निआरा सो ख़ालस सतिगुरु हमारा ॥

क्या वर्तमान समय में सिखों का जीवन उपरोक्त गुरबाणी का अनुसरण करता है?

एक समय था (बहुत समय पहले नहीं) जब सिखों के बारे में कहा जाता था कि सिख झूठ नहीं बोलते। अदालत में सिखों की गवाही लेते समय उन्हें दूसरों गवाहों की तरह किसी धर्म ग्रंथ की शपथ नहीं दिलाई जाती थी अपितु उनके चरित्र पर विश्वास करते हुए और यह सोचकर कि सिख कभी झूठ नहीं बोलते, उन्हें बिना शपथ लिए गवाही देने की इजाजत दी जाती थी| इसका मतलब यह नहीं कि उस समय एक भी सिख झूठ नहीं बोला करता था, संभव है कि कुछ सिख झूठ बोलते हों परन्तु अधिकांश सिखों ने अपने कौमी चरित्र और सच्चाई पर पहरा दिया था। इसलिए सिखों के बारे में यह प्रचलित हो गया कि सिख कभी झूठ नहीं बोलते। क्या वर्तमान समय में हम कह सकते है कि सिख झूठ नहीं बोलते है?

सिखों के बारे में यह कहावत प्रचलित थी कि बस या ट्रेन में यात्रा करते समय यदि कोई सिख किसी सीट पर बैठा हो और पास में कोई महिला, बुजुर्ग, विकलांग व्यक्ति या बच्चा खड़ा हो तो वह सिख अपनी सीट को उस जरूरतमंद को दे देता है। क्या वर्तमान समय में ऐसा होता है? शायद नहीं...

एक और कहावत है, जो सिखों के बारे में प्रचलित है कि कोई सिख लंगर छकते समय (भोजन प्रशादि) जोर से 'बोले सो निहाल सत श्री अकाल' का जयकारा छोड़ते है ताकि आसपास के लोगों को पता चल जाए कि किसी सिख ने लंगर छकना प्रारंभ किया है और यदि कोई व्यक्ति भूखा है तो वह आ सकता है और उस सिख के साथ लंगर छक सकता है, वर्तमान समय शायद ऐसा नहीं होता है, यदि हम जयकारा छोड़ते भी है तो केवल रस्मी तौर पर खाना पूर्ती करते है।

सिखों के बारे में एक और बात प्रचलित थी कि अगर आसपास कोई सिख रहता है तो समझ लें कि हमारे घर की बहू-बेटियां और हमारी इज्जत सुरक्षित है परंतु क्या वर्तमान समय में भी हमारे संबंध में यह धारणा सही है?

एक समय था जब कहा जाता था कि सिख ईमानदारी से किरत कर, मेहनत करते हैं, क्या आज हम यह दावा कर सकते हैं कि हम मलक भागो के नहीं अपितु भाई लालो के वारिस हैं?
एक समय था जब किसी सिख के सामने बीड़ी या सिगरेट पीना बहुत दूर की बात थी। परंतु यदि कोई पीता भी होता तो सिखों को देखते ही वे सम्मान स्वरूप अपनी बीड़ी-सिगरेट बुझा देते थे। यह हमारे चरित्र और हमारी स्थिति का मानक था और आज, जब हम 'सिक्खी' वेश में कुछ लोगों को अपने मुंह में बीड़ी/सिगरेट डालते हुए देखते है तो हम हैरान रह जाते है। ऐसे लोग यह भी नहीं सोचते कि उनके कृत्यों से किसी धर्म की प्रतिष्ठा पर कितना बुरा प्रभाव पड़ रहा है। हमारे कौमी चरित्र में नित-प्रतिदिन गिरावट आ रही है।

इस आलेख में केवल कुछ उदाहरण दिये गये हैं जिनके कारण सिख स्वयं को न्यारा कहते है। सिखों के कौमी चरित्र का अपना एक मानक है। क्या.... वर्तमान समय में हम गर्व से कह सकते हैं कि हम समग्र रूप से सिक्खी सिद्धांतों और सिक्खी परंपराओं पर पहरा दे रहे हैं?
यदि हम ईमानदारी से आकलन करें तो ऐसा नहीं प्रतित होता है। इस सबका ज़िम्मेदार कौन है? शिरोमणि कमेटी, गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटियाँ, सेवा सोसायटी, मिशनरी कॉलेज, रागी, ढाडी, कवि, प्रचारक...? नहीं भाई नहीं... इसके लिए हम सभी जिम्मेदार हैं, जो अपने आप को गुरु के सिख कहलाते हैं।

प्रत्येक सिख का जीवन चरित्र, सिखों के कौमी चरित्र में सकारात्मक या नकारात्मक योगदान देता है। एक सिख का चरित्र पूरी कौम का आईना होता है।
वर्तमान समय की परिस्थितियों को देखते हुए ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि कोई करिश्मा रातों-रात हो जाएगा (हो सकता है, अगर गुरु साहिब अपनी मेहर करें तो......) और हम हमारे कौमी चरित्र के मानक अनुसार हम अपने चरित्र के स्तर को नये आयाम देने का प्रयत्न करें। सच जानना ...... हमें यह उम्मीद जरूर है कि अगर हम, जो अपने आप को सिख कहते हैं, अपने चरित्र को पहले से थोड़ा सा बेहतर बना लें, तो हमारे कौमी चरित्र के आयामों को निश्चित ही एक आदर्श स्थान प्राप्त करके देंगे|
एक आदर्श गुर सिख के चरित्र को स्पष्ट करने के लिए गुरबाणी का पावन, पुनीत फरमान है—

महला 4॥

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै॥
उपदेसि गुरु हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरु मनि भावै॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरु उपदेसु सुणावै॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै॥

(अंग क्रमांक 305)

अर्थात जो मनुष्य सद्गुरु का सच्चा सिख कहलाता है, वह अमृत वेले (ब्रह्म मुहूर्त) में उठकर ईश्वर के नाम का सिमरन करता है, वह प्रतिदिन सुबह उद्यम करता है। स्नान करता है और फिर नाम रुपी अमृत के सरोवर में सराबोर होकर डुबकी लगाता है| गुरु के उपदेश द्वारा वह प्रभु -रमेश्वर के नाम का जाप जपता है और इस प्रकार उसके तमाम पाप, दोष निवृत हो जाते हैं| फिर दिन निकलने पर गुरु की वाणी का कीर्तन करता है और उठते-बैठते प्रभु का नाम सिमरन करता है| जो गुरु का सिख अपनी सांस एवं ग्रास से मेरे हरि, परमेश्वर की आराधना करता है, वह गुरु के मन को अच्छा लगने लग जाता है। जिस पर मेरा स्वामी दयालु होता है उसे गुर सिख को गुरु उपदेश देता है। नानक भी उस गुर सिख की चरण धूलि मांगता है, जो स्वयं नाम जपता है और दूसरों को भी नाम जपाता है।

सतगुरु के चरणों में अरदास/प्रार्थना है, कृपया हमारा और हमारी कौम का चरित्र उत्तम बने और हम देश के उत्तम नागरिक बनकर अपनी कौम का नाम रोशन करें।

स्रोत: गुरु पंथ खालसा के महान लेखक, सरदार परमजीत सिंह जी सुचिंतन जी की किताब 'गुरु मिलि चजु अचारु सिख'।

इस देश की सिख आबादी केवल 2% हैं परंतु देश की आजादी के लिये सिखों की शहिदीयां 86% से भी अधिक है, जिसे निम्नलिखित तख्ते से दर्शाया गया है-

	सिख	गैर सिख	कुल
फाँसी पर चढ़े	93	28	121
उम्र कैद:	2147	499	2646
बजबज घाट के शहीद	67	46	113
कूका लहर के शहीद	91	00	91
अकाली लहर के शहीद	500	000	500
जलियांवाला बाग के शहीद	799	501	1300

वर्तमान में सिख ऐतिहासिक गुरूद्वारे और सिख ऐतिहासिक खोज से परिपूर्ण जानकारी के संदर्भ में वीडियो देखने हेतु कृपया फेसबुक पेज को लाइक करें-

KHOJ VICHAR

सिख इतिहास को पंजाबी, हिंदी और अंग्रेजी में पढ़ने के लिए कृपया Google Chrome पर Arsh.Blog (Arsh.blog) सर्च करें।

नोट-1. श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के पृष्ठों को गुरूमुखी में सम्मान पूर्वक अंग कहकर संबोधित किया जाता है।

2. गुरबाणी का हिंदी अनुवाद गुरबाणी सर्चर एप को मानक मानकर किया गया है। लेख में प्रकाशित गुरबाणी की पंक्तियों की जानकारी और विश्लेषण सरदार गुरदयाल सिंह जी (खोज-विचार टीम के प्रमुख सेवादार) के द्वारा प्राप्त की गई है।

3. इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिये प्रतिबद्ध 'टीम खोज विचार' सिख धर्म के कट्टर समर्थक और अनुयायी हैं। लेखक का विशुद्ध रूप से मकसद है कि इस पुस्तक 'अद्वितीय सिख विरासत' के अनमोल-स्वर्णिम सिख इतिहास से संगत (पाठकों) को अवगत करवाना है।

4. इस पुस्तक में अंतरराष्ट्रीय दर्जे के मानकों के अनुसार कई महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। इन सुधारों को पुस्तक में अंकित करने से पूर्व हिंदी के साहित्यकारों एवं पंथ विद्वानों से महत्वपूर्ण चर्चा करने के पश्चात ही पुस्तक में अंकित किया गया है।

5. पुस्तक के पाठकों से निवेदन है कि, पुस्तक में अंकित शब्द गुरुबाणी/गुरवाणी, सिंघ/सिंह, गोबिंद/गोविंद, हरिगोबिंद/हरगोविंद, वाहिगुरु/वाहेगुरु, हरिराय/हरराय, हरिकृष्ण/हरकृष्ण, बहादर/बहादुर इत्यादि तत्सम शब्दों को एक समान पढ़े।

6. पुस्तक में प्रकाशित सिख इतिहास, गुरबाणी एवं अन्य तत्सम जानकारियां विभिन्न धर्म ग्रंथ/गुरमुखी की पुस्तकें, ऐतिहासिक स्त्रोत, गुगल सर्च इंजिन, गुरु पंथ खालसा के महान कथा वाचक ज्ञानी संत सिंघ जी मस्किन, ज्ञानी पिंदरपाल जी, ज्ञानी हरिंदर सिंघ जी (अलवर वाले), गुरबाणी सर्चर ऐप इत्यादि स्त्रोतों से एकत्रित कर संपादित की गई है।

7. पुस्तक के संकलन और संपादन में 'टीम खोज विचार' के निष्काम सेवादार सरदार गुरदियाल सिघ का सहयोग प्राप्त हुआ है।

8. पुस्तक के मुख्य पृष्ठ का डिज़ाइन एवं अन्य चित्र 'टीम खोज विचार' के निष्काम सेवादार सरदार गुरदास सिंघ के सहयोग से प्राप्त किये गये है।

9. इस इतिहास को लिखकर प्रकाशित करने में यदि कोई त्रुटि हो जाती है तो गुरु महाराज के अंजान बच्चे समझकर बख़्शना जी। 'संगत बख्शनहार है।
भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरु करतारु॥
(अंग क्रमांक 61)
सभी गलती करने वाले हैं, केवल गुरुऔर सृष्टि की सर्जना करने वाला ही अचूक है।

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह!

समाप्त ।

Follow Us

[KHOJ VICHAR]

[arsh.blog]

[facebook]

[Instagram]

[lLinkedin]

[twitter]

डॉ. रणजीत सिंह अरोरा अर्श

'लेखक'

डॉ.भगवान सिंह जी खोजी

'इतिहासकार'

अद्वितीय सिख विरासत का इतिहास गुरु पंथ खालसा द्वारा धर्म, समाज और राजनीति के क्षेत्र में किए गए आंदोलनों की मध्यकालीन युग से लेकर वर्तमान तक की प्रगति का सजीव दस्तावेज है। यह स्पष्ट है कि इन क्षेत्रों में सफलता का मार्ग उन शहीदों से होकर गुजरता है, जिन्होंने मानवता की रक्षा हेतु अपने जीवन की शहादत दी। इस विरासत का महानतम सबक यह है कि शहादतों के बिना कोई भी राष्ट्र विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता।

नवीन आशाओं को प्राप्त करने के लिए पुरानी मान्यताओं को त्यागना पड़ता है। अत्याचार के चक्र को रोकने के लिए और मानवता की अंतरात्मा की रक्षा के लिए, क्रांतिकारियों और समाज सुधारकों को अपने प्राण न्योछावर करने पड़ते हैं। कभी दीवारों में जिंदा चिनना पड़ता है, कभी शरीर के अंग-अंग कटवाने पड़ते हैं, कभी चर्खड़ी पर चढ़ाया जाता है, कभी गर्म तवे की तपीश सहनी पड़ती है। हंसते-हंसते शहादत का जाम पीना पड़ता है, भूख-प्यास और अपार कष्टों का सामना करना पड़ता है।

इन शहादतों के बलिदानों के माध्यम से राष्ट्र और कौम के पथ पर उम्मीद की किरण चमकती है। ऐसे शहीदों के संघर्ष और त्याग को शब्दों में कैद कर, उनकी अद्वितीय विरासत को संरक्षित किया जा सकता है। वे पैगंबर, शहीद और महान योद्धा, जिन्होंने सत्य और न्याय की रक्षा के लिए अपने जीवन की आहुति दी, वही दुनिया को प्रगति की दिशा में अग्रसर करते हैं।

एक सच्चा इतिहासकार अपने शब्दों के माध्यम से इन महान योद्धाओं के जीवन की छवि को प्रस्तुत करता है। उनके संघर्ष और बलिदान का इतिहास लिखकर वह आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता है, उन्हें अद्वितीय विरासत से जोड़ता है और वीर रस से भरपूर अद्वितीय कर्म करने की प्रेरणा देता है।

ੴ

भै काहू को देत नहि नहि भै मानत आन

अर्श प्रकाशन

To Know More :
arshpune@gmail.com

Also Availalavble As An E-book

NON FICTION

ISBN: 978-81-955654-8-1

मूल्य रू. 600/-